पोडश संस्कार पद्धति

प्रकाशक

सस्कृति संस्थान

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh
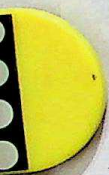
षोडश संस्कार पद्धति

(सोलहों संस्कारों के वैज्ञानिक विवेचन स्पष्टीकरण
उद्देश्य और विधान भाषा टीका सहित)

सम्पादक :

डॉ० चमन लाल गौतम

रचयिता व सम्पादक : मन्त्र महाविज्ञान, ओंकार सिद्धि, लक्ष्मी सिद्धि
गणेश सिद्धि, बगलामुखी सिद्धि, गायत्री सिद्धि, शावर मन्त्र
सिद्धि, यन्त्र महासिद्धि, मन्त्र शक्ति से रोग निवारण–विपत्ति
निवारण, कामना सिद्धि, मंत्रशक्ति के
अद्‌भुत चमत्कार आदि ।

प्रकाशक :

संस्कृति संस्थान

ख्वाजाकुतुब, (वेदनगर), बरेली–२४३००३ (उ०प्र०)
फोन नं० ४७४२४२

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रकाशक :

डॉ० चमन लाल गौतम

संस्कृति संस्थान

ख्वाजा कुतुब (वेद नगर)

बरेली–२४३००३ (उ०प्र०)

फोन नं० ४७४२४२

※

सम्पादक :

डॉ० चमन लाल गौतम

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

संशोधित संस्करण

सन् 2015

※

मुद्रक :

शैलेन्द्र बी० माहेश्वरी

सरस्वती संस्थान

भीकचन्द मार्ग, मथुरा ।

※

मूल्य :

50/- रूपये मात्र

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दो शब्द

भारतीय संस्कृति संस्कारों पर ही आधारित है । प्राचीन काल में तो प्रत्येक कार्य का आरम्भ संस्कार से ही होता था। किन्तु वर्तमान में मनुष्य के पास न समय है न विश्वास । इसलिए आवश्यक प्रमुख कर्मों में ही संस्कार किये जाते हैं । यही कारण है कि संस्कारों की संख्या चालीस से घटकर सोलह रह गई है ।

मनुष्य चाहे जिस जाति में जन्म ले, अपवित्र शरीरों से जन्म लेने के कारण वह तब तक शूद्र बना रहता है,जब तक कि उसका उपनयन संस्कार नहीं हो जाता क्योंकि उपनयन के समय ही उसे गायत्री मन्त्र के द्वारा गुरुदीक्षा प्राप्त होती है और वह 'द्विज' संज्ञा को प्राप्त होकर वेदाध्ययन आदि का अधिकारी बनता है ।

यों तो गर्भाधान के समय से ही संस्कारों की श्रृंखला आरम्भ हो जाती है । पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जात कर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्न प्राशन, चूड़ाकर्म और कर्णवेध के पश्चात् ही उपनयन संस्कार किया जाता है,कुछ लोग वेदारम्भ को उपनयन का ही एक अंग मानते हैं । वेदाध्ययन पूर्ण होने पर केशान्त संस्कार का विधान है ।

विवाह-संस्कार गृहस्थ जीवन का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण संस्कार है । आवसथ्याधान में गृह्याग्नि का और श्रौताधान में गार्हपत्यादि आग्नित्रय का संग्रह किया जाता है । अन्त्येष्टि संस्कार अन्तिम संस्कार है,जिनका आश्रय मानवमात्र को लेना होता है ।इस प्रकार प्रस्तुत पुस्तक में सभी संस्कारों का साँगोपांग वर्णन हुआ है । हमारा विश्वास है कि पुस्तक सभी के लिए उपयोगी सिद्ध होगी ।

—प्रकाशक

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय-सूची

१. मानव जीवन में संस्कारों का महत्त्व

संस्कारों की पृष्ठभूमि ६ संस्कार का स्वरूप १० संस्कारों का गुणों में समावेश १० संस्कारों का आरम्भ १२ संस्कारों का सामाजिक महत्त्व १६

२. संस्कार और उनके साधन

षोडशोपचार १७ पूजन में व्यवहृत द्रव्यों का विशेष नाम १६ विभिन्न कर्मों के देवता २२ मंगल स्नान २२ दक्षिणा २४ ब्राह्मण २४ ब्राह्मण भोजन २३ पूजन सामग्री २४ सामान्य सामग्री २४ सर्वतोभद्र मण्डप २५ नान्दी श्राद्ध २५

३. सामान्य पूजन विधान

मन्त्रादि की समानता २८ पवित्रीकरण २६ आचमन २६ शिखा बन्धन २६ प्राणायाम ३० न्यास ३० पृथिवी पूजन ३१ देव पूजन ३२ गणपति पूजन ३२ अन्य प्रमुख देव पूजन ३४ नमस्कार ३५ षोडशोपचार पूजन ३६ दण्डवत् प्रणाम ३७ रक्षा कवच ३८ अग्नि स्थापन ३६

४. स्वास्तिवाचन-पुण्याह वाचन

स्वास्ति ४० वरुणदेव पूजन ४२ गंगादि का आवाहन ४२ कलश अभिमंत्रण ४२ पुण्याहवाचन ४३ अभिषेक ५२

५. षोडश मातृका पूजन

ब्रह्मपुराण की मान्यता ५५ आवाहन मन्त्र ५६ प्रतिष्ठा मन्त्र ५७ वर्सोधारा ५७ आयुष्य जप ५८

६. नान्दी श्राद्ध

विधि विधान ५६ पाद्यदान ६१ आसनदान ६२ गन्धादि दान

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

६२ भोजन निष्क्रिय द्रव्यदान ६३ सयवक्षीर मुदकदान ६४ आशीर्वाद ६४ दक्षिणादान ६५ विसर्जन ६५

७. गर्भाधानसंस्कार-१

मानव जीवन की प्रारम्भिक प्रक्रिया ६६ गर्भाधान की वैधता ६७ विवाह की आयु ६८ संस्कार की विधि ७० संकल्प ७० सायंकालोत्तर विधान ७२ दम्पति का कर्त्तव्य ७४

८. पुंसवन संस्कार-२

शिशु के शारीरिक मानसिक विकास का अनुष्ठान ७५ शिशु से सम्बन्धित संस्कार ७६ संकल्प ७७ संस्कार की मुख्य क्रिया ७७ चरु प्रदान ७६ संस्कार का समापन ८०

६. सीमन्तोन्नयन संस्कार-३

संस्कार का समय ८३ संस्कार की विधि ८४ ब्रह्मा का वरण ८५ होमादि का विधान ८६ संस्कार का समापन ८६

१०. जातकर्म संस्कार-४

संस्कार का अभिप्राय ८६ पुत्रोत्पत्ति के पश्चात् ६१ संकल्प ६२ दश दिन पर्यन्त दैनिक हवन ६७

११. नामकरण संस्कार-५

जन्म के पश्चात् शिशु का द्वितीय संस्कार ६६ नाम रखने के सिद्धान्त १०१ नक्षत्र व राशि के अनुसार नामकरण विधि १०३ सहज नामकरण १०५ नामकरण विधान १०६ संस्कार का आरम्भ १०७ नाम देवता की प्रार्थना १०८ नामकरण संस्कार के दो अन्य अंग १०६

१२. निष्क्रमण संस्कार-६

शिशु जीवन का प्रमुख कार्य ११० चन्द्र दर्शन ११२ भूम्युपवेशन विधान ११३

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१३. अन्नप्राशन संस्कार-७

पुष्टि और शक्ति का आरम्भ ११४ अन्नप्राशन की आयु ११७ संस्कार का आरम्भ ११७ महाव्याहृतियों से आज्या हुतिदान १२१ क्षीराहार १२४

१४. चूड़ाकर्म संस्कार-८

बुद्धिवर्द्धन का संस्कार १२५ चूड़ाबन्धनादि क्रियाएँ १३० मुण्डन निर्देश १३३

१५. कर्णवेध संस्कार-६

कनछेदन का महत्त्व १३४ संस्कार का आरम्भ १३५ समापन १३७

१६. उपनयन संस्कार-१०

मानव जीवन के विकास का आरम्भ १३८ उपनयन का समय १३६ अंगुष्ठ भ्रामण क्रिया १४५ समिदाधान १५८ अभिवादन १६१ भिक्षाचरण १६१ ब्रह्मचर्यपालन और दिनचर्या १६३ पुनरुपनयन १६४ व्रात्य प्रायश्चित्त १६६ ब्रह्मचर्य भङ्ग प्रायश्चित्त १६७

१७. वेदारम्भ संस्कार-११

सब प्रकार की उत्कृष्टता का संस्कार १६८ वेदाध्ययन और ब्रह्म यज्ञ १६८ संस्कार आरम्भ की विधि १७० आचार्य द्वारा संकल्प १७१ महाव्याहृतियों की आहुतियाँ १७३ समापन १७६

१८. समावर्तन संस्कार-१२

केशान्त कर्म (१७७) समावर्तन संस्कार का समय (१७६) संस्कार का आरम्भ (१८०) ब्रह्मा का वरण (१८१) समिदाधान (१८८) अंग-स्पर्श (१८६) अभिषेक (१६०) सूर्योपस्थान (१६२) पागादि धारण (१६४) स्नातक के कर्त्तव्यों का उपदेश (१६५) पूर्णाहुति (१६६)

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१६. विवाह संस्कार-१३

दाम्पत्य जीवन का आरम्भिक संस्कार (१६७) वाग्दान (१६६) पूर्व दिन के कर्म (२००) वेदी में अग्नि स्थापन (२०१) वर का स्वागत सत्कार (२०१) पवित्रीकरण (२०२) आचमन (२०२) शिखा बन्धन (२०२) प्राणायाम (२०२) न्यास (२०३) विवाह विधान (२०३) देव पूजन (२०४) वर पूजन (२०५) वर का वरण (२१०) कन्या वरण, वस्त्र प्रदान एवं वस्त्र धारण (२१०) मंगल पाठ (२११) परस्पर दर्शन (२१३) ग्रन्थि बन्धन (२१३) हरिद्रालेपन एवं कन्यादान (२१४) कन्यादान का संकल्प (२१४) पाणिग्रहण (२१४) वर द्वारा प्रतिज्ञाएँ (२१५) शाखोच्चार (२१७) दश महादान (२२०) विवाह संस्कारार्थ होम (२२०) ब्रह्मा का वरण (२२१) स्विष्टकृत होम मन्त्र (२२५) राष्ट्रभृत होम की आहुतियाँ (२२५) जया होम की आहुतियाँ (२२७) अभ्यातान होम मन्त्र (२२८) लाजाहोम (२३३) प्रदक्षिणा (२३४) शिलारोहण (२३५) सप्तपदी (२३६) अभिषेक (२३७) सूर्य दर्शन (२३७) ध्रुव दर्शन (२३८) हृदय स्पर्श (२३८) सुमंगली मंत्र (२३८) वधु का वामांग उपवेश (२३८) आशीर्वाद (२३६) पूर्णाहुति (२४१)

२०. आवस्थ्याध्यान संस्कार-१४

गृह्याग्नि का आधान (२४१) अग्न्याधान की विधि (२४२) ब्रह्मा का वरण (२४३) आज्यहुतियाँ (२४४) समापन (२४६)

२१. श्रौतधान संस्कार-१५

अग्नि त्रय का संग्रह (२४७) अग्निहोत्रशाला (२४७) रात्रि-जागरण (२५०) गार्हपत्य कुण्ड (२५०) आहवनीय कुण्ड (२५१) दक्षिणाग्नि कुण्ड (२५१) अग्नि मन्थनादि (२५१) सामगान और आहवनीय स्थापन (२५२) पूर्णाहुति (२५४)

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

२२. अन्त्येष्टि संस्कार-१६

जीवन का अन्तिम संस्कार (२५५) मरणकाल (२५६) शव-यात्रा (२५७) चिता-चयन (२५७) दाह-संस्कार (२५६) शरीर यज्ञ (२६०) कपाल क्रिया (२६१) मरणोत्तर कर्म (२६२) संकल्प (२६२) आवाहन (२६३) पंचबलि (२६३) पितृबलि (२६४) तर्पण (२६४) देव तर्पण (२६५) ऋषि तर्पण (२६५) दिव्य मनुष्य तर्पण (२६६) पितर तर्पण (२६६) यम तर्पण (२६७) पिण्डदान (२६६) पितृहोत्र एव नमस्कार (२६६) शान्ति पाठ (२७०) कर्म समाप्ति (२७०)

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

षोडश संस्कार पद्धति

मानव जीवन में संस्कारों का महत्त्व

संस्कारों की पृष्ठभूमि

संस्कारों की संख्या–

मानव जीवन में संस्कारों का सर्वोपरि स्थान है । विशेष कर भारतवर्ष में तो संस्कार को बहुत ही महत्त्व दिया जाता है। प्राचीन काल में तो प्रत्येक महत्त्व के कार्य का आरम्भ संस्कार कर्म के बाद ही किया जाता था । इसलिए गौतम स्मृति के रचयिता ने चालीस प्रकार से संस्कारों का उल्लेख किया, यथा–गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जात कर्म, नामकरण निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, उपनयन, वेदारम्भ के चार संस्कार (प्रत्येक वेदारम्भ का एक संस्कार), केशान्त, समावर्तन, विवाह, पंच महायज्ञ, अष्टका श्राद्ध, पार्वण श्राद्ध, श्रावणी कर्म, आग्रहायणी कर्म, चैत्री कर्म, अग्नयाधेय कर्म, अग्निहोत्र, दर्शपौर्णमासयाग, चातुर्मास्य याग, आग्रयण (नवान्नेष्ठि), निरूढपशुयाग, सौत्रामणियाग, अग्निष्टोम, अत्यग्निष्टोम, उक्थ्य, षोडशी, वाजपेय, अतिरात्र, आप्तोर्याद, उपाकर्म, उत्सर्ग और पितृमेध ।

महर्षि अंगिरा ने उक्त संस्कारों का अंतर्भाव पच्चीस संस्कारों में किया है । उन्होंने चौथा संस्कार विष्णु बलिकर्म को माना हैं । व्यास स्मृति के प्रथम अध्याय में गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म नामकरण, निष्क्रमण, अन्न प्राशन, चूड़ाकर्म, कर्णवेध, यज्ञोपवीत, वेदारम्भ, केशान्त, समावर्तन, विवाह, नावसस्थ्याधान

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(विवाहाग्नि परिग्रह), और श्रौताधान (त्रयाग्नि संग्रह) के रूप में सोलह संस्कारों का वर्णन हुआ है । इसका अभिप्राय हैं कि कालानुसार जब-जब जिन संस्कारों को प्रमुखता दी जाती रही, तब-तब उस समय की पद्धतियों में उन्हीं संस्कारों का निर्देश किया गया । इस प्रकार समयानुसार संस्कारों के महत्त्व में न्यूनाधिकता मान्य होती रही ।

संस्कार का स्वरूप–

'संस्कार' शब्द को व्यावहारिक रूप से प्रमुखता देने के लिए यह भी अपेक्षित है कि उसके तात्पर्य को ठीक प्रकार से समझ लिया जाय। महर्षि पाणिन ने संस्कार के तीन भेद किये हैं – ऊत्कर्षकारक, समवाय और भूषण । अर्थात् संस्कार करने से उत्कर्ष की प्राप्ति होती है तथा समुदाय में प्रतिष्ठा बढ़ती है । जैसे कि कोई असुन्दर व्यक्ति भी अच्छे, अच्छे वस्त्राभूषण धारण करके आकर्षक लगने लगता है। वैसे ही संस्कार होने पर मनुष्य की शोभा बढ़ जाती है ।

संस्कारों का गुणों में समावेश–

महर्षि कणाद ने संस्कारों को गुणों में समाविष्ट माना है । यद्यपि महर्षि ने अपने 'वैशेषिक दर्शन' में रूप, रस, गन्ध, स्पर्श संख्या, परिमाण, पृथक्त्व संयोग, वियोग, दूरी, सामीप्य, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष और प्रयत्न के भेद से १७ गुणों का स्पष्ट वर्णन किया है । किन्तु सूत्र (१/१/६) के अन्त में 'च' (और)कहकर सत्रह से अधिक गुणों का होना स्वीकार किया है ।

''वैशेषिक दर्शन' के प्रमुख भाष्यकार प्रशस्तपाद ने उक्त सूत्र के 'च' शब्द की सात गुणों का सूचक मानते हुए गुरुत्व, द्रवत्व, स्नेह, संस्कार, धर्म, अधर्म और शब्द को उक्त १७ गुणों के साथ' जोड़ कर चौबीस गुणों का होना मान्य किया है । उसके संस्कार

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के तीन भेद इस प्रकार किये जाते हैं –

(१) वेग संस्कार–पृथिवी, जल, अग्नि, वायु और मन में रहता है तथा आगामी कर्मों का हेतु होता है ।

(२) भावना संस्कार–पूर्व अनुभव की स्मृति होने पर मन में उत्पन्न होता है । यही अनेक प्रकार की वासनाओं का कारण है । विद्या, शिल्प, व्यायाम, नैतिकता (शुभाचरण) आदि में भी बार-बार अभ्यास द्वारा निपुणता प्राप्त होना भावना संस्कार ही होता है ।

(३) स्थिति-स्थापक–इसके प्रभाव से छोड़ी हुई स्थिति पुनः उत्पन्न हो जाती है । इसे लचीलापन (फ्लैक्सिविलटी) भी कह सकते हैं । क्योंकि जैसे रबड़ खींच कर छोड़ देने पर पूर्व स्थिति में आ जाती है अथवा किसी हरे वृक्ष की डाली झुकाकर छोड़ देने पर पुनः उसी स्थिति में हो जाती है, वैसे ही यह संस्कार भी पूर्व स्थिति को प्राप्त करा देता है ।

इस प्रकार संस्कार कर्मों का उद्देश्य वेग, भावना और स्थिति स्थापक तीनों प्रकार के गुणों को प्राप्त कराता है । औषधि निर्माण में भी संस्कार शब्द का प्रयोग इसी रूप में किया जाता है कि उसमें आगामी उत्कर्ष का गुण तो यथावत् रहे ही, संस्कार के कारण उनमें और भी वृद्धि हो जाये, जिससे कि उनसे भविष्य में लाभ उठाया जा सके ।

आयुर्वेदिक औषधियों में भावना-संस्कार भी किया जाता है। उनमें जितनी ही अधिक भावनाएँ दी जाती हैं, उतना ही गुण बढ़ता जाता है । स्थिति-स्थापक संस्कार उन रस-भस्म आदि को पुनर्जीवन करने के रूप में होता है । इस प्रकार संस्कारों से उत्कर्ष को प्राप्त हुई औषधियाँ अपना अभूतपूर्व प्रभाव प्रदर्शित करती हैं ।

संस्कारों का सीधा प्रभाव मनुष्य के मन पर होता है । तत्त्व-वेत्ता आचार्यों की यह देन मनुष्य के मन, कर्म और वाणी पर तो

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अधिकार करती ही है, सूक्ष्म अवचेतन अन्तःकरण भी उससे इतना प्रभावित हो जाता है कि मनुष्य सभी दृष्टियों से अपने उत्कर्षमय जीवन जीने में सफल हो जाता है । क्योंकि उसे अपने इन-इन संस्कारों की सदा याद रहती है, कभी भूलता भी है तो पुनः याद आ जाती है ।

संस्कार में ही विद्या या ज्ञान निहित है । वही ज्ञान स्मृति का रूप ले लेता है (संस्कारजन्य ज्ञान स्मृतिः–तर्क संग्रह) मनु स्मृतिकार ने भी 'कार्यः शरीर संस्कारः पावनः प्रेत्य चेह च' कहकर स्पष्ट कर दिया है कि 'देह का संस्कार इहलोक परलोक दोनों में पवित्र करता है ।

भारतीय संस्कृति की उच्चता का कारण हमारी संस्कार पद्धति ही है । क्योंकि इसमें भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही प्रकार के उत्थान की भावना निहित है । उसके किये जाने में जिन मन्त्र का सस्वर उच्चारण होता है, उसकी ध्वनि तरंगें जब यज्ञाग्नि की ऊष्मा के साथ मिलकर वातावरण को उद्वेलित करती हैं, तब उनका अलौकिक प्रभाव संस्कार कर्म के समय उपस्थित सभी व्यक्तियों के मन और प्राण पर पड़ता है । फिर उस व्यक्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का तो कहना ही क्या है, जिसका संस्कार हो रहा हो।

संस्कारों का आरम्भ -

संस्कारों का आरम्भ गर्भाधान से ही हो जाता है । 'निषेकादि श्मशान्तास्तेषां वै मन्त्रतः क्रिया' (याज्ञवल्क्य) अर्थात् गर्भाधान से श्मशान में अन्त्येष्टि पर्यन्त की सभी क्रियाएँ वेदमन्त्रों द्वारा ही सम्पन्न की जाती हैं ।' जब तक संस्कार नहीं होते तब तक मनुष्यों की शूद्र संज्ञा होती है, यथा 'तावद्वेदेन जायन्ते द्विजा ज्ञेयास्ततः परम्' (शंख स्मृति)।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस प्रकार संस्कार कर्मों के द्वारा संस्कारित हुआ मनुष्य अपने व्यक्तिगत जीवन और पारिवारिक जीवन को भी सुविकसित और उत्कर्षित बनाने में समर्थ होता है । यह क्रियाएँ धर्मसम्मत ही नहीं, मनोवैज्ञानिक आधार पर भी अनुमोदित है । वस्तुतः यह कोई सामान्य प्रक्रिया नहीं, वरन् ऐसी प्रक्रिया है जो मनुष्य को सामान्य स्तर से उठाकर उच्च स्तर पर पहुँचाती हैं और उसमें दिव्यता का आविर्भाव कर देती है ।

संस्कारों के अवसर पर उत्सव मनाने का प्रचलन भी मनोवैज्ञानिक आधार पर ही हुआ । हमारे आचार्यों ने जब-जब, जिन-जिन कार्यों के करने की व्यवस्था दी तब-तब उन-उन कार्यों में भव्यता लाने का निर्देश दिया । उसका कारण यही था कि प्रत्येक कार्य-विधि मनुष्यों के अन्तः स्थल तक का स्पर्श करने में सफल रहे और दूसरे लोग भी उससे प्रेरणा लें तथा उसके प्रभाव से किसी न किसी अंश में लाभ भी उठा सकें ।

किसी भी संस्कार के समय स्वजन-सम्बन्धी तो एकत्र होते ही हैं, इष्ट मित्र और दृढ़ परिचय वाले स्त्री-पुरूष भी भाग लेते हैं । छोटा सा-कार्य भी एक छोटे-मोटे उत्सव का रूप धारण कर लेता है । उस समय हर्षोल्लास का जो वातावरण होता हैं, वह पारिवारिक एकता और प्रेम को भी सुदृढ़ करने में सहायक रहता है । उस समय आयोजन में भाग लेने के लिए आये हुए सभी स्त्री पुरुष कर्मकाण्डी पुरोहित के वेद मन्त्रोच्चार तथा हव्य सामग्री के सार रूप यज्ञ धूम आदि की उपलब्धियों से अनुकूल रूप से प्रभावित होते हैं । तात्पर्य यह है कि उपस्थित व्यक्तियों के भी शरीर, मन, अन्तःकरण और आत्मा पर भी संस्कार कर्मों का प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता और वह प्रभाव सभी पर अमिट छाप डाल देता है ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यही कारण था कि प्राचीन ऋषि-मुनि छोटे से छोटे कार्य को संस्कार कर्म से आरम्भ करने की व्यवस्था देते थे। यहाँ तक की कोई यात्रा, सन्धि-वार्ता, झगड़े-झंझट का आरम्भ भी संस्कार कर्म से ही किया जाता था। लोग भोजन करते तो भी देवार्पण आदि के मन्त्रों द्वारा अन्न का समर्पण करने के पश्चात् ही ग्रास तोड़ते थे। वह एक प्रकार का संस्कार ही होता था।

आज भी बहुत-से व्यक्ति किसी भी कार्य का आरम्भ ईश्वर का स्मरण करके करते हैं। अनेक विद्वान् भोजन से पूर्व अन्न का समर्पण नित्य नियमित रूप से करना अपना कर्त्तव्य मानते हैं। परन्तु, समूचे जन-समाज को भौतिकता की पराकाष्ठा पर पहुँचते हुए इस युग में बात-बात पर संस्कार की बात भी सोचना कठिन है। क्योंकि आज के मानव के पास उतना समय ही कहाँ है?

वस्तुतः समय की कमी तो बहुत पहिले ही अनुभव में आ गई थी, इसलिए आचार्यों ने संस्कारों की बड़ी संख्या घटाकर केवल सोलह कर दी। यद्यपि आज के युग में अनेक व्यक्ति उन सोलह संस्कार को भी करने में असमर्थ रहते हैं और कुछ थोड़े से गिने-चुने संस्कारों में ही सन्तोष कर लेते हैं। उनमें से प्रमुख संस्कार जातकर्म, मुण्डन, विवाह, गर्भाधान, अन्त्येष्टि प्रभृति संस्कार तो प्रायः सभी में होते ही हैं।

फिर भी अधिकांश परिवार सोलह संस्कारों में आस्था रखते हैं और किसी न किसी रूप में उन्हें करते ही हैं। वे चाहे उन संस्कारों के महत्त्व और उद्देश्य से अनभिज्ञ ही क्यों न हों, परम्परा का निर्वाह करने के लिए तो करते ही हैं।

यह मानी हुई बात है कि संस्कारों से लाभ भी होते हैं। अप्रत्यक्ष लाभों की बात तो यह कहकर टाली जा सकती है कि कौन जाने उसका कुछ प्रभाव हुआ या नहीं, परन्तु प्रत्यक्ष लाभों

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

को तो दृष्टि से ओझल नहीं कर सकते । विवाह संस्कारों के द्वारा असंख्य पत्नियों और पतियों का परिणय-सूत्र में बँधना उनके आजीवन साथ का कारण होता है । विवाह-संस्कारों के समय की गई प्रतिज्ञाएँ और समाज की उसके प्रति अटूट मान्यताएँ पति-पत्नी के मन पर अपनी गहरी छाप छोड़ती हैं । इस कारण गार्हस्थ्य जीवन में अनवन होने पर भी पति-पत्नी उस बन्धन में जकड़े ही रहते हैं । अनेक स्त्रियां अपने पतियों के अत्याचारों से पीड़ित होकर भी विच्छेद की बात नहीं सोचती, यह विवाह-संस्कार के भी प्रभाव का ही परिणाम हो सकता है ।

यद्यपि यह कहा जा सकता है कि वर्तमान-काल में विवाह-विच्छेद की अनेक घटनाएँ होती देखी जाती हैं, उन पर विवाह संस्कार की अमिट छाप क्यों नहीं पड़ती ? इसका उत्तर स्पष्ट है कि इतने वृहद् समाज में विवाह-विच्छेद की घटनाओं का नगण्य रूप में होना कुछ अर्थ नहीं रखता । आज भी ऐसे करोड़ों व्यक्ति होंगे जो विवाह-विच्छेद की बात कभी स्वप्न में भी नहीं सोच सकते। यदि उनसे कोई कहे भी तो वे उसे अपमान समझकर तिलमिला जाते हैं ।

इस प्रकार अन्य संस्कारों के विषय में भी है। अन्त्येष्टि संस्कार को ही लीजिए, उसका विधिवत् सम्पन्न किया जाना बहुत आवश्यक होता है । भारतीय मान्यता जहाँ पुनर्जन्म की अनिवार्यता प्रदर्शित करती है, वहाँ सद्गति को भी आवश्यक समझती है । इसीलिए हमारे आचार्यों ने अन्त्येष्टि संस्कार को भी प्रमुखता दी । इसमें हर्षोत्सव के समान उल्लास का वातावरण न होने पर भी, आत्मीयता, प्रेम, सामाजिक बन्धन आदि का दिग्दर्शन होता है । आने वाले व्यक्ति संस्कार के कार्यों में उपस्थित होकर शोकाकुल परिवारी को धैर्य बँधाने का बहुत उपयोगी कार्य करते हैं ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

संस्कारों का सामाजिक महत्त्व–

इस प्रकार संस्कारों का पारिवारिक महत्त्व ही नहीं, सामाजिक महत्त्व भी है । जहां संस्कारित मनुष्य की आत्मा प्रभावित होती है, वहाँ वे संस्कार बहुत बार प्रमाण भी बन जाते हैं । अनेक विवादों में इन संस्कारों को प्रमाण रूप में प्रस्तुत किया जाता है और उस समय भी उनकी उपयोगिता स्पष्ट सिद्ध होती है ।

समयानुसार संस्कारों में जो परिष्कार होते रहे, वे उन-उन देश-कालों की उपयोगिताओं के परिणाम से ही हुए । यह आवश्यक नहीं कि इन सब क्रियाओं को समय की आवश्यकता के अनुसार बदला न जा सके । न जानें कब से उनमें परिवर्तन परिवर्द्धन, संशोधन या काट-छाँट होती चली आ रही हैं । सभी ऋषियों ने अपने-अपने मत से उनमें सुधार और परिवर्तन किये हैं किन्तु सभी संस्कारों के मूल रूपों में समानता बनी रही । इसलिए वर्तमान काल में भी विधि में परिवर्तन होने पर भी उनका मूल रूप यथावत् बना हुआ है ।

सभी क्रियाएँ वेद मंत्रों द्वारा सम्पादित की जाती हैं । उन मंत्रों में जो शक्ति भरी पड़ी है, उसका लाभ इन संस्कारों के द्वारा ही उठाया जा सकता है किन्तु समय की आवश्यकताओं को भी नकारा नहीं जा सकता । जहाँ वर्तमानकाल में मनुष्य संस्कारों में विश्वास रखते हैं वहाँ संस्कार यजमान की स्थिति और कार्यावकाश की दृष्टि से किये जाँय।

संस्कारों की प्रक्रियायें चार स्तरों में विभाजित की जा सकती है । वे स्तर हैं (१) संस्कार कार्य में समय जितना सम्भव हो कम लगे, (२) धन का व्यय कम हो तथा अपव्यय बिल्कुल न होने पाये, (३) संस्कार के विधि-विधान में सरलता रहे, जिससे कि प्रत्येक व्यक्ति उसे सुगम रूप से कर सके, और (४) सभी संस्कारों में उस

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

संस्कार से सम्बन्धित शिक्षा का समावेश तो रहे ही, साथ ही जीवनोपयोगी या आत्म प्रबोधक अन्य शिक्षायें भी उसमें निहित रहें।

यदि हमारी उक्त धारणा पर ध्यान दिया जाय और उसके अनुसार कर्म कराये जाँय तो निश्चय ही संस्कार कर्त्ता के लिए सम्बन्धित संस्कार अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। बहुत से व्यक्तियों के पास समय की कमी रहती है तो बहुत-सों के पास धन की कमी। कुछ लोग संस्कारों में होने वाली कठिनाइयों से घबराकर ही कर्म करने में अधिक दिलचस्पी नहीं लेते। इसलिए इन सब बातों पर ध्यान देने से लोगों की अभिरुचि आज भी संस्कारों के प्रति यथावत् बनी रह सकती है।

❊❊❊

संस्कार और उनके साधन

षोडशोपचार-

देवी देवताओं के पूजन में १६ विधान होते हैं, जिन्हें षोडशोपचार कहते हैं –(१) आवाहन, (२) आसन (३) पाद्य (४) अर्घ्य, (५) आचमन, (६) स्नान, (७) वस्त्र, (८) उपवीत, (९) गन्ध, (१०) पुष्प, (११) धूप (१२) दीप, (१३) नैवेद्य, (१४) ताम्बूल, (१५) प्रदक्षिणा, (१६) पुष्पांजलि। इनका प्रयोग निम्न प्रकार होता है –

आवाहन– आराध्य अभीष्ट देवी-देवता को बुलाने के प्रतीक रूप में यह कार्य होता है। देवता के स्वरूप का ध्यान और आगमन की प्रार्थना करते हुए हाथ में अक्षत लेकर मन्त्र की समाप्ति पर प्रतिष्ठा के लिए नियत स्थान पर छोड़ते हैं।

आसन–अभीष्ट देवी-देवता का आगमन मान कर उनकी प्रतिष्ठा के उद्देश्य से आसन समर्पित करते हैं। आसन की

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भावना से कुशा, दूब या पुष्प रखते हैं ।

पाद्य—इसे समर्पित करते हुए देवता के चरण धुलाने की भावना की जाती है । इसके लिये एक पात्र में दूर्बा और चन्दन युक्त जल रहता है । पाद्य मन्त्र की समाप्ति पर यही जल छोड़ते हैं।

अर्घ्य—आगत देवता के स्वागत में अर्घ्य देते हैं । एक पात्र में चन्दन, अक्षत, सुपारी और पुष्प युक्त जल रखते हैं तथा मन्त्र के साथ समर्पण करते हैं ।

आचमन—एक पात्र में गंगा या यमुना का जल रखें । अभाव में अन्य नदी, कूप आदि का शुद्ध जल रखा जाय । इसे आचमनी से या आम्र-पत्र अथवा ताम्बूल से छोड़े ।

स्नान—स्नान का मन्त्र पढ़कर शुद्ध जल छोड़ते हुए स्नान कराने की भावना करें । यदि मूर्ति हो तो उसे स्नान कराया जाय।

वस्त्र—मूर्ति हो तो मंत्रोच्चारण पूर्वक नवीन वस्त्र धारण करायें अथवा वस्त्र पहिनाने की भावना करता हुआ वस्त्र या कलाया नियत स्थान या मूर्ति पर चढ़ावे ।

उपवीत—आराध्य को जनेऊ समर्पण करे अथवा शुद्ध कलाया उपवीत की भावना करता हुआ अर्पण करें ।

गन्ध—रोली अथवा चन्दन का प्रयोग करें । यह द्रव्य गन्ध समर्पण की भावना से चढ़ावे ।

पुष्प—आराध्य देवता पर भावना रूप से सुन्दर पुष्प समर्पित करें । किन्तु कुछ पुष्प ऐसे हैं जो देव-विशेष के विरुद्ध माने जाते हैं। जैसे कि शिवजी पर केतकी पुष्प न चढ़ावे तथा विष्णु पर आक का पुष्प निषिद्ध है, जबकि शिवजी आक के पुष्प से प्रसन्न रहते हैं।

धूप—देवता के समर्पणार्थ धूप बाजार में उपलब्ध रहती है । अथवा दोनों चन्दन, खस, अगर, नागरमोथा, नखी, कूठ, गूगल,

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गोला (नारियल), किशमिश आदि को कूटकर घी के साथ मिलाकर काम में लावें ।

दीप–मिट्टी या धातु के दीपक में घृत और बत्ती डालकर जलावें । इसे पूजनीय देवता के दाँयी ओर रखें ।

नैवेद्य–देवता को प्रिय खाद्य समर्पण कर भोग लगावे। खाद्य में मिष्ठान, पेड़ा बरफी, लड्डू मिश्री बताशा आदि कुछ भी हो सकता है । भगवान् विष्णु को दूध की खीर, गणेश जी को बेसनी मोदक, हनुमानजी को बूँदी का लड्डू देवी को हलुआ अधिक प्रिय माना जाता है। भोग-समर्पण के पश्चात् आचमनी से जल भी तीन बार समर्पित करना चाहिए ।

ताम्बूल–भोग के पश्चात् देवता की मुख शुद्धि के उद्देश्य से ताम्बूल (पान) का समर्पण किया जाता है । उसके लिए पान पर सुपारी, लौंग, इलाइची आदि रखकर देना अधिक प्रशस्त है ।

प्रदक्षिणा–देवता की परिक्रमा करना उनके प्रति अपना समर्पण भाव व्यक्त करना है । देवता को दाँयी ओर रख के उनके चारों ओर घूमना ही प्रदक्षिणा करना है ।

पुष्पांजलि–पूजा के अन्त में पुष्पांजलि समपित की जाती है । देवता के समक्ष विनीत भाव से खड़े होकर उनकी कृपा-याचना करते हुए अंजलि में पुष्प भर कर समर्पित करने चाहिए ।

उक्त उपचार साधनों को अपनी आर्थिक स्थिति आदि के अनुसार न्यूनाधिक भी कर सकते हैं । समय पर जो वस्तु उपलब्ध हो, वह समर्पित की जा सकती है । जिस-जिस वस्तु का अभाव हो उस-उस की भावना करते हुए या सभी उपचारों की भावना करते हुए मानसिक रूप से भी समर्पण किया जा सकता है ।

पूजन में व्यवहृत द्रव्यों के विशेष नाम–

पंचगव्य–गोमूत्र, गोमय (गोबर), गोदुग्ध, गोदधि और गोघृत

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

को पंचगव्य कहते हैं ।

मधुत्रय–घृत, दुग्ध और मधु के मिश्रण को मधुत्रय कहते हैं ।

पंचामृत–दूध, दही, घृत, मधु और शर्करा का मिश्रण पंचामृत कहलाता है ।

पंचपल्लव–आम, वट, पीपल, गूलर और पीपर के पत्ते पंचपल्लव कहे गये हैं ।

सर्व गन्ध– कर्पूर, चन्दन, कस्तूरी, और केशर सम भाग को सर्व गन्ध कहते है ।

सर्वौषधि–कूट, जटामांसी, हल्दी, दारु हल्दी, मोरबेल, चन्दन, वच, शिलाजीत, चम्पक, और मौथा सर्वौषधि हैं ।

सप्त धातु– सोना, चाँदी, ताम्र, पीतल, लौह, यशद, और सीसा सप्त धातु हैं ।

पंचरत्न–सोना, वज्रमणि, नीलमणि, पद्मराग और मोती पंचरत्न हैं ।

अथवा माणिक्य, वज्रमणि, वैदूर्य, पुष्पराग और इन्द्रनीलक को पंचरत्न कहते हैं ।

दशांग धूप–कूट ६ भाग, गुड़ २ भाग, लाक्षा ३ भाग, नखी ५ भाग, हरड़ १, राल १, जावित्री , जायफल, लवंग ३–३ भाग, शिलाजीत १ भाग नागरमोथा ४ भाग तथा अगर १ भाग कूट कर धूप बनावे ।

सप्त धान्य– जौ, गेहूँ, तिल, कॉंगनी, मूँग, श्यामाक और चना सप्त धान्य या सतनजा कहे जाते हैं ।

सप्तमृतिका– घुड़शाला, गजशाला, बिल, चौराहा, गहबर (गढ़ा जलाशय) राजद्वार और गोशाला की मिट्टी सप्तमृत्तिका कही जाती है ।

कलश– स्वर्ण, रजत, ताम्र अथवा मिट्टी का होना चाहिए ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यह सुन्दर शोभनीय हो । यह यजमान की आर्थिक स्थिति पर निर्भर है कि घट किस धातु या मिट्टी का हो ।

अभाव द्रव्य–जिस वस्तु का अभाव हो उसके समान गुण धर्म की अन्य वस्तु का प्रयोग किया जा सकता है । जौ के अभाव में गेहूँ, ब्रीहि के अभाव में शालिधान, कुशों के अभाव में कांस या दूब (दूर्वा) लिया जाय । जहाँ होम के लिए किसी पदार्थ का वर्णन न हो वहाँ केवल घृत से काम लिया जाय ।

नैवेद्य का कार्य बताशे या इलायचीदाने से ले सकते हैं । अथवा मिश्री पिसी हुई या गुड़ काम में लें । किशमिश भी नैवेद्य में प्रयुक्त हो सकती है ।

घृत के अभाव में दही या दूध लें । दही के अभाव में भी दूध ले सकते हैं । शहद के स्थान पर गुड़ का प्रयोग कर लिया जाय । घृत के अभाव में तिल का या सरसों का तेल प्रयोग करें ।

अग्नि नाम–विभिन्न कर्मों में अग्नियों के नाम भी उन्हीं के अनुरूप होता है, जैसे गर्भाधान संस्कार में प्रयुक्त अग्नि का नाम मारुत होता है। पुंसवन में पवमान नामक अग्नि रहते हैं । सीमन्तोन्नयन में मंगल, जातकर्म में प्रबल, नामकरण में पार्थिव, अन्नप्राशन में शुचि, चूड़ाकर्म में शुचि, उपनयन में समुद्भव, केशान्त में सूर्य, विवाह में योजन, आपसथ्याधान में द्विज, प्रायश्चित में विट, पाकयज्ञों में पावक, पितृयज्ञों में कव्य वाहन, शांतिकर्म में वरदायक, पुष्टिकर्मों में बलवर्द्धन, अन्त्येष्टि में क्रव्याद, पूर्णाहुति में मृड, अभिचार में क्रोधाग्नि, वशीकरण में पावक, वनदाह में दूषक, उदर में वैश्वानर, वैश्वदेव होम में रुक्म, लक्ष होम में वह्नि कोटि होम में हुताशन, समुद्र में बड़वानल अग्निहोत्र में गार्हपत्य, आहवनीय और दक्षिणाग्नि नाम होता है । सभी कर्मों में सम्बन्धित अग्नि का नाम जान कर ही तदनुरूप कार्य करना चाहिए ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विभिन्न कर्मों के देवता–

गर्भाधान कर्म का देवता ब्रह्मा है । पुंसवन कर्म का प्रजापति, सीमन्तोन्नयन का धाता, जातकर्म में सविता, नामकरण में प्रजापति, निष्क्रमण और अन्नप्राशन में सविता, चूड़ाकर्म और केशान्त कर्म में प्रजापति, उपनयन संस्कार में इन्द्र वेदारम्भ में अपावक, पवित्र कर्मों में श्रद्धा, उत्सर्ग में सुश्रवा, उपाकर्म में सविता तथा विवाह संस्कार का देवता प्रजापति है । गर्भाधानादि के अंग स्वरूप नांदी श्राद्ध में कृतुदक्ष नामक विश्वदेव तथा अन्यत्र सत्यवसु नामक विश्वेदेव देवता होते हैं ।

औपासन होम के देवता अग्नि, सूर्य और प्रजापति (तीनों) हैं । स्थालीपाक कर्म देवता अग्निगर्भ समझिये सभी कर्मों के आरम्भ में ओंकार का उच्चारण करना श्रेयस्कर होता है ।

मंगल स्नान–

संस्कारों में मंगल स्नान या मंगल द्रव्यों से स्नान का निर्देश है। सभी मांगलिक कर्मों में सर्वोषधि और सर्वगन्ध के चूर्ण युक्त तिल और आमले पीसकर मिलावे और उससे शरीर पर उबटन करे । तदुपरान्त चमेली आदि के सुगन्धित तेल की शरीर में मालिश करके कर्मकाण्डी ब्राह्मणों के साथ मंगल स्नान करना चाहिए ।

वस्त्र धारण–

स्नान के बाद भीगे वस्त्र पहिने हुए स्थल स्थान में अथवा स्नान के बाद सूखे वस्त्र पहिन कर जलाशय में संन्ध्या जप होम आदि कर्म नहीं करे, क्योंकि वैसा कर्म फलहीन होता है। संध्या, जप, होम आचमन, स्वस्तिवाचन तथा देव पूजनादि कर्म एक वस्त्र पहिने हुए न करें । दो वस्त्र धारण करके करें । यदि धोती पहिने तो नाभि पर और नाभि के बांयी ओर तथा एक पीठ पर, इस प्रकार

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तीन लपेटे लगाने से ब्राह्मण कर्म करने के योग्य होता है । शौच जाने, कमर में लपेटने तथा मूत्र और मैथुन के समय जो वस्त्र काम में लाया गया हो, वह संध्या, जप, देव-पूजन तथा होमादि सभी कार्यों में निषिद्ध है । श्रौत और स्मार्त कर्मों में दो जनेऊ धारण करे । यदि अंगोछा न हो तो उसके स्थान पर तीसरा जनेऊ धारण कर लें ।

दक्षिणा–

षोडशोपचार आदि से देव-पूजन अथवा यज्ञादि कर्म के समाप्त होने पर ब्राह्मणों को दक्षिणा देनी चाहिए । दक्षिणा का कोई नियत परिमाण नहीं है । जिसकी जैसी श्रद्धा, हो वैसी ही दक्षिणा प्रशस्त होगी । यह पैसे, रुपया, चाँदी, स्वर्ण, रत्न, आभूषण, अन्न, गवादि पशु या भूमि आदि किसी भी रूप में हो सकती है ।

ब्राह्मण–

संस्कार-कर्म कराने वाले ब्राह्मण, आचार्य, ब्रह्मा, ऋत्विज्, अध्वर्यु आदि विद्वान् और जितेन्द्रिय हो । उनका उच्चारण शुद्ध हो तथा श्लोक, मन्त्रादि के अर्थों से अवगत हों । शास्त्र के अनुसार–

काम क्रोध विहीनश्च पाखण्ड स्पर्श वर्जितः ।
जितेन्द्रियः सत्यवादी च सर्व कर्म प्रशस्यते ।।

अर्थात्–काम, क्रोध, पाखण्ड आदि से रहित, जितेन्द्रिय और सत्यवादी ब्राह्मण सभी कर्मों में श्रेष्ठ होता है ।

ब्राह्मण भोजन–

सभी कर्मों में ब्राह्मण भोजन कराना अधिक सुफलता देने वाला है । यजमान अपनी श्रद्धा अथवा स्थिति के अनुसार संख्या में ब्राह्मणों को भोजन करावे । यद्यपि आचार्यों ने विभिन्न कर्मों में

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विभिन्न संख्या में भोजन कराने की बात कही है' जैसे कि गर्भाधान संस्कार में १०, उपनयन में ५०, विवाह में १००, आवसथ्याधान में ३३, श्रौताधान में १०० से अधिक, आग्रयण नवान्नेष्टि में १० तथा प्रायश्चित में ५ ब्राह्मणों को भोजन कराना कहा है । मरणोत्तर संस्कार (तेरही) में कम से कम बारह या तेरह ब्राह्मणों को भोजन कराया जाता है । इस प्रकार अर्थ की सुविधा हो तो जितनी अधिक संख्या में करा सके उतना ही श्रेयस्कर मानते हैं किन्तु अर्थाभाव में यथाशक्ति कार्य करना उचित है । यदि भोजन कराने की क्षमता न हो तो एक-दो सीधे (आटा, दाल, घृत आदि) दें या यथास्थिति करें ।

ब्राह्मणों को भोजन कराने के पश्चात् रोली या चन्दन से उनका तिलक करके ताम्बूल और यथाशक्ति दक्षिणा भी देनी चाहिए । तभी ब्राह्मण भोजन की सम्पन्नता और सफलता सिद्ध होती है ।

पूजन-सामग्री

पूजन के लिए सामग्री का चयन करना आवश्यक होता है । यदि पहले एकत्र कर ली जाय तो समय पर किसी वस्तु का अभाव नहीं खटकता । अन्यथा कभी-कभी तो समय पर हो असंचित आवश्यक वस्तु के लिए भागना पड़ता है । इसीलिए यहाँ उनका वर्णन किया जाता है –

सामान्य सामिग्री–

निम्न सामग्री प्रायः कर्मों में आवश्यक होती है । इसके बिना कार्य चलना कठिन होता है –

रोली, चावल, धूप, दीपक, बताशे, पुष्प और जल । यह सात वस्तुएँ हों तो साधारण पूजन में इनसे काम चल सकता है । किन्तु

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

होमादि में या षोडशोपचार युक्त पूजन में अधिक सामग्री आवश्यक होती हैं जैसे रोली, चावल, पान, सुपारी, कलावा, शहद, घृत, दही, दूध, पवित्र जल, (गंगाजल आदि), लाल वस्त्र, बताशे, मेवा, पुष्प, पुष्पमाला, कलश, पंचपल्लव, दूर्वा, कुशा, धनियाँ, पंचरंग, तेल-फुलेल-इत्र, रुई सर्वौषधि, सप्त मृत्तिका, समिधा, धोती, अँगोछा, माला, कुशा के आसन, जनेऊ, वेदी के लिए रेती, मिट्टी, गोबर, चौकी, पट्टा, आचमनीय, स्रुवा घृतपात्र, थाली, कटोरी, लोटा तथा हव्य द्रव्य (तिल, जौ, चावल, घृत, शक्कर, मेवा, सुगन्धित द्रव्य आदि) यदि देवी का पूजन न हो तो ज्योति के लिए आरने उपले और लौंग के जोड़े आदि ।

सर्वतोभद्रमण्डप–

साबुत मूँग, उड़द, चावल, चना, मसूर की दाल, चौकी, श्वेत वस्त्र, ढक्कनदार ताम्र कलश, प्रतिमा, धोती, अँगोछा आदि ।

नान्दीश्राद्ध–

आमले, अदरक, दाख, दही, गाय का दूध, मूँग, जौ, चावल, तथा स्वर्ण की दक्षिणा आदि ।

गर्भाधान संस्कार–

पुष्पमाला, गेहूँ, जौ, नारियल, दक्षिणा आदि ।

पुंसवन संस्कार–

वट वृक्ष की जटा, वट की शाखा के अंकुर, कुश, सोमलता अथवा गिलोय या ब्राह्मी बूटी आदि ।

सीमन्तोन्नयन संस्कार–

पीपल की खूंटी १, श्वेत सेही का काँटा तीन स्थान पर १, पीले सूत से लिपटा हुआ तकुआ, दाभ की पिंजुली (तेरह–तेरह) कुश की ३, गूलर की शाखा जिसमें दो फल लगें हों, तिल, सरसों, मूंग, भद्रपीठ तथा दो वीणावादक आदि ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जातकर्म संस्कार–

सोने या चाँदी (अथवा ताम्र) की शलाका, कलश, वेदी, सरसों, चावल के कण, शरद और गो घृत ।

नामकरण संस्कार–

सोने, चाँदी या ताँबे की शलाका, कांसे की थाली तथा चावल आदि ।

निष्क्रमण संस्कार–

मंडलार्थ रंग, ढेरी के लिए गेहूँ, ब्राह्मणों के लिए दक्षिणा आदि ।

अन्नप्राशन संस्कार–

बालक को चटाने के लिए खीर अथवा भात या अन्य प्रकार के भोज्य द्रव्य आदि ।

चूड़ाकर्म संस्कार–

ठण्डा और गर्म पानी, दूध दही, मक्खन, सेही का काँटा, एक साथ तीन-तीन बांधी हुई २७ कुशाएँ, बैल का गोबर, लौहताम्र मिश्रित छुरा, दक्षिणा तथा नाई आदि ।

कर्णबेध संस्कार–

स्वर्ण-रजत युक्त सुई, छेद में डालने की सींक, सोने या चाँदी की लोंग अथवा बाली, मिठाई, खिलौने आदि ।

उपनयन संस्कार–

मृगचर्म, दण्ड कौपीन, खड़ाऊँ, झोली, अँगोछे उपवीत (जनेऊ), पात्र, समिधा ढाक के पत्ते, मूँज की रस्सी, मिट्टी के कुल्ले, सकोरे, चावलों का पूर्ण पात्र, रेती तथा लिखने की पट्टी आदि ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वेदाध्ययन संस्कार–

वेद ग्रन्थ, हवन सामग्री तथा घृत पात्रादि ।

समावर्तन संस्कार–

अञ्जन, आभूषण, जनेऊ, पुष्पमाला, पगड़ी या टोपी, जूता, छड़ी छत्र, रोली, चावल, चन्दन, दाँतुन, दही, तिल अँगोछा, जल से भरे ८ कुल्ले या सकोरे, २५६ मुट्ठी चावल, दक्षिणा आदि ।

विवाह संस्कार –

धान की खील, शहद, घृत, दही, पुष्प, पुष्पमाला, कलाया शिला, सकोरा, विष्टर, स्वर्णअंगूठी, पीढा, सूप, कटोरी, आसन, स्थाली, शमीपत्र, आम के पत्ते, पंच पल्लव, कलश, वेदी, पान, सुपारी, मिष्ठान, हल्दी, पलाश की समिधाएँ, आटा आसन, वर-कन्या के वस्त्र, छायापात्र मण्डप इत्यादि ।

आवसथ्याधान और श्रौताधान संस्कार–

अग्नि लाने के लिए खर्पर, वेदी, गन्ध, पुष्प, आज्य स्थाली, चरुस्थाली, समिधाएँ अग्नि-मंथन के लिए अरणि, होम सामग्री आदि ।

अन्त्येष्टि और मरणोत्तर संस्कार–

अर्थी का समान, पिण्ड के लिए तिल, शर्करा, घृत और जौ का आटा, कुश, चन्दन, गन्ध, घृत, जल घट, शय्यादान, वस्त्रदान आदि का सामान, हवनसामग्री, तर्पणार्थ कुश, तिल, जौ पंचवलि के लिए खाद्य सामग्री, तेरही में ब्राह्मण भोजन की सामग्री, शय्यादान, वस्त्र दान, पात्र दान, छाता, जूता, छड़ी, चारपाई आदि । तथा कर्म कर्त्ता के लिए वस्त्र आदि ।

संस्कार विशेष की दृष्टि से विशेष सामग्री का यहाँ वर्णन किया गया है, साथ ही ऊपर वर्णित सामान्य सामग्री भी यथा आवश्यकता प्रयोग में लाई जाती है ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सामान्य पूजन-विधान

मंत्रादि की समानता-

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

सब प्रकार के पूजन अनुष्ठान, यज्ञ, मंगल कार्य तथा संस्कारादि में शुद्धि, अह्वान, स्वस्तिवाचन, पुण्याह वाचन, मन्त्रोच्चारण तथा मन्त्रादि, समान ही प्रयोग में लाये जाते हैं ।

कर्मकर्त्ता शौचादि से निवृत्त होकर दाँतुन-कुल्ला आदि करे और फिर शरीर की शुद्धि के लिए स्नान करे । स्नान करते समय तीर्थों में स्नान करने की भावना करना चाहिए –

पुष्कराद्यानि तीर्थानि गंगाद्याः सरितस्यथा ।
आगच्छुन्तु पवित्राणि स्नानकाले सदा मम ।
विष्णु पादाब्जसम्भूते गंगे त्रिपथगामिनी ।
धर्मद्रवेति विख्याते पापं में हर जाह्नवी ।।
यन्मया दूषितं तोयं मलैः शरीर सम्भ्वैः।
तस्य पापस्य शुद्धयर्थ यक्ष्माणं तर्पयाम्यहम् ।।

इसके पश्चात् शुद्ध वस्त्र धारण कर तथा मस्तक पर चन्दन या रोली आदि से तिलक लगाकर कुशादि के पवित्र आसन पर पूर्व की ओर मुख करके बैठ जाँय और अनुष्ठान कर्म से पूर्व षट्कर्म करे–(१) पवित्री करण, (२) आचमन, (३) शिखाबन्धन, (४) प्राणायाम, (५) न्यास और (६) पृथिवी पूजन । इनकी विधि इस प्रकार है–

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पवित्रीकरण–

बाँये हाथ की हथेली में जल लेकर दाँये हाथ से ढकें और निम्न मन्त्र का उच्चारण करें–

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतो ऽपिवा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

मन्त्रोच्चारण के पश्चात् दांये हाथ की अँगुलियों से अपने शरीर पर छिड़कना चाहिए ।

आचमन–

मन वाणी और कर्म की शुद्धि के लिए यह कर्म आवश्यक है । इसके लिए आचमनी (चम्मच) में तीन बार जल भर-भर कर मुख में डालते हैं । आचमनी के अभाव में दांये हाथ की हथेली में जल लेकर आचमन करते हुए निम्न मन्त्रों का उच्चारण किया जाय–

ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ।। १।।
ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा ।। २।।
ॐ सत्यं यशः श्रीर्मयि श्री श्रयतां स्वाहा ।। ३।।

उक्त मन्त्रों के द्वारा आचमन करने के पश्चात् उच्छिष्ट हाथों को धो लें ।

शिखा-बन्धन–

शिखा-बन्धन प्रत्येक द्विज के लिए आवश्यक कर्म है । इसके लिए शिखा (चोटी) को संवार कर उसमें गाँठ लगाते हैं । जिनके सिर में चोटी न हो, वे उस स्थान को हाथ से स्पर्श कर लें । शिखा बन्धन या स्पर्श के समय निम्न मन्त्र बोलें ।

चिद् रूपिणि महामाये दिप्येतेजः समन्विते ।
तिष्ठ देवि शिखा मध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्राणायाम–

शरीरस्थ पंचवायु में पंच उपवायु की शुद्धि और दिव्य प्राण की प्राप्ति के उद्देश्य से प्राणायाम किया जाता है इसमें पूरक (श्वांस खीचने) कुम्भक (भीतर रोकने) तथा रेचक (श्वास बाहर निकालने) की क्रियाएँ की जाती हैं । तीनों क्रियाओं के अभ्यास काल में निम्न मन्त्र का जप करते रहें –

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् । ॐ आपोज्योतिरसोऽमृतं ॐ ब्रह्म भुर्भुवः स्वरोम् ।

न्यास–

सभी ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों को उत्कृष्ट, चैतन्य और पवित्र करने के उद्देश्य से न्यास करते हैं । इसके लिए बाँए हाथ में जल लेकर दाँये हाथ की सभी अँगुलियों के योग से प्रत्येक मन्त्र के उच्चारण पूर्वक तत्सम्बन्धी अंग का स्पर्श करना चाहिए–

ॐ वाङ् में अस्येऽस्तु ।। १।।
ॐ नसोर्मे प्राणोऽस्तु ।। २।।
ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु ।। ३।।
ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु ।। ४।।
ॐ वाह्वोर्मे बलमस्तु ।। ५।।
ॐ उर्वोर्मे ओजोऽस्तु ।। ६।।
ॐ अरिष्टानि मेऽगांनि तनूस्तन्वा मे सह संतु।। ७।।

प्रथम मन्त्र से मुख, दूसरे से दोनों नासाछिद्र, तीसरे से दोनों नेत्र, चौथे से दोनों कान, पाँचवे से दोनों बाहु और छठे से दोनों

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जंघाओं का स्पर्श करें तथा सातवें मन्त्र से समूचे शरीर पर जल छिड़कें ।

पृथिवी पूजन–

पृथिवी ही मनुष्य को उत्पन्न तथा धारण करती है और वही जीवन देती है । इसलिए षट् कर्मों में पृथिवी पूजन का भी समावेश किया गया है । गन्ध, अक्षत, पुष्प, जल, धूप, दीप आदि से समर्पण पूर्वक निम्न मन्त्र का उच्चारण करना चाहिए–

ॐ पृथिवी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारण मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ।

उक्त प्रकार षट् कर्म पूर्ण होने पर अभीष्ट कर्म का आरम्भ करना चाहिए । सभी कर्मों में सर्वप्रथम कलश का पूजन किया जाता है क्योंकि कलश सभी प्रकार के शुभ, मंगल तथा कल्याण का प्रतीक है । कलश में सभी तीर्थों, देवी-देवताओं, ऐश्वर्यों का निवास मान कर पूजन करें ।

कलश मिट्टी का अधिक श्रेष्ठ माना गया है । अथवा स्वर्ण, रजत, ताम्र, का भी हो सकता है । कलश पर स्वास्तिक बना कर स्थापित करें और उसके मुख पर पंच पल्लव, पुष्प और नारियल रखें । इसको स्थापना के लिए काष्ठ की पवित्र चौकी लें उस पर सुन्दर वस्त्र बिछाकर चन्दन या रोली से अष्टदल कमल बनावें । कच्चे चावलों से भी अष्ठ दल कमल बनाया जा सकता है । चन्दन, रोली, अक्षत, धूप, नैवेद्य तथा पुष्पमाल आदि से कलश का पूजन करते हुए निम्न मन्त्रों का उच्चारण करें ।

ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणा स्मृताः।। १
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तदीपाः बसुन्धराः।
ऋग्वेदोय यजुर्वेदो सामवेदो ह्यथर्वणः।। २

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशन्तु समाश्रिताः।
अत्रा गायत्री सावित्री शान्ति पुष्टिकरी सदा।। ३
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।। ४
आदित्याः वसुवो रुद्राः विश्वेदेवाः स पैतृकाः।
त्वयि तिष्ठन्ति सवैऽपि यतः सर्व कामफलप्रदाः।। ५

देव पूजन

कलश पूजन के पश्चात् देव-पूजन करना चाहिए । सभी प्रकार के अनुष्ठानों में देव-पूजन ही प्रमुख कर्त्तव्य है और वही कल्याणकारी भी है । पूजन में सर्वप्रथम गणपति को प्राथमिकता और प्रमुखता दी जाती है । उसके पश्चात् अन्य देवी-देवताओं का पूजन किया जाता है ।

गणपति पूजन–

गणेशजी का ध्यान और नमस्कार पूर्वक षोडशोपचार करने चाहिए –

ध्यान - ॐ उद्यनिद्नेस्वरचिं निज हस्तपद्मे पाशांकुशामय वरान्दधतं गजास्यम् । रक्ताम्बरं सकल दुखहरं गणेशं ध्यायेत्प्रसन्नमाखिलाभरणाभिरामम् ।।

आसन-सुमुखाय नमस्तुभ्यं गणाधिपतये नमः।
गृहाणासनमीशत्वं विघ्नपुजं निवारय।।
पाद्य-उमा पुत्राय देवाय सिद्ध वन्द्याय ते नमः।
पाद्यं गृहाण देवेश विघ्नराज नमोस्तुते।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अर्घ्य-एकदन्त महाकाय नागयज्ञोपवीतक।
गणाधि देवदेवेश गृहाणार्ध्य नमोस्तुते।।
पंचामृत-पयोदधि घृत क्षोद्रं शर्करा मिश्रितः कृतम्।
पंचामृतंगृहाणेदं स्नानार्थं विघ्न भंजन।।
स्नानजल-नर्मदा चन्द्रभागादि गंगासंगमजैर्जलैः।
स्नापितोसि मया देव विघ्नसंघं निवारय।
यज्ञोपवीत-सूर्यकोटिसमाभास नागयज्ञोपवीतक।
स्वर्णमूलै रचितं उपवीतं गृहाण मे।।
वस्त्र-रक्ताम्बरधराधर्श पाशांकुश धरेश्वर
वस्त्रयुग्मं मयादत्तं गृहाण परमेश्वर।।
आचम-सुगन्ध मिश्रित तीर्थादिपूतं पानीयमुत्तमम्
आचम्यार्थ गृहाणत्वं विघ्नंराज वरप्रद।।
गन्ध अक्षत-गन्ध गृहाण देवेश सर्व सौख्यं विवर्धय।
रक्तचन्दन संमिश्रै रक्षितैर्धौतयाम्यहम्।
पुष्प-पाटलामल्लिकादूर्वाशत पत्राणि विघ्नहृत।
पुष्पाणि गृहाण देवेश विवुधप्रिय सर्वतः।।
धूप-दीप-धूपं गृहाण देवेश विघ्नपुजं निवारय।
दीपं गृहाण देवे शशम्भुसूनु नमोऽस्तुते।।
नैवेद्य-जल-नानविधं गृहाणेदं नैवेद्यं कृपया प्रभो।
करानन विशुद्धयूर्थं जलं एतद् गृहाण मे।
उपायन-हिरण्यं रजतं ताम्रंयत्किंचिदपि कल्पितम्।
उपायनं गृहाणेदं सिद्धिबुद्धीश ते नमः।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्तोत्र-ॐनमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं त्वमसि। त्वमेव केवलं कर्त्तासि। त्वमेव केवलं धर्तासि। त्वमेव केवलं हर्तासि। त्वमेव सर्व खल्विदं ब्रह्मासि। त्वं साक्षादात्मासि।

नमस्कार-- नमो व्रातण्तये नमो गणपतये नमः प्रथमपतये नमस्तेऽस्तु लम्वोदरायैक दन्ताय विघ्नविनाशने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमो नमः।।

अन्य प्रमुख देव पूजन –

गणेश-पूजन के पश्चात् अन्य देवताओं का पूजन किया जाता है। उन्हें गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, वस्त्रादि समर्पण करना और निम्न मंत्रों को पढ़ना चाहिए–

ॐ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देव महेश्वरः।
गुरुसाक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरुवे नमः।।१
शुक्लांबर धरं देवं शशिवर्ण चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं घ्यायेत्सर्व विघ्नोपशान्तये।।२
सर्वदा सर्वकायेषु नास्ति तेषामंगलम्।
येषां हृदिस्थो भगवान्मंगलायतनो हरिः।।३
मंगलं भगवान् विष्णुमंगलं गरुध्वजः।
मंगलं पुण्डरीकाक्षं मंगलायातनो हरिः।।४
त्वं वै चतुर्मुखो ब्रह्मा सत्यलोक पितामह।
आगच्छ मण्डले चास्मिन् मम सर्वार्थ सिद्धये।।५
विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्माविष्णु महेश्वरान्।
सरस्वती प्रणम्यादौ शान्तिकार्यार्थ सिद्धये।।६

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरांतकारी भानुःशशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु ।।७

आयातु वरदे देवि अक्षरे ब्रह्मवादिनो।
गायत्रिच्छन्दसां माता ब्रह्मायोनिर्नमो ऽस्तुते ।। ८
सर्वमगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्रयम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते ।। ६

हस्ते स्फाटिक मालिकां विधती पद्मासने संस्थिताम् ।
वन्दे तां परमेश्वरी भगवती बुद्धिप्रदां शारदाम् ।।१०

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः।। ११
कीर्तिलक्ष्मीधृतिर्मेधा सिद्धिः प्रज्ञा सरस्वती।
मांगल्येषु प्रपूज्याश्च सप्तैता दिव्यमातरः।। १२

नमस्कार–

ॐ महागणाधिपतये नमः।
ॐ लक्ष्मी नारायणाभ्यां नमः।
ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः।
ॐ वाणी हिरण्यगर्भाभ्यां नमः।
ॐ राधाकृष्णाभ्यां नमः।
ॐ कुल देवताभ्यो नमः।
ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः।
ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः।
ॐ वास्तेदेवताभ्यो नमः।
ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः।
ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः।
ॐ सर्वेभ्यो तीर्थेभ्यो नमः।
ॐ गुरुवे नमः।
ॐ मातृपितृपदकमलेभ्यो नमः।
ॐ गायत्री देव्यै नमः।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः।
ॐ शिवायै नमः।
ॐ शारदायै नमः।
पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुः

षोडशोपचार पूजन-

देवी देवतादि का पूजन करने में १६ उपचार होते हैं । निम्न मन्त्रों से उन्हें किया जाय –

आवाहन, स्थापना–ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः, आवाहयामि स्थापयामि।। १।।

आसन-समर्पण–ॐ आसन समर्पयामि।। २।।
पाद्य-समर्पण–ॐ पाद्यं समर्पयामि।। ३।।
अर्घ्य-समर्पण–ॐ अर्घ्य समर्पयामि।। ४।।
आचमन-समर्पण–ॐ आचमनं समर्पयामि।। ५।।
स्नान-समर्पण–ॐ स्नानं समर्पयामि।। ६।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वस्त्र-समर्पण–ॐ वस्त्रं समर्पयामि ।। ७।।
उपवीत-समर्पण–ॐ यज्ञोपवीतं समर्पयामि ।। ८
गन्ध-समर्पण–ॐ गन्धं समर्पयामि ।। ६।।
अक्षत-समर्पण–ॐ अक्षतान् समर्पयामि ।। १०।।
पुष्प-समर्पण–ॐ पुष्पानि समर्पयामि ।। ११।।
धूपं-समर्पण–ॐ धूपं आघ्नास्यामि ।। १२।।
दीपक-समर्पण–ॐ दीपं दर्शयामि ।। १३।।
नैवेद्य-समर्पण–ॐ नैवेद्यं निवेदयामि ।। १४।।
ताम्बूलादि-समर्पण–ॐ ताम्बूल पूंगीफलानि समर्पयामि ।। १५।।
दक्षिणा-समर्पण– ॐ दक्षिणां समर्पयामि ।। १६।।

दण्डवत् प्रणाम–

षोडशोपचार पूजन के पश्चात् हाथ जोड़कर दण्डवत् मुद्रा में निम्न मन्त्र के साथ प्रणाम करें–

नमः सर्वहितार्थाय जगदाधार हेतवे ।
साष्टांगो ऽयं प्रणामस्ते प्रयत्नेन मया कृतः ।।

निम्न मन्त्रों का सस्वर उच्चारण प्रशस्त माना जाता है । पाठ के पूर्व दाँये हाथ में अक्षत, पुष्प, जल लें और पाठ समाप्त होने पर किसी दोना या थाली में डालें –

ॐ गणानां त्वा गणपति ꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ꣳहवामहे वसो मम आहमजानिगर्भधंमा त्वमजासि गर्भधम् ।। १।।

ॐ स्वस्ति नः इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमि स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।। २

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रंतन्न आसुव।। ३

ॐ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रो देवताऽदित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता ।।२।।

ॐ पयः पृथिव्यां पयऽऔषधीषु पयोदिव्यंन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ।।३।।

रक्षा कवच–

अनुष्ठान कर्म में रक्षा-विधानार्थ शास्त्रों ने कवच कल्पित किये हैं। दाँये हाथ में अक्षत लेकर निम्न मन्त्रों का उच्चारण करें और सम्बन्धित दिशाओं में चावल छोड़ें–

ॐ पूर्वे रक्षतु वाराहः आग्नेय्यां गरुडध्वजः।
दक्षिणे पद्नाभ्रस्तु नैऋत्यां मधुसूदनः।।१।।
पश्चिमे चैव गोविन्दो वायव्यां तु जनार्दनः।
उत्तरे श्रीपती रक्षैदैशान्यां हि महेश्वरः।।२।।
ऊर्ध्व रक्षतु धाता वो ह्यधोऽनन्तश्च रक्षतु।
अनुक्तमणि यत्स्थानं रक्षत्वीशो ममाद्रिधृक् ।।३।।
अपसर्पन्तु ये भूता ये भूता भुवि संस्थिताः।
ये भूता विघ्न कर्तारस्ते गच्छन्तु शिवाज्ञया।।४।।
अपक्रामन्तु भतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सर्वेषामविरोधेन यज्ञकर्म समारभे ।। ५।।

अग्नि स्थापना–

यज्ञों में स्थापित की जाने वाली अग्नि विशेष विधि से स्थापित होती है, क्योंकि यज्ञाग्नि को महर्षियों ने ब्रह्म का ही साक्षात् स्वरूप मान्य किया है ।

अग्नि-स्थापन के लिए पवित्र स्थान में वेदी बनानी चाहिए । छोटे होमों में लौह-निर्मित वेदी से भी काम लिया जा सकता है । वेदी या हवन कुण्ड में छोटी-छोटी समिधाएँ व्यवस्थित ढँग से चुन ली जाय और फिर किसी काँस्य पात्र या मिट्टी के खप्पर में अग्नि लाकर निम्न मंत्रों के उच्चारण पूर्वक अग्नि की स्थापना करें–

ॐ भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव् वरिम्णा। तस्यास्ते पृथिवी देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्ना-द्यायादधे। अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवा ॐ आसादयादिह । ॐ अग्नये नमः । ॐ अग्नि-मावाहयामि । इहागच्छ इह तिष्ठ । इत्यांवाह्य षौडशोपचारैः पूजयेत् ।।

यदि षोडशोपचार से पूजन न करके पंचोपचार या दशोपचार से पूजन करना हो तो इत्यावाह्य षोडशोचपारैः पूजयेत्' के स्थान पर 'इत्यावाह्य पंचोपचारैः(अथवा दशोपचारैः) पूजयेत् ।'

स्वस्ति पुण्याहवाचन

शुभ कर्मों के आरम्भ में स्वस्ति पुण्याहवाचन कर्म का किया जाना आवश्यक है । इसमें चार ब्राह्मण गन्ध, तम्बूल, दक्षिणादि

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

द्वारा पूजित होकर कर्म कराते हैं । पत्नी सहित यजमान ब्राह्मणों से दक्षिण की ओर उत्तराभिमुख बैठे अथवा ब्राह्मण उत्तराभिमुख बैठे तो पत्नी सहित यजमान पूर्वाभिमुख बैठे। फिर यजमान घुटनों को धरती में टिकाकर दोनों हाथों को खिले हुए कमल के समान सिर पर रख ले ।

स्वस्ति वाचन–

एक सुन्दर मृत्तिका (या किसी पवित्र धातु का) छिद्ररहित कलश लेकर निम्न प्रथम मन्त्र से स्थापना-स्थान का स्पर्श करे दूसरा मंत्र पढ़कर चावलों की ढेरी बनावे तथा तीसरे मन्त्र से चावलों की ढेरी पर कलश रखे और चौथे मन्त्र से उसमें जल भरे। कलश पर एक स्वास्तिक बना दें ।

ॐ महीद्यौः पृथिवीर्चन इमं यज्ञं मिमिक्षताम् । पिपृतां नोभरीमभिः।। १।।

ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा। यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तं ॐ राजन्पारयामसि।। २।।

ॐ आजिघ्र कलशंमह्या त्वाविशन्त्विन्दवः। पुनरूर्जा निवर्त्तास्वसानः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्माविशताद्रयिः।। ३।।

ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमाद्यचमृडय। त्वाम-वस्युराचके।। ४।।

अब उस कलश में खस प्रभृति सुगन्धित द्रव्य डालकर कलश पर चन्दन लेप करे और उसमें प्रथम मन्त्र से सर्वोषधि, द्वितीय मन्त्र से जौ तथा तृतीय मन्त्र से दूब डालनी चाहिए–

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षा नित्य पुष्टां करीषिणीम् ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वयेश्रियम् ।

ॐ या औषधीः पूर्वाजाता देवेभ्यस्त्रियुगंपुरा । मनैनु वभ्रूणामह ॐ शतं धामानि सप्त च ।। ५।।

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषं परुषस्परि । एवानो दूर्वे प्रतनुसहस्त्रेण शतेन च ।। ६।।

अब कलश में आम आदि ५ प्रकार के पत्ते निम्न प्रकार प्रथम मन्त्र से रखे द्वितीय मन्त्र से सप्त मृत्तिकाएँ डाले –

ॐ अश्वत्थेवो निषदनं पर्णे वौवसतिष्कृता । गोभाजत्किलासथ यत्सनवथ पुरुषम् ।। ७।।

ॐ स्याना पृथिवीनोभवानृक्षरानिवेशनी । यच्छानः शर्मस प्रथाः ।। ८।।

अब निम्न प्रकार मन्त्र से कलश में अनेक शुद्ध फल तथा द्वितीय मन्त्र से पंचरत्न डाले । तीसरे मन्त्र से कलश में स्वर्ण का टुकड़ा डालना चाहिए । किन्तु यदि कलश स्वर्ण का हो तो स्वर्ण का टुकड़ा डालना अनावश्यक है –

ॐ याः फलनीर्या अफलां अपुष्पायाश्चपुष्पिणी। वृहस्पति प्रसूतास्तानो मुञ्छन्त्व ॐ हसः ।। ९।।

ॐ परिपाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत् । दधद्रत्नानिदाशुषे ।। १०।।

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूयस्यजातः पतिरेक आसीत् । सदाधार पृथिवी द्यामुतेमांकस्मैदेवायहविषा विधेम ।। ११।।

अब निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए नवीन धोये हुए वस्त्र

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तथा केशर में रंगे हुए सूत को कलश पर लपेटना चाहिए ।

ॐ युवासुवासाः परिवीत आगास्सउश्रेयान्भवति जयमानः। तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः ।।

अब कलश के नुख पर चावलों से भरा मिट्टी का सकोरा ढकने के रूप में कलश पर रखता हुआ निम्न मन्त्र पढ़े –

ॐ पूर्णादर्वि परापत मुपूर्णापुनरापत । वस्नेव विक्रीणावहाइषमूर्ज ॐ शतक्रतो ।।

वरुणदेव पूजन–

इसके पश्चात् वरुणदेव का आवाहन निम्न मन्त्र से करना चाहिए –

ॐ तत्वायामि ब्रह्मथाबन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः अहेडमानो वरुणेहवोध्युरुश ॐ सामान आयुः प्रमोषीः।

अब कलश पर वरुणदेव का षोडषोपचार पूजन करते हुए निम्न मन्त्र पढ़े –

ॐ भूर्भूवः स्वः अपांपतये वरुणाय नमः।

गंगादि का आवाहन–

तदुपरान्त गंगा आदि सरिताओं और तीर्थों का आवाहन करता हुआ निम्न मन्त्र पढ़े –

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानिजलदानदाः।
आयान्तुममशान्त्यर्थ दुरितक्षयकारकाः।।

कलश अभिमन्त्रण–

अब निम्न श्लोकों का पाठ करता हुआ दाँये हाथ की अनामिका

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

से कलश का स्पर्श करना चाहिए –

कलशस्यमुखे विष्णुः कण्ठेरुद्रः समाश्रितः।
मूलेतस्यस्थितोब्रह्मा मध्येमातृगणाः स्मृताः।।
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपाबसुन्धराः।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोह्यथर्वणः।।
अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशन्तु समाश्रिताः।
देवदानव संवादे मध्यमानेमहोदधौ।
उत्पन्नोसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुनास्वयम् ।।
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वेत्वयिस्थिताः।
त्वयितिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।।
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।
आदित्यावसवोरुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः।।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेपि यतः काम फलप्रदाः।
सान्निध्यं कुरुमेदेव प्रसन्नोभव सर्वदा।।

पुण्याहवाचन–

उक्त प्रकार स्तुति करने के पश्चात् पृथिवी पर दोनों घुटनों को टेक कर कमल के समान दोनों हाथों की अंजली फैला कर शिर पर ले जाय, तब आचार्य या पुरोहित दाँये हाथ से कलश धारण करे और फिर यजमान निम्न मन्त्र का उच्चारण करे–

ॐ त्रीणिपदाव्विचक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः। अतो धर्माणि धारयत् ।।

अब 'तेनायुष्प्रमाणे न पुण्यं पुण्याहं दीर्घ मायुरस्त्वित भवन्तु' पढ़कर पुण्याहवाचन का आरम्भ करे तब ब्राह्मणों के हाथों में जल

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

का सेवन करे, तब वे ब्राह्मण यजमान की कामनापूर्ति विषयक प्रतिवचन कहें ।

यजमान 'सुप्रोक्षितमस्तु' कहता हुआ ब्राह्मण कलश से जल लेकर निम्न मन्त्र के उच्चारण पूर्वक यजमान और उसकी पत्नी के ऊपर सेचन करें ।

ॐ शंते आपो धन्वया ॐ शंते सन्त्वनूथ्याः ।
शं ते खनित्रिमा आपः शंयाः कुम्भेभिराभृता।।

तदुपरान्त यजमान के 'सौमनस्यमस्तु' कहने पर ब्राह्मण 'अस्तु सौमनस्यम् कहे फिर यजमान कहे कि 'अक्षतं चास्तु में पुण्यं दीर्घ मायुर्यशोबलम् । यद्यच्श्रेयस्कर लोके तत्तदस्यु सदामम ।' इसके उत्तर में ब्राह्मण कहे –अस्त्वक्षतमरिष्टं च' अर्थात्–तुम्हारा पुण्य अक्षय हो, अरिष्ट न हो ।' तब यजमान निवेदन करे–'गन्धाः पान्तु सौमंगल्यम्' अर्थात् सुगन्ध मेरी रक्षा और श्रेष्ठ मंगल करे' इस पर ब्राह्मण 'इति भवन्तु' अर्थात् ऐसा ही हो – कहे । अब ब्राह्मण निम्न मन्त्र से आशीर्वाद दें–

त्रयम्वकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्द्धनम् ।
उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।

अब ब्राह्मण ॐ पान्तु गन्धा अस्तु सौमंगलयं च' अर्थात् सुगन्ध तुम्हारी रक्षा और श्रेष्ठ मंगल करें' कहें । फिर यजमान और ब्राह्मण निम्न प्रकार कथोपकथन करें–

यजमान-अक्षताः पान्तु आयुष्यमस्तु ।
ब्राह्मण-ॐ पान्त्वक्षता अस्तु आयुष्यम् ।
यजमान-पुष्पाणिपान्तु सौश्रियमस्तु ।
ब्राह्मण-ॐ पान्तु पुष्पाणि अस्तु सौश्रियम् ।
यजमान-ताम्बूलानि पान्तु ऐश्वर्यमस्तु।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ब्राह्मण-ॐ पान्तु ताम्बूलानि अस्त्वैश्वर्यम् ।

यजमान-दक्षिणा पान्तु बहुदेवं चास्तु।

ब्राह्मण-ॐ पान्तु दक्षिणा अस्तु बहुदेयम् ।

यजमान-शातिः पुष्टिस्तुष्टिः श्रीर्यशोविद्याविनयो वित्तं बहुपुत्रंचायुष्यं चास्तु।

ब्राह्मण-ॐ अस्तुशान्ति पुष्टिस्तुष्टिः श्रीर्यशोविद्या-विनयो वित्तं बहुपुत्रं चायुष्यं च।

यजमान-यंकृत्वा सर्ववेद यज्ञ क्रिया करण कर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तमहमोंकारमादिं कृत्वा ऋग्यजुः सामायथर्वणाशीर्वचनं वृहतृषिसम्मतं समनुज्ञातं भववद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये।

ब्राह्मण-ॐ वाच्यताम् ।

उक्त कथोपकथन का अभिप्राय यह है कि यजमान कहे—अक्षय रूप से हमारी रक्षा हो, आयु दीर्घ हो, अथवा अक्षत हमारी दीर्घायु और रक्षा करें, पुष्प हमारी रक्षा करें और शोभा बढ़ावें, ताम्बूल रक्षा करें और ऐश्वर्य बढ़ावे, दक्षिणा हमारी रक्षा करे तथा दान के लिए धन-वृद्धि करें, शाँति-पुष्टि सन्तोष-शोभा-कीर्तिःयश-विद्या-नम्रता-भोग-बहुत से पुत्र तथा बड़ी आयु हो । इनके उत्तर में ब्राह्मण ऐसा ही हो कहते रहें तथा ॐ अस्तु शान्तिः पुष्टि स्तुष्टिः, आदि वाक्यों के अनन्तर यजमान के शिर पर अभिषेक करें । तदुपरान्त 'यं कृत्वा सर्ववेद' इत्यादि का अभिप्राय है कि 'जिसने ग्रहण से सभी यज्ञादि कर्मों का आरम्भ शुभ और निर्विध्न रूप से समाप्ति होती है, उस प्रणव को आदि मानता हुआ मैं ऋक, यजुः तथा साम सम्बन्धी और ऋषि सम्मत पुण्याह का वाचन कराऊँगा।' इसके

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उत्तर में ब्राह्मण स्वीकारोक्ति दें और तब ब्राह्मणों के हाथों में कूटे हुए यव अथवा धान्य दें और तब ब्राह्मण निम्न आशीर्वाद मन्त्रों का उच्चारण करें ।

ॐ भद्रं कर्णोभिः श्रणुयाम देवा भद्र पश्येमाक्ष-भिर्यजत्राः। स्थिरैरंगैस्तुष्टुवा७ सस्तनूभिर्यशेमहिदेवहितं यदायुः ।।१।।

देवानां भद्रासुमतिर्ऋजूयता देवाना७ रातिरभिनो-निवर्तताम् । देवाना७सख्यमुपसेदिमावयं देवान आयुः प्रतिरन्तु जीवसे ।।२।।

नतद्रक्षा७सिनपिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमज ॐ ह्येतत् योविभातिदाक्षायण ७ हिरण्यसदेवेषु कणुते दीर्घमायुः समनुष्येषु कणुते दीर्घमायुः।। ३।।

दीर्घायुस्त ओषधेखनिता यस्मैचत्वाखनाम्तहम् । अथौत्व दीर्घायुभूत्वा शतवल्शाविरोहतात् ।।४।।

ॐ द्रविणोदाद्रविणसन्तुनश्य द्रविणोदाः सनरस्य प्रय७सत् । द्रविणोदावीरती मिषन्नो द्रविणोदा रासते दीर्घमायु।। ५।।

ॐ सवितापश्चात्सविता पुरस्तात् सवितोत्तारात्तात्सविताऽधरात्ताद् । सविता नः सुवतुसर्वताति सविता नों रासतां दीर्घमायुः।।६।।

नवो नवो भवति जायमानोऽन्हाकेतु रुषसाममेत्यग्रम भागं देवेभ्यो विदधात्या प्रचन्द्रमास्तिरते दीर्घमायुः।।७।।

ॐ उच्चाद्रिवि दक्षिणावन्तो अस्थुर्ये अश्वदाः सहते

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सूर्येण। हिरण्यदा अमृतत्वं भजन्त वासोदाः सोम प्रतिरन्त आयुः।। ८।।

आप उन्दन्तुजीवसु दीर्घायुत्वाय वर्चसे। यस्त्वा हृदाकीरिणा मन्त्यमानो मर्त्य मर्त्यो जोहवामि।। ६।।

जातवेदो यशोऽअस्मा सुधेहि प्रजाभिरग्ने अमृतत्वमश्याः। यस्मै त्वं सुकृते जातवेद उलोकभग्ने कण्वः स्योनम् ।।१०।।

अश्विनं सपुत्रिणं वीरवन्त गोमन्त रयिन्नुशते स्वस्ति ।।११।।

तब यजमान कहे–'व्रत, नियम जप तपः स्वध्याय क्रतुशम दमदृयादानविशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम् । अर्थात् 'व्रत, नियम, जप, यज्ञ शान्ति, इंद्रिय, निग्रह, दया-दान करने वाले सभी ब्राह्मणों का मन एकाग्र हो ।' इसके उत्तर में ब्राह्मण कहें–समाहित मनसः स्मः' अर्थात् 'हमारा मन सावधान है। यजमान कहे प्रसीदन्तु भवन्तः 'अर्थात् 'आप लोग हम पर प्रसन्न हो । इस पर ब्राह्मण कहें–प्रसन्नाः स्मः' अर्थात् हम प्रसन्न हैं । तदुपरान्त यजमान कहे –

ॐ शांतिरस्तु। ॐ पुष्टिरस्तु। ॐ तुष्टिरस्तु। ॐ बृद्धिरस्तु। ॐ अविघ्नमस्तु। ॐ आयुष्यमस्तु। ॐ आरोग्यमस्तु। ॐ शिवकर्मास्तु। ॐ कर्मसमृद्धिरस्तु। ॐ वेदस्मृद्धिरस्तु। ॐ शास्त्रासमृद्धिरस्तु। ॐ इष्ट सम्पदस्तु। ॐ अरिष्ट निरसनमस्तु। ॐ यत्पापमनारोग्यमशुभकल्याण तत्प्रतिहतमस्तु। ॐ

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यच्छ्रेयस्तदस्तु । ॐ उत्तरे कर्मण्यविघ्नमस्तु । ॐ उत्तरोमहरहरभिवृद्धिरस्तु । ॐ उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभना सम्पद्यन्ताम् । ॐ अतिथिकरण मुहूर्त्त-नक्षत्रग्रहलग्नसम्पदस्तु । (उदक सेचनम्)

ॐ तिथिकरण मुहूर्त्तनक्षत्रग्रहलग्नाधिदेवताः प्रीयन्ताम् । ॐ अतिथिकरणे समुहूर्त्ते सनक्षत्रे संग्रहे साविदेवते प्रीयताम् । ॐ दुर्गापांचाल्यौ प्रीयेताम् । ॐ अग्नि पुरोगा विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम् । ॐ इन्द्रपुरोगा मरुद् गणः प्रीयन्ताम् । ॐ माहेश्वरी पु रोगा उमा मा - तरः प्रीयन्ताम् । ॐ अरुन्धती पु रोगाः पतिव्रताः प्रीयन्ताम् । ॐ विष्णुपु रोगाः सर्वेदेवाः प्रीयन्ताम् । ॐ ब्रह्म पुरोगाः। सर्वेवेदाः प्रीयन्ताम् । ॐ ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम् । ॐ सरस्वत्यौ प्रीयताम् । ॐ श्रद्धामेधे प्रीयताम् । ॐ भगवती कात्यायनी प्रीयताम् । ॐ भगवती माहेश्वरी प्रीयताम् । ॐ भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम् । ॐ भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम् । ॐ भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम् ॐ भगवन्तौ विघ्न विनायकौ प्रीयताम् । ॐ सर्वा कुल देवता-प्रीयन्ताम् । ॐ सर्वा ग्राम-प्रीयन्ताम् ।

ॐ हताश्च ब्रह्माविद्विषो हताश्च परिपन्थिनो हताश्च कर्मणो विघ्नकर्तारः शत्रवः पराभव यान्तु । ॐ शाम्यन्तु घोराणि ॐ शाम्यन्तु पापानि । शाम्यन्त्वी तयः

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शुभानिवर्द्धन्ताम् । ॐ शिवा आपः सन्तु । ॐ शिवा ऋतवः सन्तु । ॐ शिवा अग्नयः सन्तु । आहुतयः सन्तु। ॐ शिवा औषधयः सन्तु । शिवा आहुतयः सन्तु। ॐ शिवा वनस्पतयः सन्तु । ॐ शिवा अतिथियः संतु । ॐ अहोरात्रे शिवे स्याताम् । ॐ निकामे-निकामे न पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न औषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो न कल्पताम् ।

ॐ शुक्रांगरकरकदुधबृहस्पतिशनैश्चरराहुकेतु सोम सहिता आदित्यापुरोगाः सर्वेग्रहाः प्रीयन्ताम् । ॐ भगवन् महासेनः प्रीयताम् ।

अब यजमान कहे 'ॐ पुण्याहकालान् वाचयिष्ये' अर्थात् पुण्याह के समयों का वाचन कराऊँगा।' तब ब्राह्मण कहे–ॐ वाच्यताम् तदुपरान्त निम्न मन्त्र पढ़े–

ॐ उद्गातेवशकुनेसामगायसि ब्रह्मपुत्रइव सवनेषु शंससि। वृवेववाजी शिशुमतीरपीत्या सर्वतो नः शकुने भद्रमावद विश्वतो नः शकुने पुण्यमावद।।

अब यजमान 'भो ब्राह्मणाः मम गृहे अस्य क्रियेमाणस्य कर्मण, पुण्याहं भवन्तो ब्रु वन्तु' अर्थात् हे ब्राह्मणों ! मेरे घर में इस कर्म का शुभ समय होना कहिये ।' ऐसा मन्द स्वर में कहे । ब्राह्मण' ॐ पुण्याहम् कहे । फिर दूसरी और तीसरी बार यजमान' भी ब्राह्मणः' इत्यादि वाक्यों को मध्यमस्वर में कहें और ब्राह्मण वैसा ही उत्तर दें । तदुपरान्त यजमान निवेदन करे–

ब्राह्म पुण्यमहर्यच्च सृष्ट्युत्पालनकारकम् ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः ।।

अर्थात्—ब्रह्मकल्प रूप सर्गोत्पत्ति वाला तथा वेद रूप वृक्ष से उत्पन्न जो पुण्य और नित्य दिन है, वह हमारे लिए पुण्य हो । इसके साथ ही निम्न पढ़ें—

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः पुनंतु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनोहि माम् ।।

अब यजमान कहे कि भो ब्राह्मणः सकुटुम्बस्य, सपरिवारस्य मम ग्रहे क्रियमाणस्यामुक कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रु वन्तु । अर्थात् 'हे ब्राह्मणों मेरे कुटुम्ब परिवार सहित अमुक कर्म कल्याणकारी हो इसके उत्तर में ब्राह्मण ॐ कल्याणम् 'अर्थात् कल्याण हो' कहे । फिर निम्न मन्त्र का उच्चारण करें —

यथेमां वात्तं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः । ब्रह्म-राजन्याभ्या ꣳ शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च । प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूया समयं में कामः समृद्धयतामुपतादो नमतु

अब यजमान कहे 'भो ब्राह्मणाः सकुटुम्बस्य मम गृहे क्रियेमाणस्याममुक कर्मणः ऋद्धि भवन्ती ब्रु वन्तु' अर्थात् ' हे ब्राह्मणों आप मेरे कुटुम्ब सहित ऋद्धि होना कहें ।' तब ब्राह्मण 'ऋध्यताम' कह कर आशीर्वाद और निम्न मन्त्र बोले—

ॐ सत्रस्य ऋद्धिरस्यमगन्मज्योतिरमृत्ता अभूम। दिवं पृथिव्या अध्यारुहामा विदाम देवान्स्व-वर्ज्योतिः।।

तब यजमान निवेदन करे कि 'भो ब्राह्मणा' सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य मम गृहे क्रियमाणस्यामुककर्मणः स्वस्ति भवन्तो ब्रु

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वन्तु' अर्थात् 'मेरे घर में सकुटुम्ब परिवार सहित स्वस्ति, होना कहिये ।' इसके उत्तर में ब्राह्मण 'ॐ आयुष्मते स्वस्तिः' तीन बार निम्न मन्त्र पढ़ें–

स्वस्ति न इन्द्रोवृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्व वेदाः स्वस्तिनस्ताक्ष्योऽरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।

तब यजमान निवेदन करे कि 'भो ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य गृहे क्रियमाणस्यामुक कर्मणः श्रियं भवन्तो ब्रुवन्तु' अर्थात् 'आप मेरी श्री कहें ।' तब ब्राह्मणगण 'अस्तु श्रीः' तीन बार कह कर निम्न मन्त्रों से आशीर्वाद दें –

श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्न्यावहो रात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि-रूपमश्विनौव्यात्तम् इष्णन्निषाणामुम्मइषाण सर्वलोक-मइषाण ।। १।।

ॐ शतमिन्नु शरदोऽअन्तिदेवा यत्रानश्चकाजरसन्त-नूनाम् । पुत्रासोयत्रपितरो भवन्ति मानोमक्ष्यारीरिषता-युर्गन्तोः ।। २।।

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूना ᳬ रूपमन्नस्य रसोयशः श्री श्रयतांमयि ।। ३।।

उक्त दो मन्त्रों को पढ़ कर ब्राह्मणगण तीन बार 'अन्तु श्रीः वाक्य को कहें और फिर उक्त तीसरे मन्त्र (मनसः काम० आदि) से आशीर्वाद देकर निम्न वचन कहें–

प्रजापतिर्लोकपालो धाताब्रह्माचदेवराट् ।
भगनानशाश्वतोनित्यः सनो रक्षतु सर्वतः ।।

अर्थात्– लोकपाल प्रजापति, धारण करने वाले ब्रह्मा तथा शाश्वत सनातन भगवान् सब ओर से रक्षा करें ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

फिर 'भगवान् प्रजापतिः प्रीयताम्' अर्थात् 'प्रजापति भगवान् रक्षा करें । ऐसा कह कर निम्न मन्त्र पढ़े–

ॐ प्रजापतेनत्वदेतान्यत्यो विश्वांरूपाणि परितोबभूव। यत्कामास्तेजुहूतस्यन्नो अस्तु वह स्यामपतायी रयीणाम् ।।

उक्त मन्त्र पढ़कर ब्राह्मणगण तीन बार आयुष्मते स्वस्ति' कहें और फिर निम्न मन्त्र का उच्चारण करें –

ॐ प्रतिपन्थामपद्नहि स्वस्तिगामनेहसम् । येनविश्वाः परिद्विषो बृणक्ति विन्दन्ते वसु ।।

तब यजमान कहे अस्मिन्पुण्याहवाचने न्यूनातिरिक्तोयो विधि समविष्ट ब्राह्मणानाम् वचनात् श्रीमहागणपति प्रसादाच्च परिपूर्णोस्तु' अर्थात् इस स्वस्तिपुण्याहवाचन कर्म में न्यूनातिरिक्त विधान ब्राह्मणों के वचनों से और महागणेशजी की कृपा से पूर्ण हो।' इस पर ब्राह्मण भी ॐ अस्तु परिपूर्ण अर्थात् परिपूर्ण हो कहें–

अभिषेक–

तदुनरान्त वेदपाठी ब्राह्मणगण यजमान और उसकी पत्नी का कलश के जल से अभिषेक करें । अभिषेक के समय पत्नी यजमान के बांये भाग में बैठे । ब्राह्मण लोग सावधान चित्त से दूर्वा और आम के पत्तों को कलश से निकाल कर और कलश के जल से भिगो-भिगोकर यजमान दम्पति का निम्न प्रत्येक मन्त्र से अभिषेक करे–

ॐ पय पृथिव्यां पय ओषधीषु पयोदिव्यतन्तरिक्षं-पयोधाः। पयस्वती प्रदिशः सन्तुमह्यम ।।

ॐ पंचनद्यः सरस्वतीमपियन्तिस्त्रोतसः। सरस्वतीतु पंचधासोदेशेऽभवत्सरित् ।।

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसाधियः।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पुनंतु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहिमा ।।

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे ऽश्विनौ बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् सरस्वत्यै वाचो यत्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिञ्चामि.........

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे ऽश्विनौ बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् । सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिञ्चामि ....

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे ऽश्विनौ बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् । अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसाया-भिषिञ्चामि ....

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे ऽश्विनौ बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् । सरस्वत्यै भैषज्येन वीर्यायान्नाद्याया-भिषिञ्चामि ....

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे ऽश्विनौ बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् । इन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियैतशसे ऽ-भिषिञ्चामि ....

उक्त अन्तिम पाँच मन्त्रों में ....के स्थान पर यजमान का नाम बोलना चाहिए । उसके बाद निम्न मन्त्रों का उच्चारण किया जाय–

ॐ विश्वानिदेव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आसुव ।।

ॐ धामच्छदग्निरिन्द्रोब्रह्मादेवो बृहस्पतिः। सुचेतसो विश्वेदेवा यज्ञप्रावन्तु नः शुभे ।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ त्वं यविष्ठदाशुषो नृ पाहि शृणुधीगिरः। रक्षातोकमुतत्मना।।

ॐ अन्नपते ऽन्नस्यनोदेह्यनमींवस्य शुष्मिणः प्रप्रदातारन्तारिषऊर्जनोधेहिद्विपदेशं चतुष्पदे।।

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ᳯ शांतिः पृथिवी शांतिरापः शांतिरोषधयः शांतिः। वनस्पतयः शांतिर्विश्वेदेवाः शांतिर्ब्रह्मशांतिः सर्व ᳯ शांतिः शांतिरेव शांतिः सामा शांतिरेधि।।

ॐ यतोयतः समीहसेततो नो अभयं कुरु। शन्नः कुरुप्रजाभ्यो ऽअभयं नः पशुभ्यः। अमृताभिषेको ऽस्तु शांति शांतिः सुशांतिर्भवतु।

तदुपरान्त पति-पुत्रादि से युक्त सौभाग्यवती चार मान्य स्त्रियाँ यजमान और उसकी पत्नी की आरती करें। उस समय आचार्य निम्न मंत्रों का उच्चारण करें –

ॐ अनाधृष्टा पुरस्तादग्ने राधिपत्यऽआयुर्मे ऽदाः पुत्रावती दक्षिणतऽइन्द्रास्याधिपत्ये प्रजाऽमे ऽदाः। सुषदापश्चाद् देवस्य सवितुराधिपत्ये चक्षुर्मे ऽदाः। आश्रुतिरुत्तरतोधातुराधिपत्येरायस्पोषमे ऽदाः। विधृतिरुपरिष्टाद् बृहस्पतेराधिपत्ये ऽओजोमें ऽदा। विश्वाभ्योः मानाष्ट्राभ्यस्पाहिमनोरश्वासि।।

इस प्रकार मन्त्रोच्चारण के साथ आरती की सम्पन्नता होने पर स्वस्तपुण्याहवाचन कर्म पूर्ण हो जाता है।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

षोडश मातृ का पूजन

ब्रह्मपुराण की मान्यता–

विभिन्न संस्कारों में मातृकादि का पूजन करना आवश्यक होता है । अनेक विद्वान् चौदह मातृकाओं के पूजन का निर्देश करते हैं, यथा–गौरी, पद्मा, शचि, मेधा, सावित्री, विजया, जया, देवसेना, स्वधा, धृति, पुष्टि, तुष्टि और अपने कुल देवता, यह सब चौदह हैं। किन्तु शास्त्रकारों के माता और लोकमाता के नाम से दो का और वर्णन किया है, जबकि मातरः और लोकमातरः गौरी आदि के विशेषण हैं । इस प्रकार सोलह मातृकाएँ मानी गईं ।

सभी प्रकार के पूजनों में गणेश को प्रमुखता दी गई है । ब्रह्मपुराणकार के मत में –

गणेशः क्रियमाणानां मातृभ्यः पूजनं सकृत् ।
सकृदेव भवेच्छ्राद्धमादौन पृथगादिषु ।।
कुडयलग्नावसोर्धाराः पंचधाराहतेनतु ।
कारयेत्सप्तवाधारा नातिनीचानचोच्छ्रिताः ।।

अर्थात् अनेक संस्कार एक साथ करने हों तो शांतिपाठ गणपति–पूजन–स्वस्तिपुण्याह वाचन, पंचधारा तथा मातृका पूजनादि कार्य सब के आरम्भ में एक बार ही करें, पृथक्-पृथक् न करें ।

शुद्ध गोबर से लिपी दीवार पर धृत की पाँच अथवा सात धारा करे । वे अधिक ऊँची या नीची न हों, वरन् मध्य में हों । यजमान स्नानादि से शुद्ध होकर श्रेष्ठ आसन पर पूर्वाभिमुख बैठे और पत्नी को अपने दाँये तथा जिसका संस्कार करना है, उस पुत्र को पत्नी

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

से दांये बैठा कर कुश, जल और जौ हाथ में लेकर इस प्रकार संकल्प करें –

अद्य शुभ पुण्य तिथावमुककर्मांगतया गणपति सहित गार्यादि चतुर्दशमातृका पूजनमहं करिष्ये ।

आवाहन मन्त्र–

ॐ गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि

ॐ गौयै नमः, गौरीमावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ पद्मायै नमः, पद्मावाहयामि स्थापयामि।

ॐ शच्यै नमः, शचीमावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ मेधायै नमः, मेधामावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ सावित्र्यै नमः, सावित्रीमावाहयामि स्थापयामि।

ॐ विजयायै नमः, विजयामावाहयामि स्थापयामि।

ॐ जयायै नमः, जयामावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ देवसेनायैनमः, देवसेनामावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ स्वधायै नमः, स्वधामावाहयामि स्थापयामि।

ॐ स्वाहायै नमः, स्वाहामावाहयामि स्थापयामि।

ॐ धृत्यै नमः, धृतिमावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ पुष्टयै नमः, पुष्टिमावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ तुष्टयै नमः, तुष्टिमावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ आत्मकुल देवताय नमः, आत्मकुल देवतामावाहयामि स्थापयामि ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जो विद्वान् १६ मातृकाएँ मान कर आवाहन करे वे निम्न लिखित दो को भी आवाहन-मन्त्रों में सम्मिलित कर लें –

ॐ मातृभ्यो नमः मातरावाहयामि स्थापयामि।

ॐ लोकमातृभ्यो नमः, लोकमातरावाहयामि स्थापयामि ।।

एक काष्ठ के पट्टे पर कोरा वस्त्र बिछा कर उस पर केसर या हरिद्रा से रंगे पीले चावल गणेशादि देवताओं के पूजन के लिए क्रम से पृथक्-पृथक् १५ या १७ स्थानों पर रख लें और उन्हीं पर आवाहनादि करे । तदुपरान्त उक्त देवताओं की प्रतिष्ठा करे–

प्रतिष्ठा मन्त्र–

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्र्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञभिम तनोतु। अरिष्टं यज्ञ ᳬ समिमं दधातु विश्वेदेवा सइहमादयन्तामो ३ प्रतिष्ठ ।।

आवाहन, आसन पाद्य, अर्ध्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, यज्ञोपवीत, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, प्रदक्षिणा तथा पुष्पांजलि पर्यन्त षोडश उपचारों द्वारा पूजन ही मातृका पूजन है । प्रत्येक उपचारों में नाम लेकर नमस्कार करे और साथ ही समर्पणार्थ 'समर्पयामि' कहता रहे ।

वसोर्धारा–

तदुपरान्त लिपी हुई शुद्ध भीत पर घृत की सात धाराएँ निम्न मन्त्र से करे–

वसोः पवित्रमसिशतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् । देवं त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः ।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तत्पश्चात् 'ॐ वसोर्धारा देवताभ्यां नमः' कहकर गन्धं समर्पयामि, पुष्पाणि समर्पयामि, धूप समर्पयामि, दीपं दर्शयामि, नैवेद्यं निवेदयामि।

आयुष्य जप–

इस प्रकार पूजन करने के पश्चात् निम्न आयुष्य मन्त्रों का जप करना चाहिए–

ॐ आयुष्यं वर्चस्य ꣳ रायस्योषमौध्दिदम् । इदं ꣳ हिरण्यं वर्चस्वज्जेत्रायाविशतादुमाम् ।।१।।

ॐ न तद्रक्षा ꣳ सि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमज ꣳ ह्येतत् । यो विभति दाक्षायण ꣳ हिरण्य ꣳ स देवेषु कणुते दीर्घमायुः सः मनुष्ययेषु कणुसे दीर्घमायुः ।।२।।

ॐ तदायध्नन् दाक्षायणाः हिरण्य ꣳ शतानीकाय सुमनस्यमानाः तन्न आवध्नामिं शतशारदा या युष्मा न् जनरदष्टिर्यथासम् ।।३।।

ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरै रंगैस्तुष्टुवां सस्तनूभिर्व्यशेम हि देवहितं यदायु ।।४।।

ॐ शयमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम् । पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्ययारो रिषतायुर्गन्तो ।।५।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नान्दी श्राद्ध

विधि विधान–

नान्दी श्राद्ध को आभ्युदयिक श्राद्ध अथवा वृद्धि श्राद्ध भी कहते हैं । हेमाद्रि ने इसके समय पर विचार करने हेतु कहा है, कि पूर्वाह्न में मातृ श्राद्ध मध्याह्न में पितृ श्राद्ध और उसके पश्चात् मातामह (नाना) आदि का श्राद्ध करना चाहिए । यदि भिन्न-भिन्न समयों में श्राद्ध न किया जा सके तो कर्त्तव्य-संस्कार के पूर्व तीनों श्राद्ध एक साथ (एक ही समय में) कर सकते हैं ऐसा वृद्धमनु का मत है । कात्यायान के मत नें पितृश्राद्ध से पृथक् माता का दैवत नान्दी श्राद्ध निषिद्ध है । शान्ति के उद्देश्य से आयुष्य मन्त्रों का पाठ करके छः पितरों के निमित्त श्राद्ध करना चाहिए । कात्यायन श्राद्ध सूत्र में मातृ श्राद्ध को पृथक् करना नहीं कहा, वरन् पिता, पितामह, प्रपितामाह यह तीन तथा मातामह आदि तीन सपत्नीक नान्दी मुख पितरों का श्राद्ध करें ।

यह श्राद्ध सांकल्पित विधान से करे । उसमें समन्त्रक आवाहन, अर्घ्यदान, अग्नीकरण, पिण्डदान, विकिर, अक्षय्य स्वधावाचन और प्रश्न यह सात कर्मांग छोड़कर शेष करने चाहिए । शुभ कार्यों में किये जाने वाले इस श्राद्ध में संकल्प वाक्यों में प्रथमा विभिन्न-अंत वाले वाक्य बोले, किन्तु षष्टयन्त पद न बोले ।

इस श्राद्ध को सव्य रहकर ही करे, अपसव्य न हो । तिलोंका विनियोग भी इसमें नहीं किया जाता है । क्योंकि यह श्राद्ध दैवत माँगलिक है । राज्याभिषेक और पुत्र जन्म के अतिरिक्त नान्दी श्राद्ध दूसरी बार न करे क्योंकि कर्मों के प्रारम्भ और अन्त में

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शान्ति पाठ आदि करना प्रशस्त है । इसलिए एक बार ही करे किन्तु राज्याभिषेक और पुत्र जन्म में प्रथम स्थापित मातृकाओं का विसर्जन करके दूसरी बार नान्दी श्राद्ध करने का विधान है ।

यदि कर्म कर्त्ता का पिता जीवित हो तो माता और पिताम आदि का श्राद्ध करे । यदि माता जीवित हो तो केवल नाना का श्राद्ध करे । किन्तु पिता, माता, नाना तीनों ही जीवित हों तो य श्राद्ध नहीं करना चाहिए । द्वितीय विवाह, अग्नि स्थापन, पुत्रे तथा सोमयागादि में कर्त्ता का पिता यदि जीवित हो तो पि जिन-जिन के नाम से श्राद्ध करे, उन्ही-उन्हीं नामों से कर्म क पुत्र भी करे ।

जिस कर्त्ता के माता और नाना न हों, किन्तु पिता जीवित वह पितामही, प्रपितामही, पितामह, प्रपितामह, पिता के मातामह प्रमातामह, बृद्ध मातामह सपत्नीक नान्दी मुखों के नाम से श्र करना चाहिए । पिता, पितामह जीवित हों तो उनको छोड़क अन्य का श्राद्ध किया जाय ।

समापवर्तन संस्कार में कर्त्ता ब्रह्मचारी होता है तो भी उस जो नन्दी श्राद्ध किया जाय वह ब्रह्मचारी का पिता करे । पिता पु न हो तो ज्येष्ठ भ्राता, चाचा आदि करें । अभिप्राय यह है कि पु के समावर्तन संस्कार में पिता ही अपने पितरों का आभ्युदयि श्राद्ध करे । यदि पिता का पिता जीवित हो तो यह श्राद्ध न करे समावर्तन के समान ही विवाह संस्कार में करना चाहिए ।

पिता की मृत्यु होने पर चूडाकर्म, यज्ञोपवीत आदि संस्क बड़ा भाई, चाचा, मामा आदि कर सकते हैं । उसमें संस्कार कि जाने वाले बालक के पिता, बाबा आदि का नाम श्रद्धा से लि जाता है । यदि पिता के दूर देश जाने पर ज्येष्ठ भ्रातादि श्राद्ध क तो ब्रह्मचारी के पितामहादि का ही करें । मृत मातादि के उद्दे से न करें ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस श्राद्ध में सत्य वसु नामक नान्दी मुख विश्वेदेव होते हैं । यह श्राद्ध उचित संकल्प करके करना चाहिए । इसमें आठ लघु वेदियाँ बना कर और उन पर ढाक का एक-एक पत्ता बिछाकर विश्वेदेवद्वय और पितृषट् के लिए कुश स्थापित करे । इसके बाद यजमान पूर्व की ओर मुख करके बैठे और आचमन, प्राणायाम करके देशकाल का कीर्तन करता हुआ निम्न प्रकार से संकल्प पढ़ें–

अद्य शुभ पुण्य तिथौ (अमुक) संस्कारांगत्वेन सा कल्पितेन विधिना ब्राह्मणयुग्मभोजनपर्याप्तान्ननिष्क्रयाभूत यथाशक्ति हिरण्येन नान्दीश्राद्धमहं करिष्ये ।

पाद्यदान –

उक्त प्रकार संकल्प करके विश्वेदेव, पितादि और मातामहादि को पाद्य, आसन, गन्ध आदि समर्पण, भोजन, द्रव्यदान, दुग्ध और जौ सहित जलदान आदि के द्वारा सांकल्पित पूजन करे । पाद्यदान में दुग्ध, जौ और जल हाथ में लेकर प्रत्येक संकल्प के पश्चात् समर्पित करे । विश्वेदेवों को प्रथम दो पलाश पत्रों पर निम्न मन्त्र से जल छोड़े –

ॐ नान्दीमुखाः सत्यवसु संज्ञकाः विश्वेदेवा ॐ। भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।।

अब आगे के तीन पलाश पत्रों पर क्रमशः पितादि के निमित्त जलदान करता हुआ निम्न मन्त्र बोले –

ॐ स्वगोत्राः पितृपितामह प्रपितामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः। ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनं वृद्धिः।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अब आगे के शेष तीन पत्रों पर क्रमशः मातामहादि के उद्‌देश्य से जलदान करे–

ॐ द्वितीय गोत्राः मातामहा प्रमातामहवृद्ध प्रमाता-महाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः। ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।।

आसन दान–

क्रमशः विश्वेदेवा के दो, पितादि के तीन और मातामहादि के तीन पत्र पर उन-उन के स्थान पर कुशाओं को रखे और निम्न मन्त्रों का उच्चारण करे–

ॐ सत्यवसुसंज्ञकानां विश्वेषां देवानां नान्दी-मुखानाम् । ॐ भूर्भुवः स्वः इदमासनं सुखासनं नान्दी श्राद्धे क्षणौ क्रियेताम् तथा प्रान्पुंसां भवन्तौ प्राप्नुतः।

उक्त मन्त्र से विश्वेदेवों को आसन देकर पितादि को निम्न मन्त्र से आसन दे–

स्वगोत्राणां पितृपितामहप्रपितामहानां सपत्नीकानां नान्दीमुखानां। ॐ भूर्भवः स्वः (आदि पूर्ववत्)।

अब अगले तीन पत्तों पर क्रमशः नाना आदि के लिए आसन देता हुआ निम्न मन्त्र बोले–

द्वितीयगोत्राणां मातामहप्रमातामह वृद्धप्रमाताम हानां सपत्नीकानां नान्दीमुखानां । ॐ भूर्भुवः स्वः (आदि पूर्ववत्)।

गन्धादि दान–

निम्न मन्त्रों से गन्ध, पुष्पादि समर्पित करना चाहिए। प्रथम मन्त्र से विश्वेदेवों को, दूसरे से पितादि को तथा तीसरे से

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मातामहादि को–

ॐ सत्यवसुसंज्ञेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः।। १।।

ॐ स्वगोत्रोभ्यो पितृपितामहप्रपितामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः इदंगन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।। २।।

ॐ द्वितीयगोत्रोभ्यो मातामहप्रमातामहवृद्ध प्रमातामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।। ३।।

भोजननिष्क्रय द्रव्यदान–

एक-एक ब्राह्मण के भोजन योग्य अन्न दे। अन्न के अभाव में आमान्य अथवा स्वर्ण दे । उसके भी अभाव में यथाशक्ति दक्षिणा देनी चाहिए ।विश्वेदेवों पितादि तथा मातामहादि को अन्न दानादि के समय क्रमशः निम्न मन्त्र बोले जाँय–

ॐ सत्यवसुसंज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्योनाँदीमुखेभ्यो ब्राह्मणयुग्म भोजनपर्याप्तमन्नं तन्निष्क्रियीभूतं किनचिद्धिरण्यं दत्ताममृतरूपेण स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः।। १

ॐ स्वगोत्रोभ्यो पितृपितामह प्रपितामहेभ्य सपत्नीकेभ्यो नान्दीमुखेभ्यो ब्राह्मणयुग्म (इत्यादि पूर्ववत्) ।। २

ॐ द्वितीयगोत्रोभ्यो मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यो नान्दीमुखेभ्यो ब्राह्मणयुग्म (इत्यादि पूर्ववत्)।। २

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सयवक्षीरमुदकदान–

जौ, दूध, जल लेकर क्रमशः विश्वेदेव, पितादि, तथा मातामहादि को समर्पण करता हुआ निम्न मन्त्र बोले–

ॐ नान्दीमुखाः सत्यवसुसंज्ञका, विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम् ।।१।।

ॐ स्वगोत्राः पितृपितामहप्रपितामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखा प्रीयन्ताम् ।।२।।

ॐ द्वितीयगोत्राः मातामहप्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखा प्रीयन्ताम् ।।३।।

आशीर्वाद–

अब यजमान को ब्राह्मणों का आशीर्वाद प्राप्त करना चाहिए । यजमान और ब्राह्मणों का कथोपकथन निम्न प्रकार होगा–

यजमान	ब्राह्मण
१. गोत्रं नो वर्द्धताम् ।	१. वर्द्धताम् वो गोत्रम् ।
२. दातारो नो वर्द्धन्ताम् ।	२. अभिवर्द्धन्तां वो दातारः।
३. वेदाश्च नो वर्द्धन्ताम् ।	३. वर्द्धन्तां तो वेदाः।
४. संततिर्नोऽभि वर्द्धन्ताम् ।	४. वर्द्धन्तां व संततिः।
५. श्रद्धाश्च नों माव्यगमत् ।	५. मा न्यगमद्धः श्रद्धाः।
६. बहुदेव च नोऽस्तु।	६. अस्तु वो बहुदेवम् ।
७. अन्नं च नो बहुभवेत्	७. भवेदन्नं वो बहु।
८. अतिथीश्च लभेमहि।	८. संतु वो याचितारः।
९. याचितारश्च नः संतुः।	९. संतु वो याचितारः।
१०. एता आशिष सत्या संतु।	१०. सन्त्वेत्वा आशिषः सत्या।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दक्षिणादान

अब विश्वेदेवादि तीनों के नाम से पृथक-पृथक् दक्षिणा का संकल्प निम्न प्रकार करे –

ॐ सत्यवसु संज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फल प्रतिष्ठा सिद्धियर्थ द्राक्षामलकयवमूल निष्क्रयीभूतां दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे ।। १।।

ॐ स्वगोत्रेभ्यः पितृपितामहप्रपितामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः कृतस्यः (इत्यादि पूर्ववत्)।

ॐ द्वितीय गोत्रोभ्यः मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः कृतस्यः (इत्यादि पूर्ववत्)।

विसर्जन –

दक्षिणा दान के पश्चात् ब्राह्मण 'सुसम्पन्नम्' कहें । इसके पश्चात् निम्न मन्त्र से विसर्जन किया जाय–

ॐ व्वाजेव्वाजेवतव्वाजिनो धनेषुव्विप्राऽअमृताऽऋतज्ञाः अस्यमघ्वः पिवतमादयध्वन्तृप्तायातपथिभिर्देवयानैः।

इसके पश्चात् यजमान ब्राह्मणों से निवेदन करे कि ब्राह्मणों और पितरों की कृपा से इस कर्म का विधान पूर्ण हो । इस पर ब्राह्मण कहे कि 'अस्तु परिपूर्णः' इसके अनन्तर निम्न श्लोकों को पढ़ें –

प्रमादात्कुर्वतांकर्म प्रच्यवेताध्वरेषुयद् ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्ण में स्यादितिस्थितिः।। १
यस्यस्मृत्याचनामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतांयाति सद्योवन्देतमुच्यतम् ।। २

अन्त में भगवान् का नाम स्मरण करे, जिससे कि कर्म में कोई त्रुटि हुई हो तो पूर्ण हो जाय–

ॐ विष्णवे नमः विष्णवे नमः विष्णवे नमः।

५. गर्भाधान संस्कार

मानव जीवन की प्रारम्भिक प्रक्रिया–

यह संस्कार षोडश संस्कारों में प्रथम है। उसे गृहस्थ-जीवन में प्रवेश के उपरान्त प्रथम कर्त्तव्य के रूप में भी मान्यता दी गई है। सन्तानोत्पादन की इच्छा वाले पति-पत्नि को गर्भस्थापन के समय इस संस्कार का निर्देश दिया गया है। इसको आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए मनुस्मृति में कहा है–

वैदिकैः कर्मभिः पुण्यर्निषेकादिर्द्विजन्मनाम् ।
कार्यः शरीर संस्कारः पावन प्रेत्य चेह च।।

अर्थात्–द्विजातियों को वैदिक कर्मों के द्वारा शरीर के गर्भाधानादि संस्कार करने चाहिए, जिससे कि इहलोक और परलोक दोनों में पवित्रता की प्राप्ति हो।

वस्तुतः गर्भाधान संस्कार का महत्त्व अन्य सभी संस्कारों से अधिक माना गया है। क्योंकि इस संस्कार पर ही भावी सन्तान के संस्कार निर्भर होते हैं। सन्तान की उत्पत्ति माता-पिता के पारस्परिक संयोग से होती है, इसलिए उन दोनोंके चेतन और अवचेतन मन तथा शरीर की पवित्रता आवश्यक होती है। वह

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पवित्रता इस संस्कार के द्वारा सहज ही उपलब्ध की जा सकती है।

गार्हस्थ्य जीवन का प्रमुख उद्देश्य सन्तानोत्पत्ति है । शास्त्रों की मान्यता है कि सन्तान के बिना, विशेषकर पुत्र के बिना मनुष्य का उद्धार नहीं होता । पुत्र का अर्थ पु' नामक नरक से 'त्र' अर्थात् त्राण करने वाला है । इस मान्यता के अनुसार ऐसा ही पुत्र उत्पन्न होना चाहिए, जो माता-पिता को नरक से तारने में सहायक हो । इसलिए माता-पिता गर्भाधान से पूर्व अपने चित्तों को और शरीरों को पवित्र बनाने के लिए संस्कार करें तो इच्छित पुत्र-पुत्री आदि की प्राप्ति हो सकती है ।

मन में जैसे भाव होते हैं, वैसा ही रज-वीर्य रहता है । शुद्ध मन वाले माता-पिता की सन्तान सदैव शुद्ध, धर्म परायण और कर्त्तव्य निष्ठ होती है । जैसा बीज होगा वैसा ही फल उत्पन्न होगा। इस सम्बन्ध में स्पष्ट प्रमाण है कि खरबूजे के बीज से तरबूजा उत्पन्न होता हुआ नहीं देखा जाता ।

गर्भाधान की वैधता–

गर्भाधान की क्रिया परस्पर विदाहित स्त्री-पुरुष (पति-पत्नी) में ही वैध है । पर-स्त्री या पर-पुरुष के द्वारा सन्तानोत्पत्ति को वैध नहीं माना जाता, इसलिए उनमें गर्भाधान क्रिया का भी स्पष्ट निषेध है । मनुस्मृति में स्पष्ट निर्देश है –

अपत्यलोभाद्या तु स्त्री भर्तारमतिवर्तते ।
सेहनिन्दामवाप्नोति पतिलोकाच्च हीयते ।।

अर्थात्– जो स्त्री सन्तान के लोभ से पति का अतिक्रमण करती (पर पुरुष रत होती) है, वह इस लोक में तो निन्दा को पाती ही है, परलोक से भी भ्रष्ट हो जाती है ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अतएव पतिव्रत धर्म का पालन करते हुए ही सन्तानोत्पत्ति का विचार करना चाहिए। पुरुषों के लिए भी ऐसा ही निर्देश है। उस पर अधिक प्रमाण देना अपेक्षित न होगा।

विवाह की आयु–

ऊपर कहा गया है कि विवाहित पति-पत्नी को ही गर्भाधान क्रिया करनी चाहिए, इसलिए प्रसंगवश यह कहना भी अनुचित न होगा कि शास्त्र-विहित आयु से पूर्व विवाह करना भी हितकर नहीं है। क्योंकि उस आयु से कम आयु में शरीरस्थ धातुएँ अपरिपक्व रहती हैं, इसलिए उस अवस्था में किया जाने वाला सहवास अपने शरीर के लिए तो हानिकारक होगा ही, इसके कारण उत्पन्न होने वाली सन्तान भी दुर्बल और अयोग्य होगी।

विवाह के साथ कामाचरण का अभिन्न सम्बन्ध है। परन्तु कामाचरण के लिए संयम की बहुत अधिक आवश्यकता बताई गई है। यह सर्वमान्य मत है कि परिपक्व अवस्था प्राप्त होने पर भी समागम में कम से कम प्रवृत्ति होनी चाहिए। इसके लिए आयु विषयक अनेक मत हैं– कोई १८ से ४० वर्ष की अवस्था समागम के लिए उपयुक्त मानते हैं तो कोई २० से ४० वर्ष। कोई ३० से ३५ वर्ष तो कोई २० से ६० वर्ष तक भी मानते हैं। हमें यहाँ प्रारम्भिक अवस्था पर ही थोड़ा विचार करना है, अन्तिम अवस्था पर नहीं। सुश्रुत के मत में 'ऊनषोडशवर्षायामप्राप्तः पंचविंशतिम्' कह कर स्पष्ट कर दिया है कि १६ वर्ष से कम आयु की स्त्री और २५ वर्ष से कम आयु के पुरुष को सहवास नहीं करना चाहिए।

वर्तमान समय में तो कानून द्वारा ही विवाह की आयु निश्चित है। उसके अनुसार स्त्री की आयु १८ वर्ष से कम नहीं होनी चाहिए। पुरुष की आयु भी २४ वर्ष से कम रहना हितकर नहीं। मनु ने तो ब्रह्मचर्य पालन की आयु ३६ वर्ष तक मानी है, फिर भी

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

२५ वर्ष से कम आयु में तो विवाह करना ही नहीं चाहिए।

विचार के उपरान्त भी ऋतुकाल में ही समागम करने का निर्देश मिलता है । मनुस्मृति (३/३५/४६) के अनुसार–

ऋतुकालाभिगामीस्यात्स्वदारनिरतः सदा।
पर्ववर्ज ब्रजेच्चैनांतत् व्रतो रतिकाम्यया:।
ऋतुः स्वाभाविक स्त्रीणां रात्रयः षोडश स्मृताः।
चतुर्भिरितरैः सार्धभहोभिः सद्विगर्हितः।।

अर्थात्–ऋतुकाल में ही अपनी ही पत्नी से समागम करे। पर्व दिनों के अतिरिक्त अन्य दिनों में ही रति की कामना करनी चाहिए। रजोदर्शन से प्रथम चार रात्रियाँ निन्दित हैं । उनके पश्चात् सोलह रात्रियों का ऋतुकाल रहता है ।

मनुस्मृतिकार ने प्रथम चार रात्रि के अतिरिक्त ग्यारहवीं और तेरहवीं रात्रि भी निषिद्ध मानी हैं इसलिए इन रात्रियों को छोड़कर गर्भाधान के लिए प्रयुक्त होना चाहिए ।

पुत्र और पुत्रियों के उद्देश्य से पृथक्-पृथक् रात्रियों में समागम करने से पुत्र और विषम रात्रियों में समागम करने से पुत्री उत्पन्न होना कहा है । छठी आठवीं, दशवीं, बारहवीं, चौदहवीं और सोलहवीं रात्रि सम तथा पाँचवीं, सातवीं, नवीं, पन्द्रहवीं रात्रि विषम समझनी चाहिए ।

प्राचीन काल में समागम की अनुमति केवल सन्तानोत्पत्ति के लिए ही रहती थी, शेष दिन संयम पूर्वक व्यतीत करना ही कर्त्तव्य समझा जाता था । इसलिए गर्भाधान संस्कार की प्रक्रिया निश्चित की गई । इस प्रक्रिया को उत्सव का ही रूप दिया गया । यह संस्कार जहाँ भावी सन्तान को योग्य बनाने में सहायक होता है, वहीं दम्पति को उच्छृँखल आचरण से भी बचाता है।

उच्छृँखल आचरण मन और शरीर दोनों को ही हानि पहुँचाता

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

है । उस हानि को भारतवासी ही नहीं, पश्चिम के स्त्री-पुरुष भी समझने लगे हैं । वे जानने लगे हैं कि भारत में प्रचलित सामाजिक मान्यताएँ निरर्थक नहीं हैं । आज के युग में अनेकों विदेशी हमारी मान्यताओं का अध्ययन करने के उद्देश्य से ही भारत की यात्रा करते हैं ।

इस प्रकार यह कहना अत्युक्ति पूर्ण नहीं होगा कि हमारे ऋषियों ने गर्भाधान संस्कार की महत्ता को जिस रूप में समझा वह मानव मात्र के लिए उपयोगी है । उचित आयु में विवाह होने के पश्चात् परस्पर विवाहित दम्पति जब गर्भाधान के लिए प्रवृत्त हों, उन्हें इसका समाचार करना आवश्यक है ।

संस्कार की विधि–

उपर्युक्त प्रकार से जिस शुभ रात्रि में गर्भाधान करना चाहे, उस दिन सायंकाल शुभ नक्षत्रादि में ऋतु स्नाता पत्नी नवीन वस्त्राभूषण, पुष्पहार आदि से अलंकृत होकर संस्कार के स्थान पर उपस्थित हो और श्रेष्ठ आसन पर पूर्व की ओर मुँह करके बैठे। उस समय कुल की सौभाग्यवती, सन्तानवती वृद्धाएँ अथवा अन्य सम्बन्धी या परिचित वृद्धाएँ, जो पति-पुत्र वाली हों(सौभग्यवत्यौवृद्धाः कुलः स्त्रियः) उस ऋतु स्नाता पर गेहूँ, जौ, नारियल आदि फल तथा पत्रों (पंच पल्लवों) आदि से आरती करें तथा पुरुष इस मन्त्र का उच्चारण करें–

ॐ यः भलिनीर्या, अफला अपुष्पायाश्य पुष्पिणी।
बृहस्पति प्रसता स्ता नोमुञ्चन्त्त्व छहंसः।।

-शु०य०-१२-८९

संकल्प–

उसके पश्चात् पति आचमनादि से शुद्ध होकर प्राणायाम

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आदि का आचरण करे और देश-कालानुसार रीति-रिवाजों को करता हुआ गर्भाधान संस्कार के उद्देश्य से संकल्प करे। उसके लिए निम्न संकल्प मन्त्र का उच्चारण करना चाहिए–

ममास्याः पत्न्याः प्रथम संस्करणेनात्र जनिष्यमाण गर्भाणां वीजगर्भसमुदभवैनो निराकरणार्थ गर्भाधानाख्यं संस्कारकमांहं करिष्ये।

उक्त संकल्प-मन्त्र देश कालादि का उल्लेख करते हुए करना चाहिए। इसमें अपने नाम-गोत्र का उच्चारण भी उचित होता है। स्वयं न कर सके तो किसी विद्वान ब्राह्मण से कराना चाहिए। संस्कृत का ज्ञान न हो तो संकल्प मन्त्र का अभिप्राय समझ लेना भी हित कर होता है, क्योंकि बिना अर्थ का ज्ञान हुए उसका प्रभाव मन और अन्तःकरण पर नहीं हो पाता।

'ममस्याः पत्न्याः' आदि संकल्प-मन्त्र का अर्थ यह है कि इस पत्नी के प्रथम संस्कार के ब्रीज (शुक्र) तथा गर्भ (गर्भाशय) सम्बन्धी दोषों के निवारणार्थ मैं इस गर्भाधान संस्कार नामक क्रिया को करता हूँ।'

इस प्रकार संकल्प करके सूर्यास्त के समय भगवान भास्कर का दर्शन करता हुआ निम्न मन्त्र का उच्चारण भावना पूर्वक करें–

ॐ आदित्यं गर्भ पयसा समङ्ग्धि सहस्रस्य प्रतिमां विश्वरूपमम्। पार्वृङ्धि हरसामाऽभिम ७ स्थाः शतायुषं कृणुहिचीयमानः।

संस्कार कर्म के आरम्भ में मध्यान्ह काल के उपरान्त सर्व प्रथम गणेश पूजन करना चाहिए–

ॐ गणानां त्वा गणपति ७ हवामहे प्रियाणां त्वा

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रियपति ७७ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ७७ हवामहे वसोमम् आहमजजानिगर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ।

गणेश-पूजन विधि सहित करके स्वस्ति वाचन करे और फिर मातृका पूजन और नान्दी श्राद्ध भी करे । उसके पश्चात् ॐ आदित्य गर्भ' आदि मन्त्रोच्चारण के बाद भगवान् सूर्य को पति-पत्नी दोनों ही नमस्कार करें ।

सायंकालोत्तर विधान–

उसके उपरान्त सायंकालीन नित्य कर्म सन्ध्योपासनादि करके पति-पत्नी दोनों ही श्रेष्ठ अन्न का भोजन करें और फिर एक प्रहर रात्रि व्यतीत होने पर शुद्ध धवल वस्त्र धारण करें तथा पुष्पमाल्यादि से विभूषित हों, सुगन्धित द्रव्यों का लेपन एवं आभूषणादि धारण कर सुसज्जित शयनागार में प्रवेश करें । उसमें घृत का दीपक जल रहा हो तथा दीवारों पर महापुरुषों और उदार चरित्र वाले वीरों के चित्र टँगे हों । पलंग भी धुली अथवा नवीन सौम्य सुन्दर चादर से युक्त गुदगुदा और आकर्षक हो, उसका सिरहाना पश्चिम दिशा की ओर पाँयताना पूर्व की ओर रहे ।

ऐसे पलंग पर पत्नी सीधी चित्त लेटे, तब पति पूर्व की ओर मुख करके बैठे और उसके नाभि स्थल को अपने दाँये हाथ से स्पर्श करता हुआ निम्न मन्त्र का उच्चारण करे –

ॐ पूषा भग ७७ सविता में ददातु रुद्रः कल्पयतु लला-मगुम् ।

ॐ विष्णुर्योनिकल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पि७७शतु।
आसिंचत प्रजापतिर्धाता गर्भ दधातु ते ।।

–ऋग् ८।२।४२

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इसके पश्चात् उसी स्थिति में (पूर्वाभिमुख) बैठा हुआ पति निम्न मन्त्र का उच्चारण करे–

ॐ गर्भदेहि सितीवालि ! गर्भदेहि पृथुष्टुके।
गर्भ ते अश्विनौ देवावधत्तां पुष्करस्त्रजौ ।।

—ऋग् ८।८।४२

तदुपरान्त निम्न मन्त्र के भी उच्चारण करने का निर्देश है, जो कि पत्नी की ओर देखते हुए ही पढ़ना चाहिए–

ॐ तेजोमैश्वानरोदद्यादथ ब्रह्मानुमन्त्रयेद् ।
ब्रह्मा गर्भदधातु ते ।।

उक्त मन्त्र पढ़ने के पश्चात् निम्न मन्त्र पढ़ता हुआ अभिगमन का आरम्भ करे–

ॐ गायत्रेण त्वा छन्दसामन्थामि ।।
त्रैष्टुभेन त्वा छन्दसामन्थामि ।।
जागतेन त्वा छन्दसामन्थामि।

-शुक्ल यजुर्वेद

संभोग के पश्चात्, जब पत्नी उठकर बैठ जाये तब पत्नी के दांये कन्धे के ऊपर से पति अपना दांया हाथ ले जाय और निम्न मन्त्र पढ़ता हुआ हृदय का स्पर्श करे–

ॐ रेतो मूत्रं विजहाति योनि प्रविशेदिन्द्रियम् । गर्भो जरायुणावृत उल्वं जहाति जन्मना ऋतेनसत्यमिन्द्रियं विपान ७३ शुक्रमंधसऽइंद्रस्येन्द्रियमिदपयोऽमृतं मधु ।।

—शुक्ल यजुर्वेद

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस प्रकार का हृदय-स्पर्श प्रत्येक बार के ऋतुकाल में अभिगमन कें समय करना चाहिए ।

तदुपरांत निम्न मंत्र का उच्चारण करना अपेक्षित होता है ।

ॐ यत्तेसुमीसे हृदय दिवि चंद्रमसि श्रितम् ।
वेदाहं तनमां तद्विद्यात्पश्येम शरदः शतम् ।
जीवेम शरदः शतं ७ श्रणुयाम शरदः शतम् ।

उसके साथ ही मानसिक संकल्प करे कि 'मैं अपने गर्भाधान संस्कार की सम्पन्नता के लिए यथाशक्य संख्या ब्राह्मणों को भोजन कराऊँगा जिससे कि कर्मांग देवताओं की प्रसन्नता प्राप्त हो सके ।'

ऐसा संकल्प करने के पश्चात् ब्राह्मणों को भोजन करावे और उन्हें दक्षिणा देकर देव-पूजन, आरती आदि के साथ संस्कार कर्म का विसर्जन करता हुआ ब्राह्मणों से आर्शीर्वाद प्राप्त करे । तथा 'यान्तु मातृगणाः सर्वे' इत्यादि मन्त्र पढ़ता हुआ षोडश मातृकाओं का भी विसर्जन करे ।

दम्पति का कर्त्तव्य–

गर्भाधान संस्कार से संस्कारित पति-पत्नी का कर्त्तव्य है कि वह गर्भाधान के समय सभी चिन्ताओं को छोड़ कर, क्रोध, द्वेष, ईर्ष्या आदि विकारों का परित्याग करके सब प्रकार से प्रसन्न चित्त रहें । क्योंकि उस समय पति-पत्नी दोनों का ही मानसिक रूप में स्वस्थ और प्रसन्न रहना बहुत श्रेयस्कर होता है ।

इसी प्रकार गर्भाधान के लिए माता-पिता का शारीरिक रूप से स्वस्थ होना ही बहुत आवश्यक है । क्योंकि रोगी माता-पिता की सन्तान भी रोगी और अल्पायु होती है ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस प्रकार पति–पत्नी दोनों का शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ और प्रसन्न रहना बहुत आवश्यक है । मनुस्मृति (३/१०/६१) के अनुसार –

सन्तुष्टो भार्यया भर्ता भर्त्रा भार्या तथैव च ।
यस्मिन्नेव कुले नित्यं कल्याणं यत्र वै ध्रुवम् ।।
यदि हि स्त्री न रोचेत पुमांस न प्रमोदयेत् ।
अप्रमोदात्पुनः पुंसः प्रजनं न प्रवर्तते ।।

अर्थात्-जिस कुल में पत्नी पति से और पति पत्नी से प्रसन्न रहे, उस कुल में सदा कल्याण रहता । यदि स्त्री प्रसन्न मन न हो तो पति को आनन्दित नहीं कर सकती और पति आनन्दित या प्रसन्न न हो तो सन्तानोपत्ति नहीं हो पाती । अर्थात् अच्छी सन्तानोत्पत्ति नहीं होती ।

❋ ❋ ❋

२. पुंसवन संस्कार

शिशु के शारीरिक, मानसिक विकास का अनुष्ठान–

प्राणी ज्यों ही गर्भ में आता है, त्यों ही उसका शारीरिक निर्माण तथा मानसिक विकास होने लगता है इसलिए यह आवश्यक है कि उसका विकास ठीक प्रकार से होने देने के साधन रूप में इस प्रकार का संस्कार किया जाय । पारस्कर गृह्यसूत्र (१।१६) के अनुसार–

अ'थ पुंसवानम् । पुरा स्पन्दत इति मासे द्वितीये तृतीये वा ।' अर्थात् गर्भ का विकास सम्यक् प्रकार से हो सके, इसके लिए पुंसवन संस्कार करना चाहिए । इसे गर्भाधान के दूसरे या तीसरे

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मास में किया जाय ।

यह संस्कार गर्भस्थ शिशु के मानसिक विकास की दृष्टि से तो बहुत ही उपयोगी समझा जाता है । शास्त्रकारों का निर्देश है कि–

हृदये पितरौ ज्ञाता पूर्णदायित्व मुत्तमम् ।
जन्मनः संतते कुर्यात् व्यवस्था स्वागताय च ।।

अर्थात्–सन्तान की उत्पत्ति के उत्तरदायित्व को ठीक प्रकार से समझकर उसके स्वागत की व्यवस्था करनी चाहिए ।

आश्वलायन गृह्यसूत्र के रचयिता ऋषि की मान्यता है कि जिस कर्म के द्वारा पुमान् (पुरुष, जीव) जन्म ग्रहण करता है, वह पुंसवन कर्म होता है ।

शिशु से सम्बन्धित संस्कार–

पुंसवन संस्कार पत्नी से सम्बन्धित नहीं, वरन् गर्भस्थ शिशु से सम्बन्धित संस्कार है । इस संस्कार में मल मास, गुरु, अस्त, शुक्रास्त प्रभृति निषिद्ध योग बाधक नहीं होते जिस दिन शुभ नक्षत्र या शुभ दिन दिखाई दे उसी दिन इसे कर सकते हैं । शास्त्रकारों ने इसके लिए पुनर्वसु पुण्य, हस्त, मृगशिर, मूल, श्रवण आदि नक्षत्रों को शुभ माना है । पारस्कर, गृहसूत्र (१ । १६) 'यदहः पुंसा नक्षत्रण चन्द्रमा' आदि के अनुसार जिस दिन चन्द्रमा पुरुष नक्षत्र से मुक्त हो उस दिन उपवास करके अप्लावन करे ।'

अनेक विद्वानों का मत है कि यह संस्कार तभी करना चाहिए जबकि माता-पिता को पुत्र की इच्छा हो, इसी दृष्टि से पुरुष नक्षत्र युक्त चन्द्रमा वाले दिन उपवास करके संस्कार को करने को कहा गया है । किन्तु बहुत-से विद्वान् इस मत से सहमत नहीं उनके मत में यह संस्कार सन्तान में उत्कर्ष लाने के उद्देश्य से किया जाना चाहिए ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

संकल्प –

उपवास के पश्चात् गर्भवती को स्नान करावे और फिर उसे दो नवीन उत्तम वस्त्र धारण कराके पूर्व की ओर मुख कराके बैठा दे । तदुपरान्त स्नानादि करके प्राणायाम करे तथा देशकाल का उल्लेख करता हुआ निम्न प्रकार से संकल्प करे –

ममास्याः पत्न्या उत्पत्स्यमान गर्भस्य वैदिक गार्भिक दौषपरिहारार्थ पुत्ररूपत्वसम्पत्तये च श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थ पुंसवनं संस्काराहं करिष्ये। तन्निर्विघ्नसमाप्तये गणपति पूजनं स्वस्तिपुण्याहवाचनं वसोर्द्धारा आयुष्यमन्त्र जपं नान्दीश्राद्धं च करिष्ये।

अर्थात् मेरी इस पत्नी से उत्पन्न होने के साधन रूप बीज और गर्भाशय के दोषों के परिहारार्थ तथा पुत्र रूप में सन्तान प्राप्त होने पर परमेश्वर की प्रीति के निमित्त मैं पुंसवन कर्म करता हूँ । उसकी निर्विघ्न रूप से सम्पन्नता के लिए गणपति का पूजन, स्वस्तिपुण्याहवाचन, वसोधारा तथा आयुष्ध मन्त्रों का जप तथा नान्दी श्राद्ध करूँगा ।

इस प्रकार संकल्प के पश्चात् गणपति पूजन, स्वस्तिवाचन, वसोधारा तथा आयुष्य मन्त्रों का जपादि करते हुए पुण्याहवाचन के अन्त में 'प्रजापति प्रीयताम्' वाक्य का उच्चारण करें ।

तदुपरान्त रात्रि के समय वटवृक्ष की वरारोह (जटा) और वट की शाखा के अंकुर समान भाग को पानी के साथ पीस छान क रस निकालें और पति अपनी गर्भवती पत्नी के दांये नासा छिद्रं डालें । रस को डालते समय यह मन्त्र पढ़ना चाहिए –

संस्कार की मुख्य क्रिया –

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्यजातः परिक

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आसीत् । सदाधार पृथिवी द्यामुतेषां कस्मै देवायहविषा विधेम ।

ॐ अदभ्यः सम्भृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्तताग्रे । तस्य त्वष्टा विदधद्रपमेति तामर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे ।

पास्कर गृह्यसूत्र (१। १६) के अनुसार 'न्यग्रोध (वटवृक्ष) के अवरोहों का और शुंगों को पानी के साथ पीसछान कर हिरण्यगर्भः और अद्भ्य सम्भृंत' मन्त्रों से आसेचन करे । कुछ विद्वानों के मत में वारारोह वटांकुर, कुशों का अग्रभाग और सोमलता को समान भाग लेकर पानी के साथ पीस-छान कर दाँये नासा छिद्र के द्वारा प्रविष्ट करना उचित है । यदि उक्त औषधि न मिलें गिलोय अथवा ब्राह्मीबूटी का उक्त प्रकार से प्रयोग किया जाय ।

पारस्कर गृह्यसूत्र के मत में 'यदि कामयेत् वीर्यवान् स्यामिति विकृत्यैनमभिमंत्रपते सुपर्णोऽसीति प्राग्विष्णुक्रमेभ्यः' अर्थात् यदि पुरुष (पुत्र की) कामना करता है तो 'वीर्यवान् स्याम् इति' से विकृत तक इसका 'सुपर्णोऽसीति' से प्रथम विष्णु क्रम से उपमन्त्रण करे ।'

पुत्र के पराक्रमी होने की कामना वाले पति को पत्नी की गोद में जल से परिपूर्ण मृत्तिका पात्र (सकोरा) तथा नारियल रखना चाहिए और फिर अपने दाँये हाथ की अनामिका के अग्रभाग से पत्नी के उदर का स्पर्श करते हुए निम्न मन्त्र का उच्चारण करना चाहिए ।

ॐ सुपर्णोऽसि गुरुत्मांस्त्रिवृत्रे शिरोगायत्रं चक्षुर्वृहद्ररथन्तरे पक्षौ । स्तोम आत्मा छन्दा ꣳ स्यमानि यजू ꣳ षि नाम । साम ते तनूर्वामदेव्यं यज्ञायज्ञियं

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पुच्छं धिष्णयाः शफाः। सुपर्णोसि गरुत्मान् दिवं गच्छ स्वः पत ।।

—शुक्ल यजु० ।। १२।।

पत्नी की गोद में भरा हुआ जल-पात्र और नारियल रखना उसकी हरी-भरी गोद का प्रतीक है । इसका अर्थ समय पर श्रेष्ठ आचारवान्, गुणवान और बलवान और बलवान सन्तान उत्पन्न होगी, ऐसा विश्वास उसके मन में भरना है । विश्वास का आश्चर्यकारी होता है ।

चरु प्रदान

चरु आहुति का अभिप्राय खीर की आहुतियाँ देना है । यह खीर दूध, चावल और शर्करा मिलाकर स्वादिष्ट बनाई जाती है । इसमें किशमिश, चिरोंजी, पिश्ता, बादाम प्रभृति मेवे भी डाल सकते हैं । शुद्ध देशी घी का मिश्रण भी किया जा सकता है । इसकी आहुतियाँ निम्न मन्त्र के साथ देनी चाहिए –

ॐ धाता दधातु दशुषे प्राची जीवातुमक्षिताम् ।
वयं देवस्य धीमहि सुमति वाजिनीवतः स्वाहा ।।
इदं धात्रे न मम् ।।

उक्त मन्त्र का उच्चारण करते हुए पाँच आहुतियाँ दी जाँय । बाद में यज्ञ से अवशिष्ट खीर का प्रसाद गर्भवती को भी देना चाहिए । एक सकोरे में खीर रखे और उस पर उल्टा सकोरा ढँक कर ऊपर से पुष्प रखे और पत्नी को देता हुआ पति निम्न मन्त्र का उच्चारण करे–

ॐ पयः पृथिव्यां पय औषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ।।

पति द्वारा प्रदत्त यह खीर पत्नी तब खाये जब कि ब्राह्मण

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भोजन और देव-मातृका-विसर्जन आदि कार्य पूर्ण हो जाय ।

संस्कार का समापन–

क्षीर-प्रदान के पश्चात् पति पत्नी के मस्तक पर हाथ रखे उस समय निम्न मन्त्र का उच्चारण करें–

ॐ यत्ते सुसीमे हृदये हितवन्तः प्रजापतौ ।
मन्येहं मां तद्विद्वांसमाहं पौत्रामद्यन्नियाम् ।।

तदुपरान्त पति ब्राह्मण भोजन को संकल्प करके उन्हें भोजन करावे और दक्षिणा देकर आशीर्वाद ले । उनकी दक्षिणा करे और फिर 'यान्तु मातृगणाः सर्वे' कहकर मातृकाओं का विसर्जन करे । इस प्रकार पति-पत्नी को ईश्वर और ऋषि परायण रहने का आचार्यों ने निर्देश किया है–

देवताब्राह्मणपराः शौचाचार हितेरताः ।
महागुणान्प्रसूयन्ते विपरीतास्तु निर्गुणान् ।।

अर्थात्– जो गर्भवती नारी देवताओं तथा संयमी ब्राह्मणादि के परायण रहकर शुद्ध आचार का पालन करती है, उसकी सन्तान अत्यन्त प्रतापी और गुणवान होती है ।

जब संस्कार कर्म सम्पन्न हो जाय तब सभी उपस्थित व्यक्ति गर्भवती को आशीर्वाद दें । इस कार्य के पश्चात् जब गर्भवती भोजन करने बैठे, तब सर्व प्रथम पति-प्रदत्त उस खीर का ही भोजन करे, उसके बाद अन्य पदार्थ खाये ।

पति-पत्नी के लिए निर्देश–

यह संस्कार गर्भवती के चित्त में आत्म विश्वास उत्पन्न करने तथा शिशु का मानसिक और शारीरिक विकास करने की दृष्टि से किया जाता है । गर्भवती स्त्री के लिए आचार्यों ने कुछ आचार-पालन का भी निर्देश दिया है । यदि उनके अनुसार आचरण करे तो

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

समय पर स्वस्थ, सुन्दर, दीर्घजीवी और प्रतापी सन्तान उत्पन्न होती है । भविष्य पुराण आदि में उन आचारों का वर्णन निम्न प्रकार हुआ है–

गर्भिणीकुञ्जराश्वादि शैलहर्म्यादिरोहणम् ।
व्यायामं शीघ्र गमनं शकटारोहणं त्यजेत् ।।
शोकं रक्तविमोक्षं च साहसंकुक्कुटासनम् ।
व्यावायंचदिवास्वापं रात्रोजागरणं त्यजेत् ।।
अतिरूक्षंतुनाश्नीयादत्यत्यम्लमतिभोजनम् ।
अत्युष्णमतिशीतञ्च गुर्वाहारविवर्जयेत् ।।
इतिवृत्ताभवेन्नारी विशेषेण तु गर्भिणी ।
यश्चतस्यांभवेत्पुत्राः स्थिरायुर्बुद्धिसंयुतः ।।
अन्यथागर्भ पतनमवाप्नोति न संशयः ।
वृक्षं नदींचनाक्रामेन्नप्राकार पयोनिधिम् ।।
परिखांचनचाक्रामेमदबला गर्भ धारिणी ।
गर्भरक्षासदाकार्यां नित्यंशौचनिषेवणात् ।।
प्रशस्तमन्त्रलिखनाच्छस्तसाल्यानुलेपनात् ।
भूम्यां चैवोच्चनीचायामारोहश्चावरोहणम् ।
नदींप्रतरण चैव शकटारोहणं तथा ।।
उग्रौषमं तथाक्षांर मैथुनं भारवाहनम् ।
कृते पुंसवने चैव गर्भिणीपरिवर्जयेत् ।।

अर्थात्–गर्भिणी को हाथी-घोड़े की सवारी नहीं करनी चाहिए, पर्वत, सीढ़ी आदि पर भी न चढ़े तथा व्यायाम, दौड़ना बैलगाड़ी प्रभृति पर सवार होना भी त्याग दे । शोक न करे, शरीर से रक्त

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

निकलने दे और साहस का कोई कार्य न करे । कुक्कुटासन (मुर्गे के समान बैठना) त्याज्य समझे, पति से संयोग न करे । दिन में न सोवे और रात्रि में जागे भी नहीं । रूखे, खट्टे अति गर्म, अति ठण्डे तथा भारी पदार्थ न खाय। गर्भवती को इसका विशेष ध्यान रखना चाहिए । क्योंकि ऐसा आचरण रखने पर सन्तान हृष्ट-पुष्ट, दीर्घजीवी और स्थिर बुद्धि होती है । अन्यथा गर्भपात हो सकता है । वृक्ष पर न चढ़े, नदी के पार न जाय, परकोटे पर न चढ़े, समुद्र में न तैरे, खाई आदि पर भी न चढ़े । इस प्रकार गर्भ-रक्षा के प्रयत्न में सदा तत्पर रहे और शुद्धता बनाये रखे । स्नान के बाद गन्धानुलेपन (चन्दन, केशर आदि) का प्रयोग करे, सुगन्धित पुष्पों की माला पहिने और उत्तम विचारों को पत्र आदि में लिखे । ऊँची-नीची धरती पर चढ़ना, नदी में तैरना, गाड़ी पर सवार होना, तीक्ष्ण औषधि यथा क्षार आदि का सेवन, मैथुन, भार वहन आदि सभी कार्यों को पुंसवन कर्म होने के पश्चात् छोड़ दें ।

उक्त निर्देश पत्नी के लिए है । ऋषियों ने पतियों के लिए भी कुछ नियम निर्धारित किये है, जिन का पालन यदि वह प्रारम्भिक महीनों में न कर सके तो सातवें मास से अवश्य करे । शास्त्रों का मत है –

प्रव्यक्तगर्भापतिरब्धियानं
मृतस्यवाहंक्षुर कर्म संगम् ।
क्षौरंतथष्नुगमनं नखकृन्तनंच
युद्धादिवास्तु करणंत्वतिदूरयानम् ।।

अर्थात्– गर्भवती स्त्री के पति को समुद्र यात्रा, मृतक कर्म में संग जाना, बाल कटवाना, किसी अन्य चूड़ाकर्म संस्कार में सम्मिलित होना, नख काटना, युद्धादि विग्रहकरना, नवीन घर बनवाने और सुन्दर देश की यात्रा करना या सुदूर देश में रहना

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

निषिद्ध है ।

उक्त निर्देश का अभिप्राय ब्रह्मचर्य का पालन, शुद्ध आचार-विचार रखना और गर्भवती को अकेली न छोड़ना आदि ही है । इनमें ये सुविधानुसार जितना बन सके उतना करना चाहिए ।

※ ※ ※

३. सीमन्तोन्नयन संस्कार

संस्कार का समय–

सीमन्तोन्नयन का अभिप्राय है सौभाग्य-सम्पन्न होना । यदि इसके शब्दार्थ पर ध्यान दें तो 'शिर की माँग' अर्थ बनेगा । यद्यपि सौभाग्यवती विवाहिता महिलाएँ शिर में सदा माँग भरती है तथा माँग भरना सौभाग्य का एक चिन्ह भी है, तथापि गर्भाधान के तृतीय संस्कार के रूप में इसका विशेष महत्त्व स्वीकार किया जाता है । इससे गर्भवती के चित्त में एक ऐसी भावना की दृढ़ता होती है, जो आत्म-विश्वास, सन्तोष, सन्तान के प्रति प्रेम तथा कर्त्तव्य निष्ठा आदि का समावेश कराती है ।

इस संस्कार के विषय में पारस्कर गृह्यसूत्र में कहा—'प्रथम गर्भमासे षष्ठेऽष्टमे वा' अर्थात् 'यह संस्कार प्रथम गर्भ में छठे अथवा आठवें मास में होता है ।' सूत्रकार ने पुंसवनवत्' कहकर स्पष्ट कर दिया है कि यह संस्कार पुंसवन संस्कार के समान ही उपयोगी है और उसी के समान करना चाहिए । आश्वलायन गृह्यसूत्र (१/१४—२) के अनुसार 'आपूर्यमाणपक्षे यदा पुंसानक्षत्रेण चन्द्रमा युक्तः स्यात्' अर्थात् जब शुक्लपक्ष में चन्द्रमा पुमान् नक्षत्र से युक्त हो तब संस्कार करना चाहिए ।

आश्वलायन ने इस संस्कार की गर्भस्थापन के चौथे मास

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करने का निर्देश किया है–'चतुर्थ गर्भमासे सीमन्तोन्नयनम्' (१/१४–१), किन्तु अधिकांश मत छठे या आठवें मास में ही करने के मिलते हैं । 'षष्ठेऽष्टमे वा' की पुष्टि–महर्षि याज्ञवल्क्य ने भी इसी प्रकार की है ।

संस्कार विधि–

संस्कार के लिए शुक्ल पक्ष में शुभ नक्षत्र (पुरुष नक्षत्र) वाले दिन पति अपनी गर्भवती पत्नी के सहित मंगल द्रव्य युक्त शुद्ध जल से स्नान करके नवीन उज्ज्वल चीरेदार दो वस्त्र धारण करे और गन्धानुलेपन तथा आभूषणादि धारण कें पश्चात् श्रेष्ठ आसनों पर बैठ जायें । फिर आचमन आदि से शुद्ध होकर प्राणायाम करे और तदुपरान्त निम्न प्रकार से संकल्प वाले मन्त्र का उच्चारण करें–

अस्याः मम भार्यायाः गर्भावयवेभ्यस्तेजोवृद्ध्यर्थ क्षेत्रगर्भयोः संस्कारार्थ प्रतिगर्भसमुद्भवनोनिर्वहणपुरस्सरं श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थ सीमन्तोनयनाख्यं संस्कारं करिष्ये । तत्र निर्विघ्न समापनार्थ गणपति पूजनं स्वस्ति पुण्याहवाचनं मातृका पूजनं संकल्पात्मकं नान्दी श्राद्धं च करिष्ये ।

संकल्प के पूर्व 'हरि ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु तत्सत्ब्रह्मणो द्वितीये परार्द्धे' इत्यादि रूप से देश-काल निर्देशात्मक कीर्तन करे । संकल्प के पश्चात् संकल्प पूर्वक गणेशपूजनादि सभी कर्म विधिवत् करने चाहिए । स्वस्ति पुण्याहवाचन के अन्त में 'धाता प्रीयताम्' कहते हुए ऊह कर ले ।

इस संस्कार को विधिवत् करने का नियम यह है कि एक सुन्दर मण्डप में एक हाथ की चौकोर वेदी की धरती को तीन

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुशों से झाड़े और उन कुशों को ईशान कोंण में फेंक दे । फिर गोबर को पानी के साथ मिलाकर उससे लीपे और स्रुवा के मूल से उत्तर-उत्तर वेदी में तीन प्रगायतन रेखा खींचे । अब उन रेखाओ में से मिट्टी को दायें हाथ के अंगूठे और अनामिका से उठाकर फेंके तथा वेदो में जल सींचे ।

ब्रह्मा का वरण–

तत्पश्चात् मृत्तिका पात्र में अथवा ताम्र पात्र में मंगल संज्ञक अग्नि को लावे और वेदी में स्थापना करे । फिर पुष्प, चन्दन, ताम्बूल, नारियल प्रभृति द्रव्य तथा वस्त्रादि लेकर निम्न मन्त्र का उच्चारण करता हुआ ब्रह्मा का वरण करे–

ॐ अद्य कर्त्तव्यसीमन्तोन्नयन होमकर्मणि कृतावेक्षणरूप ब्रह्मकर्मकर्तुम अमुक गोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मण मेभिः पुष्पचन्दनताम्बूलनारिकेल वासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं बृणे ।

इस प्रकार वरण-मन्त्र का उच्चारण करता हुआ यजमान पुष्पादि वस्तु ब्रह्मा के हाथ में दे ब्रह्मा 'वृतोऽस्मि' कहकर स्वीकार कर ले । तदुपरान्त अग्नि से दक्षिणा और शुद्ध चौकी और पूर्व की ओर अग्रभाग रखते हुए कुशों का आसन बिछावे तथा ब्रह्मा को अग्नि की परिक्रमा कराकर 'अस्मिन्कर्मणि त्वं में ब्रह्मा भव' अर्थात् 'इस कर्म में तुम मेरे ब्रह्मा हो' ऐसा निवेदन करे । उसके उत्तर में ब्रह्मा 'भवामि' कहे और उत्तर की ओर मुख करके बैठ जाय । यदि ब्रह्मा के स्थान पर ब्राह्मण न हो तो कुश में ब्रह्मा की भावना करके बैठाते हैं । उस स्थिति में भी उक्त वरण-विधि ही प्रयुक्त होती है ।

जब ब्रह्मा अपना आसन ग्रहण कर ले तब जलपूर्ण प्रणीतापात्र

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

को सामने रख कर कुशों से ढके और ब्रह्मा का मुख देख कर अग्नि से उत्तर की ओर उस पात्र को कुशों पर आगे रखे और फिर चार मुट्ठी कुश लेकर अग्नि के चारों ओर फैला दे । फिर अग्नि से उत्तर और प्राक्संस्थ पात्र का आसादन करे ।

होमादि का विधान–

पवित्री छेदनार्थ तीन कुश पवित्र करणार्थ दो कुश अग्रभाग सहित ले । प्रोक्षणी पात्र, आज्य स्थाली, सम्मार्जन कुश ढाक की तीन समिधाएँ, स्त्रुव आज्य (घृत, चावलों से परिपूर्ण)

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये नमम इति मनसा, ॐ इन्द्रायस्वाहा । इदमिन्द्राय नमम। इत्याधारौ। ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये नमम। ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय नमम।

आहुति देने के बाद जब जो घृत की बूँदें शेष रहें, उन्हें प्रोक्षणी पात्र में डालता जाय । प्रजापति का ध्यान कर पूर्वाधार की तूष्णी आहुति दे । आधार की दो आज्याहुतियाँ देने के पश्चात् चरु का होम करे । फिर घृत से अभिधारित स्थाली पाक से स्विष्टकृत् करनी चाहिए यथा–

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा । इदमग्नये स्विष्टकृते न मम ।' तदुपरान्त तीन महा व्यहृतियों के साथ आहुतियाँ दे –

ॐ भूः स्वाहा। इदमग्नये नमम।
ॐ भुवः स्वाहा। इदं वायवे नमम।
ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्यास्त नमम।

इस प्रकार सर्व प्रायश्चित्त की ३ आहुतियाँ उक्त महाव्याहृतियों की, ५ प्रजापत्य की और २ स्विष्टकृत् की मिला कर कुलं १४ आहुतियाँ त्यागों सहित देने का विधान है । उसके बाद सस्त्रव

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्राशन करे, हाथों को धोवे और आचमन करे और ब्रह्मा को दक्षिणा देकर 'ॐ सुमित्रिया न आप औषधयः सन्तु' कहते हुए यजमान अपने सिर पर जल का सेवन करे और फिर 'ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः' मन्त्र का उच्चारण करते हुए प्रणीता पात्र के जल को ईशान दिशा में पात्र, तिल-मूँग युक्त चरु के चावल लेकर पवित्र छेदन कुशों से उत्तर की ओर अग्रभाग रखते हुए क्रम से पूर्व-पूर्व की ओर स्थापित करने चाहिए ।

फिर पीपल को एक खूँटी, एक पीले सूत से लपेटा हुआ सेही का एक कांटा, एक तकुआ, तेरह-तेरह कुशों से युक्त दाभ की तीन पिंलूली तथा गूलर के दो फल और गूलर की शाखा का आसादन करे तथा छेदन कुशी से प्रवेशामात्र दोनों का छेदन करके दाँये हाथ से प्रणीता पात्र के जल को प्रोक्षणी पात्र में तीन बार डाले तथा अँगूठे और अनामिका से पवित्रों को पकड़कर प्रोक्षणीपात्र वाले जल का उसने उत्पवन करे ।

प्रोक्षणी पात्र के जल से आशादित आज्य स्थाली आदि का सेवन करे तथा अग्नि और प्रणीतापात्र के मध्य में प्रोक्षणीपात्र को रखे। घृतपात्र से आज्य स्थाली में घृत डाले और चरु पात्र मेंचरु द्रव्य डालकर यजमान चरु को उत्तर में और ब्रह्मा आज्य को दक्षिण में पकने के लिए एक साथ रखें । जब चरु कुछ पक जाय तब अग्नि से उतार कर घृत को चरु के सामने पूर्व की ओर रखे । फिर उपयमन कुशों को बाँये हाथ मैं लेकर ब्रह्मा का ध्यान करे तथा तीन समिधाओं को घृत में डुबो कर बिना मन्त्र पढ़े (तूष्णी आहुति) अग्नि में डाले । फिर पवित्री के सहित प्रोक्षणीपात्र के जल की प्रदक्षिणा करते हुए ईशान कोंण से उत्तर दिशा तक (सब जल) सिंचन करे । फिर दोनों पवित्री प्रणीता पात्र में रखकर विसर्जन करे ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

फिर यजमान दाँये घुटने को धरती टिकाकर निम्न चार मन्त्रों से आज्य की चार आहुतियाँ दें–

सिंचन करे तथा पवित्रों को बिछाते हुए कुशों में मिला कर, बिछाये गये क्रम से ही उठाकर उनमें आज्य स्थाली के अवशिष्ट घृत को लगा कर निम्न मन्त्र के उच्चारण के साथ अग्नि में डाल दे –

ॐ देवागातु विदोगातुं वित्वा गातुमित। मनसस्पत इमं देवयज्ञं ॐ स्वाहा। वातेधाः स्वाहा। इदं वाताय नमम।

फिर देवदारु वृक्ष का उत्तम पट्टा लेकर उस पर श्रेष्ठ कोमल आसन बिछावे और गर्भवती को बैठा दे । फिर गूलर के फल (एक ही शाख में) अथवा एक साथ बाँधकर तथा गूलर की १३-१३ टहनियाँ लेकर, कुशों को ३ पिंजुली तीन स्थान पर, श्वेत सेही का एक कांटा पीले सूत से लिपटा हुआ लोहे का एक तकुआ तथा पीपल वृक्ष की एक नोंकदार खूँटी एकत्र कर इनसे पति अपनी गर्भवती पत्नी के केशों को दांये-बांये दोनों ओर करता हुआ निम्न मन्त्र पढ़ता जाय–

ॐ भूर्विनयामि।
ॐ भुवर्विनयामि।
ॐ स्वर्विनियामि।

इस प्रकार बालों का विनयन करते (संभारते) हुए पीछे की ओर जूड़ी बाँध दे । फिर निम्न मन्त्र का उच्चारण करता हुआ उन पाँचों (गूलर आदि) वस्तुओं को बालों के जूड़े में ही बाँध दे–

ॐ अयमूर्जावतो वृक्षऊर्जीवफलिनीभव।

उस समय दो वीणावादक भी होने चाहिए, जो कि निम्न मन्त्र

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

को सुन्दर स्वर-राग में गावें–

ॐ सोमएवनीराजेमासानुषीः प्रजाः।
अविमुक्तचक्रऽआसीरं स्तीरेतु भ्यम् (असौ)।।

उक्त गान-मन्त्र के अन्य में (असौ) पद के स्थान पर गंगा यमुना आदि जो बड़ी नदी निकट में हो उसका नाम गर्भवती स्वयं बोले–

संस्कार का समापन–

तत्पश्चात् ब्राह्मण भोजन का संकल्प करके भोजन करावे और पुष्पमाल, चन्दन, ताम्बूल, दक्षिणादि देकर आशीर्वाद ले और फिर अग्नि का विसर्जन करने के उपरान्त 'यान्तु मातृमणाः सर्वे' कहकर मातृकाओं का विसर्जन करे । तदन्तर स्रुवा के मूल से वेदी से भस्म लेकर 'ॐ त्र्यायुषम्जमदग्नेः, इति ललाटे' कहते हुए ललाट में, 'ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम्–इति ग्रीवायाम्' कहते हुए ग्रीवा में, 'ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम्–इति दक्षिणा बाहुमूल कहते हुए दाँयी भुजा के मूल में और 'ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्, इति हृदय' में लगावे । इसी प्रकार पति पत्नि के भी मन्त्र बोलते हुए भस्म लगा कर कर्म को सम्पन्न करे ।

※ ※ ※

४. जात कर्म संस्कार

संस्कार का अभिप्राय–

गर्भाधान से यह संस्कार चतुर्थ होता है । इसे तभी करने का विधान है, जबकि किसी करण वश अन्य संस्कार न हो पाये हो । किन्तु, उचित यह माना जाता है । कि प्रसव काल समीप आने पर

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रत्येक संस्कार के न करने के प्रायश्चित स्वरूप एक-एक गोदान किया जाय। सामान्यतः तीनों संस्कारों का अनादिष्ट हवन रूप प्रायश्चित करके वे संस्कार करके ही जात कर्म संस्कार का अभिप्राय माता के उदर में, रहने से हुई शिशु की अशुद्धि दूर करना भी है ।

जब गर्भ के दिन पूरे हो जाँय और उदर में प्रसवपीड़ा का आरम्भ हो तब पति को पत्नी के शरीर पर मार्जन करना चाहिए। मार्जन करते समय पति निम्न मन्त्र का उच्चारण भी करे–

ॐ एजतु दशमास्यो गर्भो जरायुण सह।
यथायं वायुरेजति यथा समुद्र एजति।।
एवायं दशमास्यो अस्त्रज्जरायुणा सह।

उक्त मन्त्रोच्चार के साथ मार्जन कर्म करने के पश्चात् पति पत्नी के पास बैठ कर निम्न मन्त्र का जप करे–

ॐ अवैतु पृश्निशेवल शुने जराय्वत्तवे नैया मा सेन पीवरीं न कस्मिश्चनायतनमवजरायु पद्यतामिती।

यदि स्त्री अधिक कष्टी हो अर्थात् प्रसवकाल मैं स्त्री को अधिक पीड़ा हो अथवा एक-दो घण्टे में भी बालक उत्पन्न न हो तो गर्भवती को सान्त्वना देता हुआ पति दूव के ३१ अंकुर गिनकर ले और उन्हें तिल-तैल ४ तोले में डाल कर पत्नी के ऊपर प्रदक्षिणा क्रम से घुमता हुआ निम्न मन्त्र को १०८ बार पढ़े –

ॐ हिमवत्युत्तरे पार्श्वे शवरी नाम पक्षिणी।
तस्यानूपुर शब्देन विशल्यास्यात्तु गर्भिणी स्वाहा।।

मन्त्र जाप के बाद उसमें से थोड़ा-सा तैल गर्भिणी को पिलावे और अवशिष्ट तैल को उसके उदर पर लेप कर दे । ऐसा करने से शीघ्रप्रसव संभव है ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पुत्रोत्पत्ति के पश्चात् –

जब प्रसव हो जाय तथा पुत्र की उत्पत्ति हो जाय तब पिता सर्व प्रथम अपने कुल देवता को प्रणाम करे और फिर परिवार में वृद्ध पुरुषों तथा अन्य गुरुजनों को नमस्कार करके पुत्र का मुख देखे । फिर यदि समीप में कोई नदी हो तो वहाँ, अन्यथा सरोवर पर जाकर उत्तर की ओर मुख करके स्नान करे । यदि निकट में कोई सरोवर भी न हो तो बाबड़ी या कुए पर स्नान करना चाहिए वर्तमान काल में शहरों में तो घर-घर में नल लगे हैं इसलिए नदी, सरोवर, कुए आदि पर न जाँय और नल पर स्नान करना चाहे तो कर सकते हैं ।

यदि पुत्र की उत्पत्ति मूल, ज्येष्ठा अथवा व्यतीपात प्रभृति अनिष्ट समय में हुई हो तो पुत्र का मुख देखे बिना स्नान करना चाहिए । यदि पिता स्वयं किसी प्रकार अस्वस्थ हो, सर्दी जुकाम आदि से पीड़ित हो अथवा शीत काल हो और स्नान की इच्छा न करती हो तो हाथ-पाँव, मुख आदि तो धो ही लेना चाहिए ।

जब पुत्र उत्पन्न हो जाय तब प्रसव-काल से ३२ या १६ घड़ी(१घड़ी २४ मिनट की होती है) के बाद नाल काटे । इतने समय में जातकर्म सम्बन्धी सभी क्रियाएँ पूर्ण हो सकती हैं । आचार्यों का मत है कि नाल काटने से पहिले ही जात कर्म पूछ कर कर लेना उचित है । मनुस्मृति (२/२९) में स्पष्ट कहा गया है–

प्राङ् नाभिनर्धनात्पु सो जातकर्म विधीयते ।
मन्त्रैवत्प्राशनं चास्य हिरण्यमधुसर्पिषाम् ।।

अर्थात्-नाल-छेदन के पहले ही पुरुष का जातकर्म संस्कार किया जाता है उसके पश्चात् ही उस बालक को स्वर्ण, मधु और घृत चटाते हुए वैदिक मन्त्र पढ़ने चाहिए ।

नाल काटने से पूर्व जात कर्म संस्कार पूर्ण लेने का अभिप्राय

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यह है कि नाल काटने के पश्चात् सूतक(अशौच) लग जाता है और सूतक में जातकर्म करने का निषेध है । यदि रात्रि के समय प्रसव हो तो भी जातकर्म में संकल्पात्मक नान्दी श्राद्ध स्वर्ण से करने का ही निर्देश है । जातकर्म सम्बन्धी कृत्यों को संक्षिप्त सूची निम्न प्रकार है ।

जाते पुत्रे सचलं भवति जनयतो मातृनान्दीयमेधा।
यु ष्ये त्वेवं जपः स्याञ्जननभुवममुं मन्त्रयेन्मातरञ्च।।
सव्यं प्रक्षाल्य वामं स्तनमुदकयुतं चात प्रच्छिद्यनालं।
सूत्यग्नि स्थाप्य हुत्वा द्वितयमनुदिनं विंशति द्वे द्वाद्र शाहम् ।।

अर्थात्–जब पुत्र उत्पन्न हो जाय तब गणेश पूजन स्वस्ति–पुण्याहवाचन, मातृक पूजन, आयुष्य मन्त्र जप, नन्दी-श्राद्ध, मेघाजनन, आयुष्यकरण, जन्मभूमि-अभिमन्त्रण, शिशु-अभिमर्शन जनन्यभिमस्त्रण तथा स्तनद्वय प्रक्षालन कराके शिशु के मुख में देने के साथ ही जल से परिपूर्ण कलश का स्थापन करे । फिर नालछेदन, सूतकाग्नि स्थापन तथा भुसी, चावल के कण और सरसों का होम प्रातः सायं करे ।

संकल्प–

स्नान करने के उपरान्त शुद्ध चीरे के दो वस्त्र धारण कर गन्धादि लेपन एवं केशर, तिलक धारण कर श्रेष्ठ आसन पर बैठे तथा आचमन से शुद्धि के पश्चात् प्राणायाम करे । तत्पश्चात् ईश-काल का संकीर्तन करके निम्न प्रकार का संकल्प करना चाहिए –

ममास्यात्मजस्य गर्भवास जनित सकल दोष निवृत्तितुरस्सरमायुर्मेधाभिबृद्धये बीजगर्भसमुद् भवैनो-

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

निबर्हणद्वारा श्रीपरमेश्वर पीत्यर्थं जातकर्मसंस्कार करिष्ये । तत्र निर्विघ्नार्थं गणपतिपूजनं स्वस्ति-पुण्याहवाचनं मातृका पूजनमायुष्य मन्त्रजपं नान्दीश्राद्धं च हेम्नैव करिष्ये ।

इस प्रकार संकल्प पूर्वक क्रम से गणपति पूजनादि तथा नान्दी श्राद्ध पर्यन्त सभी कृत्य क्रम से करने चाहिए । पुण्याहवाचन के अन्त में देवताप्रीयताम्' रूप से ऊह करे ।

उसके बाद तथा नाल छेदन से पूर्व भेधाजनन संस्कार करने की विधि यह है कि दाये हाथ की अनामिका के अग्रभाग में स्वर्ण लगाकर उससे मधु और घृत को मिला कर शिशु को चार बार थोड़ा-थोड़ा चटावे । मधु-घृत चटाते समय में प्रत्येक बार में क्रमशः एक-एक मन्त्र का उच्चारण करता जाय । मन्त्र निम्न हैं –

ॐ भूस्त्वयि दधामि ।। १।।

ॐ भूवस्त्वयि दधामि ।। २।।

ॐ स्वस्त्वयि दधामि ।। ३।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्व त्वयि दधामि ।। ४।।

तदुपरान्त निम्न विधि से आयुष्यकरण करना चाहिए कि शिशु के दाँये कान अथवा नाभि के निकट मुख करके निम्न आठ मन्त्रों को सावधानी पूर्वक ठीक उच्चारण करते हुए तीन बार पढ़े–

ॐ अग्निरायुष्मान्त्स वनस्पतिभिरायुष्मान्स्तेनत्वाऽऽयुष्मन्तं करोमि ।। १।।

ॐ सोम आयुष्मान्त्स औषधीभिरायुष्मान्स्तेन-त्वाऽऽयुषाऽऽमन्तं करोमि ।। २।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ ब्रह्मायुष्मत्तद् ब्राह्मणरायुष्मत्तेनत्वाऽऽयुषाऽऽ-युष्मन्तं करोमि।। ३।।

ॐ देवा आयुष्मन्तेऽमृतेनायुष्मन्तस्तेन त्वाऽऽ-युषाऽऽयुष्मन्तं करोमि।। ४।।

ॐ ऋषय आयुष्मन्तस्ते व्रतैरायुष्मतस्तेन त्वा-ऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि।। ५।।

ॐ पितर आयुष्मन्तस्ते स्वधाभिरायुष्मन्तस्तेनत्वा-ऽऽयुषायुष्मन्तं करोमि।। ६।।

ॐ यज्ञ आयुष्मान्त्सदक्षिणाभिरायुष्मांस्तेन त्वा-ऽऽयुषायुष्मन्तं करोमि।। ७।।

ॐ समुद्र आयुष्मान्त्सस्रवन्तीभिरायुमांस्तेन त्वा-ऽऽयुषायुष्मन्तं करोमि।। ८।।

इस प्रकार क्रमशः उक्त आठ मन्त्रों को तीन पढ़कर निम्न मन्त्र का तीन बार उच्चारण करना चाहिए–

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपश्य त्र्यायुषम् । यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् ।। ६।।

इसके पश्चात् शिशु के पूर्ण आयुष्य (दीर्घ जीवन) की कामना करता हुआ पिता शिशु के हृदय का स्पर्श करता हुआ क्रमशः निम्न मन्त्रों का उच्चारण करे–

ॐ दिवस्परि प्रथमं जज्ञे अग्निरस्मद् द्वितीयं परिजातवेदाः तृतीयमप्सु नृमणा अजस्रमिन्धानएनं जस्ते स्वाधीः ।। १।।

ॐ विद्या ते अग्ने त्रेधा त्रयाणि विघ्ना ते धाम

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विभृता पुरुत्रा। विघ्ना ते नाम परमं गुहा यद्विध्ना तमुत्सं यत आजगन्थ।।२।।

ॐ समुद्रेत्वा नृमणा अप्स्वन्तर्नृचक्षाईधे दिवोअग्नऊधन् । तृतीये त्वारजसि तस्थिवा ऽऽ समपामुपस्थे महिषा अवर्द्धन।।३।।

ॐ अक्रन्ददनग्निः स्तनयन्निवद्योः क्षामा रेरिहद्वीरुधः समंजन् । सद्यो जज्ञानो व्विहीमिद्धो अख्यदारोदसी भानुना भात्यन्तः।।४।।

ॐ श्रीणामुदारो धरुणो रयीणां मनीषाणां प्रार्पणः सोमगोपाः। वसुः सूनुः सहसो अप्सु राजा विभात्यग्र उपसामिधानः ।।५।।

ॐ विश्वस्य केतुर्भुवनस्य गर्भआ रोदसी अपृणाज्जायमानः वीडुं चिनद्रिमाभिनत्परायण जना यदग्निमवजन्त पञ्च।।६।।

ॐ उशिक्यावको अरतिः सुमेधामर्त्येष्वग्निरमृतो निधायि । इयर्त्ति घूममरुषं भरिभ्रथुच्छुकेण शोचिषाद्यामिनक्षद् ।।७।।

ॐ दृशानीरुक्मउर्व्याव्यद्यौद् दुर्मर्षयायुः श्रिये रुचानः अग्निरमृतो अभवद्वययोभियदेनं त्तौरजनयःत्सुरेताः।।८।।

ॐ यस्ते यद्य कृणवद् भद्रशोचे पुषन्देव घृतमन्त मग्ने । प्रतन्नय प्रतरं वस्यो अच्छाभिसुम्नं देवभक्तं विष्ठ।।९।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ आतं भज सौश्रवसेष्वग्र उक्थ आभजशस्यमाने। प्रियः सूर्ये प्रियो अग्नाभवा त्युज्जातेन भिनददुज्जनित्वैः ।।१०।।

ॐ त्वामग्ने यजमना अनुद्यून विश्वावसु दधिरे वार्याणि। त्वया सह द्रविणमिच्छमाना व्रजं गोमन्त-मुशिजो विवव्रु ।।११।।

तदुपरांत शिशु के चारों ओर पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण चारों ओर दिशाओं में चार ब्राह्मण बैठावे तथा एक (पांचवां) ब्राह्मण बीच में बैठाया जाय । वह बीच वाला ब्राह्मण ऊपर की ओर देखता हो। उस समय पिता 'इममनुप्राणित' कहे । तब पूर्व की ओर बैठा हुआ ब्राह्मण 'प्राण' कहे । फिर दक्षिण की ओर बैठा ब्राह्मण 'व्यान' तथा पश्चिम वाला 'अपान' कहे । उत्तर में बैठा हुआ ब्राह्मण 'उदान' कहे तथा बीच में बैठा हुआ तथा ऊपर की ओर देखता हुआ ब्राह्मण 'समान' कहे ।

यदि उस समय ५ ब्राह्मण न हों तो पिता प्रेष्य वाक्य का उच्चारण न करे, वरन् उन-उन दिशाओं में स्वयं बैठ कर उन शब्दों (प्राण आदि) का उच्चारण कर ले । तदुपरान्त जिस स्थान पर शिशु उत्पन्न हुआ, उस स्थान पर दृष्टि रखते हुए निम्न मन्त्र का उच्चारण करे ।

ॐ वेद ते भूमि हृदयं दिवि चन्द्रमसि श्रितम् ।
वेदाहं तन्मां तद्विद्यात्पश्येम शरदः शतम् ।।
जीवेम शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतम् ।

इसके उपरान्त 'ॐ अस्मा भव परशुर्भव हिरण्यमस्तु त भव । आत्मा वै पुत्रनामामसि स जीव शरदः शतम्' मन्त्र का उच्चारण करता हुआ पिता शिशु का स्पर्श करे । फिर शिशु की माता की

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ओर देखता हुआ पिता 'इडासि मैत्रावरुणी वीरे वीरमजी जनथाः। सा त्वं वीरवती भव याऽस्मान्वीरवतोऽकरत्' का उच्चारण करे ।

उसके पश्चात् माता का दायाँ स्तन धुलवा कर शिशु के मुख में दिलाते समय मन्त्र बोले—

ॐ इमꣳस्तनमूर्ज्जस्वन्तं धयापां प्रपीनमग्नेसरिरस्य मध्ये । उत्संजुषस्व मधुमतमर्न्वन्त्समुद्रियꣳ सदनमाविशस्व।।

तदुपरान्त बाँये स्तन को धुलवाकर शिशु के मुख में दिलवाते हुए पुनः उक्त 'ॐ इमꣳस्तन०' इत्यादि मन्त्र का उच्चारण करे और फिर निम्न मन्त्र बोले—

ॐयस्तेस्तनः शशयो यो मयोभूर्यौ रत्नधा वसुविद्यः सुदत्रः येन विश्वा पुष्यासि वार्याणि सरस्वति तमिह धातवेऽकः।।

इसके पश्चात् प्रसूता की शय्या के सिरहाने एक घड़ा जल से भर कर 'ॐ आपोदेवषु जाग्रथ यथा देवेषु जाग्रथ, एवमस्याꣳसूतिकायाꣳ सपुत्रकायां जाग्रथ' मन्त्र पढ़ते हुए रखे । यह घट दश दिनों तक वहीं रखा रहे । उसके पश्चात् सूतिका गृह के द्वार पर पंचभू संस्कार करे और अँगीठी या कुण्ड में अग्नि स्थापन करे वह अग्नि अखण्ड रूप से दश दिनों तक जलती रहे, कभी बुझे नहीं ।

दश दिन पर्यन्त दैनिक हवन—

उस अग्नि में दश दिन तक प्रायः सायं नित्य प्रति भुसी, चावल के कण तथा सरसों के दाने मिलाकर दो आहुतियाँ निम्न दो मन्त्रों से देनी चाहिए —

ॐ शण्डामर्का उपवीरः शौण्डिकेय उलूखलः

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मलिम्लुचो द्रोणासश्च्यवनो नश्यतादितः स्वाहाः। इदमग्नये नमम।।१।।

ॐ आखिलन्न निमिषः किम्बदन्त उपश्रुतिर्हर्यक्षः कुम्भी शत्रुः पात्र पाणिर्नृमणिर्हन्त्रीमुख सर्षपाऽरुण-श्च्यबनोनश्यता दितः स्वाहा। इदमग्नये नमम।

यदि शिशु के देह में कुमारग्रह का कोई उपद्रव प्रतीत हो तो उसे किसी महीन वस्त्र से ढंक कर पिता या ब्राह्मण उसके हृदय का स्पर्श करके 'कूर्कुरः सकूर्कुर, कुर्कुरो पालबन्धन, चेच्चेच्छुनक सृज नमस्ते अस्तु सीसरो लपेतापह्वर तत्सयत्म् । यत्ते देवा वरमदुः स त्वं कुमारमेव वा वृणीथाः चेच्चेच्छुनक सृज नमस्ते अस्तु सीसरो लतेतापह्वर तर्त्सयम् । यत्ते सरमा माता सीसर पिता श्यामशबलौ भ्रातरौ चेच्चेच्छुनक सृज नमस्ते अस्तुसीसरोलपेताह्वर।' इस मन्त्र का उच्चारण करे ।

कुछ आचार्य कुमारग्रह का उपद्रव ज्ञात न होने पर भी भविष्य में उपद्रव की आशंका से रक्षा के निमित्त उक्त क्रिया को करा देते हैं ! उनके मत में कृत शुभ कर्म का प्रभाव सदैव अशुभ रहता है। इसलिए यह क्रिया भी शुभप्रद ही रहेगी ।

कर्म की सम्पन्नता होने पर ब्राह्मणों को पुष्पमाल, गन्ध, ताम्बूल, प्रदक्षिणा आदि से सत्कृत करके 'यान्तु मातृगणाः' के उच्चारण पूर्वक मातृगण का विसर्जन करे ।

इस प्रकार जातकर्म संस्कार पूर्ण करना चाहिए । कन्या उत्पन्न हुई हो तो जातकर्म संस्कार भी इस विधि से करना उचित है, क्योंकि पुत्र हो या पुत्री दोनों ही समान व्यवहार और समान सुविधा के अधिकारी हैं । शास्त्र वचनानुसार–

कन्या सुपुत्रयोस्तुल्यं वात्सल्यं च भवेत्सदा।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तुल्यानन्दं विजानीयाद् द्वयोर्मनसि प्राप्तयोः ।।
सुख शान्तेर्व्यवस्था च सुविधा यार्द्वयरपि ।
समुत्कर्षविकासाभ्यां ध्यानं यत्नं समं भवेत् ।।

अर्थात्–कन्या और पुत्र दोनों पर ही समान वात्सल्य भाव रहना चाहिए । दोनों के उत्पन्न होने पर चित्त में एक सा ही आनन्द मानना अपेक्षित है । कन्या और पुत्र दोनों के ही उत्कर्ष और विकास का ध्यान प्रयत्न पूर्वक समान रूप से ही रहना चाहिए ।

* * *

नामकरण संस्कार

जन्म के पश्चात् शिशु का द्वितीय संस्कार–

नामकरण संस्कार शिशु के जन्म के बाद दूसरा संस्कार माना गया है । प्रायः प्रसवोपरान्त प्रसूता के कष्ट या अन्य कारणों से जातकर्म संस्कार नहीं हो पाता, इसलिए वर्तमान समय में अधिकाँश परिवार नामकरण संस्कार में ही जातकर्म संस्कार का समावेश कर लेते हैं ।

आचार्यों ने दश दिन का सूतक माना है । उसके बाद नामकरण संस्कार की क्रिया सम्पन्न करने का विधान है । 'दशम्यामुत्थाब्राह्मणान्भोजयित्वा पिता नाम करोति' (पारस्कर गृह्य सूत्र १/२२) अर्थात् 'दसवें दिन सूतिका, को उठाकर तथा ब्राह्मण भोजन करा कर पिता नाम रखता है ।' इसका अर्थ हुआ कि दश दिन व्यतीत होने पर, ग्याहरवें दिन यह संस्कार करना चाहिए । याज्ञवल्क्य भी 'अहन्येकादशे नान' कहकर ग्यारहवें दिन ही नामकरण करने का समर्थन करते हैं ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

परन्तु, अनेक कर्मकाण्डी विद्वान् इस संस्कार को शुभ मुहूर्त में (शुभ दिन देख कर ही) करना उचित मानते हैं । उनके मत में बार, नक्षत्र, चन्द्रमा आदि अनुकूल न हों तो उस दिन संस्कार न किया जाय । विशेष रूप से घर की वृद्ध महिलाएँ तो बिना कोई अच्छा बार हुए नामकरण संस्कार के लिए तैयार ही नहीं होती । अनेक परिवारों में सूतक की समाप्ति के लिए दश दिन ही निश्चित नहीं वरन् अधिक दिनों में समाप्ति होती है । इसलिए पारिवारिक प्रथा के अनुसार जब सूतक समाप्त हो जाय, उसके दूसरे दिन कर्म करना उचित समझा जाता है । इस विषय में विभिन्न आचार्यों के भिन्न-भिन्न मत हैं । मनुस्मृति (२/३०) से यह तथ्य स्पष्टतया प्रमाणित है, यथा–

नामधेयं दशम्यां तु द्वादश्यां वास्य कारयेत् ।
पुण्ये तिथौ मुहूर्ते वा नक्षत्रे वा गुणान्विते ।।

अर्थात्–शिशु का दसवें या बारहवें दिन शुभ पुण्य तिथि मुहूर्त और नक्षत्र में नाम धरने का संस्कार करे ।

सूतिका शुद्धि के पश्चात् ही नामकरण किया जाता है । वर्णभेद से आचार्यों ने शुद्धि की अवधि में भी भिन्नता मानी है । पाराशर स्मृति के अनुसार–

जाते विप्रो दशाहेन द्वादशाहेन भूमिपः ।
वैश्यः पंचदशाहेन शूद्रो मासेन शुद्धयति ।।

अर्थात्–'जन्म के सूतक में ब्राह्मण दश दिन में, क्षत्रिय बारह दिन में, वैश्य पन्द्रह दिन में और शूद्र एक मास में शुद्ध होता है ।' किन्तु जो ब्राह्मण अग्नि और वेद से युक्त होता है वह एक ही दिन में शुद्ध हो जाता है अथवा जो केवल वेद से युक्त होता है, उसकी शुद्धि तीन दिन में होती है ।

इससे यह स्पष्ट रूप से सिद्ध है कि सूतक के अन्त होने का

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विधान सभी के लिए समान नहीं है । इसी भेद के कारण शुद्धि के दिनों में अन्तर देखने में आता है । इसलिए जिस परिवार में जैसा विधान हो उसी के अनुसार शुद्धि का दिन निश्चित करना चाहिए और उसके दूसरे दिन नामकरण की क्रिया करनी चाहिए ।

नाम रखने के सिद्धान्त–

पुत्र हो या पुत्री नामकरण दोनों का ही करना चाहिए । इस विषय में अनेक शास्त्रों और स्मृतियों के वचन उपलब्ध हैं । मनु ने इस विषय में स्पष्ट रूप से कहा है –

मंगल्यं ब्राह्मणस्य स्यात्क्षत्रिय बलान्वितम् ।
वैश्यस्य धनसंयुक्तं शूद्रस्य तु जुगुप्सितम् ।।
शर्मवद् ब्राह्मणस्य स्याद्राज्ञो रक्षासमन्वितम् ।
वैशस्य पुष्टि संयुक्तं शूद्रस्य प्रेष्यसंयुतम् ।।
स्त्रीणां सुखोद्यमक्रूरं विस्पष्टार्थ मनोहरम् ।
मंगल्यं दीर्घवर्णान्तमाशीर्वादाभिधानवत् ।

अर्थात्– ब्राह्मण का नाम मंगलात्मक, क्षत्रिय का बलात्मक वैश्य का धनात्मक और शूद्र का नाम जुगुप्सात्मक (सेवात्मक) रखना चाहिए । ब्राह्मण के नामान्त में शर्मा क्षत्रिय के नाम में रक्षाभास रूपता (वर्मा आदि), वैश्य के नाम में पुष्टि युक्तता तथा शूद्र के नाम में दासता का आभास रहना चाहिए । स्त्रियों के नाम ऐसे रखे जाँय जो मुख से उच्चारण करने में सरल, क्रूरता-रहित, श्रेष्ठ अर्थ का स्पष्ट द्योतक, चित्त को आनन्दित करने वाला, मंगल सूचक, दीर्घवर्णात्मक अन्तिम अक्षर से युक्त तथा आशीर्वादात्मक हों ।

इससे स्पष्ट है कि नामकरण संस्कार पुत्र को ही नहीं, कन्या का भी किया जाना आवश्यक है ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नामकरण विषयक अनेक मत प्रचलित है और उनके अनुसार चार प्रकार के नाम रखे जाते हैं—(१) देवनाम, (२) मास नाम, (३) नक्षत्र नाम और (४) सामान्य नाम । इनके विषय में निम्न प्रकार समझिये—

देवनाम— इष्टदेव, कुलदेव, अथवा अवतारादि के नाम से सम्बन्धित जो नाम रखे जाँय, उन्हें देव नाम कहते हैं । यह नाम प्रारम्भ में देवता या देवी का नाम रखकर अन्त में भक्त, प्रसाद, दास या सेवक प्रभृति शब्द लगाते हैं । यथा विष्णु प्रसाद, विष्णु भक्त, विष्णुदास, विष्णु सेवक प्रभृति नाम । जो परिवार विष्णु के उपासक हैं वे विष्णु सम्बन्धी नाम रखते हैं । और जो शिव या देवी आदि के उपासक हैं वे उन-उन देवी-देवताओं से सम्बन्धित नाम रखते हैं । अवतारों के उपासक परिवारों में रामप्रसाद, कृष्णप्रसाद, हरिप्रसाद, प्रभृति नाम देखे जाते हैं । इनमें कन्याओं के नाम दासी या देवी रखे जाते हैं । वैष्णवी, शैवी, कल्याणी प्रभृति नाम भी इसी के अन्तर्गत आते हैं ।

मास नाम— अनेक परिवारों में मास सम्बन्धी नाम रखे जाते हैं । चैत्र, बैसाख, ज्येष्ठ अषाड़ श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ फाल्गुण मास में जन्मे बालकों के नाम क्रमशः कृष्ण, अनन्त, अच्युत, चक्रौ, बैकुण्ठ, जनर्दन, उपेन्द्र, यज्ञपुरुष, वासुदेव, हरि, योगीश और पुण्डरीकाक्ष रखते हैं । क्योंकि यह नाम क्रमशः उन-उन मासों के पर्याय हैं । यथा चैत्र मास का पर्याय कृष्ण है इसी प्रकार अन्यों के विषय में समझिये इसमें कन्याओं के नाम भी कृष्णा अनन्ता वैकुण्ठी हरिदेवी प्रभृति देखे जाते हैं ।

नक्षत्र नाम—प्राचीन काल में नक्षत्रों से सम्बन्धित नाम भी रखे जाते थे । वर्तमान समय में भी जब ज्योतिष के आधार पर

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नाम निकाले जाते है , तब नक्षत्रों का ही आश्रय लिया जाता है । शिशु का जन्म नक्षत्र के जिस चरण में हुआ होता है , उस चरण से सम्बन्धित प्रथम अक्षर को ही नाम का आधार मानते हैं जैसे की अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न हुए शिशु के नाम का प्रथम अक्षर 'चू' है इससे 'चूड़ामणि' नाम बना । इसी प्रकार अन्य नक्षत्रों के चरणानुसार नाम रखने की प्रथा प्राचीन काल से चली आ रही है। इस विधि में १०८ अक्षरों का प्रयोग हुआ है । जिससें सैकड़ों नाम बन सकते हैं । इस प्रकार ज्योतिष शास्त्रानुसार नक्षत्रों और राशियों के अनुसार नाम रखने का विधान है । प्रत्येक नक्षत्र अपनी विशेषता रखता है और नामकरण में सहायक होता है । उसके अनुसार नाम निश्चित करने की विधि यह है –

नक्षत्र व राशि के अनुसार नामकरण की विधि–

सत्ताईस नक्षत्र होते हैं, उनका विभाजन बारह राशियों में किया जाता है । प्रत्येक राशि सवा दो नक्षत्र की होती है । एक नक्षत्र में चार चरण (पाद) होते हैं, इस प्रकार प्रत्येक राशि के समय में नौ चरण समाविष्ट रहते हैं, किस राशि में कौन-कौन नक्षत्रों के कितने-कितने पाद रहते हैं क्रमशः कौन-कौन नाम का प्रारम्भिक अक्षर होता है, इसे यहाँ स्पष्ट किया जाता है–

(१) मेष राशि–

नक्षत्र एवं चरण–अश्विनी ४, भरणी ४, कृत्तिका १, नाम का प्रथम अक्षर–चू चे चो ला ली लू ले लो आ,

(२) वृषभ राशि–

नक्षत्र एवं चरण–कृत्तिका ३, रोहिणी ४, मृगशिरा २, नाम का प्रथम अक्षर–ई ऊ ए ओ वा वी बू वे वो,

(३) मिथुन राशि –

नक्षत्र एवं चरण–मृगशिरा २, आद्रा ४, पुनर्वसु ३, नाम का

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रथम अक्षर–का की कू घ ङ. छ के को हा,

(४) कर्क राशि –

नक्षत्र एवं चरण–पुनर्वसु १, पुष्य ४, आश्लेषा ४, नाम का प्रथम अक्षर–ही हू हे हो डा डी डू डे डो,

(५) सिंह राशि –

नक्षत्र एवं चरण–मधा ४, पूर्वाफाल्गुनी ४, उ० फा १, नाम का प्रथम अक्षर–मा मी मू मे मो टा टी टू टे,

(६) कन्या राशि –

नक्षत्र एवं चरण–उत्तर १, फाल्गुनी ३, हस्त ४, चित्रा २, नाम का प्रथम अक्षर–टो पा पी पू षा णा ठा पे पो,

(७) तुला राशि –

नक्षत्र एवं चरण–चित्रा २, स्वाती ४, विशाखा ३, नाम का प्रथम अक्षर–रा री रू रे तो ता ती पू ते,

(८) वृश्चिक राशि –

नक्षत्र एवं चरण–विशाखा १, अनुराधा ४, ज्येष्ठा ४, नाम का प्रथम अक्षर–तो ना नी नू ने नो या यी यू,

(९) धनु राशि–

नक्षत्र एवं चरण–मूल ४, पूर्वाषाढा ४, उत्तराषाढा १, नाम का प्रथम अक्षर–ये यो भा भीं भू धा फा ढा भे,

(१०) मकर राशि –

नक्षत्र एवं चरण–उत्तराषाढा ३, श्रवण ४, धनिष्ठा २, नाम का प्रथम अक्षर–भो जा जी जू खी खू खे गा गो,

(११) कुम्भ राशि –

नक्षत्र एवं चरण–धनिष्ठा २, शतभिषा ४, पूर्वा भाद्र पद ३, नाम का प्रथम अक्षर–गू गे गो सीं सा सू से दा,

(१२) मीन राशि –

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नक्षत्र एवं चरण–पूर्वा भाद्र १, उ० भाद्रपद ४, रेवती ४, नाम का प्रथम अक्षर–दी दू थ झ ञ दे दो चा ची,

सहज नामकरण–

सामान्य नाम–अनेक परिवारों में वृद्धजन जिन नामों को पसन्द करते हैं, वे रख लिये जाते हैं । बहुत बार आचार्य जिन नामों के निर्देश करते हैं, वे नाम बोले नहीं जाते, वरन् जो नाम प्रिय होता है, उसी का उच्चारण होते रहने से वही नाम पड़ जाता है ।

प्राचीन आचार्यों ने इन्हें व्यवहार नाम की संज्ञा दी है । गृह्य सूत्र तथा अन्य ग्रन्थों के प्रणेता ऋषियों ने इन नामों के आठ भेद किये हैं–(१) दो–चार अक्षर का, (२) कृत्प्रत्यान्त, (३) तद्धिघोष वर्ण के हों, (४) जिसके मध्य में य र ल व अक्षर हों, (५) जिसके अन्त में दीर्घाक्षर हों (६) जिसमें पूर्वजों के नाम का अंश समाविष्ट हो, और (७) कोई भी नाम जो कि शुभ, प्रिय हों, उसमें शत्रु या असुरादि के नाम का समावेश न हो ।

यदि इस विषय पर अधिक विवेचन करने बैठें तो एक छोटी मोटी पुस्तक ही बन जायेगी । इसलिए अधिक विस्तार अभीष्ट नहीं है । इतना कह देना पर्याप्त होगा कि जो नाम कहने-सुनने में अच्छे लगें और जो सार्थक भी हों, वैसे नाम रखे जाने चाहिए ।

वस्तुतः नाम रखते समय शिशु के गुण, कर्म स्वभाव आदि को प्रमुखता देनी चाहिए । इसका प्रथम ज्ञान तो जिस परिवार में बालक का जन्म हुआ है, उस परिवार के गुण-कर्म स्वभाव आदि से ही हो जाता है । द्वितीय शिशु की आकृति, रूप, वर्ण आदि देख कर ही हो सकता है । 'यथा नाम तथा गुण' की लोकोक्ति इसी बात को पुष्ट करती है ।

कन्याओं के नाम भी इसी आधार पर रखे जा सकते हैं वर्तमान समय में तो अनेक प्रकार के आधुनिक नाम चल पड़े हैं ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उनके विषय में कुछ कहना निरर्थक है । पुत्र हो अथवा पुत्री इन तथ्यों को ध्यान में रखकर नामकरण किया जाय तो अधिक श्रेयस्कर रहेगा–

नाम धेयं ततोयश्चापि महापुरुष कर्मणाम् ।
विशदानां प्रेरकञ्च भवेत्त्वगुण बोधकम् ।।

अर्थात् उनके (पुत्र-कन्या के) नाम (यदि वे) महापुरुष प्रतीत हों तो विशद कर्मों को प्रेरणा देने वाले हों । यदि व सामान्य प्रतीत हों तो नामों में गुणबोधात्मकता तो होना ही चाहिए । 'तयोः' कहने का अभिप्राय पुत्र-पुत्री दोनों से ही है ।

नामकरण विधान–

अब नामकरण के विधान पर विचार करते हैं । पारिवारिक नियमानुसार जिस दिन शुद्धि पूर्ण होती हो अर्थात् जिस दिन सूतक समाप्त होता हो, उसके दूसरे दिन सूतिका को उठाकर शुद्धि करावे और तीन ब्राह्मणों को भोजन करावे उसके पश्चात् नामकरण सम्पन्न करें ।

पारस्कर गृह्यसूत्र में यह संस्कार पिता के द्वारा किये जाने का स्पष्ट निर्देश है (पिता नाम करोति) यदि पिता कहीं परदेश में हो या अन्य किसी कारण वश अनुपस्थित हो तो परिवार का कोई वृद्ध पुरुष (बाबा ताऊ चाचा आदि) उस कर्म को सम्पन्न कर सकते है ।

नामकरण संस्कार नियत दिन करने पर भी यह ध्यान रखा जाय कि संक्रांति, अमावस, ग्रहण, भद्रा, व्यतीपात, बैधृति तथा श्राद्ध के दिन न किया जाय । शुभ नक्षत्रादि के होने पर भी इस प्रकार के योग शुभ कार्यों में निषिद्ध होते हैं । परंतु गुरु अस्त, शुक्रास्त तथा मल मास आदि का निषेध नहीं माना जाता । यदि नियत काल में शुभ योग न हो तो शुभ योग दिखा कर करना ही

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्रेयस्कर है ।

यदि नियत समय पर जातकर्म संस्कार न हुआ हो तो उसे अनादिष्ट प्रायश्चित हवन के साथ करके तब नामकरण करे ।

यदि जातकर्म संस्कार किया हो और उसमें नान्दी श्राद्ध अपेक्षित नहीं किन्तु यदि जातकर्म के समय नान्दी श्राद्ध न किया हो तो इस समय अवश्य करना चाहिए ।

संस्कार का आरम्भ–

नामकरण संस्कार का आरम्भ इस प्रकार करें कि शिशु का पिता मंगल द्रव्यों से युक्त पानी से स्नान करे और चीरेदार दो वस्त्र धारण करके गन्धानु लेपन तथा तिलक आदि लगाकर श्रेष्ठ आसन पूर्व की ओर मुख करके बैठे और आचमन से शुद्ध होकर प्राणायाम करे ।

तत्पश्चात् देशाकालादि कीर्तन करने के बाद निम्न संकल्प करें –

ममास्य शिशौर्बीजगर्भसमुद्‌ भवैनोऽपभार्जनापुर-भिबृद्धि द्वारा श्री परमेश्वरप्रीत्यर्थ नामकरणं करिष्ये। तत्रा निर्विध्नार्यं गणपतिपूजनं स्वस्ति पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं नान्दी श्राद्धं च करिष्ये ।

अर्थात्– मैं अपने इस बालक की बीज तथा गर्भवास से सम्बन्धित मलिनता के निवारणार्थ आयु वृद्धि के प्रयोजन से परमेश्वर की प्रसन्नतार्थ नामकरण संस्कार करूँगा तथा उस कर्म के निर्विघ्न रूप से सम्पन्न होने के लिए गणपति पूजन पुण्याहवाचन मातृका पूजन और नान्दी श्राद्ध करूँगा ।

यदि इस समय नान्दी श्राद्ध करना अपेक्षित न हो तो संकल्प में नान्दी श्राद्ध' का उच्चारण न करे । सभी क्रियाएँ क्रम पूर्वक करनी चाहिए । पुण्याहवाचन के अन्त में 'प्रजापतिः प्रीयताम् ' कहे ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नामकरण के प्रारम्भ में पहिले तीन ब्राह्मणों को भोजन करावे और फिर शिष्टाचार द्वारा उपलब्ध नाम देवता का पूजन इस प्रकार करे कि एक काँसे की थाली में चावल रखकर फैला ले और उन पर सोने की सलाई से निश्चित नाम लिख कर संकल्प करे कि 'ममास्य शिशोर्वह्वायुष्य प्रात्यर्थ नामदेवता पूजनं करिष्ये' अर्थात् मैं अपने इस बालक को दीर्घायु की प्राप्ति होने के लिए नाम के अधिष्टातृ देवता का पूजन करूँगा ।'

नाम देवता की प्रार्थना-

फिर नाम देवता की प्रतिष्ठा करते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें–

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोति अरिष्टंयज्ञ७ऽमिमं दधातु विश्वे देवाय इह मादयन्तामोम्प्रतिष्ठ। नाम सुप्रतिष्ठितमस्तु।

उसके पश्चात् निम्न मन्त्र का उच्चारण करना भी प्रशस्त है –

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विना व्यात्तम इष्णन्निषाणमुम्म इषाण सवलोकम्म इषाण।

उक्त मन्त्र के अन्त में नामदेवताभ्यो नमः' कह और फिर 'आवाहयामि, आसन समर्पयामि' इत्यादि वाक्यों का उच्चारण करता हुआ षोडशोपचार पूजन करे ।

तदुपरान्त बालक को गोद में लिये बैठी हुई माता, जो कि पिता से दक्षिण की ओर बैठी हो उस स्थिति में बालक के दाँये कान के पास मुख ले जाकर पिता निम्न चार वाक्यों का उच्चारण करे–

हे कुमार त्वं (अमुक) कुल देवताया भक्तोऽसि

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हे कुमार त्वं मासनाम्ना (अमुक) असि
हे कुमार त्वं नक्षत्र नाम्ना (अमुक) असि
हे कुमार त्वं व्यवहारनाम्ना (अमुक) असि

जहाँ अमुक लिखा है वहाँ देवता, मास, नक्षत्र आदि के द्वारा निश्चित नाम का उच्चारण करें । यदि एकही नाम रखा जाय तो चार नाम का चार बार नामोच्चार अपेक्षित नहीं है । एक बार ही नामोच्चार पर्याप्त है ।

तदोपरांत ब्राह्मण 'ॐ मनोजूतिर्जुषतां' इत्यादि मंत्र के अन्त में 'नाम सुप्रतिष्ठतमस्तु' कहें । फिर पिता चारों प्रकार के नाम वाक्यों द्वारा बालक को ब्राह्मण के चरणों में अभिवादनार्थ झुकावें तथा ब्राह्मण उपर्युक्त (हे कुमार इत्यादि) वाक्यों को बोलते हुए आशीर्वाद दें ।

अभिवादन में नाम को पिता उपांशु रीति से बोले अर्थात् इतने धीरे से उच्चारण करे कि वहाँ बैठे हुए अन्य व्यक्ति न सुन सकें । फिर यजमान देव-ब्राह्मणादि को नमस्कार करे और दश ब्राह्मणों को भोजन करावे तथा गन्ध, माल्य, ताम्बूल, दक्षिणा आदि से सत्कार कर उनसे आशीर्वाद ले । इसके बाद 'यान्तु मातृघणाः सर्वे कहता हुआ मातृकाओं का विसर्जन करे तथा आगत स्त्री-पुरुषादि का भी यथोचित सत्कार कर विदा करे ।

नामकरण संस्कार के दो अन्य अंग–

नामकरण संस्कार हो जाने के दूसरे दिन बालक को प्रथम बार पालने पर लिटावे तथा भगवान् विष्णु, इष्टदेव तथा कुलदेव का ध्यान, नमस्कार आदि युक्त पूजन करके स्त्रियाँ बालक को वस्त्राभूषणों से सुसज्जित करके गीत-वाद्यादि से मंगलाचरण करती हुई पालना या हिंडोला पर लिटा दें । उस समय बालक का सिरहाना दक्षिण की ओर रहे । इस कर्म की नामकरण के

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दूसरे दिन मुहूर्त्तादि का विचार किये बिना ही कर सकते हैं। अनेक परिवारों में यह कर्म नामकरण के दिन ही कर लिया जाता है।

यदि प्रसूता के स्तनों से पर्याप्त दूध न उतरे और बाहर का दूध पिलाना आवश्यक हो तो गाय का दूध पिलाना चाहिए। जिसकी विधि यह है कि प्रातः काल गणपति और कुलदेवता का पूजन कर माता दक्षिण की ओर शिर करके बालक को गोद में लिटावे और शंख से दूध पिलावे। उस समय पिता निम्न मन्त्र का उच्चारण करे–

ॐ आप्यायस्वसमेतुते विश्वतः सोमवृष्णयम्। भवावाजेषुसंगथे।

यह कर्म भी नामकरण संस्कार का ही एक अंग है। यदि उस समय दूध पिलाना आवश्यक न हो तो इसे जन्म से इकत्तीसवें दिन अथवा अन्नप्राशन संस्कार के साथ भी कर सकते हैं।

६. निष्क्रमण संस्कार

शिशु जीवन का प्रमुख कार्य–

घर से बाहर निकालने कर्म को निष्क्रमण कहते हैं। यह संस्कार उस समय किया जाता हैं, जब कि बालक को सर्व प्रथम घर से बाहर ले जाना हो। नामकरण संस्कार से पश्चात् माता अपने पिता के घर जाये अथवा माता-पिता दोनों को ही कहीं जाना पड़े तो बालक को भी साथ ले जाना होता है। इसलिए नामकरण संस्कार के दूसरे दिन अथवा चौथे मास इस संस्कार को शुभ मुहूर्त्त में चन्द्रमा, नक्षत्र वार आदि शुभ देखकर इसे करना चाहिए। कुछ परिवारों में नामकरण के दिन ही बालक को बाहर ले

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जाने का कार्य भी सम्पन्न कर लिया जाता है ।

इस संस्कार की विधि यह है कि प्रथम पिता मंगल द्रव्य युक्त जल से स्नान करे और बालक को भी स्नान करावे । फिर स्वयं श्रेष्ठ वस्त्रादि धारण कर बालक को भी श्रेष्ठ वस्त्र, गन्ध, आभूषणादि धारण करावे और शुभ आसन पर बैठ कर आचमन और प्राणायाम करे तथा माता बालक को गोद में लिटा ले । उस समय बालक का शिर दक्षिण दिशा की ओर रहे फिर देशकाल का संकीर्तन करता हुआ निम्न संकल्प का उच्चारण करें—

ममाऽस्य किशोरायुरभिबृद्धि व्यवहार सिद्धि द्वारा श्रीपरमेश्वर प्रींत्यर्थ गृहान्निष्क्रमणं करिष्ये। तदंगत्वेन गणपतिपूजनं स्वस्तिपुण्याहवाचनं मातृपूजनं नान्दीश्राद्धं च करिष्ये ।

अर्थात्—मेरे इस बालक की आयु वृद्धि और व्यवहार सिद्धि हो, इसलिए परमेश्वर की प्रसन्नता के लिए घर से बाहर निकलूँगा। उसके उद्देश्य से गणपति पूजन, स्वस्ति पुण्याहवाचन, मातृका पूजन तथा नान्दीश्राद्ध करूँगा।

यदि यह कर्म नामकरण संस्कार के साथ ही किया जाय तब उक्त संकल्प का अन्तर्भाव नामकरण के संकल्प में ही हो जाता है। उस स्थिति में इसे पृथक् से करना आवश्यक नहीं है । परन्तु, इस संस्कार से पहिले बालक को घर से बाहर न निकाले ।

अब क्रम से गणपति पूजन, स्वस्तिपुण्याहवाचन, मातृका पूजन तथा नान्दी श्राद्ध करे । पुण्याहवाचन के अन्त में 'सविता प्रीयताम्' कहना चाहिए ।

तदुपरान्त पिता उस वस्त्राभूषणादि से सज्जित बालक को शुभ शकुन देखकर माता से ले तथा घर से बाहर निकल कर उसे सर्व प्रथम सूर्य का दर्शन कराता हुआ निम्न सूर्य मन्त्र का

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उच्चारण करे–

ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतंॅश्रणुयाम शरदः शतम् । प्रवाम शरदः शतमदीनाः स्यामशरदः शतम्भूयश्च शरदः शतात् ।

तदुपरान्त निकटस्थ किसी देव मंदिर में ले जाकर देव प्रतिमा को साष्टांग प्रणाम करावे और फिर चाहें तो बाजार में कुछ घुमाकर घर में लौटा लावे । यदि पिता की कोई दुकान या व्यवसाय केन्द्र आदि हो तो दो-पाँच मिनट वहाँ भी रख सकते हैं।

घर लौटकर माता की गोद में दे और सौभाग्यशालिनी स्त्रियों से आरती कराके पलना में लिटा दे और फिर दश ब्राह्मणों को भोजन करावे और उनका गन्धादि द्रव्यों तथा ताम्बूल, दक्षिणा से सत्कार कर आशीर्वाद ले और 'यान्तु मातृगणाः सर्वे' मन्त्र द्वारा मातृका-विसर्जन करे ।

चन्द्र दर्शन–

फिर उसी दिन रात्रि के समय शुभ शकुन देखकर बालक को चन्द्रमा के दर्शन करावे । उस समय निम्न मन्त्रों का उच्चारण भी करना चाहिए –

चन्द्रार्कयोदिगीशानां दिशां च वरुणस्य च।
निक्षेपार्थमिदं दद्यि ते त्वां रक्षन्तु सर्वदा।।
प्रमत्तं वा प्रसुप्तं वा दिवालात्रमथापिवा।
रक्षन्तु सततं ते त्वां देवाः शक्रपुरोगमा।।

अर्थात्–मैं इस बालक को चन्द्र, सूर्य, दिक्पाल, दिशा और वरुण के लिए सौंपता हूँ । हे बालक ! भूल में पड़े या सोते हुए अथवा दिन हो या रात्रि वे देवता तथा इन्द्रादि सब तेरी सदैव रक्षा करते रहें ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस प्रकार निष्क्रमण संस्कार की सम्पन्नता का विधान कहा गया । इसी का एक अंग भूम्युपवेशन भी है, जिसकी विधि इस प्रकार है–

भूम्युपवेशन विधान

भूम्युपवेशन का अर्थ है भूमि पर बैठना । बालक को प्रथम बार भूमि पर बैठाने के लिए भी आचार्यों ने विधान निश्चित किया है। इसे जन्म से पाँचवें महीने में करना उचित है । जब सभी ग्रह प्रशस्त हों तथा मंगल ग्रह बालक के लिए विशेष रूप से शुभ हो उस स्थिति में ध्रुव, मृदु, लघु नक्षत्रादि से युक्त श्रेष्ठ दिन हो, तब पूर्वाह्न काल में गणपति पूजन तथा स्वस्तिवाचन करके वराह, कूर्म, अनन्त भगवान और पृथिवी का पूजन करके गोबर से लीपी हुई धरती पर रंग से मण्डल खींच कर उस पर गेहूँ की ढेरी करे और बालक को श्रेष्ठ वस्त्राभूषण धारण करा के उस ढेरी पर बैठावे । उस समय स्त्रियाँ मंगल-गायनादि करें ।

जब बालक को गेहूँ की ढेरी पर बैठावें तब उसको हाथ से पकड़े रहें और उस समय निम्न चार मन्त्रों से प्रार्थना करें –

रक्षैनं वसुधेदेदि सदा सर्वगते शुभे।
आयुः प्रमाणं लिखितं निक्षिपस्व हरिप्रिये ।। १।।
अचिरादायुषस्तस्य येकेचित्परिपन्थिनः।
जीवितारोग्यवित्तेषु निदेहस्वाचिरेणतान् ।। २।।
धारिण्यशेषभूतानां मातस्त्वमसिकामधुक् ।
अजराचाप्रमेयाच सर्वभूतनमस्कृता ।। ३।।
चराचराणांभूतानां प्रतिष्ठानाम्नियाह्यसि।
कुमारंपाहिमातस्त्वं ब्रह्मातदनुमन्यताम् ।। ४।।

अर्थात्– हे सर्वगते, हे शुभे, हे बसुधे, इस बालक की जीवन

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भर रक्षा करना । हे हरिप्रिये ! इस बालक के जीवन में जो शत्रु रूप हों, उन्हें इसके जीवन, आरोग्य और भोगों की प्राप्ति के लिए नष्ट करो । हे कामना को पूर्ण करने वाली माता ! तुम सभी प्राणियों का धारण करने वाली, अजर सप्रमेय और सभी के द्वारा नमस्कृत्य हो । तुम ही सब प्राणियों के लिए प्रतिष्ठा हो । अतः हे धरती माता ! तुम इस कुमार की रक्षा करो तथा ब्रह्मा जी तुम्हारे इस रक्षा कार्य का अनुमोदन करें ।

इस प्रकार प्रार्थना कर सौभाग्यवतियों द्वारा आरती करावे और ब्राह्मणों को दक्षिणादि से सत्कृत करके आशीर्वाद लें तथा गेहूँ की ढेरी आचार्य या पुरोहित को दे दें । इसी प्रकार कन्या का भी भूम्यपवेशन कर्म करना चाहिए । यह कर्म निष्क्रमण संस्कार का ही एक अंग है ।

※※※

७. अन्नप्राशन संस्कार

पुष्टि और शक्ति का आरम्भ–

अन्नप्राशन संस्कार भी शरीर की पुष्टि, शक्ति और स्वास्थ्य के लिए वरदान स्वरूप है । इससे शरीर ही पुष्ट नहीं होता वरन् मन भी पुष्ट होता है । यदि यह कहें कि यह क्रिया बालक को प्राणवान बनाने वाली है तो इसमें कुछ अत्युक्ति नहीं होगी । क्योंकि–

तस्माद्वा रतस्मादन्नरसमयादन्योऽन्तर आत्मा प्राणमयः, तेनैष पूर्णः। सवा एष पुरुष विध एव।

तैत्तरीय २। २

अर्थात्–इस अन्नमय शरीर के भीतर जो प्राणमय पुरुष है

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वह अन्न से व्याप्त हैं, यह प्राणमय पुरुष ही आत्मा है ।

तैत्तरीय उपनिषद् में ही 'प्राणो वै अन्नम्' अर्थात् प्राण ही अन्न है' कह कर प्राण और अन्न में ऐक्य का प्रतिपादन किया है । और यह भी निर्देश किया है –'अन्नं न परिचक्षीत्, तद् व्रतम्' अर्थात् 'अन्न की अवहेलना न करे, यह व्रत है ।'

इस प्रकार अन्न के बिना जीवन का चलते रहना ही असम्भव होता है और मन का भी विकास होता है –

अन्नस्य सूक्ष्म भागेन विकासो भवेत् ।
अतो न्यायादर्जनं कुर्याच्चामलं सत्क्रियादिभिः ।।

अर्थात् अन्न के सूक्ष्म (सार) भार से ही मन का विकास होता है । इसलिए उसे न्याय विधि से ही उपार्जन करे और श्रेष्ठ सत्कर्म द्वारा उसे निर्मल करे।

अन्न की शुद्धता के विषय में सभी आचार्य एक मत हैं । वे अशुद्ध अन्न को रोगोत्पत्तिकारक तथा चिंताजनक बताते हैं । अशुद्ध अन्न खाने वाले को अनेक रोग उत्पन्न होकर दुर्बल तथा अल्पायु बनाते है । साथ ही दूषित अन्न मन को भी विकार ग्रस्त बना देते हैं । श्रुति वाक्य हैं –

आहारशुद्धौ सत्वशुद्धिः सत्वशुद्धौ ध्रुवा स्मृतिः।
स्मृति लभ्ये सर्व गन्थीनां विप्रमोक्षः।

अर्थात्–आहार शुद्ध होने पर सत्य (अन्तकरण) शुद्ध होता है। अन्तःकरण शुद्ध होने पर स्मृति तीव्र होती है और स्मृति तीव्र होने पर अज्ञानावृत्त बन्धन ग्रन्थियाँ खुल जाती हैं ।

अन्नाद्वै प्रजाः प्रजायन्ते। याः काश्च पृथवीछश्रिताः
अथो अन्तेनैव जीवन्ति । अथैनदपियन्त्यन्ततः।
अन्नछहिभूतानां ज्येष्ठम् । तस्मात्सर्वौषधयमुच्यते।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सर्व वैत ऽन्नमाप्नुवन्ति ये ऽन्नं ब्रह्मोपासते ।

तैत्तरीय के द्वारा इस तथ्य का भी अनुमोदन हुआ है कि अन्न औषधि रूप तथा ब्रह्म रूप भी है । यथा–

अर्थात्–इस पृथवी पर निवास करने वाले सभी प्राणी अन्न से उत्पन्न होते अन्न से ही जीवित रहते और अन्त में अन्न में ही विलीन हो जाते हैं ।अन्न ही सबसे श्रेष्ठ होने के कारण औषधि रूप कहा जाता है । ज़ो व्यक्ति अन्न को ब्रह्म मानकर उपासना करते हैं, वे ब्रह्म को ही प्राप्त कर लेते है ।

अन्य शास्त्रों, स्मृतियों आदि में भी अन्न की ब्रह्म रूप से प्रशस्ति की गई हैं–यथा–

मत्वानं ब्रह्म हि त्येतत् प्रेम श्रद्धावरेण च ।
ह्नासीच्छिष्ट बिना कुर्यादुपयोगं विधानतः ।

अर्थात्– अन्न ब्रह्म मानते हुए प्रेम, श्रद्धा और आदर पूर्वक उपभोग करे । उसे उच्छिष्ट रूप में नष्ट न करे अर्थात् जूठा न छोड़े । विधि-पूर्वक सेवन करें ।

अन्न की इस प्रकार की महिमा जान कर आचार्यों ने इसके प्रथम प्राशन (उपभोग) के लिए विधान निश्चित किया । जब बालक को पहले पहल अन्न दिया जाय, तब उसके चित्त में अन्न के प्रति उपर्युक्त भावनाएँ उत्पन्न हो सकें, इस उद्देश्य से अन्नप्राशन संस्कार की व्यवस्था दी गई । इस विषय में स्पष्ट कहा गया है।

अर्थात्–जो पुरुष अपनी सन्तान में जैसे गुणों का आविर्भाव करना चाहे, वैसे हो अन्न का चयन कर सिद्ध करे और फिर उसका प्राशन कराये ।

स्वसन्ततौ च पुरुषो गुणनिच्छेद याहृशान् ।
तथान्न चयन कृत्वा कारयेत्प्राशनं तदा ।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इसका अभिप्राय हुआ कि जैसा अन्न होगा वैसा ही उसका प्रभाव पड़ेगा । इसीलिए आचार्यों ने उसे न्यायाद्रर्जनं कुर्याच्चामलं सक्रियादिभिः' कहकर स्पष्ट कर दिया है कि उत्तम अन्न वही है, जिसका उपार्जन ईमानदारी से हुआ हो तथा उसकी विधि में भी स्वच्छता और श्रेष्ठ (अनुकूल) क्रिया का व्यवहार किया गया हो ।

अन्नप्राशन की आयु–

आचार्यों ने अन्नप्राशन की आयु सामान्यतः जन्म से पाँच माह के बाद तथा छः मास के भीतर मानी है । पारस्कर गृह्य सूत्रकार ने षष्ठेमासेऽन्नप्राशनम्' कहकर इस संस्कार को छठे महीने का निर्देश दिया है । महर्षि सुश्रुत के मत में भी 'षण्मासं चैनमन्नं प्राशयेच्लघु हितञ्च' अर्थात् 'छठे मास प्रारम्भ में लघु (हल्का मुलायम) अन्न दिया जाय।' मनु (२/३४) के मत से भी इसकी पुष्टि होती है –

चतुर्थे मासि कर्त्तव्यं शिशोर्निष्क्रमणं गृहात् ।
षष्ठेन्नप्राशनं मासि यद्वेष्ट मंगलं कुले ।।

अर्थात्–(जन्म से) चौथे मास शिशु को घर से बाहर निकाले तथा छठें मास अन्नप्राशन संस्कार करे । अथवा कुल की रीति के अनुसार जो मंगल समय समझा जाय उसमें करे ।

'षष्ठेमास्यन्नप्राशनं तज्जयोतिः शास्त्रोंक्तशु भदिने कार्यम्' अर्थात् 'जन्म से छठे मास में जो दिन ज्योतिष शास्त्र के मत में शुभ हो, उस दिन अन्नप्राशन करे । किसी ज्योतिषी से शुभ दिन दिखाले अथवा स्वयं जानता हो तो स्वयं शुभ दिन संस्कार का दिन निश्चित करे ।

संस्कार का आरम्भ–

उस दिन पिता, माता और शिशु तीनों ही मंगल द्रव्य युक्त पानी में स्नान करके शुद्ध श्वेत दो वस्त्र चीरे सहित तथा अलंकार

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

धारण कर गन्धानुलेपन, तिलक आदि लगावें । बालक को भी उत्तर वस्त्राभूषण से सज्जित करें । फिर श्रेष्ठ शुभ आसन पर बैठ कर पुरुष आचमन द्वारा शुद्ध होकर प्राणायाम कर और तदुपरान्त देश-काल का कथन करके निम्न संकल्प मन्त्र का उच्चारण करें।

ममास्य शिशोर्मातृगर्भा पूतप्राशनशुद्धयर्थमन्नाद्य ब्रह्मावर्चस् तेजइ द्रियायुर्बललक्षणसिद्धिवीजगर्भ समुद्भव कल्मषापमार्जनद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यथ-मन्नप्राशनाख्यं कर्माहं करिष्ये ।

तत्र निर्विघ्नार्थ गणपति पूजनं स्वस्तिपुण्याहवाच-नं मातृका पूजनं नान्दीश्राद्धं च करिष्ये ।

इस प्रकार संकल्प करने के पश्चात् गणपति पूजन, स्वस्ति पुण्याहवाचन, मातृका पूजन तथा नान्दी श्राद्ध प्रभृति कर्म सम्पन्न करे पुण्याहवाचन के अन्त में 'सविता प्रीयताम्' शब्द का उच्चारण करे ।

तदुपरान्त प्रथम वेदी में पंचभू संस्कार करना चाहिए । तीन कुश लेकर उसने वेदी की भूमि को बुहारे और फिर उन कुशों को ईशान कोण में फेंक दे । फिर गोबर के साथ जल मिला कर भूमि को लीपे । तत्पश्चात् स्रुवा के मूल से अथवा कुश से उत्तर-उत्तर वेदी में तीन प्रागायत रेखा खींचे । फिर अनामिका और अँगूठे के योग से उन रेखाओं के मध्य से मिट्टी उठा कर बाहर फेंके तथा वेदी में जल का सिंचन करें ।

उसके बाद काँसे के पात्र अथवा मिट्टी के शराब में शुचि संज्ञक अग्नि लाकर वेदी में स्थापित करे । फिर पुष्प, चन्दन, ताम्बूल, वस्त्रादि लेकर यजमान ब्रह्मा का वरण करे । उस समय ब्रह्मा उन वस्तुओं को ग्रहण करे।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तब यजमान ब्रह्मा से यथाविधि कर्म करने की प्रार्थना करे और ब्रह्मा 'करवाणि' कहकर स्वीकार कर ले । तब अग्नि से दक्षिण की ओर चौकी बिछाकर उस पर शुभ आसन बिछावे । फिर उस पर पूर्व की ओर मुख रखते हुए कुश बिछा दे । तदुपरान्त ब्रह्मा को अग्नि की परिक्रमा कराके यजमान 'अस्मिन् कर्मणित्वं में ब्रह्मा भव' (तुम मेरे इस कर्म में ब्रह्मा होओ) कहे और ब्रह्मा भी 'भवामि' कहकर स्वीकार करे तब ब्रह्मा को उत्तर की ओर मुख कराके बैठा दिया जाय । उसके सामने जल पूर्ण प्रणीतापात्र रखकर कुशों से आच्छादन करे और ब्रह्मा का मुख देखकर प्रणीतापात्र को अग्नि से उत्तर की ओर कुशों पर स्थापित करे । फिर चार मुट्ठी कुश लेकर अग्नि से चारों ओर डाल दे । तदुपरान्त अग्नि से उत्तर में प्राक्संस्थ पात्रासादन करना चाहिए ।

फिर पवित्र छेदनार्थ तीन और पवित्र करणार्थ दो कुश अग्रभाग सहित ले तथा प्रोक्षणी पात्र, आज्य स्थाली, समाज व कुश उपयमन कुश, ढाक की तीन समिधाएँ, स्रुवा, आज्य,तण्डुलों से भरा पात्र, षट् रस (मीठा, खट्टा लवण, कटु, तिक्त, कषाय) एवं जौ-शालि आदि से घृत के साथ निर्मित उत्तम भोज्य पदार्थ कांस्य पात्र में रखे । साथ ही पुस्तक, शस्त्र यन्त्र एवं शिल्प भी रखना चाहिए । इन सब वस्तुओं को पवित्र छेदन कुशों से पूर्व में क्रमशः उत्तर की ओर अग्रभाग करके रखे ।

फिर छेदनार्थ कुशों से प्रादेशमात्र कुशद्वय का छेदन करे और पवित्री सहित दाँये, हाथ से प्रणीता के जल को तीन बार प्रोक्षणीपात्र में गिराकर प्रोक्षणी के जल का उत्पवन करे । फिर प्रणीतास्थ जल से प्रोक्षणीस्थ जल का तीन बार अभिषेचन करके प्रोक्षणीस्थ जल से आसादन कृत आज्य स्थाली आदि का सेचन करे ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अब घृतपात्र से आज्य स्थाली में घृत डाले तथा प्रणीतास्थ जल से चावलों को धोवे और चरु स्थाली में प्रणीतास्थ जल डालकर और उसमें चावल भी डालकर चरु को स्वयं ले और ब्रह्मा आज्य को दक्षिण में रख दे ।

जब चरु-पाक हो जाय तब चरु के ऊपर प्रदक्षिणा कराके अग्नि में जलते हुए कुशों को फेंक तथा कुश-मूल से स्रुवा को बाहर से झाड़-पोंछकर और प्रणीतास्थ जल से सेचन कर तीन बार तपावे दक्षिण की ओर रखे । फिर उठकर बाँये हाथ से उपयमन कुश लेकर प्रजापति का ध्यान रखते हुए तीन समिधाएँ घृतोक्त करके तूष्णी अमन्त्र एक-एक कर अग्नि में डाले ।

फिर पवित्र सहित प्रोक्षणीस्थ जल को ईशान से उत्तर तक प्रदक्षिण क्रम से सब ओर सिरावे तथा दोनों पवित्र प्रणीतापात्र में रखकर प्रोक्षणी का विसर्जन करे । तदुपरान्त धरती में दाँया घुटना टेक कर स्रुवा से आज्याहुति देता हुआ निम्न मन्त्र बोले–

ॐ प्रजापते स्वाहा । इदं प्रजापतये न मम ।
इति मनसा ।
ॐ इंद्राय स्वाहा । इदमिंद्राय न मम ।
ॐ अग्नये स्वाहा । इदमग्नये न मम ।
ॐ सोमाय स्वाहा । इदं सोमाय न मम ।

आहुति देने बाद स्रुवा में घी की जो बूँदें बचें उन्हें प्रोक्षणी में डालता रहे । फिर प्रजापति का ध्यान कर तूष्णी आहुति दे । यजमान स्वयं सब मन्त्रों का उच्चारण करे । फिर आधार की दो और आज्य भाग की दो आहुति देकर दो असाधारण आहुतियाँ निम्न मन्त्रों से दे –

ॐ देवी वाचमजनयंत देवास्तां विश्वरूपाः पशवो

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वदंति। सा नो मंद्रेषमूर्जदुहाना धेनुर्वागस्मानुपैतुष्टुतैतु स्वाहा। इदं वाचे नमम।

ॐ देवी वाचमित्यादिमत्रं पठित्वा। ॐ वाजो नो अद्य प्रसुवाति दानं वाजो देवां ऋतुभिः कल्पयाति। वाजो हि मा सर्ववीरं जजान विश्वा आशा वाजपति र्जयेय ७७ स्वाहा। इदं वाचे वाजाय न मम।

अब स्थालीपाक से चार आहुतियाँ दे । उनके मन्त्र निम्न प्रकार हैं –

ॐ प्राणेनान्नमशीय स्वाहा। इदं प्राणाय नमम।

ॐ अपानेन गंधानशीय स्वाहा। इदमपानाय नमम।

ॐ चक्षुषा रूपाण्यशीय स्वाहा। इदं चक्षुषे नमम।

ॐ श्रोत्रेण यशोऽशीय स्वाहा। इदं श्रोत्राय नमम।

इसके पश्चात् ब्रह्मा के अन्वारम्भ करते हुए आहुति दे तथा स्रुवा का शेष घृत प्रोक्षणी में छोड़ता जाय । फिर चरु से घृत सेचन पूर्वक एक स्विष्टकृत आहुति दे और उस समय निम्न मन्त्र बोले–

ॐ अग्नयेस्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते नमम।

महा व्याहृतियों से आज्याहुति दान-

तदुपरान्त केवल घृत से महाव्याहृतियों की तीन आहुतियाँ मन्त्रोच्चार पूर्वक दे –

ॐ भूः स्वाहा। इदमग्नये नमम।

ॐ भुवः स्वाहा। इदं वायवे नमम।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय नमम।

उसके पश्चात् पाँच आहुतियाँ प्रायश्चित की निम्न मन्त्रों से देनी चाहिए –

ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो ऽअवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषाꣳसि प्रमुमुग्धस्मत्स्वाहा।।१।। इदमग्नी वरुणाभ्यां न मम।

ॐ स त्वन्नो अग्ने ऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अवयक्ष्व नो वरुणꣳरराणो वीहि मृडीकꣳसुहवो न एधि स्वाहा।।२।। इदमग्नि वरुणाभ्यां नमम।

ॐ अयाश्चाग्नेस्यनमिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमया असि। अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजꣳस्वाहा ।।३।। इदमग्नये नमम।

ॐ ये ते शमं वरुण ये सहस्र यज्ञियाः पाशा वितता महाँन्तः तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चंतु मरुतः स्वर्काः स्वाहा ।।४।। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च नमम।

ॐ उदूत्तमं वरुण पाशमस्मद बाधमं विमध्यमꣳश्रयाय। अथावयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा ।।५।। इदं वरुणाय नमम।

इस प्रकार प्रायश्चित की पाँच आहुतियाँ उक्त पाँच मन्त्रों से देकर त्यागों सहित एक प्राजापत्याहुति निम्न मन्त्र से देनी चाहिए–

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐप्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये नमम।

इसके पश्चात् संस्रव प्राशन कर हाथ धोवे और आचमन करके ब्रह्मा को दक्षिणा निम्न मन्त्र पढ़ते हुए दे–

ॐ अद्यकृते तदन्नप्राशन होमकर्मणिकृताकृता वेक्षणरूप ब्रह्मकर्म प्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापति दैवतं (अमुक) गोत्रय (अमुक नाम) ब्रह्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणां तुभ्यमहं सम्प्रददे।

इसके उत्तर में 'स्वस्ति' कहकर ब्राह्मण दक्षिणा ले। तदुपरान्त यजमान प्रणीतास्थ जल पवित्रों द्वारा 'ॐ सुमित्रिया न आप औषधयः सन्तु' कहता हुआ बालक के शिर पर सेचन करे और फिर 'ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तुयोऽस्मान् द्वेष्टि य च वयं द्विष्मः' मन्त्र बोलता हुआ प्रणीता के शेष जल को ईशान कोण में सिरा दे और पवित्रों को बिछे हुए कुशों में मिला कर जिस क्रम से बिछाये थे, उसी क्रम से पवित्रों के सहित उठाकर घृत लगावे और उन्हें अग्नि में निम्न मन्त्र पढ़ते हुए डाल दे –

ॐदेवागतु विदोगातुं वित्वागातुमित मनसस्पत इमं देव यज्ञꣳस्वाहा, वातेधाःथस्वाहा।

इस प्रकार त्याग सहित बर्हिहोम करने के बाद षट्रस, चावल आदि सहित जितने अन्न संचित किये हों उन्हें अग्नि पर विधिवत् पकावे तथा स्नानादि से शुद्ध एवं वस्त्राभूषणादि से सुसज्जित बालक को बिना मंत्र पढ़े अथवा निम्न मंत्र पढ़ते हुए उस अन्न को एक सुन्दर थाली में परोसकर धीरे-धीरे खिलावे –

ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यन नमीवस्य शुष्मिणः। प्रप्रदातारं तारिषऽऊर्जग्नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस अन्न मन्त्र से अन्न प्राशन कराने के बाद बालक को धरती पर बैठावें और उसके सामने पुस्तक, शस्त्र वस्त्रादि, शिल्प एवं खेल-खिलौने आदि रखे । कुछ आचार्यों का मत है कि उस समय बालक उनमें से जिस वस्तु को प्रथम पकड़े वही वस्तु उसकी जीविका का साधन बनेगी ।

तत्पश्चात् बालक का हाथ मुख धोकर पिता स्वयं आचमन करे तथा स्रुवा फल-पुष्प सहित घृत भर कर खड़ा हो जाय तथा पूर्णाहुति देते समय निम्न मन्त्र पढ़े –

ॐ मूर्धानं दिवोअरर्तिपृथिव्या वैश्वानरमृत आजात-मग्निम् । कविथ्ठसम्राजमतिथिं जनानामासन्न पात्रं जन-यन्त देवाः स्वाहा ।

उसके बाद बैठकर स्रुवा मूल से वेदी से भस्म लेकर दाँये हाथ की अनामिका के अग्रभाग से ललाट में भस्म लगावे । उस समय निम्न मन्त्रों से ललाट आदि में लगावे । यथा–

ॐ त्र्यायुषं जमदग्ने, इति ललाटे ।
ॐ कश्यपश्य त्र्यायुषम् , इति ग्रीवायाम् ।
ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम् , इति दक्षिण बाहु मूले ।
ॐ तन्नो ऽस्तु त्र्यायुषम् , इति हृदि।

इसी क्रम से बालक के भी ललाट, ग्रीवा, बाहुमूल और हृदय में भस्म लगानी चाहिए । परन्तु जब बालक के भस्म लगाते समय मन्त्र बोला जाय, तब 'तन्नो' के स्थान पर तत्ते' शब्द लगाया जाय। तदन्तर ब्राह्मणों को दक्षिणा देकर आशीर्वाद ले । तथा संकल्प के साथ दश ब्राह्मणों को भोजन करावे और उसके बाद 'यान्तु मातृगणाः सर्वे' कहते हुए मातृकाओं का तथा अग्नि का विसर्जन करे।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्षीराहार–

कुछ आचार्य अन्नप्राशन संस्कार में खीर खिलाना उचित समझते हैं । क्योंकि खीर अमृत के समान श्रेष्ठ आहार है तथा देवार्चन और चरु के रूप में आहुति कर्म में भी प्रयुक्त होती है । यदि चाँदी के प्याले में खीर रखकर चाँदी के ही चम्मच से खिलाई जाय तो बहुत लाभदायक पवित्र और मेधा शक्ति बढ़ती है। चम्मच से बालक को खीर खिलाते समय ॐ अन्नपतेऽन्नस्य' इत्यादि मन्त्र का ही उच्चारण करे । यह मन्त्र ऊपर लिखा जा चुका है ।

संस्कार के अन्त में अन्नादि से बालक का तुलादान करना भी श्रेयस्कर हैं । उस समय निम्न मन्त्र का उच्चारण किया जाय–

ॐ तेजो ऽसि शुक्रममृतमायुष्या आयुर्मे पाहि । देवस्यत्वा सवितुः यसवे ऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ता-भ्यामाददे।

इस प्रकार तुलादान के पश्चात् खीर का कुछ प्रसाद उपस्थित व्यक्तियों को भी देकर संस्कार की क्रिया पूर्ण करनी चाहिए ।

***

८. चूड़ा कर्म संस्कार

बुद्धिवर्द्धन का संस्कार–

यह संस्कार मस्तिष्क को सबल बनाने के उद्‌देश्य से किया जाता है । मानव शरीर में मस्तिष्क ही सभी क्रिया कलापों के संचालन का केन्द्र है । यदि उसमें उत्कृष्टता का समावेश नहीं होता तो मनुष्य अल्प बुद्धि रह जाता है ।

शिर की सफाई नहीं होती तो मस्तिष्क भी उससे प्रभावित हुए बिना नहीं रहता । जीवन के आरम्भ काल में जो बाल जन्म के

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साथ उत्पन्न होते हैं, उन्हें काटने के साथ संस्कार करने का स्पष्ट अर्थ है कि बालों के रूप में उत्पन्न पशुता समाप्त होकर मानवी गुणों की प्रखरता बढ़े । यह संस्कार मानवी गुणों की प्रखरता के साथ बुद्धि और ज्ञान की बृद्धि करने में भी सहायक है । आचार्यों का कथन है–

कल्याणाय च लोकानां प्रयोगो बुद्धिज्ञानयोः ।
साफल्यं मानवीयस्य जीवनस्येह निश्चितम् ।।

अर्थात्– बुद्धि और ज्ञान वर्द्धन के लिए जो प्रयोग किये जाते हैं, वे लोकों के लिए कल्याणकारी तथा मानवीय जीवन की सफलता निश्चय ही कराते हैं ।

इसी उद्‌देश्य से इस संस्कार की कल्पना हुई और इसे करने का समय एक वर्ष, तीसरा वर्ष या पाँचवाँ वर्ष निश्चित किया गया। पारस्कर गृह्यसूत्र के अनुसार–

साम्वत्सरिकस्य चूड़ाकरणंतृतीये वाऽप्रतिहते षोडशवर्षस्य केशांतो यथा मंगलं वा।

अर्थात्– शान्त संस्कार जन्म दिन से एक वर्ष होने पर या तीसरे वर्ष करे । या सोलह वर्ष की आयु होने पर केशान्त संस्कार करे। अथवा जब भी शुभ मंगल हो या कुल की रीति हो उसके अनुसार करे । मनुस्मृति के अनुसार भी इसी मान्यता की पुष्टि होती है । यथा–

चूड़ाकर्म द्विजातीनां सर्वेषामेव जन्मतः ।
प्रथमेशब्दे तृतीये बा कर्त्तव्यं श्रुतिचोदनात् ।।

अर्थात्–द्विजातियों में (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) सभी का चूड़ा कर्म संस्कार प्रथम वर्ष या तृतीय वर्ष श्रुति के निर्देशानुसार करना चाहिए।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विभिन्न वंशों, जातियों, में चूड़ा कर्म के समय तथा विधियों में अन्तर पाया जाता है । किसी परिवार में पाँचवें वर्ष में तो किसी परिवार में यज्ञोपवीत संस्कार के साथ भी करने का प्रचलन है । यदि तीसरे वर्ष बालक की माता गर्भिणी हो तो पाँचवे वर्ष में ही करना प्रशस्त होगा । किन्तु यदि पाँचवें वर्ष में भी गर्भिणी हो तो फिर गर्भिणी होने का दोष नहीं होगा । यज्ञोपवीत के साथ करने में भी दोष नहीं माना जाता ।

यदि चूड़ा कर्म, यज्ञोपवीत और विवाहादि संस्कारों के समय माता रजस्वला हो तो उसके शुद्ध होने पर यह संस्कार किये जाने चाहिए । किन्तु मुहूर्त आगे न बने या कोई अन्य कारण हो तो रजस्वला को दोष न माने । यदि पिता अनुपस्थित हो तो परिवार का कोई वयोवृद्ध पुरुष बाबा, ताऊ, चाचा आदि अथवा माता भी इन कर्मों को कर सकती है । यदि बालक ज्वरादि से पीड़ित हो तो उसके ठीक होने पर ही संस्कार करना उचित होगा ।

शास्त्र का मत है कि तीन पीढी तक के कुटुम्ब में यज्ञोपवीत या विवाहादि होने पर छः मास तक मुण्डन कर्म का निषेध है । चार पीढ़ी तक के कुटुम्ब में यदि कोई मुत्यृ हो गई हो तो तब तक मुण्डन संस्कार नहीं करना चाहिए जब तक कि मासिक श्राद्ध तक के प्रेत-संस्कार समाप्त न हो जाय । दो सहोदर (एक माता के उदर से उत्पन्न) बालकों का केशान्त संस्कार एक ही सम्वत्सर में नहीं करना चाहिए । यदि संस्कार कर्म का आरम्भ हो जाने पर किसी प्रकार का सूतक हो जाय तो कूष्मांडी ऋचाओं से आज्याहुति कर एक गोदान के पश्चात् चूड़ाकर्म किया जा सकता है ।

शुभ दिन मुहूर्त में माता-पिता स्वयं स्नानादि से शुद्ध होकर श्रेष्ठ वस्त्रादि धारण कर इस संस्कार का आरम्भ करें । माता बालक को स्नान करावे और दो शुद्ध उत्तम वस्त्र पहिना कर गोद में ले ले तथा अग्नि और शुभ आसन पर बैठे । पिता भी श्रेष्ठ

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आसन पर बैठकर आचमन, प्राणायाम आदि करके निम्न मन्त्र का उच्चारण करता हुआ संकल्प ले—संकल्प के आरम्भ में देश-काल का कथन करे और फिर इस मन्त्र को बोले—

अस्यकुमारस्य बीजगर्भ समुद्भवकल्मषनिराकरणेन बलायु र्वर्चोऽभिवृद्धि व्यवहारसिद्धि द्वारा श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थ चूड़ाकर्म करिष्ये। तत्र निर्विघ्नार्थ गणिपति पूजनं स्वस्तिपुण्याहवाचनं मातृका पूजनं करिष्ये।

यदि चूड़ाकर्म के साथ उपनयन कर्म भी किया जाय तो चूड़ाकर्म करिष्ये' के स्थान पर चूड़ोपनयन करिष्ये' कहना चाहिए पुण्याहवाचन के अन्त में 'प्रजापतिः प्रीयतम्' कहे ।

चूड़ाकर्म संस्कार को सिद्धि के निमित्त संकल्प पूर्वक तीन ब्राह्मणों को भोजन कराये और विधि पूर्वक हवन करे । वेदी में प्रथम पंचभू संस्कार करना चाहिए । वेद की धरती को तीन कुशों से झाड़कर उन कुशों को ईशान कोण में फेंक दे तथा वेदी को गोबर से लीपे और स्रुवा के मूल से उत्तर-उत्तर तीन प्रागायतन रेखा खींचे । उन रेखाओं से मिट्टी उठाकर फेंक दें । और वेदी में जल का सेवन करे । फिर सभ्य संज्ञक अग्नि लाकर उसे पश्चिमाभिमुख स्थापित करे तब शुद्ध वस्त्रालंकार धारण किये हुए बालक को गोद में लेकर माता अग्नि से पश्चिम की ओर और यजमान से दक्षिण की ओर बैठे।

तदुपरान्त ब्रह्मा का वरण करके, उससे अग्नि की परिक्रमा करा कर और उत्तराभिमुख बैठा कर प्रणीतापात्र को सामने रखे । अग्नि से उत्तर और प्रणीतापात्र को रखकर अग्नि के चारों ओर एक-एक मुट्ठी (चार मुट्ठी) कुश फैलावे । फिर अग्नि से उत्तर की ओर प्राक्संस्था पात्रासादन करे । छेदनार्थ तीन कुश पवित्र करणार्थ दो कुश, प्रोक्षणी पात्र, आज्यस्थाली, सम्मार्जन कुश,

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उपयन कुश, ढाक की तीन समिधाएँ, स्रुक् आज्य तथा तण्डुलयुक्त पूर्ण तथा पात्र लेकर छेदन कुशों से पूर्व-पूर्व क्रम से स्थापित करे। इन वस्तुओं से उत्तर-उत्तर की ओर सामान्य वस्तुएँ रहें । ठण्डा जल, घृत, दही, या मक्खन में से कोई एक तीन स्थानों पर बारह अंगुल लम्बे सेही का एक काँटा, अग्रभाग युक्त बारह अंगुल लम्बे सत्ताईस कुश, ताम्र से युक्त लोहे का छुरा, बैल का गोबर, दक्षिणा तथा नाई को यथा स्थान बैठावे ।

इसके बाद तीन छेदन कुशों से दो प्रादेश मात्र कुशों का छेदन करके पवित्र सहित दाँये हाथ से प्रणीतास्थ जल को तीन बार प्रोक्ष्णी पात्र में डालें और पवित्रों से प्रोक्षणीस्थ जल का उत्पवन करे फिर प्रोक्षणीस्थ जल का प्रणीतास्थ जल से तीन बार अभिषेचन करके आज्य स्थाली में आदि का प्रोक्षणी को रख दे । फिर घृत पात्र से आज्य स्थाली में घृत गिरावे । घृत को अग्नि पर रख कर, सूखे कुश जलाकर घृत के ऊपर फेरे और अग्नि में उन कुशों को फेंक दे । फिर स्रुवा को तीन बार तपावे और कुशों के मूल भाग से बाहर की ओर झाड़ पोछ कर प्रणीतास्थ जल से सेचन करे तथा पुनः तीन बार तपाकर उसे अग्नि से दक्षिण की ओर रख दे । फिर तपे हुए घृत को उतार कर उत्तर की ओर रख दें ।

तदुपरान्त उपयमन अंकुशों को बाँये हाथ में लेकर उठे और प्रजापति का ध्यान करके घृत में तीन समिधाएँ डुबो कर तूष्णी बिना मन्त्र के एक-एक कर डाले और फिर बैठकर प्रोक्षणीस्थ जल को ईशान से उत्तर दिशा तक प्रदाक्षेणा क्रम से घुमाता हुआ सब ओर सेचन करे । फिर दोनों पवित्री प्रणीता पात्र में रखकर प्रोक्षणी पात्र का विसर्जन करे । तत्पश्चात् दांये घुटने को धरती में टिका कर ब्रह्मा से अन्वारब्ध हुआ यजमान स्रुवा से अग्नि में

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आज्य की आहुतियां दें । आहुति देने के बाद स्रुवा के अवशिष्ट घृत बिन्दु को प्रोक्षणी में डालता जाय । प्रजापति का ध्यान कर पूर्वाधार की तूष्णी आहुति दे । आधार की दो महा व्याहृतियों को तीन, सर्व प्रायश्चित्त की पाँच तथा प्राजापत्य और स्विष्टकृत दो, इस प्रकार कुल चौदह आहुतियाँ त्यागी सहित देकर संस्रवप्राशन कर हाथ धो तथा आचमन करके ब्रह्मा को दक्षिणा दे और प्रणीता के जल का शिर पर सेचन करके शेष जल को ईशान दिशा में गिरा दे। फिर पवित्री को कुशों में मिलाकर सभी कुशों को क्रमशः उठावे और घी लगाकर अग्नि में होम दे ।

जूड़ाबंधनादि क्रियाएँ –

तदुपरान्त केशान्त की सामान्य विधि करें । ठण्डे जल में गर्म जल मिलाते हुए निम्न मन्त्र पढ़े तथा जल में थेड़ा मट्ठा भी मिला दे । मट्ठा मिले हुए जल में नवनीत अथवा थोड़ा दही डाले । ठण्डे पानी में गर्म पानी मिलाते हुए निम्न मन्त्र पढ़ना चाहिए –

ॐ उष्णेन वाय उदकेनेह्यदिते केशान्यप।

फिर पूर्व की ओर मुख करके बैठे हुए बालक के शिर दक्षिण, पश्चिम और उत्तर में तीनों ओर बालों के तीन जूड़े बाँधे । जूड़े बाँधने की क्रिया पहले से ही कर ली जाय । उन तीन जूड़ों में से प्रथम दाँये जूड़े को उक्त घृतादि मिश्रित जल से भिगोता हुआ निम्न मन्त्र पढ़े –

ॐ सवित्रा प्रसूता दैव्या दाप उं दंतु ते तनुम् । दीर्घायुत्वाय बलाय वर्चसे।

अब दाँये भाग के जूड़े में बँधे हुए केशों के तीन भाग करके प्रत्येक भाग में तीन-तीन स्थानों में सफेद सेही के काँटे से पहिले तो केशों को पृथक -पृथक् करे और फिर उनके तीन भाग करे ।

तदुपरान्त जो सत्ताईस कुश थे, उनमें से तीन कुश लेकर

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उनके अग्रभाग को केशों के तीन भागों में से प्रथम भाग के मूल में लगाते हुए निम्न मन्त्र का उच्चारण करे –

ॐ ओषधे त्रायस्व–

इस मन्त्र का उच्चारण करके कुश लगाने के पश्चात् छुरा हाथ में ग्रहण करते समय निम्न मन्त्र पढ़े –

ॐ शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मा माहिꣳसीः।

तदुपरान्त तीन कुश रखे हुए उन केशों को काटते समय निम्न मन का उच्चारण करे–

ॐ निवर्तयाम्यायुऽन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय।

उक्त मंत्र का उच्चारण करते हुए दाँये केशों के तीन भागों में से पश्चिम भाग के केशों को कुशों के सहित काटे और बैठ कर उन कटे हुए बालों को उत्तर की ओर गोबर पर रखे । केशों को काटते समय निम्न मंत्र पढ़ना चाहिए –

ॐ येनावनत्सविताक्षुरेण सोमस्य राज्ञो वरुणस्य विद्वान। तेन ब्रह्माणो वपतेदमस्यायुष्यं जरदष्टिर्यथासत् ।

तदुपरान्त पहिले भिगोये हुए दाँये दो भागों में तीन-तीन कुश रखे तथा उन्हें भी काटकर पूर्ववत् गोबर में रख दे । किन्तु इस समय पूर्व प्रकार से मन्त्रोच्चारण न करे क्योंकि बाद का कर्म तूष्णी मन्त्र-पाठ रहित किया जाता है ।

फिर शिर के पश्चिम की ओर के जूड़े को उसी 'ॐसवित्रा प्रसूता' आदि मन्त्र से केशों को भिगोये, बिना मंत्र पढ़े ही सेही के काँटे से केशों के तीन विभाग करे । केशों की जड़ में लगे हुए बालों से ढँक तीन कुश रखे, छुरा हाथ में ले और बालों में लगावे ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यह सभी उपर्युक्त तत्सम्बन्धी मन्त्रों के उच्चारण पूर्वक करना चाहिए । उससे पश्चिम के प्रथम.जूड़े के छेदन का मन्त्र निम्न है–

ॐ त्र्यायुषं जमदग्ने-कश्यपस्य त्र्यायुषम् ।
यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् ।।

इस प्रकार मन्त्र के साथ केशों को काटकर पूर्व के समान बैल के गोबर पर रखना चाहिए । तदुपरान्त पश्चिम के शेष दो भागों में पूर्ववत् तीन-तीन कुश रखकर केश-काटने तक के सभी कार्य बिना मन्त्र बोले ही करे । कटे हुए बालों को कुश सहित गोबर पर ही रखना कर्त्तव्य है ।

तत्पश्चात् शिर के उत्तर ओर के जूड़े के बाल भिगोवे, कांटे से तीन भाग करे, कुशों को बालों में रखे, छुरा हाथमें ले तथा जूड़ा काटे । यह सब कार्य तत्सम्बन्धी मन्त्रों को बोलता हुआ पहिले के समान करे । उत्तर के तीन भागों में से पहिले भाग के केश काटते समय निम्न मन्त्र पढ़ना चाहिए–

ॐ येन भूरिश्चरा दिवं ज्योश्च पश्चाद्धि सूर्यम् ।
तेन ते वपामि ब्रह्मणा जीवातवे जीवनाय सुश्लोकाय स्वस्तये।

इस प्रकार मन्त्रोच्चार पूर्वक काटे गये वे केश भी गोबर पर रखने चाहिए । फिर उत्तर के शेष रहे दो भागों में तीन-तीन कुश रखना, छुरा लेना, केशों में लगाना आदि कार्य बिना मन्त्र करके काटे हुए केश गोबर पर रख दे ।

तदुपरान्त बालक के समूचे शिर को भिगोकर प्रदक्षिण क्रम से तीन बार छुरे को शिर पर सब ओर घुमाता हुआ निम्न मन्त्र पढ़े–

ॐ यत्क्षरेण मज्जयता सुपेशसा वप्त्वा वा वपति केशांश्छिन्धिं शिरो मा स्यायुः प्रमोषीः।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

छुरा घुमाने का कार्य प्रथम बार उक्त मन्त्रोच्चारण पूर्वक करे और दो बार बिना मन्त्र बोले ही करे । इस प्रकार छुरा घुमाने की क्रिया समाप्त होने पर पूर्वोक्त ठण्डे, गर्म तथा घृत युक्त पानी से समूचे शिर को भिगोकर नाई को छुरा देता हुआ ' ॐ अक्षिण्वन् परिवप' कहे । इस कथन का अभिप्राय नाई को सावधानी से कार्य करने का निर्देश देना है ।

मुण्डन निर्देश–

यजमान के हाथ से छुरा लेकर नाई को सावधानी से बालक का मुण्डन करना चाहिए । कुल-परम्परा के अनुसार मुण्डन के समय जितने बाल शेष रखे जाते हैं, उतने बाल शेष छोड़ कर अन्य बाल मूँड़ देने चाहिए । विभिन्न देशों में विभिन्न प्रकार से बाल छेकने या रोटी रखने का विचार है । इसलिए कितने बाल छेके जांय, यह शास्त्र का विषय नहीं है ।

जब बाल कट चुकें तब उन्हें बालक की माता एक नवीन वस्त्र में लपेट कर दही दूध सहित गोबर के पिण्ड पर रखे और फिर पहले के समान बैठकर पूर्णाहुति दे । उस समय निम्न मंत्र बोलना चाहिए–

ॐ मूर्धानं दिवा अरति पृथिव्या वैश्नानरमृतआजात-मग्निम् । कवि ७ समाजमतिथि जिंनानामासन्नपात्रं जनयंत देवः स्वाहा ।

उक्त मन्त्रयुक्त आहुति देने के बाद बैठकर स्रुवा मूल के द्वारा वेदी से भस्म लेकर दाँयी अनामिका के अग्रभाग से क्रमशः निम्न मन्त्र बोलते हुए ललाट, कण्ठ दक्षिण बाहु और हृदय में लगावे–

ॐ त्र्यायुषं जमदग्ने, इति ललाटे ।

ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम् , इति ग्रीवायाम् ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ यद्देवेषुं त्र्यायुषम् , इति दक्षिण बाहुमूले ।
ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् , इति हृदि ।

जब उक्त् प्रकार से मन्त्रोच्चारण पूर्वक अपने उन-उन अंगों में भस्म लगा चुके, तब उसी क्रम में मन्त्र बोलते हुए बालक के शरीर में भी भस्म लगानी चाहिए । बालक के भस्म लगाते समय 'तन्नो' के स्थान पर 'तत्ते' शब्द का उच्चारण करे ।

यह सब क्रिया सम्पन्न होने पर कपड़े में लिपटे हुए उन केशों को गोबर के सहित पवित्र भूमि (गोशाला आदि) में गढ़ा खोद कर गाड़ दे । अथवा नदी, सरोवर आदि के किनारे भी गाढ़ सकते हैं । उसके बाद यजमान गोदान, दक्षिणा आदि से अपने आचार्य या पुरोहित को प्रसन्न करके आशीर्वाद ले और मातृगणों का विसर्जन करके दश ब्राह्मणों को भोजन करावे । फिर उन्हें दक्षिणादि देकर विदा करे ।

***

९. कर्णवेध संस्कार

कनछेदन का महत्त्व–

यह संस्कार श्रवण शक्ति की वृद्धि करने में सहायक है । कुछ मत में यह कर्म बालक के चित्त में रक्षा का विश्वास भरता है। कानों में आभूषण पहिनने की दृष्टि से भी यह आवश्यक है । विशेष कर कन्याओं में तो इस संस्कार की अनिवार्यता है ही । सुश्रुत के मत में–'रक्षा भूषण निमित्त बालस्य कर्णो विध्यते' अर्थात् रक्षा और आभूषण धारण करने के उद्देश्य से कान बींधे जाते हैं ।' चक्रपाणि के मत कर्णवेध के द्वारा ग्रहबाधा का भय भी नष्ट हो जाता है । यथा–

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कर्णवेधे बालो न ग्रहैरभिभूयते।
भूष्यतेऽस्य मुखं तस्मात्कार्यस्तत्कर्णयोर्व्यधः।।

अर्थात्—जिस बालक का कर्णवेध हो जाय उसे ग्रह अभिभूत (प्रभावित) नहीं कर पाते । साथ ही उसका मुख भी अलंकृत हो जाता है । इसलिए कर्णवेधन करना चाहिए ।

पारस्कर गृह्यसूत्र (२२) के अनुसार 'अर्थ कर्णवेधो वर्षे तृतीये पंचमे वा पुष्येन्दुचित्राहरेवतीरिपूर्वाह्ने' अर्थात् कर्णवेध संस्कार (जन्म से) तीसरे या पांचवें वर्ष पुष्य, मृगशिरा, चित्रा, श्रवण, या रेवती नक्षत्र में दिन पूर्व भाग में (सूर्योदय के पश्चात्, प्रातः काल) करना चाहिए । साथ ही शुक्ल पक्ष इस कर्म में प्रशस्त होता है । ज्योतिष शास्त्र के अनुसार शुभ मुहूर्त, दिखाकर करना उचित है ।

संस्कार का आरम्भ–

इस संस्कार की सामान्य विधि यह है कि यजमान (बालक का पिता अथवा बाबा, ताऊ, चाचा आदि) मंगल द्रव्य युक्त शुद्ध जल से स्नान करके चीरेदार दो वस्त्रधारण करें । यह वस्त्र नवीन या धुले हुए हों । फिर गन्धानुलेपन एवं तिलक लगा कर श्रेष्ठ पवित्र आसन पर बैठें और आसन, प्राणायाम् आदि करके देश-काल का कथन करता हुआ निम्न मन्त्र पढ़ें–

अस्य कुमारस्यायुरभिवृद्धिव्यवहार सिद्धि द्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थ कर्णवेधं करिष्ये । तदङ्गत्वेन निर्विघ्नार्थ गणपति पूजनं करिष्ये ।

इस प्रकार संकल्प करने के पश्चात् गणपति पूजन करके, सरस्वती, ब्रह्मा, विष्णु, शंकर, नवग्रह लोकपाल तथा विशेष कुलदेवता का ध्यान और प्रणाम करके तथा ब्राह्मणों को नमस्कार करके वस्त्रालंकार आदि से विभूषित बालक को बुलाकर श्रेष्ठ आसन पर पूर्व की ओर मुख करके बैठावे और खाने के लिये उसके हाथ

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

में मिठाई दे दे ।

तदुपरान्त प्रथम उसके दाँये कान का अभिमन्त्रण निम्न मन्त्र से करे –

ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरै रंगैस्तुंष्टुवान्सतनुभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।

दाँये कान का अभिमंत्रण उक्त मन्त्र से करने के बाद निम्न मन्त्र बाँये कान का अभिमन्त्रण करना चाहिए –

ॐ वक्ष्यंती वेदागनीगतिं कर्ण प्रियᳯसखाय परिष स्वजाना। योषेव शिङ्क्तेवितताधिन्धवञ्ज्याइयं ᳯसमने पारयन्ती।

अभियन्त्रण की क्रिया की विधि इस प्रकार है कि बालक के कान की ओर मुख करके मन्त्र पढ़ा जाता है ।

कान छेदन के लिए चाँदी की सलाई इस प्रकार से बनवाई हुई होनी चाहिए कि वह कान को सरलता से छेद सके । इसके लिए किसी सौभाग्यवती (पति, पुत्र से सम्पन्न) तथा अनुभवी स्त्री की सहायता लेनी चाहिए । अथवा किसी स्वर्णकार आदि से यह कार्य कराया जाय । इस विषय में आचार्यों का मत है ।

तस्माद् भिषक् कुशलःकर्णविध्येद् विचक्षणः। शिशोर्हर्षप्रमत्तस्य धर्मकर्मार्थ सिद्धये ।।

अर्थात्– इसलिए कान के छेदन का कार्य चतुर भिषक् करे, जिससे कि बालक प्रसन्न रहे और धर्म, कर्म तथा अर्थ की भी सिद्धि हो ।

कुछ लोग उक्त श्लोक को यहाँ उपयुक्त नहीं मानते । उनकी शंका के अनुसार कान का छेदन के कार्य में धन की सिद्धि (प्राप्त) किस प्रकार होगी ? इसका समाधान यह है कि यदि किसी

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अनाड़ी से यह कार्य करा लिया जायगा तो कान के उस स्थान में पीड़ा हो सकती है । पकाव भी पड़ सकता है और ऐसा होने पर उसकी चिकित्सा में जो धन का अपव्यय होगा, उससे बचा जा सकता है ।

अच्छा तो यह है कि कान छेदन के समय बालक को माता की गोद में बैठाया जाय और मिठाई आदि खाने को तथा खिलौने खेलने को दे दिये जाँय, जिससे कि उसका चित्त खाने-खेलने में लगा रहे ।उसके बाद कोई चतुर वैद्य या शल्य चिकित्सक अथवा कोई अनुभवी दाई या बड़ी बूढ़ी स्त्री कान छेदन के इस महत्त्वपूर्ण कार्य को सम्पन्न करे ।

कान छेदन में एक नियम यह भी है कि यदि पुत्र का कान छेदना हो तो दाँया और फिर बाँया कान छेदना चाहिए, किन्तु यदि पुत्री का कान छेदना हो तो उसका बाँया कान ही पहिले छेदना चाहिए । दाँया कान बाद में छेदा जाय ।

छेदने के स्थान पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए । इसके लिए कान की लव में प्राकृतिक छेद रहता है जिस पर पतली त्वचा आवरित रहती है । यदि उस स्थान को सूर्य की ओर करके देखा जाय तो वहाँ सूर्य रश्मियों का आर-पार आना स्पष्ट दिखाई देगा । वहाँ मेद माँस की कमी रहती है और पतलापन रहता है । उसी स्थान को छेदना चाहिए । छेदने के बाद एक सींक या चाँदी की सलाई उस छेद में डाल दी जाय, जिस से छेद बन्द न हो सके ।

समापन–

उसके पश्चात् ब्राह्मणों को भोजन करावे और गन्ध, माल्यताम्बूल, दक्षिणादि यथाशक्ति अर्पण करके आशीर्वाद ले । ब्राह्मणगण बालक के शिर पर हाथ फेरते हुए उसके माथे पर आशीर्वाद स्वरूप तिलक करे ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तदुपरान्त सुवालिनी स्त्री को केशर, ताम्बूलादि भेंट करके गणपति का विसर्जन करना चाहिए । उसके पश्चात् आगत व्यक्तियों का आदर-सत्कार करके विदा करे । इस प्रकार कर्ण वेध संस्कार को सम्पन्न करना चाहिए।

***

१०. उपनयन संस्कार

मानवजीवन के विकास का आरम्भ–

मानव जीवन में यह संस्कार अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है । इस संस्कार में मनुष्य की भौतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक उन्नति का पूर्ण रूपेण समावेश है । इसे धारण करने वाले व्यक्ति अपने कुल, समाज और राष्ट्र के प्रति निष्ठावान होता है । शास्त्रों में इसके धारण करने से प्राप्त होने वाले फल का इस प्रकार वर्णन हुआ है –

यज्ञोपवीतं परमंपवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्रयं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।

अर्थात्–यज्ञोपवीत (जनेऊ) अत्यन्त पवित्र होता है । इसे प्रजापति ने स्वाभाविक रूप से कल्पित किया है । यह आयु को बढ़ाने वाला, बन्धन से मुक्त करने वाला तथा बल और तेज प्रदान करने वाला है ।

विद्वानों ने मनुष्यों के दो प्रकार के जन्म माने हैं, इस विषय में शास्त्र वचन है –

आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणं कणुते गर्भमन्तः।
तं रात्रीस्तिस्र उदरे विभर्ति तं जात द्रष्टुमभिसंयंति देवाः।।

अर्थात्–गर्भवास के पश्चात् माता के उदर से जो जन्म होता

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हो वह सामान्य है । किन्तु विद्या रूपी माता के गर्भ में उसका दूसरा जन्म ब्रह्मचारी अवस्था में विद्या और उपनयन के द्वारा होता है ।

यज्ञोपवीत के बिना मनुष्य में ज्ञान की उत्पत्ति नहीं होती है इस विषय में भी स्पष्ट निर्देश उपलब्ध है –

कोटि जन्मार्जितं पापं ज्ञानाज्ञान कृतं च यत् ।
यज्ञोपवीत मात्रेण पलायन्ते न संशयः ।।

अर्थात्–करोड़ों जन्मों के संचित हुए जाने-अनजाने में किये हुए पाप केवल यज्ञोपवीत धारण करने मात्र से नष्ट हो जाते हैं ।

यज्ञोपवीत धारण का एक-एक वैज्ञानिक महत्त्व भी है । जो जनेऊ कान पर चढ़ाया जाता है, वह उस शिरा को प्रभावित करता है, जिसका सम्बन्ध मूत्राशय से होता है । इसलिए यज्ञोपवीत से मूत्र खुलकर उतरता है । कुछ विद्वानों की मान्यता है । कि जनेऊ धारण से मूत्र सम्बन्धी विकार उत्पन्न नहीं हो पाते ।

उपनयन का समय–

उपनयन किस आयु में करे ? इसका उत्तर मनु ने द्विजातियों के विषय में पृथक्-पृथक् रूप में दिया है । मनुस्मृति (२/३६–३८) का स्पष्ट मत है –

गर्भाष्ठमेऽब्दे कुर्वीत ब्राह्मण स्योपनायनम् ।
गर्भादेकादशे राज्ञो गर्भात्तु द्वादशो विशः ।।
ब्रह्मवर्त्तकामस्य कार्य विप्रस्य पंचमे ।
राज्ञोबलार्थिनः षष्ठे वेश्यस्येहार्थिनोऽष्टमे ।।
आषोडशाद् ब्राह्मणस्य सावित्री नातिवर्तते ।
आद्वाविशात्क्षत्रबंघोराचतुर्विशतेर्विशः ।

अर्थात्– गर्भ से आठवें वर्ष ब्राह्मण का उपनयन संस्कार

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करे। गर्भ से ग्यारहवें वर्ष क्षत्रिय का और बारहवें वर्ष वैश्य का उपनयन करना चाहिए । ब्रह्मतेज की कामना वाले ब्राह्मण का पाँचवें वर्ष, बलार्थी क्षत्रिय का छठे वर्ष तथा धनाभिलाषी वैश्य का आठवें वर्ष करें । ब्राह्मण का सोलहवें वर्ष तक, क्षत्रिय का बाईसवें वर्ष तक करें । ब्राह्मण का सोलवें वर्ष तक क्षत्रिय का बाइसवें वर्ष तक तथा वैश्य का चौबीसवें वर्ष तक गायत्री का अतिक्रमण नहीं होता। अभिप्राय यह है कि इस आयु तक उपनयन संस्कार हो सकता है।

पारस्कर गृह्यसूत्र के अनुसार भी मनु के उक्त मत की पुष्टि है– अष्टवर्ष ब्राह्मणमुपनयेत् गर्भाष्टमे वा, एकादश वर्ष ७७ राजन्य, द्वादश वर्ष वैश्यम् । यथा मंगलं वा सर्वेषाम् । ' अर्थात् ' जब ब्राह्मण का अथवा गर्भ से आठवें वर्ष में ही करा दे । क्षत्रीय का ग्यारहवें वर्ष और वैश्य का बारहवें वर्ष में करे ।अथवा सभी वर्णों में जब भी मंगलकारी समझा जाय अथवा मंगल शुभ हो तब करना चाहिए ।

कुछ विद्वानों ने द्विजाति-भेद से ऋतुकाल भी निश्चय किये हैं। उनके मत में 'वसन्ते ब्राह्मणमुपनयेद् ग्रीष्मे राजन्यं शरदि वैश्यम्' अर्थात् 'ब्राह्मण का उपनयन बसन्त ऋतु में, क्षत्रिय का ग्रीष्म ऋतु में और वैश्य का शरद ऋतु में करना चाहिए ।

जनेऊ किस प्रकार का हो, इस विषय पर शास्त्रों का मत है कि ब्राह्मण को कपास के सूत का, क्षत्रिय को सन का और वैश्य को भेड़ की ऊन का जनेऊ धारण करना चाहिए । अथवा जिस प्रकार के सूत का जनेऊ उपलब्ध हो सके, उसी प्रकार का सभी वर्ग धारण कर सकते हैं । इस कर्म को शुक्ल पक्ष, पुण्य, दिन तथा शुभ नक्षत्र आदि देखकर करना चाहिए । इस कर्म का आरम्भ स्वस्ति पुण्याहवाचनादि मंगल कृत्यों से किया जाता है ।

उपनयन कर्म में वस्त्र तथा मृगचर्मादि का भी वर्णादि के भेद से प्रयोग किया जाता है । ब्राह्मण को उस समय काषाय (गेरुआ)

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रंग का चीरा युक्त वस्त्र धारण करना चाहिए क्षत्रिय का वस्त्र मजीठ से रंगा हुआ लाल वर्ण का तथा वैश्य का वस्त्र हल्दी से पीला रंगा हुआ रहे ।

ब्राह्मण के लिए काले वर्ण का मृग चर्म विहित है । क्षत्रिय के लिये रुरु संज्ञक मृग का तथा वैश्य के लिये पर्वत क्षेत्रीय बकरे का चर्मनिर्दिष्ट है । यदि मृग चर्म न मिले तो अधिक ऊन वाले पर्वत क्षेत्रीय बकरे का चर्म ही सभी वर्ण प्रयोग में ला सकते हैं । चर्म का प्रमाण ब्रह्मचारी के अंगुल से अड़तालीस अंगुल का हो और वह वस्त्रों से बाहर की ओर धारण किया जाय । उसके एक या तीन खण्ड हो सकते हैं । बाल बाहर की ओर रहें और यज्ञोपवीत के समान धारण किया जाय ।

यज्ञोपवीत के समय ब्रह्मचारी के हाथ में जो दण्ड दिया जाता है । वह ब्राह्मण के लिए ढाक या बिल्व का ललाट के केशों की ऊँचाई के बराबर लम्बा होना चाहिए । क्षत्रिय को वट या खदिर का तथा ललाट तक की लम्बाई का दिया जाय । वैश्य को गूलर वृक्ष का नासिका तक लम्बा दण्ड धारण कराया जाय । दण्ड को आचार्यों ने न्याय का प्रतिनिधि माना है ।

जिस दिन उपनयन संस्कार करने का निश्चय हुआ हो उससे पहिले दिन बालक को व्रत करावे । ब्राह्मण बालक दूध पर क्षत्रिय बालक यवागू पर और वैश्य बालक श्रीखण्ड पर रहे तथा यजमान अपनी पत्नी और बालक के सहित मंगल द्रव्ययुक्त जल से स्नान कर चीरेदार दो वस्त्रधारण करे तथा चन्दन केशर आदि का तिलक लगाकर हवनशाला से पृथक् बनाये हुए मण्डप में जाकर पूर्व की ओर शुभ आसन पर बैठे तथा अपने से दक्षिण ओर पत्नी को और उससे दक्षिण ओर बालक को बैठावे और उपनयन संस्कार की सिद्धि तथा दोष को निवृत्ति के उद्देश्य से हाथ में पवित्री धारण किये हुए आचमन-प्राणायाम करके यजमान देश काल का कथन करके निम्न प्रकार से संकल्प करे—

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कृच्छ्रत्रयात्मकप्रायश्चित्त प्रत्याम्नाय गोनिष्क्रयी भूत-यथाशक्तिरजतद्रव्यदानपूर्वकं द्वादशसहस्त्रं द्वादशाधिक-सहस्त्रं वा गायत्री जपमहं ब्राह्मण द्वारा कारयिष्ये ।

इसका अर्थ हुआ कि मैं तीन कृच्छ्र व्रत रूप प्रायश्चित के प्रतिनिधि गोदान स्थायी गाय का मूल्य यथाशक्ति रजत (चाँदी) तथा द्रव्य के दान पूर्वक बारह हजार अथवा एक हजार बारह गायत्री क़ा जप ब्राह्मण के द्वारा कराऊँगा । इस संकल्प के समय ध्यान रहे क़ि यदि बारह हजार गायत्री जप कराने हों तो 'द्वादशा-धिक सहस्त्र' वाक्य को संकल्प से निकाल दे । यदि स्वयं ही जप करे, ब्राह्मण द्वारा न करावे तो ब्राह्मण द्वारा कारयिष्ये' के स्थान पर केवल 'करिष्ये' शब्द का उच्चारण करें–

परन्तु यजमान को स्वयं जप करने का समय नहीं मिलता इसलिए ब्राह्मण द्वारा ही जप कराना प्रशस्त है । संकल्प करने के तुरन्त बाद ही एक ब्राह्मण को जप करने के लिए बैठा दे । उससे पूर्व बालक भी देश-काल का कीर्तन करता हुआ निम्न संकल्प करें–

मम कामचारंकामवादकामभक्षणादिदोषपरिहार्थ कृच्छ्रत्रयात्मकप्रायश्चित्तप्रत्याम्नायगोनिष्क्रयीभूत यथा-शक्ति रजतद्रव्यंदानपूर्वक द्वादश सहस्त्रं द्वादशाधिक सहस्त्रं वा ब्राह्मण द्वारा गायत्री जपं कारयिष्ये ।

बालक को भी उसके संकल्प का अर्थ समझा दिया जाय–'मेरे यथेष्ट आचरण तथा यथेष्ट भाषण तथा यथेष्ट भक्षणादि दोषों के परिहारार्थ मैं तीन कृच्छ्रव्रत रूप प्रायश्चित्तों के प्रतिनिधि रूप गाय के मूल्य रूप में यथाशक्ति चाँदी द्रव्य के सहित बारह हजार अथवा एक हजार बारह गायत्री जप ब्राह्मणों के द्वारा कराऊँगा । उच्चारण किये जाने वाले किसी भी वाक्य का अर्थ इसीलिए

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

समझना-समझाना आवश्यक होता है कि बिना अर्थ समझे वैसी भावना उत्पन्न न होने से अभीष्ट फल की सिद्धि नहीं होती ।

पिता पुत्र द्वारा उक्त प्रकार से संकल्प करने और ब्राह्मण के गायत्री जप के लिए बैठने के पश्चात् पिता उपनयन संस्कार का संकल्प उच्चारण करे–

(देश काल कथन के बाद) अस्य कुमारस्य द्विजत्वासिद्धिद्वारा वेदाध्ययनाधिकारसिद्धयूर्थं श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थ चोपनयनमद्य श्वों: वा करिष्ये ।

अर्थात्–' इस बालक को द्विजत्व-प्राप्ति के द्वारा वेदाध्ययन का अधिकार सिद्ध कराने के उद्‌देश्य से परमेश्वर की प्रसन्नतार्थ आज अथवा कल उपनयन करना हो तो 'चूड़ाकर्मोपनयनाख्ये कर्मणी अहं करिष्ये' बोलना चाहिए ।

उसके पश्चात् संकल्प और विधि पूर्वक गणपति पूजन, स्वस्तिपुण्याहवाचन, मातृका पूजन, ग्रहयोग तथा नान्दी श्राद्ध आदि कर्म करने चाहिए ।

दूसरे दिन (जिस दिन उपनयन संस्कार करना है उस दिन) बालक के क्षौर कर्म (मुण्डन) का संकल्प करना चाहिए । देशकाल कीर्तन के पश्चात् 'उपनयांगविहितमस्य वपनं करिष्ये' अर्थात् इसका उपनयन के अंग रूप से विहित क्षौर कर्म कराऊँगा । ऐसा वस्त्र धारण कराने के पश्चात् तीन ब्राह्मणों को और मुण्डित हुए बालक को भोजन कराना चाहिए ।

तदुपरान्त हवनशाला से भिन्न अन्य बाह्य मण्डप में, जहाँ भूमि शुद्ध गोबर से लिपी अथवा पक्की साफ सुथरी हो, वहाँ कोई बाल, भुसी, कंकड़ या कूड़ा आदि न हो, वहाँ शुद्ध भूमि में एक चौकोर (एक प्रमाण) बनावें और कुशों से परिसमूहन, गोबर से लीपना, स्रुवा मूल से रेखा खींचना, मिट्‌टी उठाकर फेंकना, वेदी

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

का अभ्युक्षण करना आदि क्रियाओं द्वारा विधिवत् पंचभू संस्कार और अग्नि स्थापना का कार्य आचार्य को ही करना चाहिए ।

उसके पश्चात् आचार्य अपने अन्तः शिष्य के द्वारा वस्त्राभूषण से सज्जित बालक को बुलवा कर अपने से दाँयी ओर तथा अग्नि से पश्चिम ओर खड़ा करे अथवा बैठाये । उस समय अन्य ब्राह्मण उस बालक को 'आब्रह्मन्नित्यम्' कहते हुए आशीर्वाद दें । फिर आचार्य बालक से निम्न दो वाक्य कहलावे–

ब्रह्मचर्यमागम् ।
ब्रह्मचर्यसानि ।

अब आचार्य बालक को कटि सूत्र तथा कौपीनादि वस्त्र पहनाते समय निम्न मन्त्र का उच्चारण करे–

ॐ येनेद्राय बृहस्पतिर्वासः पर्यदधादमृतम् । तेन त्वा परिदधाम्यायु षे दीर्घायु त्वाय बलाय वर्चसे ।

बालक को जो-जो वस्त्र आवश्यक हो, वे-वे इसी मन्त्र से इसी समय पहिना दिये जाँय। इसके पश्चात् उसे आचमन कराने चाहिए ।

उसके बाद बालक के जितने प्रवर हों उतनी गाँठों वाली मेखला उसे धारण कराई जाय । ब्राह्मण की मेखला मूँज की होती है, उसमें तीन लड़ी होती हैं, क्षत्रिय की ऊन की और वैश्य की सन की होती है । यह मेखलाएँ वर्णानुसार बनानी चाहिए । आचार्य बालक के कटि भाग में मेखला को क्रम से तीन बार लपेट कर बाँधते समय निम्न मन्त्र पढ़े–

ॐ इयं दुरुक्तं परिवाधमाना वर्ण पवित्रं पुनतीम आगात् । प्राणापानाभ्यां बलमादधाना स्वसोदेवा सुभगा मेखलेयम् ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उसके पश्चात् देश व्यवहार के अनुसार जनेऊ का एक-एक जोड़ा तथा अन्नादि दक्षिणा के साथ चौबीस लोटा या लुटिया निम्न प्रकार संकल्प करके ब्राह्मणों को देनी चाहिए –

ॐ तत्सदद्यात् (अमुक) गोत्रो (अमुक) शर्मा, वर्मा गुप्तः अहं स्वकीयोपनयनकर्म विषयकसत्संस्कार प्राप्त्यर्थमिदं भाण्डाष्टात्रयं सयज्ञोपवीतं सदक्षिणं नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यः संप्रददे।

उसके पश्चात् आचार्य निम्न प्रकार से उपनयन संस्कार करे। प्रथम निम्न मन्त्रों के द्वारा उपवीत पर जल से सेचन करना चाहिए–

ॐ आपो हिष्ठामयो भुवस्तानऊर्जे दधातन। महेरणायचक्षसे ।।१।।

ॐ योवः शिवतमोरसस्तस्यभाजयतेहनः। उशतीरिव-मातरः ।।२।।

ॐ तस्मा अरंगमामवो यस्यक्षयायजिन्वथ। आपो जनयथाचनः ।।३।।

अंगुष्ठ भ्रामण क्रिया–

अब निम्नलिखित तीन मन्त्रों से आचार्य उपवीत पर अँगूठा फिराने का कर्म करे–

ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमंपुरस्ताद् द्विसीमतः सुरुचोवेन आवः। सबुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्योनि मसतश्च विवः ।।१।।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्य पा

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुरे।।२।।

ॐनमस्ते रुद्र मन्यव उतोत इषवे नमः बाहुभ्यामुते नमः।। ३।।

उसके पश्चात् उपवीत के नौ तन्तुओं में ओंकारादि नौ देवताओं का विन्यास करे । प्रत्येक देवता का विन्यास करता हुआ क्रमशः एक-एक मन्त्र बोलता जाय–

(१) ओंकार प्रथमे तन्तौ विनस्यामि।
(२) अग्निं द्वितीये तन्तौ विनस्यामि।
(३) नागान् तृतीये तन्तौ विनस्यामि।
(४) सोमं चतुर्थे तन्तौ विनस्यामि।
(५) इन्द्रं पंचम् तन्तौ विनस्यामि।
(६) प्रजापतिं षष्ठं तन्तौ विनस्यामि।
(७) वायुं सप्तम् तन्तौ विनस्यामि।
(८) सूर्य अष्टम् तन्तौ विनस्यामि।
(९) विश्वेदेवान नवम् तन्तौ विनस्यामि।

उक्त प्रकार मंत्र युक्त विन्यास करने के बाद जनेऊ को देखते हुए दश बार गायत्री मंत्र (ॐ भुर्भूवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्) का उच्चारण करे । और फिर वह जनेऊ सूर्य को दिखता हुआ निम्न मंत्र पढ़े–

ॐ उपयाम गृहीतो ऽसि सावित्रो ऽसि च नो धाश्च-नो धा असि च नो मयि धेहि। जिन्व यज्ञं जिन्व यज्ञ पतिं भगाय देवाय त्वा सवित्रे।

उसके बाद आचार्य बालक को स्वयं यज्ञोपवीत प्रदान करे और तब यज्ञोपवीत लेकर बालक निम्न मन्त्र का उच्चारण करे–

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐयज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आष्युयमग्रयं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः
यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि।।

इस मन्त्र को पढ़ कर बालक दाँयी भुजा उठाकर बाँये कन्धे से यज्ञोपवीत धारण करे । उसके बाद चीरेदार कपास का नवीन वस्त्र लेकर आचार्य यज्ञोपवीत के समान ही बालक को धारण कराता हुआ निम्न मन्त्र का उच्चारण करे–

ॐयुवासुवासाः परिवीत आगत्सउश्रेयान्भवति जायमानः। तन्धीरासः कवउन्नयान्ति स्वाध्योमनसा देवयन्तः ।।

अब आचार्य बालक को ऊपर से ओढ़ने के लिए मृगचर्म प्रदान करे । तब बालक निम्न मन्त्र से मृगचर्म को धारण करे –

ॐ मित्रास्य चक्षुर्धरुणंबलीयस्तेजो यशस्वि स्थविर ꣳसमिद्धम् । अनाहनस्यं वसनं जरिष्णुपरीदं वाज्य जिनं दधेऽहम् ।

तदुपरान्त आचार्य ब्रह्मचारी को दण्ड प्रदान करे और ब्रह्मचारी (बालक) उस दण्ड को आचार्य से ग्रहण करता हुआ निम्न मन्त्र का उच्चारण करे–

ॐ यो मे दण्डः परापत द्वैहायसो ऽधिभूम्याम् ।
तमहं पुकरादद आयुषे ब्रह्मणे ब्रह्मवर्चसाय।।

किसी-किसी के आचार्य के मत में सोमयोग की दीक्षा के समान ही दण्ड ग्रहण करना चाहिए । उनके मत में अध्वर्यु यजमान को ही दण्ड दे और दीक्षित यजमान उसे 'उच्छ्रयस्त्र' मन्त्र पढ़कर ऊँचा उठावे तथा दण्ड देने के बाद आचार्य अपनी

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंजुली में जल भर कर ब्रह्मचारी (बालक) की अंजुली को निम्न मन्त्रों का उच्चारण करता हुआ तीन बार भरे–

ॐ आपोहिष्ठामयी भुवस्तान ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे।। १।।

ॐ योवः शिवतमोरसस्तस्यभाजयतेह न उश्तीरिव-मातरः।। २।।

ॐ तस्मा अरंगमामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथाचन।। ३।।

जब आचार्य उक्त मन्त्रों का उच्चारण करे तब बालक प्रत्येक मन्त्र के अन्त में अपनी अंजुली से सूर्य को अर्ध्य दे । तब आचार्य कहे सूर्यमुदीक्षस्व' और फिर बालक निम्न मन्त्र पढ़कर सूर्य के दर्शन करे–

ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्तात्छुक्रमुच्चरत। पश्येम शरदः शत छजीवेम शरदः शत छश्रणुयाम शरद शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनां श्याम शरद शतं भूयश्च शरदः शतात् ।।

अब आचार्य बालक के दाँये कन्धे के ऊपर से होकर अपना हाथ बालक के हृदय तक लेजाकर निम्न मन्त्र से उसके हृदय का स्पर्श करे–

ॐ ममव्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तमनुचित्तं ते अस्तु। मम वाचमेकनाजुषस्वबृहस्पतिष्ट्रवा नियुनक्तु मह्यम् ।।

अब आचार्य बालक से 'को नामासि' ? कहकर उसका नाम पूछे उस समय वह बालक के दाँये हाथ को अँगूठे सहित अपने

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दाँये हाथ में पकड़ ले ।

उसके उत्तर में बालक (अमुक) शर्भाऽहं भोः ३ कहे । यदि क्षत्रिय है तो (अमुक वर्माऽहं और वैश्य है तो (अमुक) गुप्तोऽहं' कहे ।

इस प्रकार आचार्य तीन बार प्रश्न करे और बालक भी तीन बार वैसा ही उत्तर दे । तदुपरान्त आचार्य' कस्य ब्रह्मचार्यसि ?' कहे, जिसके उत्तर में बालकः 'भवत' कहे । उसके बाद आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करे –

ॐ इन्द्रस्य ब्रह्मचार्यस्यग्निराचार्यस्त वाहमाचार्यस्तव (अमुक)

उक्त मन्त्र में अमुक के स्थान पर आचार्य बालक का नाम ले । तथा अन्त में शर्मा, वर्मा या गुप्ता लगावे ।

अब बालक हाथ जोड़कर क्रमशः पूर्वादि दिशाओं में उप स्थान करे । अर्थात् पहिले पूर्व की ओर मुख करके खड़े हुए बालक को आचार्य निम्न मन्त्र पढ़ाता हुआ उपस्थान करे –

ॐ प्रजापतते त्वा परिददामि ।

अब बालक दक्षिण की ओर मुख करे और आचार्य निम्न मन्त्र पढ़े –

ॐ देवाय त्वा सवित्रे परिदादामि ।

अब बालक पश्चिम की ओर मुख करे और आचार्य निम्न मन्त्र से उपस्थान करे ।

ॐ अद्भ्यस्त्वौषधीभ्यः परिददामि ।

इसके बाद बालक हाथ जोड़े हुए ही उत्तर की ओर मुख करे और आचार्य निम्न मन्त्र बोले–

ॐ द्यावापृथिवीभ्यां त्वां परिददामि ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अब बालक हाथ जोड़े हुए ही नीचे की ओर देखे तथा आचार्य निम्न मन्त्र बोले–

ॐ विश्वेभ्यस्त्वा भूतेभ्यः परिददामि ।

तदुपरान्त हाथ जोड़े हुए बालक ऊपर की ओर देखे तथा आचार्य निम्न नन्त्र का उच्चारण करे–

ॐ सर्वेभ्यस्त्वा भूतेभ्यः परिददामि ।

उसके पश्चात् बालक प्रदक्षिणा क्रम से अग्नि का पर्युक्षण करे और आचार्य के उत्तर की ओर बैठ कर तथा पुष्प, चन्दन, ताम्बूल और वस्त्र आदि लेकर ब्रह्मा का वरण करता हुआ निम्न वरण मन्त्र का उच्चारण करे–

ॐ अद्य कर्त्तव्योपनय होम कर्माण कृताकृताबेक्षणरूप ब्रह्मकर्म कर्त्तुम् (अमुक) गोत्र (अमुक) शर्माहं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचंदनताम्बूलवासोभिब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे –

तब ब्रह्मा उन पुष्पादि को लेकर ॐ वृतोऽस्मि । कहे और अग्नि से दक्षिण की ओर चौकी पर आसन बिछाकर इस पर पूर्व की ओर अग्रभाग रखते हुए कुश बिछाकर उस पर ब्रह्मा को बैठावे। ब्रह्मा बैठने से पहले अग्नि की प्रदक्षिणा करे । और फिर यजमान कहे–

अस्मिन् कर्मणि त्वं मे ब्रह्मा भव ।

इसके प्रत्युत्तर में ब्रह्मा 'भवामि' कहे । जब ब्रह्मा आसन पर उत्तर की ओर मुख करके बैठ जाय तब प्रणीता पात्र को उसके सामने रखकर उसमें जल भरे और कुशों से आच्छादित कर दे । तथा ब्रह्मा का मुख देखकर प्रणीतापात्र को अग्नि से उत्तर की ओर प्रागग्र रखे ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तदुपरान्त चार मुट्ठी कुश चारों ओर बिछाकर अग्नि के उत्तर की ओर प्राक्संस्थ पात्रासादन करना चाहिए । पवित्र छेदनार्थ तींन कुश ओर पवित्रकरणार्थ दो कुश, प्रोक्षणी पात्र, आज्य स्थाली, समार्जन कुश, उपयमन, ढाक की तीन समिधाएँ स्त्रुव, आज्य, २५६ मुट्ठी (आचार्य की मुट्ठी) कच्चे चावलों से परिपूर्ण पात्र, पवित्र छेदन कुशों से पूर्व-पूर्व क्रम से उत्तर को अग्रभाग करके रखे ।

फिर पवित्र तीन कुश प्रदेय मात्र कुशद्वय का छेदन प्रोक्षणीस्थ जल का उत्पवन, प्रणीतास्थ जल से प्रोक्षणीस्थ जल का सेचन पूर्वक अग्नि और प्रणीतापात्र के मध्य प्रोक्षणी को रखे फिर आज्य स्थली में घृत डालकर अग्नि पर तपने के लिए रख दे । फिर स्रुवा को स्वच्छ करके प्रणीता के जल से सेचन करे और तीन बार तपा स्रुवा को अग्नि से दक्षिण की ओर रखे ।

तदुपरान्त घृत को अग्नि से उतार कर तीन बार प्रोक्षणी पात्र का उत्पवन करे । फिर उठकर बाँए हाथ में उपयमन कुशों को बांए हाथ में लेकर प्रजापति का ध्यान करके घृत में समिधाएँ डुबो कर बिना मन्त्रोच्चारण के ही एक-एक कर अग्नि में डाले । फिर बैठकर पवित्र सहित प्रोक्षणीस्थ जल को ईशान से उत्तर तक सिरा दे । तथा प्रणीता में पवित्री रखकर प्रोक्षणी का विसर्जन करे। फिर दाँये घुटने को धरती में टिकाकर ब्रह्मा से अन्वारब्ध हुआ बालक स्रुवा से अग्नि में आज्याहुति दें । साथ में निम्न मन्त्रों का उच्चारण करे–

ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये नमम ।
इति मनसा,

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ इन्द्राय स्वाहा, इदमिन्द्राय नमम। इत्याधारौ।
ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये न मम।
ॐ सोमाय स्वाहा, इदं सोमाय न मम।
इत्याज्य भागौ।
ॐ भूः स्वाहा, इदमग्नये नमम।
ॐ भुवः स्वाहा, इदं वायवे नमम।
ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय नमम।

इस प्रकार मन्त्रोच्चारण पूर्वक आहुतियाँ दी जायँ। मन्त्र को बालक स्वयं बोलता जाय। यदि बालक शुद्ध उच्चारण न कर सके तो आचार्य ही उसकी ओर से मन्त्रोच्चारण करे।

आधार की दो और महाव्याहृतियों की तीन आहुतियाँ दे कर प्रायश्चित की पाँच आहुतियाँ दे –

ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशचानो विश्वाद्वेषाᳬसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा ।।१।। इदमग्निवरुणाभ्यां नमम।

ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्याउषसो व्युष्टौ। अवयक्ष्व नो वरुणᳬरराणो वीहि मृडीकᳬ सुहवोनएधि स्वाहा।।२।। इदमग्नीवरुणाभ्यां नमम।

ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमयाअसि। अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजᳬ स्वाहा।।३।। इदमग्नये अयसे नमम्।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नो अद्या सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा ।। ४।। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च नमम ।

ॐ उदुत्तमं वरुणं पाशमस्मदबाधमं विमस्यम ७ श्रयाय । अथावयमादित्य व्रते तवानागस अदितये स्वाहा ।। ५।। इदं वरुणाय न मम ।

अब प्राजापत्य और स्विष्टकृत की दो आहुतियाँ निम्न मंत्रों से दें–

ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम। इति मनसा प्राजापत्यम् ।

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा, इदमग्नये स्विष्टकृते नमम।

अब चौदह आहुतियाँ त्याग सहित देकर हाथ धोवे और निम्न संकल्प पढ़कर ब्रह्मा को दक्षिणा दें–

ॐ अद्यै तस्मिन्न पनयनहोमकर्मणिकृताकृतावेक्षणरूप ब्रह्मकर्म प्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापति दैवतं (अमुक) गोत्रायामुक शर्मणे ब्रह्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे ।

तब ब्रह्मा 'ॐस्वस्ति' कहकर दक्षिणा ग्रहण करे और फिर पवित्रों के द्वारा प्रणीतास्थ जल लेकर निम्न मन्त्र से अपने शिर पर सेचन करे–

ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः संतु ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अब प्रणीता के जल को ईशान दिशा में गिराते हुए निम्न मन्त्र का उच्चारण करे–

ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै संतु योऽस्मान् द्वेष्ठि यं च वयं द्विष्मः।

तदुपरान्त पवित्रों को बिछाये हुए कुशों में मिला दे और फिर जिस क्रम से कुश बिछाये गये थे उसी क्रम से पवित्रों के सहित उठाकर घृतयुक्त करके निम्न मन्त्र के साथ त्याग के सहित अग्नि में होम दे –

ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित। मनस्पइभं देवयज्ञ छ्ठ स्वाहा वातेधाः स्वाहा। इदम् वाताय न मम।।

आचार्योपदेश–

तदुपरान्त आचार्य बालक को निम्न प्रकार से शिक्षा दे और ब्रह्मचारी को उसके उत्तर में स्वीकृति सूचक शब्द निवेदन करे।

आचार्य–ब्रह्मचार्यसि' अर्थात् अब तुम ब्रह्मचारी हो, अब से तुम वेदोक्त कर्म करने के अधिकारी हुए।

बालक–'भवानि' (ऐसा ही हो)

आचार्य–'अपोऽशानः (तुम आचमन करो)

बालक–'अशानि' (किया करूँगा)

आचार्य–'कर्म कुरु' (तुम संध्योपासन, वेदाध्ययन भिक्षाचरणादि कर्म करो।)

बालक–'करिवाणः' (मै करूँगा)

आचार्य–'मा दिवा' सुषुप्था' (दिन में नहीं सोना)

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बालक–'न स्वपान' (नहीं सोऊँगा)

आचार्य–'बाचं यच्छ' (भोजन एवं शौचादि के समय मौन रहना)

बालक–'यच्छानि' (मै उन-उन समय में मौन रहा करूँगा)

आचार्य–'अध्ययनं सम्पादय' (तुम नियम से वेदाध्ययन करो)

बालक–'सम्पादयानि' (मैं नियम से वेदाध्ययन करूँगा)

आचार्य–'समिधमाधेहि' (तुम नित्य समिधाधान किया करो)

बालक–'आदधानि' (मैं नित्य प्रति समिधाधान किया करूँगा)

आचार्य–'अपोऽशान' (भोजन के पश्चात् नित्य-प्रति आचमन किया करो।)

बालक–'अशानि' (मै भोजन के बाद नित्य-प्रति आचमन किया करूँगा)

इस प्रकार आचार्य द्वारा शिक्षा सम्पूर्ण होने पर बालक आचार्य के दोनों चरण स्पर्श करके अग्नि से उत्तर की ओर पश्चिमा-पूर्वाभिमुख बैठे । उस समय आचार्य उसके समीप अग्नि से उत्तर में देखतें हों । उस समय आचार्य बालक को गायत्री मन्त्र का उपदेश करें ।

गायत्री का उपदेश करने से पूर्व एक कांस्य पात्र में चावल

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बिछाकर स्वर्ण की सलाई से (अभाव में चांदी या ताम्र की सलाई से) प्रणव और व्याहृतियों सहित गायत्री मन्त्र लिखकर संकल्प करें–

ओमद्यममब्रह्मवर्चसवेदाध्ययनाधिकारसिद्ध्यर्थ गायत्र्युपदेशाँगविहितं गायत्री सावित्री सरस्वतीपूजन-पूर्वकमाचार्यपूजनं करिष्ये।

अर्थात्–'मै ब्रह्मवर्चस तेज और वेदाध्ययनाधिकार की सिद्धि के लिए गायत्री उपदेश के अंग रूप से विहित गायत्री और सरस्वती के पूर्वक आचार्य का पूजन करूँगा ।'

इस प्रकार संकल्प करके 'ॐ मनोजूतिर्जुषतां' इत्यादि मन्त्र से प्रतिष्ठा करके 'श्रीश्चते' इत्यादि मन्त्र से चावलों पर गायत्री आदि देवियों का पूजन करके आचार्य का पूजन करें ।

तदुपरान्त आचार्य प्रथमावृत्ति में प्रणव और व्याहृतियों सहित गायत्री के एक–एक पाद का निम्न प्रकार उपदेश करें–

ॐभूर्भुवः स्वः-तत्सवितुर्वरेण्यम् ।
ॐभूर्भुवः स्वः-भर्गोदेवस्य धीमहि ।
ॐभूर्भुवः स्वः-धियोयोनः प्रचोदयात् ।

यह एक आवृत्ति हुई । दूसरी आवृत्ति में उपर्युक्त प्रकार में प्रथम अर्द्ध ऋचा के साथ व्याहृति लगाकर उच्चारण करावे, तथा–

ॐ भूर्भुवः स्वः–तत्सवितुर्वरेण्यम् --भर्गोदेवस्य धीमहि ।

ॐ भूर्भुवः स्वः–धियोयोनः प्रचोदयात् ।

यह दूसरी आवृत्ति हुई । अब तीसरी आवृत्ति में प्रणव व्याहृतियों

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सहित पूर्ण मन्त्र का उच्चारण करावे–

ॐ भूर्भुवः स्वः–तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि। धियोयोनः प्रचोदयात् ।

इस प्रकार आचार्य मन्त्र का उच्चारण करें और बालक भी साथ-साथ बोलता जाय । इसके बाद आचार्य और शिष्य दोनों ही 'ॐ स्वस्ति' कहें ।

आचार्यों के मत में एक वर्ष, छः मास, चौबीस दिन बारह दिन, छः दिन या तीस दिन में आचार्य सावित्री मन्त्र का उपदेश करे । यह समय भेद अधिकारी से निश्चय किया गया है । यदि बालक इस योग्य है कि वह एक दिन में ही उपदेश ग्रहण कर ले तो उसे तुरन्त ही उपदेश किया जा सकता है । ब्राह्मण (विद्वान) ब्रह्मचारी के लिए तो इसका उपदेश तत्काल किया जा सकता है ।

ऊपर जो सविता गायत्री उपदेश की विधि कही गई है, वह ब्राह्मण बालक के लिए है । क्षत्रिय बालक के लिए निम्न त्रिष्टुप छन्द बाली गायत्री का उपदेश उचित है । इसका ऋषि बृहस्पति तथा देवता सविता है–

ॐ देव सवितः प्रसुवयज्ञं प्रसुव यज्ञपति भगाय। दिव्यो गंधर्व केतपूः केतंनः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु ।।

वैश्य बालक के लिए प्रजापति ऋषि, सविता देवता तथा जगती छन्द बाली गायत्री का उपदेश करना चाहिए जो कि निम्न प्रकार है –

ॐ विश्वा रूपाणि प्रतिंञ्चतेकविः प्रासवीत् भद्र-द्विपदे चतुष्पदे। विनाकमख्यत् सवितावरेण्यो ऽनु-प्रयाणमुषसोविराजति ।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

परन्तु उक्त भेद अधिकारी भेद से ही है । जो बालक ब्रह्मवर्चस् की कामना वाले तथा ब्रह्म तेज सम्पन्न हों, वे द्विजाति (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) में से किसी भी वर्ण के हो, उन्हें एक ही गायत्री (जिसका वर्णन सर्व प्रथम तीन आवृत्तिओं की विधि से ऊपर दिया गया है ।) के उपदेश की प्राप्ति का अधिकार है । सामान्यतः क्षात्रधर्म में प्रताप की कामना वाले क्षत्रिय बालक की त्रिष्टुप गायत्री का और ऐश्वर्य-भोगादि की कामना वाले वैश्य बालक को जागती सावित्री के उपदेश का निर्देश है ।

समिदाधान–

गायत्री उपदेश के पश्चात् ही समिदाधान का विधान है । उसके लिए बालक आचार्य से दक्षिण दिशा में और अग्नि से पश्चिम दिशा में पूर्वाभिमान बैठा हुआ दाँये हाथ में गोबर के सूखे कण्डे घृत में डूबा-डुबा कर डाले और उस समय निम्न पाँच मन्त्रों का उच्चारण करें –

ॐ अग्नेसुश्रवसुश्रवसं मा कुरु स्वाहा ।। १।।

ॐ या त्वमग्ने सुश्रवः सुश्रवा असि स्वाहा ।। २।।

ॐ एवं मा ॐ सुश्रवः सौश्रवसं कुरु स्वाहा ।। ३।।

ॐ यथा त्वमग्ने देवानां यज्ञस्य रिषिधा असि स्वाहा ।। ४।।

ॐ एवमहं मनुष्याणाँ वेदस्य निर्धिपो भूयासम् स्वाहा ।। ५।।

अब दाँये हाथ से किसी लघु पात्र में अथवा हाथ में जल लेकर ईशान से उत्तर दिशा तक प्रदक्षिणा क्रम से जल का अग्नि के सब ओर सेचन करना चाहिए ।

इसके पश्चात् बालक अपने प्रादेशमात्र घृत में डुबा कर हाथ

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

में तीन समिधाएँ ले एक-एक करके निम्न मन्त्रों से या दोनों मन्त्रों से ही अग्नि में होम करे । मन्त्र निम्न प्रकार है–

ॐ अग्नयेसमिधमाहार्ष वृहते जातवेदसे यथा त्वमग्ने समिधा समिध्यस एवमहिमायुषा मेधया वर्चसा प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन समिन्धे जीवपुत्रो ममाचार्यो मेधाव्यहमसान्यनिराक्ररिष्णुर्यशस्वी तेजस्वी ब्रह्मवर्चस्यान्नादो भूयासम् ।।१।।

ॐ एषाते अग्नेसमित्तयावर्द्ध स्वचाचप्यायस्ववर्द्धिधी-महि च वयमाचाप्यासिमहि स्वाहा ।।२।।

यह मन्त्र प्रत्येक समिधा के हवन करते समय प्रत्येक बार पढ़ना चाहिए । यह मन्त्र आदि विकल्प समझने चाहिए अर्थात् ब्रह्मचर्य पालन तक जब भी समिदाधान करना हो तब इनमें से एक जो भी निश्चित किया हो उससे या दोनों से ही करना चाहिए।

फिर बैठकर पूर्वोक्त 'ॐ अग्ने सुश्रवः इत्यादि मन्त्रों से घृताक्त कण्डों का हवन करे । और फिर अग्नि के सब ओर पूर्ववत् जल का सेचन (पर्युक्षण) करे तथा बिना मन्त्रोच्चारण के हाथ तपा-तपाकर मुख का स्पर्श करते हुए निम्न सात मन्त्रों को पड़े । अर्थात् हाथ तपाने के समय मन्त्रों का उच्चारण न करे, किन्तु मुख से हाथ का स्पर्श करते समय मन्त्रों का उच्चारण करना चाहिए –

ॐ तनूपा अग्नेऽसि तन्व मे पाहि ।।१।।

ॐ आयुर्दा अग्नेऽस्थायुर्मेदेहि ।।२।।

ॐ वर्चोदा अग्नेऽसि वर्चो मे देहि ।।३।।

ॐ अग्ने यन्मे तन्वा ऊनन्तन्म आपण ।।४।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ मेधा मे देवः सविता आदुधातु ।।५।।
मेधां मे देवी सरस्वती आदुधातु ।।६।।
ॐ मेधां मे ऽस्विनौ देवाबाधत्तां पुष्करस्रजौ ।। ७।।

तदुपरान्त शिरे से पांवों पर्यन्त सभी अंगों का दाँये हाथ से स्पर्श करते हुए निम्न मन्त्र पढ़े –

ॐअंगानि च म आप्यायन्ताम् ।।१।।
ॐवाक् च आप्यायताम् । इति मुखम् ।।२।।
ॐप्राणव्च म आप्यायताम् । इति नासाम् ।।३।।
ॐचक्षुश्च म आप्यायताम् । इति चक्षुसी युगपत् ।।४।।
ॐश्रोत्रं च म आप्याताम् ।।५।।

अर्थात् प्रथम 'ॐ अंगानि०' से सभी अंगों का स्पर्श करे । द्वितीय से मुख का तृतीय से नासा का, चतुर्थ से चक्षुद्वय का तथा पंचम् से दोनों कानों का स्पर्श करना चाहिए । उसके पश्चात्–

ॐ यशोबलं च म आप्यायताम् ।।६।।

से दोनों बाहुओं का स्पर्श करके फिर निम्न चार मन्त्रों से क्रमशः मस्तक, ग्रीवा, दाँये कन्धा और हृदय पर समिधाओं की भस्म लगावें–

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः ।।१।। इति ललाटे ।
ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम् ।।२।। इति ग्रीवायाम् ।
ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम् ।।३।। इति दक्षिणांसे ।
ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् ।।४।। इति हृदि।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अभिवादन–

इसके पश्चात् एकाग्र चित्त से भक्तिपूर्वक वैश्वानरदेव और सूर्य देवता को अभिवादन करके आचार्य को अभिवादन करता हुआ निम्न प्रकार कहे–

(१) अमुक गोत्रः अमुक प्रवर अमुक (शर्मा, वर्मा गुप्त) अहं वैश्वानर त्वामभिवादये' इस मन्त्र से वैश्वानर को।

(२) 'अमुक गोत्रः अमुक प्रवरः अमुक अहं सूर्यदेव त्वामभिवादये' सूर्यनारायण को।

(३) अमुक गोत्रः अमुक प्रवरः अमुक नामाहंभो' से आचार्य को नमस्कार करे।

उसके उत्तर में आचार्य एवं अन्य ब्राह्मणगण आयुष्मान भव' कहकर बालक को आशीर्वाद दें । उसके बाद बालक अपने माता-पिता तथा अन्य गुरुजनों को नमस्कार करके आशीर्वाद ग्रहण करे ।

भिक्षा चरण–

इसके पश्चात् बालक को भिक्षापात्र हाथ में लेकर भिक्षाचरण करना चाहिए । वर्ण भेदानुसार भिक्षा याचना वाक्य कहने चाहिए।

ब्राह्मण–'भवति भिक्षां देहि।'

क्षत्रिय–'भिक्षां भवति देहि।'

वैश्य–'भिक्षां देहि भवति।'

उक्त वर्ण भेदानुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य को अपने से सम्बन्धित वाक्य कहने का विधान है । बालक इस प्रकार की तीन छः बारह अनियत संख्यक महिलाओं से भिक्षा माँगे जो नाही न

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करें ।

कुछ आचार्यों के मत में प्रथम भिक्षा माता से मांगनी चाहिए । यदि माता न हो तो अपनी सगी बड़ी बहिन से माँगे । बहिन न हो तो मौसी (माता की बहिन) से मांगे । भिक्षा में कच्चा अन्न नहीं होना चाहिए । यहाँ भिक्षा का अभिप्राय पके हुए अन्न से है ।

जिस-जिस से भिक्षा प्राप्त हो, उस-उस से भिक्षा लेकर 'ॐ स्वस्ति' कहे । तथा प्राप्त भिक्षा आचार्य के समक्ष लाकर रखे । जब आचार्य आदेश दें कि 'भैक्ष' भुङ्क्ष्व' अर्थात् 'भिक्षा का अन्न भोजन कर लो, तभी भोजन करे ।

भोजन के पश्चात् बालक सूर्यास्त होने तक मौन खड़ा रहे, बैठे या लेटे नहीं । किन्तु अशक्त हो तो आचार्य की आज्ञा से बैठ सकता है ।

तत्पश्चात् बालक सायंकालीन सन्ध्या करे और फिर ऊपर कहे हुए 'ॐ अग्ने सुश्रवःसुश्रवसं' इत्यादि मन्त्रों का उच्चारण करे तथा अग्नि के सूखे कण्डे होम करने से लेकर आचार्य गुरुजनों तथा बृद्धादिकों को अभिवादन करने तक के कर्म करके मौन को समाप्त कर दे ।

उपनयन संस्कार के समय के अग्नि को तीन दिन तक अखण्ड रखे, बुझने न दे । संस्कार के अन्त में आचार्य तथा आगत ब्राह्मणगण 'आब्रह्मन' आदि मन्त्र बोलते हुए आशीर्वाद दें तथा ' ब्रह्मवर्चसी भव' भी कहें । फिर आचार्य आदि का पूजन, भोजन, गन्ध, पुष्पमाल्य, दक्षिणा आदि से सत्कार कर उनसे आशीर्वाद ले तथा मातृकादि देवों का विसर्जन करे और यथा शक्ति ब्राह्मणों को संकल्प पूर्वक भोजन करावे । स्मृति ग्रन्थों में चार ब्राह्मणों को भोजन करना कहा है, किन्तु अनेक आचार्यों के मत में जितनी शक्ति हो उतने ही ब्राह्मणों को भोजन कराना पर्याप्त है, क्योंकि उसी में श्रद्धा की रक्षा निहित है ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ब्रह्मचर्य पालन और दिनचर्या –

उपनयन के पश्चात् ब्रह्मचारी के लिए कुछ आचारों का पालन भी निश्चित है । उसे पृथिवी पर शयन करना चाहिए । लवण, क्षार, चटपटे, उत्तेजित करने वाले पदार्थों का सेवन नहीं करना चाहिए । मनुस्मृति में कहा है –

वर्जयेमधुमांसं च गन्धमाल्यं रसान् स्त्रिय।
शुक्तानियानिसर्वाणि प्राणिनांचैव हिंसनम् ।।
अभ्यंगमज्जनं चक्षोरुपानच्छत्रधारणम् ।
कामक्रोधं च लोभं च नर्तनं गीतवादनम् ।।
द्यूतं च जनवादं च परिवादं तथाऽनृतम् ।
स्त्रीणां च प्रेक्षणालम्भमुपघातं परस्य च।।
एक शयीत सर्वत्र नरेतः स्कन्दयेत्क्वचित् ।
कामाद्धिस्कन्दयनेतो हिनस्तिव्रतमात्मनः।।

अर्थात्–मधु, मांस, सुगन्धित द्रव्य, माला, षट्रस, स्त्री वासी अन्न आदि का सेवन न करे । जीव हिंसा, अभ्यंग, जल में घुस कर स्नान, छत्र धारण आदि भी वर्जित है। काम, क्रोध, लोभ, नाच-गान, वादन आदि भी न करे । जुआ खेलना, परायी निन्दा, स्तुति, विवाद, मिथ्या भाषण, स्त्रियों का देखना, छूना किसी को पीटना आदि कार्यों का सर्वथा त्याग करे । सदैव अकेला सोवे, शुक्र नष्ट न होने दे । क्योंकि कार्यवशात् शुक्र नष्ट होने पर ब्रह्मचर्यव्रत ही नष्ट हो जाता है ।

जल में घुस कर स्नान करने का निषेध होने का अभिप्राय यह है कि लोटा आदि से शरीर पर जल डालकर ही स्नान करे । कुछ शास्त्रियों के मत में जल में प्रविष्ट होकर स्नान करने से कामांग उत्तेजित हो जाते हैं । अभिप्राय है कि कोई भी ऐसा कार्य न करे,

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जिससे कि सात्विक दिनचर्या में आघात पहुँचने की सम्भावना हो।

दिन में सोना, रात्रि में जागना, स्नान के बाद सुगन्धित द्रव्य लगाना, शीशे में मुख देखना, श्रृंगार करना, उत्तेजक पदार्थ या उच्छिष्ट अन्न का भोजन करना, नाटक आदि देखना, प्रेम-प्रसंगों से युक्त पुस्तक आदि पढ़ना यह सब ब्रह्मचर्यव्रत को खण्डन करने वाले साधन समझने चाहिए ।

ब्रह्मचर्य पालन-काल में भिक्षा माँगकर भोजन करे । कटिवस्त्र के सहित कोपीन धारण किये रहे । वस्त्र से लगा हुआ दण्ड भी सदैव धारण किया जाय । कोपीन और दण्ड फटे-टूटे नहीं होने चाहिए । यदि यज्ञोपवीत आदि चिन्ह टूट कर खण्डित हो जाँय तो उन्हें जल में विसर्जन करके मन्त्रोंच्चारण पूर्वक नवीन धारण करे ।

इस प्रकार वेदाध्ययन के उद्देश्य से तब तक ब्रह्मचर्य व्रत धारण करे जब तक कि एक, दो तीन अथवा चारों ही वेद अपने अंगों तथा ब्राह्मण ग्रन्थों सहित पूर्ण रूप से पढ़ ले । अथवा नौ वर्ष, अठारह वर्ष, छत्तीस वर्ष या अड़तालीस वर्ष तक नियम पूर्वक ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए ।

पुनरुपनयन-

कुछ कारणों से पुनर्वार उपनयन संस्कार करना आवश्यक हो जाता है। इस सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों के विभिन्न मत हैं । शातातप के मत में –

लशुनं गृंजनं जग्ध्वा पलाण्डु च तथाशुनम् ।
उष्ट्रमानुषकेभावश्व रासभीक्षीर भोजनम् ।
उपनयन पुनः कुर्यात्तप्तकृच्छ्रं चरेन्मुहुः ।।

अर्थात्– लहसुन, गृञ्जन, प्याज या कुत्ते का माँस खाने तथा

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऊँटनी, मानवी, हथिनी, घोड़ी या गधी का दूध पीने पर तप्तकच्छ्रव्रत करे और उपनयन संस्कार कराये ।

आत्मघात, घात, दुर्घटना, आदि से जीवित बच जाने पर भी पुनः उपनयन का संकेत मिला है । वृद्ध मनु के अनुसार –

जीवन्यदि समागच्छेद् घृतकुम्भेनिमज्य च ।
उद्धृत्य स्थापयित्वाऽस्य जातकर्मादि कारयेत् ।।

अर्थात्–यदि जलाशयादि में डूबकर जीवित निकल आये तो उस मनुष्य के जातकर्मादि सभी संस्कार पुनः करने चाहिए–

जाने-अनजाने में किसी अपवित्र पदार्थ के भोजन कर लेने पर भी उपनयन का निर्देश है । मनुस्मृति के अनुसार–

अज्ञानात्प्राश्यविण्मूत्रं सुरासंसृष्टमेवच ।
पुनः संस्कारमर्हन्ति त्रयो वर्णाद्विजातयः ।।

अर्थात्– यदि अज्ञानवश कोई मनुष्य विष्ठा या मूत्र खाले अथवा मद्य-मिश्रित द्रव्य सेवन कर ले तो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य को पुनः संस्कार करना चाहिए ।

यदि सन्यास लेने के बाद पुनः गृहस्थाश्रम में प्रवेश ले ले तो उसे भी सभी संस्कार पुनः करने का विधान है । पाराशर स्मृति का स्पष्ट मत है –

य प्रत्यवसितोविप्रा प्रव्रज्यातोविनर्गतः ।
अनाशिनिवृत्तश्च गार्हस्थ्यंविच्चिकीर्षति ।।
सचरेत्त्रीणिकृच्छ्राणि त्रीणिचान्द्रायणानि च ।
जातकर्मादिभि सर्वे संस्कृत शुद्धिमाप्नुयात् ।।

अर्थात्–घर छोड़कर संन्यास ग्रहण किया हुआ व्यक्ति यदि पुनः संन्यासाश्रम छोड़कर घर लौट आये तथा जिसने अभक्ष्यभक्षण न किया हो और पुनः गृहस्थ जीवन व्यतीत करने की इच्छा हो तो

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उसे तीन प्राजापत्य व्रत १२ दिन अथवा तीन चाँद्रायण व्रत करके जातकर्मादि सभी संस्कार पुनः करके शुद्ध होना चाहिए ।

हेमाद्रि के व्रत में 'प्रेतशय्याप्रतिग्राही पुनः संस्कार मर्हति' अर्थात् 'किसी के मृतक कर्म में शय्यादान लेने वाले को भी पुनः संस्कार कराने चाहिए । परन्तु पुनरुपनयन में सभी क्रियाएँ आवश्यक नहीं हैं । यथा–

अजिर्नमेखलादण्डो भैक्षचर्याव्रतानि च ।
निवर्त्तन्ते द्विजातीनां पुन संस्कार कर्मणि ।

अर्थात्–पुनः उपनयन संस्कार करने में मृगचर्म, मेखला, दण्ड, भिक्षा माँगना तथा अन्य व्रतादि नियम नहीं करने चाहिए ।

यदि उपनयन आदि किसी प्रकार दूषित या खण्डित हो जाँय तो उनका धारण मन्त्रपूत करके पुनः किया जाय । इस विषय में शास्त्र वचन है–

यज्ञोपवीतमजिनं मोञ्जी दण्डं च धारयेत् ।
नष्टे भ्रष्टे नवं मन्त्राद् धृत्वा भ्रष्टं जलेक्षिपेत् ।।

अर्थात्–यज्ञोपवीत, मृगचर्म, मौञ्जी और दण्ड यदि नष्ट-भ्रष्ट हो गयें हों तो मन्त्रोच्चार पूर्वक नवीन धारण करे और पुराने (नष्ट-भ्रष्ट) को जल में डाल दे ।

व्रात्य प्रायश्चित्त–

यदि तेईस वर्ष की अवस्था होने तक भी उपनयन संस्कार न हुआ हो तो वे पतित हो जाते हैं, ऐसे व्यक्ति को व्रात्य कहते हैं । इसमें नियम यह है कि ब्राह्मण बालक १५ वर्ष तक की आयु में अवश्य ही उपनयन करा ले , अन्यथा उसे व्रात्य कहेंगे । इसी प्रकार क्षत्रिय बालक को २१ वर्ष तक की आयु में और वैश्य बालक को २३ वर्ष तक की आयु में उपनयन करा लेना अनिवार्य है।

अनेक बार धनाभाव के कारण कोई संस्कार नहीं हो पाता

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इसलिए कुछ आचार्यों का मत है कि ब्राह्मण बालक १६ वर्ष, क्षत्रिय बालक २२ वर्ष अथवा वैश्य बालक २४ वर्ष तक उपनयन न करावे तो उसे एक चान्द्रायण अथवा तीन दिन तक व्रत करके एक बैल और दस गायों का दान करना चाहिए । अथवा मनुस्मृति में कहे गोवध के प्रायश्चित्त को करे । यदि उसे न कर सके तो बीस दिन तक प्रसृति परिणाम (एक मुठ्ठी) सत्तू को पानी में घोल कर नित्य प्रति पीवे और अन्त में पाँच ब्राह्मणों को भोजन करावे । यदि बहुत अधिक समय तक न करा सका हो तो दो महीने जौ के सत्तू एक मास तक केवल दूध, १५ दिन तक दही और ८ दिन केवल गौघृत खाय तथा एक दिन निर्जल उपवास करके संस्कार करावे ।

ब्रह्मचर्य भङ्ग प्रायश्चित्त–

यदि ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने के पश्चात् व्रत भंग हो गया हो तो उसका निवारण भी प्रायश्चित्त करने से हो सकता है । व्रत भंग क्या है, पहिले यह बताते हैं –

बौधायन स्मृति के अनुसार–अत्र शौचाचमन-सन्ध्या वन्दनदर्भ भिक्षाग्निकार्यराहित्य शूद्रादि स्पर्श, कौपीन कटिसूत्र यज्ञोपवीत मेखला दण्डाजिन त्याग दिवास्वाप छत्र धारण पादुकाध्यारोहण मालाधारणो-द्वर्तनानुलेपनांजन जलक्रीड़ा द्यूतंनृत्यगीतवाद्याभिरति पाखण्ड्यादि भाषण अष्टविध मैथुन वीर्य स्खलन पुर्यषित भोजनादिव्रतलोप सकलदोष परिहारर्थ मध्ये समाप्तौ वा कृच्छ्त्रयं चरेन्महाव्या हत्याद्यनादिष्ट होम च कुर्यात् ।

अर्थात्–शौच, आचमन, सन्ध्या वन्दन, दर्भ ग्रहण के साथ सन्ध्या कर्म, भिक्षाचरण हवन आदि का त्याग कर देना, शूद्रादि

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्पर्श, दिवा शयन, कौपीन, कटिसूत्र, यज्ञोपवीत, मेखला दण्ड, मृगचर्म आदि को छोड़ना, दिन में सोना, छत्र-धारण, माला, उबटन, अन्जन जल में क्रीड़ा, द्यूत क्रीड़ा, नृत्य, गान, वाद्य पाखण्ड-भाषण, अष्टविधि मैथुन, शुक्रनाश, बासी अन्न आदि के सेवन से व्रत नष्ट होने पर सभी दोषों के निवारणार्थ ब्रह्मचर्य व्रत के मध्य में अथवा समाप्ति काल में तीन कृच्छ्र प्राजापत्य व्रत करे और फिर महाव्याहृतियों आदि का अनादिष्ट होम करे ।

आचमन, प्राणायाम, संकल्प, गोदान आदि करके स्थण्डिल भूमि में पंचभू संस्कार, अग्नि स्थापन, ब्रह्म-वरण, ब्रह्मपवेशनादि कर्म आज्याहुति पर्यन्त करके व्यस्त समस्त व्याहृति ४ और वरुणाहुति आदि स्विष्टकृत तक घृत से दश आहुति और फिर महाव्याहृति आदि स्विष्टिकृत तक घृत से दश आहुति दे । उसके बाद संस्रव प्राशन आदि सभी कर्म पूर्ण करके उपनयन संस्कार विधि में वर्णित मन्त्रों से मेखलादि को धारण करे ।

※ ※ ※

११. वेदारम्भ संस्कार

सब प्रकार की उत्कृष्टता का संस्कार–

वेदाध्ययन का यह संस्कार भी जीवन में एक महत्त्वपूर्ण संस्कार है । प्रत्येक भारत वासी के लिए यह संस्कार सभी प्रकार की उन्नतिः सुयश, सम्पन्नता आदि की उपलब्धि में सहायक होता है । मनुष्य की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और आध्यात्मिक सभी प्रकार की सफलता वेदाध्ययन पर ही निर्भर है ।

वेदाध्ययन और ब्रह्मयज्ञ–

वेद का अध्ययन बड़े-बड़े यज्ञों का फल प्रदान करता है ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आचार्यों ने इसे ब्रह्मयज्ञ की संज्ञा दी है । इसे सभी परिस्थितियों में करना आवश्यक माना है । मनु के अनुसार–

वेदोपकरण चैव स्वाध्याये चैव नेत्यके।
नानुरोधे ऽस्त्नध्याये होममन्त्रेषु चैव हि।।
नैत्यके नास्ष्यनध्यायो ब्रह्मसूत्रं हि तत्स्मृतम् ।
ब्रह्माहुति हुतं पुण्यमनध्यायवषट्कृतम् ।
यः स्वाध्यायमधीतेब्दं विधिनानियतः शुचि।
तस्य नित्य क्षरत्येषु पयो दधिघृतं मधु ।।

अर्थात्–वेद के उपकरण (व्याकरणादि).नित्य का स्वाध्याय (वेदाध्ययनादि), हवन, मन्त्र जप, यह सभी कार्य अनध्याय (सूतक आदि) में भी करने चाहिए । नित्य कर्म अनध्याय नहीं होता (क्योंकि उक्त सभी कार्य नित्य कर्म ही हैं), नित्य कर्म को ब्रह्म यज्ञ कहते हैं, क्योंकि ब्रह्मयज्ञ में वेदाध्याय ही आहुति है । जो पवित्र होकर स्थिति चित्त से एक वर्ष तक विधि पूर्वक स्वाध्याय (वेदाध्ययन) करता है, उसे नित्य प्रति ही दूध, घृत और मधु पूर्वोक्त अनध्याय से प्राप्त होता है ।

यह संस्कार उपनयन के पश्चात् होता है । अनेक आचार्य इसे उपनयन संस्कार का ही अन्तिम अंग मानते हैं । परन्तु शास्त्रों में इसका पृथक् से उल्लेख हुआ है, उसका कारण मन पर एक ऐसा प्रभाव डालना है जो सदैव समान रूप से बना रहे । वेदाध्ययन आचार्य के चरणों में बैठ कर ही आरम्भ करने का विधान है। स्मृति (२/७०/७१) के अनुसार–

अध्बेष्यमाणस्त्वाचान्तो यथाशास्त्रमुदङ् मुखः।
ब्रह्माञ्जलिकृतोऽध्याप्यो लघुवासा जितेन्द्रियः।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अर्थात्–वेद और धर्मशास्त्र का अध्ययन अर्थ सहित करना चाहिए क्योंकि पाठ मात्र को पढ़ लेना और अर्थ को न जानना भुसी काटने के समान व्यर्थ है।

आचार्य द्वारा संकल्प–

इसे उपनयन संस्कार सम्पन्न होने पर उस दिन ही आरम्भ कर सकते हैं अथवा उससे तीन दिन आद आरम्भ किया जाय।

परन्तु अन्य दिन करने पर शुभ दिन, नक्षत्रादि अवश्य देख लेना चाहिए।

जिस दिन संस्कार करना हो उस दिन स्नानादि से निवृत्त होकर आचार्य आचमन, प्राणायाम के पश्चात् देश-काल का कीर्तन करता हुआ निम्न संकल्प करें–

ऋग्वेद व्रतादेशं यजुर्वेदव्रतादेशं वा करिष्ये।

अर्थात् –मैं शिष्य को ऋग्वेद या यजुर्वेद के अध्ययन का व्रत लेने की आज्ञा करूँगा।

इस प्रकार संकल्प लेकर उपनयन संस्कार में वर्णित विधि से पंचभू संस्कार करके समुद्भव संज्ञक लौकिक अग्नि की स्थापना करे। फिर ब्रह्मचारी को बुलावे और अपने से उत्तर की ओर तथा अग्नि से पश्चिम की ओर बैठावे। उस समय शिष्य पूर्वाभिमुख बैठे। उसके पश्चात् उपनयन संस्कार की विधि में वर्णित ब्रह्मा के वरण आदि आज्य भागान्त चरु वर्ज आदि कर्म करके यजुर्वेद का आरम्भ करना चाहिए। तब अन्तरिक्ष और वायु के निमित्त निम्न दो आहुतियाँ देनी चाहिए।

ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा। इदमन्तरिक्षाय न मम।
ॐ वायवे स्वाहा। इद वायवे न मम।

इस प्रकार दो आहुतियां देने के उपरान्त ब्रह्मादि की नौ आहुतियाँ निम्न मन्त्रों से दे–

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ब्रह्मारम्भेऽवसाने च पादौ ग्राह्यो गुरोः सदा ।
सहत्य हस्तावध्येयं स हि ब्रह्माञ्जलिः स्मृत ।।

अर्थात्– शिक्षा की आकांक्षा करता हुआ शिष्य शुद्ध वस्त्र धारण करके शास्त्र विधि से आचमन करे और उत्तर की ओर मुख करके जितेन्द्रिय रहता हुआ ब्रह्माञ्जलि करके गुरु के निकट बैठे और आचार्य शिष्य को पढ़ावे । नित्य-प्रति शिष्य वेदारम्भ करने से पूर्व और पश्चात् गुरु के चरणों को स्पर्श करे तथा पढ़ने के समय श्रद्धांजलि (हाथ जोड़ते हुए) रहे ।

संस्कारारम्भ की विधि–

इसका आरम्भ करने से पूर्व शुभ दिन निश्चित करना चाहिए। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार शुभ मास दिवस, नक्षत्रादि का ध्यान रखना इस संस्कार के लिए भी अपेक्षित है । महर्षि वसिष्ठ के मत में –

पारम्पर्यागतोयेषां वेद सपरिर्वहणः ।
यच्छाखाकर्म कुर्वीत तच्छाखाऽध्ययनं तथा ।।

अर्थात्–जिन-जिन कुलों में जिन-जिन वेद शाखाओं का अध्ययन परम्परा से होता चला आ रहा है, उन-उन कुलों के बालकों को उसी शाखा का अभ्यास करना चाहिए ।

दूसरे वेदों की अन्य शाखाओं को तभी पढ़े जब कि अपने कुल परम्परागत शाखा का अध्ययन पूरा कर ले । क्योंकि 'स्वशाखाँ यः परित्यिज्य शाखाखण्डः स उच्यते' अर्थात् 'जो अपनी शाखा को छोड़ देता है, वह शाखाखण्ड कहलाता है ।'

वेदाध्ययन भी इस प्रकार करना चाहिए कि उसके सभी अर्थों को ठीक प्रकार से समझा जा सके । महर्षि पाराशर के मत में –

वेदस्याध्ययनं सर्व धर्मशास्त्रास्य चैव हि ।
अजानतोऽर्थतद्व्यर्थं तुषाणांकण्डनं यथा ।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। इदं ब्रह्मणे न मम।
ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा। इदं छन्दोभ्य न मम।
ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम।
ॐ देवेभ्यः स्वाहा। इदं देवेभ्यः न मम।
ॐ ऋषिभ्यः स्वाहा। इदं ऋषिभ्यः न मम।
ॐ श्रद्धायै स्वाहा। इदं श्रद्धायै न मम।
ॐ मेधाय स्वाहा। इदं मेधायै न मम।
ॐ सदासस्पतये स्वाहा। इदं सदासस्पतये न मम।

इस प्रकार नौ आहुतियाँ देकर शेष समापन करे । यदि ऋग्वेद का अध्ययन आरम्भ करना हो तो आज्य भागों के अन्त में पृथ्वी और अग्नि को दो आहुतियाँ दे–

ॐ अनुमतये स्वाहा। इदं अनुमतये न मम।
ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये न मम।

इन दो आहुतियों के पश्चात् ऊपर कही हुई ब्रह्मादि की नौ आहुतियाँ दे ।

यदि सामवेद का अध्ययन करना हो तो आज्य भागों के अन्त में निम्न दो आहुतियाँ दे –

ॐ दिवे स्वाहा। इदं दिवे न मम।
ॐ सूर्याय स्वाहा। इदं सूर्याय न मम।।

इसके पश्चात् उपर्युक्त 'ॐ ब्रह्मणे स्वाहा' इत्यादि ब्रह्मादि को नौ आहुतियाँ दे –

यदि अर्थवेद का अध्ययन आरम्भ करना हो तो आज्य भागों के अन्त में और चन्द्रमा की आहुतियाँ दे–

ॐ दिग्भ्यः स्वाहा। इदं दिग्भ्य न मम।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चन्द्रमसे स्वाहा। इदं चन्द्रमसे न मम।।

यह दो आहुतियाँ देने के बाद उपर्युक्त 'ॐ ब्रह्मणे स्वाहा' इत्यादि नौ आहुतियाँ देनी चाहिए।

यदि सभी वेद एक तन्त्र से अध्ययन करने हो तो आज्य भोगों के पश्चात् क्रम से प्रत्येक वेद की दो-दो आहुतियाँ देकर चारों के अन्त में व्रतादि की नौ आहुतियाँ देनी चाहिए। इसमें प्रत्येक वेद की आहुति के पश्चात् ब्रह्मादि की आहुतियाँ नहीं दी जाती, वरन् चारों के अन्त में एक बार ही दी जाती हैं।

महाव्याहृतियों की आहुतियां–

इसके अनन्तर महाव्याहृतियों की आहुतियाँ निम्न प्रकार देनी चाहिए –

ॐ भूः स्वाहा। इदमग्नये न मम।
ॐ भुवः स्वाहा। इदं वायवे न मम।
ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय न मम।

इस प्रकार महाव्याहृतियों की आहुतियाँ देकर निम्न आहुतियाँ देनी चाहिए –

ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणाय विद्वान् देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्ठा। यजिष्ठो वह्नितम शोशुचानो विश्वा द्वेषांꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा।।१।। इदमग्नी वरुणाभ्यां न मम।

ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोतीं नेदिष्ठो। अस्या उषसो व्युष्टौ। अवयक्ष्व नो वरुण ꣳ रराणो वीहि मृडीकꣳ सुहवो न एधि स्वाहा।।२।। इदमग्नी वरुणाभ्यां न मम।

ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्व मया

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

असि। अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजꣳ स्वाहा।। ३।। इदमग्नये अयसे न मम।

ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्त्रं यज्ञिया पाशा वितता महान्तः तेभिर्नो अद्य सवितोति विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुत स्वर्का स्वाहा।।४।। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो मरुद्भ्य स्वर्केभ्यश्च न मम।

ॐ उदुत्तमं वरुणं पाशमस्मदबाधमं विमध्यमꣳ श्रश्राय। अथावयमादित्य व्रते तवानागसो अदितयेस्याम स्वाहा।। ५।। इदं वरुणाय न मम।

यह प्रायश्चित्त की पाँच आहुतियाँ देने के बाद निम्न दो आहुतियाँ दे –

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम। इति मनसा प्राजापत्यम् ।

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते न मम।

इस प्रकार स्विष्टकृत् पर्यन्त दश आहुतियां देने के बाद सस्त्रवप्राशन करे और फिर पूर्ण पात्र, या द्रव्य रूप में ब्रह्म को दक्षिणा दे। दक्षिणा का संकल्प–

ओमद्यकृतेतद्वेदारभ्भहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूप ब्रह्म कर्म प्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापति दैवतं (अमुक) गोत्राय (अमुक) शर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे।

ब्रह्मा 'ॐ स्वस्ति' कहकर दक्षिणा स्वीकार करे । तदन्तर निम्न मन्त्र से प्रणीता के जल को पवित्रों के द्वारा शिर पर छिड़के–

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ सुमित्रिया न आप औषधय सन्तु।

उसके बाद प्रणीतास्थ शेष जल को सिराते हुए निम्न मन्त्र का उच्चारण करे–

ॐ दुर्मित्रितास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः।

अब जिस क्रम से कुश बिछाये थे उसी क्रम से उठावे और घृत के साथ लगाकर अग्नि में होम दे। उस समय निम्न मन्त्र का उच्चारण करे–

ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित। मनस्पत इमं देवयज्ञꣳस्वाहा। वातेधा स्वाहा। इदं वाताय न मम।

वेदाध्ययन के आरम्भ और सम्पन्न दोनों ही समय नित्य प्रति गुरु के चरण स्पर्श करे। उसका नियम मनुस्मृति में इस प्रकार बताया गया है–

व्यत्यस्तयाणिना कार्यमुपसंग्रहणं गुरोः।
सव्येन सव्य स्पृष्टव्यो दक्षिणेन च दक्षिण।।

अर्थात्–बांए हाथ से गुरु का बाँया चरण और दांये हाथ दांया चरण स्पर्श करना चाहिए।

वेदाध्ययन के पूर्व और अन्त में प्रणव 'ॐ' का उच्चारण करना चाहिए। क्योंकि आरम्भ में प्रणव का उच्चारण न करने से पढ़ा हुआ विस्मरण हो जाता है। अन्त में न करने से विद्या (ज्ञान) ही नष्ट हो जाती है।

अध्ययन के समय चित्त को एकाग्र कर उसी में लगाये रखे। ऋग्यजु और सामवेद के अध्ययन में स्वर और वर्ण के अनुकूल हाथ हिलाने आदि की क्रिया भी गुरु के उपदेश अनुसार करे।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऐसा न करने से भी वेद विद्या नष्ट हो जाती है । और वेदाभिमानी देवताओं की विरुद्धता होती है ।

वेदाध्ययन का आरम्भ महाव्याहृतियों सहित गायत्री मन्त्र का उच्चारण करके ही करे । प्रारम्भ से पूर्व निम्न संकल्प लें –

ॐ अद्य शुभ पुण्यतिथौ ब्रह्मवर्चसप्राप्तिकामनया वेदसरस्वती पूजनमहं करिष्ये ।

उक्त प्रकार संकल्प करने के पश्चात् निम्न दो मन्त्रों के द्वारा वेद तथा सरस्वती के ग्रन्थ पर षोडशोपचार युक्त पूजन करना चाहिए–

ॐ वेधोऽसियेनत्वं देववेद देवेभ्यो वेदोऽभवस्ते नमह्यं वेदोभूयाः ।। १।।

ॐ श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्न्यावहो रात्रेपश्र्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौव्यात्द्यम् । इष्णन्निषाणमुम्मइषाणसर्वलोकं इषाण ।। २।।

षोडशोपचार पूजन के अनन्तर शिष्य चरण स्पर्श करता हुआ गुरु के मुख की ओर देखे और हाथ जोड़े हुए वेद पढ़ना आरम्भ करे–

प्रथम आदि में प्रणव, फिर व्याहृति और अन्त में प्रणव युक्त गायत्री (ॐ भूर्भुवः स्वः–तत्सवितुर्वरेण्यं–भर्गो देवस्य धीमहि-धयोयो नः प्रचोदयात्–ॐ) का उच्चारण कर वेदारम्भ किया जाय।

समापन–

वेद पढ़ाने के बाद आचार्य और ब्रह्मचारी क्रमशः 'ॐ स्वस्ति' कहें । फिर आचार्य उठकर खड़ा हो जाय तथा घृत और फल-पुष्प के सहित स्रुवा को ब्रह्मचारी के दाँये हाथ में देकर निम्न मन्त्र से आहुति दिलावे–

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ मूर्धानं दिवो अरति पृथिव्यावैश्वानरमृत आज्ञा-तमग्निम् । कविथ्थसम्राजमतिथिं जनानामासन्नापा-त्रांजनयन्त देवाः स्वाहा ।

अब स्रुवा के मूल से भस्म लेकर दाँयी अनामिका के अग्रभाग से ललाटादि अंगों में भस्म लगाता हुआ निम्न मन्त्रों का उच्चारण करे–

ॐ त्र्यायुषं जमदग्ने । इति ललाटे ।
ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम् । इति ग्रीवायाम् ।
ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम् । इति दक्षिणांसे ।
ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् । इति हृदि ।

उक्त क्रम से ललाट, ग्रीवा, दक्षिण बाहुमूल और हृदय में आचार्य स्वयं लगावे तथा इसी क्रम से शिष्य के अंगों में भी लगावे। परन्तु शिष्य के भस्म लगाते समय 'तन्नो' के स्थान में 'तत्ते' कहे । तदुपरान्त 'यान्तुः मातृगणाः सर्वे कहता हुआ मातृगणों का विसर्जन करना चाहिए ।

* * *

१२. समावर्तन संस्कार

केशान्त कर्म–

यह संस्कार वेदाध्ययन समाप्त होने पर किया जाता है । परन्तु अनेक आचार्यों ने वेदाध्ययन के बाद या वेदाध्ययन काल में ही केशान्त संस्कार का निर्देश दिया है –

केशान्तः षोडशे वर्षे ब्राह्मणस्य विधीयते ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

राजन्यबन्धोर्द्वाविंशे वैश्यस्य द्वयाधिके ततः ।

—मनु २/६५

अर्थात्—ब्राह्मण का सोलहवें, क्षत्रियों का बाईसवें और वैश्य का चौबीसवें वर्ष में केशान्त संस्कार करना चाहिए ।

जब तक शिष्य गुरु के समीप है तब तक गुरु ही उसके सभी कर्मों से प्रति उत्तरदायी है । इसलिए केशान्त संस्कार भी गुरु के आश्रम या गुरुकुल में करना चाहिए । यदि बालक ब्रह्मचर्य व्रती नहीं है तो अपने घर पर ही इस संस्कार को करे ।

परन्तु कुछ आचार्य केशान्त संस्कार को चूड़ाकर्म संस्कार में ही समाविष्ट मानते हैं । उनके मत में पुनः केशान्त अनावश्यक है। यदि केशान्त संस्कार करें तो उत्तरायण शुक्ल पक्ष में करें अथवा चूड़ाकर्म के लिए विहित शुभ दिवस, नक्षत्रादि देखकर करना चाहिए ।

चूड़ाकर्म में केवल शिर के बाल काटे जाते हैं । किन्तु यह संस्कार तब होता है जब ब्रह्मचारी किशोरावस्था को प्राप्त होकर दाढ़ी, मूँछ, बगल के बालों को कटवाना आरम्भ करता है । सामान्यतः चूड़ाकर्म और केशान्त कर्म की विधियों में समानता है। इसके संकल्प को इस प्रकार करना चाहिए –

देश-काल कीर्तन के पश्चात् -'ओमस्य ब्रह्मचारिणः केशान्त कर्माहं करिष्ये ।'

तदुपरान्त गणपति पूजन, पुण्याहवाचन, वेदिका निर्माण, ब्रह्मा का वरण ब्रह्मा द्वारा प्रदक्षिणा, प्रणीता का कुशाच्छादन, कुशों से परिस्तरण, प्राक्सस्थ पात्रासादन सर्व सामग्री चयन एवं स्थापन, कुश छेदन, प्रोक्षणीस्थ जल का अभिषेचन, आज्य स्थाली का प्रोक्षण, आज्य और चरु पाक, प्रजापति के ध्यान पूर्वक तीन समिधाओं का तूष्णी होम, प्रोक्षणीस्थ जल का अग्नि के चारों ओर

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सेचन, प्रोक्षणीपात्र-विसर्जन, आज्याहुतियों का पवन, प्रजापति के ध्यान पूर्वक पुनः तूष्णी आहुति प्रदान, आधारादि से स्विष्टकृत् पर्यन्त चौदह आहुतियों का प्रदान, ब्रह्मा को संकल्प पूर्वक दक्षिणादान, प्रणीतास्थ जल का सिर पर सेचन, बिछाये हुए कुशों को उठाकर होम आदि सभी क्रियाएँ चूड़ाकर्म विधि के अनुसार ही करनी चाहिए ।

चूड़ाकर्म के समान ही गर्म पानी में ठण्डा पानी तथा थोड़ा मट्‌ठा मिलावें और नवनीत या दही भी डालें और ब्रह्मचारी के शिर के बालों के तीन जूड़े बाँधकर चूड़ाकर्म के समान ही कुश आदि लगा-लगाकर सम्बन्धित मन्त्रोच्चारण आदि के सहित बाल काटने के सभी कार्य करें । किन्तु इसमें शिर पर छुरा घुमाने से पूर्व जिस ॐ यत्क्षुरेण' मन्त्र का उच्चारण करते हैं, उसे केशान्त कर्म में निम्न प्रकार से उच्चारण करना चाहिए–

ॐ यत्क्षुरेण मज्जयता सुपेशसा वपस्वावा वपत्वावा वपति केशान् छिन्धि सिरो मास्यायुः प्रमोषीर्मुखम् ।

इस संस्कार में शेष सभी कार्य इसी प्रकार होते हैं । नाई शिखा को छेक कर शेष सभी बाल तथा दाड़ी-मूँछ बनावे । फिर ब्रह्मचारी स्नान करके गाय अथवा गाय का मूल्य आचार्य को दे । तदुपरान्त ब्रह्मचारी न्यूनतम तीन दिन तक ब्रह्मचर्य पूर्वक रहे तथा उतने समय में केशों का उच्छेदन न करावे ।

समावर्तन संस्कार का समय–

समावर्तन संस्कार तब करे जब सूर्य उत्तरायण हो । यदि कोई कारण हो तो दक्षिणायन में भी कर सकते हैं । मन्त्रोपदेश के बाद उसी दिन, चौथे दिन अथवा एक, तीन या बारह वर्ष व्यतीत होने पर समावर्तन करना चाहिए ।

यद्यपि देश-काल भेद से समावर्तन के लिए भिन्न-भिन्न अवधि

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कही हैं, तथापि उसी दिन समावर्तन करा देना ही अधिक सुविधाजनक रहता है ।

ब्रह्मचारी को अपनी शाखा के अनुसार अध्ययन करने के पश्चात् एक, दो या अधिक वेद क्रमानुसार पढ़कर और ब्रह्मचर्य के नियमों का पालन करके गृहस्थाश्रम में प्रवेश करना चाहिए । शास्त्रों का मत है कि छत्तीस या अड़तालीस वर्ष तक वेदाध्ययन कर लेने पर समावर्तन करना चाहिए । परन्तु वर्तमान काल में इतनी लम्बी अवधि तक ब्रह्मचर्य का पालन बहुत ही कम मनुष्य कर सकते हैं ।

वेद के अनेक अंग हैं । विधिवाक्ल रूप ब्राह्मण ग्रन्थ, विधेय मन्त्र और तर्कशास्त्र मिलकर ही वेद कहलाते हैं । इनका अध्ययन ब्रह्मचर्य-पालन काल में ही करना चाहिए । शिक्षा कल्पादि षडंगों सहित वेदों को तथा व्याकरण निरुक्तादि ग्रन्थों को पढ़े । यदि ब्रह्मचारी तीव्र बुद्धि का है तो वह सभी वेदार्थ को तीन-चार वर्ष में ही ग्रहण कर सकता है ।

संस्कार का आरम्भ–

शुभ तिथि, नक्षत्रादि में समावर्तन संस्कार का आरम्भ करे । उस दिन स्नान तथा सन्ध्योपासन आदि नित्य कर्मों से निवृत्त होकर आचार्य पत्नी तथा ब्रह्मचारी के सहित श्रेष्ठ आसन पर बैठे और आचमन, प्राणायाम करके संकल्प करे । देशकाल कथन के पश्चात् निम्न प्रकार उच्चारण करे–

अस्यामुकशर्मणो गृहस्थाश्रमान्त प्राप्ति द्वारा श्री-परमेश्वर प्रीत्यर्थ समावर्त्तानाख्यं कर्माहं करिष्ये ।

इसके उपरान्त गणपति पूजनादि कर्म संकल्प पूर्वक करना चाहिए । पुण्याहवाचन के अन्त में कहना चाहिए सुश्रव देव हम पर प्रसन्न हों । तदुपरान्त ब्रह्मचारी आचार्य से समावर्तन की

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आज्ञा ले तथा आचार्य आज्ञा दे दें तब ब्रह्मचारी को गुरु के चरण स्पर्श करने चाहिए ।

फिर ब्रह्मचारी बनाये हुए मण्डप में आचार्य के निकट दक्षिण की ओर बैठे तथा आचार्य कुश लेकर वेदी की भूमि का परिसमूहन करे और फिर उन कुशों को ईशान दिशा में डाले । तदुपरान्त वेदी-भूमि को गोबर से लीप कर स्रुव मूल से तीन रेखाएँ करें और उसमें से मिट्टी उठाकर फैंके तथा जल से अभ्युक्षण करके पंचभू संस्कार करे ।

ब्रह्मा का वरण–

तदुपरान्त मिट्टी या काँसे के पात्र में सूर्य संज्ञक अग्नि लाकर स्थापना करे हाथ में पुष्प चन्दन और ताम्बूल लेकर निम्न प्रकार कहे–

ओमद्यामुकस्य ब्रह्मचारिणः कर्त्तव्य समावर्तन होम कर्मणि कृताकृतावेक्षण रूप ब्रह्मकर्मकर्त्तु ममुकगोत्रं अमुक शर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दन ताम्बूल वासोभिब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे ।

इस प्रकार संकल्प करके ब्रह्मा का वरण करे और पुष्पादि ब्रह्मा को दे दे । ब्रह्मा 'वृतोऽस्मि' कहकर पुष्पादि ग्रहण कर ले । फिर अग्नि से दक्षिण की ओर चौकी और आसन बिछाकर उस पर पूर्व की ओर अग्र वाले कुश बिछावे तथा ब्रह्मा को अग्नि की प्रदक्षिणा कराता हुआ कहे–

अस्मिन् कर्मणि त्वं मे ब्रह्मा भव ।

इसके उत्तर में ब्रह्मा 'भवामि'–कहे । तब ब्रह्मा को उत्तर की ओर मुख करके बैठा दे और उसके आगे जल से प्रणीता पात्र को भर कर तथा कुशों से आच्छादित करके अग्नि से उत्तर कुशों पर

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रखे तथा उस समय ब्रह्मा के मुख का अवलोकन करे ।

फिर चार मुट्ठी कुश लेकर अग्नि के चारों ओर बिछावे। उसमें से एक मुट्ठी कुश अग्नि कोण 'ईशान तक' दूसरी मुट्ठी ब्रह्मा के आसन से अग्नि तक, तीसरी नैर्ऋत्य से वायु कोण तक और चौथी अग्नि से प्रणीता तक बिछानी चाहिए ।

तदुपरान्त अग्नि से उत्तर में प्राक्संस्थ पात्रसादन करना चाहिए । पवित्र छेदनार्थ तीन ओर पवित्र करणार्थ दो कुश, प्रोक्षणी पात्र आज्य स्थाली, समार्जन कुश डाक की तीन समिधाएँ, स्रुव, सूखे वन-कण्डे, समिधा, पर्युक्षण के लिए जल, हरे कुश, जल से भरे हुए आठ मृत्तका पात्र (कुल्लड़ या सरवा) धोती, गूलर की लकड़ी की दाँतुन (१२ अंगुल ब्राह्मण को, १० अंगुल क्षत्रिय को और ८ अंगुल लम्बी दाँतुन वैश्य को), दही, तिल, स्नान के लिए पानी, उबटन के द्रव्य, चन्दन, दो जनेऊ, दो नवीन बढ़िया वस्त्र, पगड़ी, कुण्डल, अञ्जन, पुष्प, दर्पण, नवीन छाता, नवीन जूते, बाँस की छड़ी, आचार्य की छड़ी, आचार्य की मुट्ठी माप से २५६ मुट्ठी कच्चे चावलों का परिपूर्ण पात्र, चाँदी-द्रव्य रूप दक्षिणा एकत्र करके छेदन कुशों से पूर्व क्रम से उत्तर की ओर अग्र भाग रखते हुए स्थापना करे ।

तत्पश्चात् छेदनार्थ कुशों से प्रादेश मात्र दो कुशों का छेदन करके पवित्र सहित दाँये हाथ से प्रणीतास्थ जल को कुशों का प्रोक्षणी-पात्र में तीन बार डाले और फिर अनामिका-अंगुष्ठा से पवित्रों को पकड़े हुए प्रोक्षणीस्थ जल का उत्पवन करे ।

तदुपरान्त पवित्रों से प्रोक्षणी के जल का तीन बार अभिषेचन करे और प्रोक्षणीस्थ जल से आसादित आज्य स्थाली आदि का सेचन करके तथा प्रोक्षणी को अग्नि और प्रणीता पात्र के मध्य में रखे । फिर घृतपात्र से आज्य स्थाली में घृत डालकर अग्नि पर

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रखे तथा सूखे कुश जला कर अग्नि पर घुमाते हुए अग्नि में ही डाल दे ।

अब स्रुवा को अग्नि में तीन बार तपाकर सम्मार्जन कुशों से स्वच्छ करे तथा प्रणीतास्थ जल से सेचन करके और पुनः तीन बार तपाकर स्रुवा को अग्नि से दक्षिण में रख दे । फिर तप्त घृत को अग्नि से उतारे और तीन बार पवित्रों से घृत का उत्पवन करके देखे कि उससे कोई मैल आदि निकृष्ट वस्तु तो नहीं है, यदि हो तो निकाल दें और फिर प्रोक्षणी का तीन बार उत्पवन करे ।

फिर उठकर बाँये हाथ में उपयमन कुश लेकर चित्त में प्रजापति का ध्यान करके तीन घृताक्त समिधाएँ बिना मन्त्र के एक-एक करके होमे । तदुपरान्त बैठ कर पवित्री सहित प्रोक्षणीस्थ जल को अग्नि के सब ओर ईशान से उत्तर दिशा तक सेचन कर दे ।

तत्पश्चात् दाँये घुटने को धरती में टेक कर ब्रह्मा से अन्वारब्धित ब्रह्मचारी स्रुवा से आज्याहुतियाँ दे । प्रत्येक आहुति देने पर स्रुवा में जो घृत-बिन्दु अवशिष्ट रह जाय उन्हें प्रोक्षणी में डालता जाय । आहुति मन्त्र–

ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम ।

इति मनसा- ॐ इन्द्राय स्वाहा । इदमिन्द्राय न मम इत्याधारौ ।

ॐ अग्नये स्वाहा । इदमग्नये न मम ।

ॐ सोमाय स्वाहा । इदं सोमाय न मम ।

इस प्रकार मन्त्रों का उच्चारण ब्रह्मचारी स्वयं करे, किन्तु यदि ब्रह्मचारी मंत्र और विनियोग को ठीक प्रकार से न जानता हो तो आचार्य अथवा कोई अन्य ही प्रतिनिधि रूप से उन कार्यों को

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करे । फिर आधार की ओर फाग की दो-दो आहुतियाँ उक्त मन्त्रों से दी जाँय ।

इस प्रकार आज्य भागों के बाद अपनी शाखा के वेद का आरम्भ करने की आहुति दे । यदि यजुर्वेद का अध्ययन करे तो प्रथम अन्तरिक्ष और वायु के लिए आहुतियाँ देनी चाहिए–

ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा । इदमन्तरिक्षाय न मम ।
ॐ वायवे स्वाहा । इदं वायवे न मम ।

जब यजुर्वेद को समाप्त करके स्नान करके तब भी उक्त दोनों आहुतियाँ दे और फिर नौ आहुतियाँ ब्रह्मादि को देनी यथा–

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा । इदं छन्दोभ्यो न मम ।
ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा । इदं छन्दोभ्यो न मम।
ॐ प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये न मम ।
ॐ देवेभ्यः स्वाहा । देवेभ्यो न मम ।
ॐ ऋषिभ्यः स्वाहा । देवऋषिभ्यो न मम ।
ॐ श्रद्धायै स्वाहा । इदं श्रद्धायै न मम ।
ॐ मेधायै स्वाहा । इदं मेधायै न मम ।
ॐ सदस्पतये स्वाहा । इदं सदस्पतये न मम ।
ॐ अनुमतये स्वाहा । इदमनुमतये न मम ।

यदि ऋग्वेद का अध्ययन करना हो तो पृथिवी और अग्नि के लिए दो आहुतियाँ दे–

ॐ पृथिव्यै स्वाहा । इदं पृथिव्यै न मम ।
ॐ अग्नये स्वाहा । इदमग्नये न मम ।

जब ऋग्वेद समाप्त करे तब भी स्नान करे पृथिवी और अग्नि को आहुतियाँ देकर 'ब्रह्मादि' की उक्त नौ आहुतियाँ दें ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यदि सामवेद का अध्ययन करे तो दिव और सूर्य को दो आहुतियाँ दे तथा समाप्त करके स्नान करने पर भी दिव और सूर्य को आहुतियाँ देकर 'ब्रह्मादि' की नौ आहुतियाँ दें।

ॐ दिवे स्वाहा। इदं दिवे न मम।

ॐ सूर्याय स्वाहा। इदं सूर्याय न मम।

अथर्ववेद का अध्ययन आरम्भ करते समय दिशा और चन्द्रमा की दो आहुतियाँ दे –

ॐ दिग्भ्यः स्वाहा। इदं दिग्भ्यो न मम।

ॐ चन्द्रमसे स्वाहा। इदं चन्द्रमसे न मम।

जब अथर्ववेद का अध्ययन समाप्त करके स्थान किया जाय तब उसके बाद भी उक्त दो आहुतियाँ देकर 'ब्रह्मादि' की नौ आहुतियाँ देनी चाहिए।

यदि सभी वेदों को पढ़कर समाप्त करके स्नान करे तो आज्य भागों की आहुति देने के बाद अपनी वेद शाखा की आहुति देते हुआ प्रत्येक वेद की क्रम से दो-दो आहुतियाँ देकर ब्रह्मादि की नौ आहुतियाँ दे। इसी प्रकार दो या तीन वेदों के अध्ययनोपरान्त स्नान करे तब सम्बन्धित वेदों की आहुतियाँ देकर ब्रह्मादि की नौ आहुतियाँ देनी चाहिए।

उसके पश्चात् ब्रह्मा के अन्वारम्भ करने पर महाव्याहृतियों से स्विष्टकृत् पर्यन्त दश आहुतियों का होम करना चाहिए। इन दश आहुतियों में उस-उस आहुति के बाद स्रुवा में अवशिष्ट घृत को प्रोक्षणी पात्र में गिराता जाय। उन दश आहुतियों के मंत्र निम्न हैं–

ॐ भूः स्वाहा। इदमग्नये न मम।

ॐ भुवः स्वाहा। इदं वायवे न मम।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय न मम।

इन महाव्याहृतियों की आहुति के पश्चात् निम्न मन्त्र का उच्चारणपूर्वक आहुतियाँ देनी चाहिए—

ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽअवयासि-सीष्ठा यजिष्ठो वह्निनतम शोशुचानो विश्वाद्वेषाᳬसि प्रमुसुग्ध्यस्मत्स्वाहा।।१।। इदमग्नीं वरुणाभ्यां न मम।

ॐ स त्वन्नो अग्ने ऽवमो भवोती ने दिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अवयक्ष्व नो वरुण ᳬ रराणो वीहि मृडीक ᳬ सुहवो न एधि स्वाहा।।२।। इदमग्नी-वरुणाभ्या न मम।

ॐ अयाश्चाग्ने ऽस्यभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमया-असि। अया मो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषज स्वाहा।। ३।। इदमग्ने न मम।

ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाश वितता महान्तः तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तुः मरुतः स्वर्काः स्वाहा।। ४।। इदं वरुणाय सवित्रो विष्णवे विश्वेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम।

ॐ तदुत्तम वरुणपाशमस्मदबाधर्म विमध्यर्मं श्रथ्राय। अथावयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा।।५।। इदं वरुणाय न मम।

यह पाँचों प्रायश्चित्त की आहुतियाँ हुई, अब प्रजापति एवं स्विष्टकृत की आहुतियों का उच्चारण करते हैं—

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम।
इति मनसा प्राजापत्यम् ।

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते न मम।

उक्त आहुतियों के पश्चात् संस्रव प्राशन कर आचमन करें और ब्रह्मा को दक्षिणा देते समय निम्न संकल्प करें –

ॐ अद्यकृतेतत्समावर्तन होम कर्मणि कृताकृता-वेक्षणरूप ब्रह्मकर्म प्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापति दैव्रतं (अमुक) गोत्राय (अमुक) शर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं सम्प्रददे।

इस प्रकार संकल्प पूर्वक दक्षिणा देने पर ब्रह्मा उसे 'ॐ स्वस्ति' कहकर ग्रहण करें और फिर पवित्रों द्वारा प्रणीतास्थ जल लेकर निम्न मन्त्र से अपने सिर पर मार्जन करे –

ॐसुमित्राया न आप औषधयः सन्तु

अब प्रणीता के शेष जल को ईशान कोण में गिराने के साथ ही निम्न मन्त्र पढ़े –

ॐदुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः।

फिर जिस क्रम से कुश बिछाये थे उसी क्रम से उठाकर और और उनमें (कुशों में) घृत के साथ लगाकर साथ ही अग्नि में होमता हुआ निम्न मन्त्र उच्चारण करे–

ॐदेवागातु विदोगातुं वित्वा गातुमित। मनसस्पत् इमं देवयज्ञ ꣳ स्वाहा। वातेधाः स्वाहा॥

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

समिदाधान–

तदुपरान्त ब्रह्मचारी आचार्य के चरण छूकर नमस्कार करे और आचार्य से उत्तर में ब्रह्मा अन्वारम्भ करने पर परिससूहन से त्र्यायुषकरण तक समिदाधान करे । प्रथम सूखे कण्डों को घृताक्त करके निम्न मन्त्रों से पाँच आहुतियाँ दे –

ॐ अग्ने सुश्रवः सुश्रवसं भा कुरु स्वाहा।।१।।
ॐ यथा त्वमग्ने सुश्रव, सुश्रवा असि स्वाहा।।२।।
ॐ एवं मा ॐसुश्रव सौश्रवसं कुरु स्वाहा ।।३।।
ॐ यथा त्वमग्ने देवानां यज्ञस्य निधिपा असि स्वाहा ।। ४।।
ॐ एवमहं मनुष्याणं वेदस्य निधियो भूयासॐ स्वाहा ।। ५ ।।

जब अग्नि के प्रदक्षिणा क्रम से सब ओर जल का सेचन करके उठे और घृत में डुबोकर एक समिधा का हाथ से होम करता हुआ निम्न मन्त्रोच्चार करे –

ॐ अग्नये समिधहार्ष वृहते जातवेदसे । यथात्वमग्ने समिधा समिध्यस एवमहमायुषा मेधया वर्चसा प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन समिन्धे जीवपुत्रो समाचार्यों मेधाव्यहमसान्य निराकरिष्णर्यशस्वी तेजस्वी ब्रह्म वर्चस्यन्नादो भूयासम् । एषा ते अग्नेसमित्तया वर्द्धस्व चाचप्यायायस्व । वद्धिषीमहि च वयमा चाप्यासिषीमहि स्वाहा ।।

फिर अन्य दो समिधाएँ भी इस मन्त्र के साथ एक-एक करके

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आहूत करनी चाहिए । तदुपरान्त बैठकर उपर्युक्त 'ॐ अग्ने सुश्रव' इत्यादि पाँच मन्त्रों से पहले के समान अग्नि का परिसमूहन करना चाहिए । फिर पहले के समान ही अग्नि का पयुर्क्षक्षण करे । सब ओर जल का सेचन करने का पश्चात् बिना मन्त्रोच्चारण किये प्रत्येक बार हाथ तपावे और फिर निम्न मंत्र पढ़ता हुआ मंत्र के अंत में प्रत्येक बार मुख का स्पर्श करता रहे ।

ॐ तनूपा अग्नेऽसि तन्वं मे पाहि ।
ॐ आयुर्दा अग्नेस्यातुर्मदेहि ।
ॐ वर्चोदा अग्नेऽसि वर्चो मे देहि ।
ॐ अग्ने यन्मे तन्वा ऊन तन्म आपृण ।
ॐ मेधां मे देवः सविता आदधातु ।
ॐ मेधां मे देवी सरस्वती आदधातु ।
ॐ मेधां मे अश्विनौ देवाधत्तां पुष्करस्रजो ।

अंग स्पर्श –

अब अग्नि पर तपाये हुए दाँये हाथ से समूचे शरीर का स्पर्श करता हुआ निम्न मन्त्र पढ़े–

इसके बाद प्रत्येक मन्त्र के अन्त में दाँये हाथ से सम्बन्धित अंग का स्पर्श करता हुआ निम्न मन्त्रों का उच्चारण करना चाहिए–

ॐ अङ्गानिचम आप्यायन्ताम् ।
ॐ वाक्चम आप्यायताम् । इति मुखम् ।
ॐ प्राणश्चम आप्यायताम् । इति नासाछिद्र ।
ॐ चक्षुश्चम आप्यायताम् । इतिसहैवचक्षुर्द्धयम् ।
ॐ श्रोत्रं च मे आप्यायताम् । इति सहैवश्रोत्रर्द्धयम् ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अर्थात्–'वाक्चम' से मुख, प्राणश्चम से दोनों नासा छिद्र, 'चक्षुश्चम' से दोनों नेत्र और 'श्रोत्र' से दोनों कानों का स्पर्श करना चाहिए । नेत्रों और आँखों के स्पर्श में पृथक्-पृथक् स्पर्श करे और पृथक्-पृथक ही मन्त्र का उच्चारण करे । इसके बाद निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए दोनों बाहुओं का स्पर्श करना चाहिए ।

ॐ यशोबलं च मे आप्यायताम् ।

इसके पश्चात् दाँयी अनामिका के अग्र भाग से भस्म लेकर ललाट आदि स्पर्श निम्न मन्त्रों से करे –

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः । इति ललाटे ।
ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम् । इति कण्ठे ।
ॐ यद् देवेषु त्र्यायुषम् । इति दक्षिण वाहुमूले ।
ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् । इति हृदि ।

इस प्रकार उस-उस मन्त्र से उस-उस अंग को भस्म लगावे और फिर वैश्वानर और वरुण का अभिवादन कर आचार्य का अभिवादन करता हुआ कहे–

ॐ अुमक गोत्रोऽमुक (शर्मा, वर्मा, गुप्त) अहं अभिवादये । इसके उत्तर में आचार्य 'आयुष्मान भव' कहे ।

अभिषेक–

अब मण्डप की अग्नि से उत्तर में प्रागग्र कुश बिछावे और उन पर दक्षिण की ओर से स्वच्छ पानी से भरे हुए आठ उदकसंस्थ (मिट्टी के पात्र) रखे तथा उनसे पूर्व में बिछे हुए और प्रथम पात्र से आम्रपत्र के द्वारा मन्त्र पूर्वक जल ग्रहण करके निम्न मन्त्र से अपने ऊपर डाले–

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जल ग्रहण का मन्त्र-ॐ ये अप्स्बन्तरग्नाय: प्रविष्टा गोह्य उपगोह्यो मयूखोमनोहास्खलो विरुजस्त नूदूषुरिन्द्रियहान् विजहामि गोरोचनस्तमहि। गृहणामि।

जल से अभिषेक का मन्त्र- ॐ तेन मामभिषिंचा-मिश्रियै यशसे ब्रह्मणे ब्रह्मवर्चसाम् ।

अब दूसरे कलश से जल ग्रहण करे । जल ग्रहण करते समय 'ॐ ये अप्स्वन्तर' इत्यादि उक्त मन्त्र ही पढ़े, किन्तु जल से अपने शरीर पर अभिषेक करते हुए निम्न मन्त्र का उच्चारण किया जाना चाहिए–

ॐ येन श्रियमकृणुता येनावमृशता ७ सुनान् येनाक्ष्यावभ्यषिञ्चातां यद्वा तदश्विना यश:।

इसी प्रकार उक्त 'ॐ ये अप्स्वन्तरग्नय:' इत्यादि मन्त्र से तीसरे कलश से जल ग्रहण करके निम्न मन्त्र से अपने शरीर पर अभिषेक करे–

ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्जे दधातन। महे-रणाय चक्षसे ।

अब पाँचवे कलश से भी उसी मन्त्र से जल ले और निम्न मन्त्र से अभिषेक करे –

ॐतस्मा अरंगमामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपोजनयथा च न: ।

तदुपरान्त शेष रहे तीन कलशों का जल भी क्रमश: उसी प्रकार और मन्त्र (ॐ ये अप्स्वन्तरग्नय: आदि) से तीन बार ले-लेकर अपने शरीर पर अभिषेक करे । इन तीनों घड़ों से जल

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ग्रहण में तो उक्त मंत्र पढ़ा जाता है, किन्तु अभिषेक बिना मन्त्र पढ़े ही किया जाता है ।

अब निम्न मंत्र का उच्चारण करके शिर से मेखला निकाल कर पृथक् रखे—

ॐ उदुत्तमं वरुणपाशमस्मद वाधमं विमध्यम श्रथाय । अथावयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम ।।

सूर्योपस्थान-

इसके बाद दण्ड ओर मृगचर्म भी बिना मन्त्र बोले ही उतार कर रख दे । फिर बिना मन्त्र पढ़े ही दूसरे नवीन वस्त्र धारण करके कन्धे पर एक अँगोछा डाले और निम्न मन्त्र से सूर्य का उपस्थान करे—

ॐ उद्यन्भ्राजजिष्णुरिन्द्रोमरुद्भिरस्थात् प्रातर्यावभिरस्थादृशनिरसि दशसनिं माकुर्वाविन्मागगय । उद्यन्भ्राजभृष्णुरिन्द्रो मरुद्भिरस्थाद् दिवायावभिर-स्थाच्छतसनिरसि शतसनिं माकुर्वादिदेन्मागमय उत्तन्भ्रा-जभृष्णरिन्द्रो मरुद्भिरस्थात्सायंयावभिरस्थात्ससस्रनिरसि-सहस्रसनि माकुर्वाविदन्मागमय ।

अब थोड़ा दही अथवा तिल बिना मन्त्र बोले ही खाले तथा नाई से जटा, बाल और नखों को कटवा कर और आचमन करे । उसके बाद गूलर की दाँतुन निम्न मन्त्र से करे—

ॐ अन्नाद्याय व्यूहध्व सोमो राजाऽयमागमत् । स मे मुखं प्रमार्क्ष्यते यशसा च भगेन च ।

दाँतुन करने के बाद फेंक दे और कुल्ला तथा आचमन कर के उबटन करे। उबटने के लिए सुगन्धित द्रव्य केशर आदि भी

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार प्रयोग में ला सकते हैं । उबटन के बाद गर्म जल से स्नान करना प्रशस्त है ।

अब दो बार आचमन करे तथा चन्दन और केसर घिसकर निम्न मन्त्र बोलता हुआ नाक, नेत्रों और कानों से लगावे–

ॐ प्राणापानौ मे तर्पय ।
ॐ चक्षुर्मे तर्पय।
ॐ श्रोत्रं मे तर्पय ।

तदन्तर हाथों को धोकर धरती में घुटने टेके और अपसव्य होकर दक्षिण की ओर मुख करे तथा तीन कुशों को मोड़कर दुगुने करे और धरती पर बिछा दे । फिर बाँयें हाथ में तिल और जल लेकर उन बिछाये हुए कुशों पर 'ॐ पितरः शुन्धध्वम्' कहता हुआ छोड़ दे ।

इस प्रकार पितरों का तर्पण करने के पश्चात् सव्य होकर दाँये हाथ से जल का स्पर्श करे और आचमन करके घिसे हुए केशर युक्त चन्दन को नेत्र, मुख और कानों से लगावे । उस समय निम्न मन्त्रों का उच्चारण करे–

ॐ सुचक्षा अहमक्षोभ्याम् ।
ॐ भूयास ७ सुवर्चा मुखेन ।
ॐ सुश्रत् कर्णाभ्यां भूयासम् ।

इसके पश्चात् कारा श्वेत (जो धोवी द्वारा धुला न हो) वस्त्र लेकर निम्न मन्त्र के उच्चारण पूर्वक धारण करे –

ॐ पपिधारये यशोधास्यै दीर्घायुत्वाय जरदष्टिरस्मि। शतं च जीवामि शरदः पुरुचीरायस्पोषमभिसं व्ययिष्ये।

तदुपरान्त निम्न दो मंत्रों से अन्य दो उपवीत धारण करने चाहिए–

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापत्येर्सहजं पुरस्तात् । आयुष्यमग्रहं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ।।

यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि ।

अब आचमन करके अंगोछा या दुपट्टा ओढ़ते समय निम्न मन्त्र का उच्चारण करे –

ॐ यशसा मा द्यावा पृथिवी यशसेन्द्राबृहस्पती । यंशो भगश्च विदद्याशो मा प्रतिपद्यताम् ।।

फिर हाथ में पुष्पमाल्य लेते हुए निम्न प्रथम मन्त्र और पुष्पमाल्य को कण्ठ में धारण करते हुए दूसरा मन्त्र पढ़े–

ॐ आहरज्जमदग्निः श्रद्धायै मेधायै कामायेन्द्रियाय। अहं प्रतिगृह्णामि यशसा च भगेन च ।। १।।

ॐ यद्यशोऽप्सरसामिन्द्रश्चकार विपुलं पृथु । तेन संग्रन्थिताः सुमनसः आवध्नामि यशो मयि ।। २।।

पागादि धारण–

उसके पश्चात् निम्न प्रथम मन्त्र से पगड़ी बाँधे और द्वितीय मन्त्र से कुण्डल धारण करे । प्रथम दाँये कान में और फिर बाँये कान में कुण्डल पहिनना चाहिए । मन्त्र यह है–

ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात्सउश्रैयान्भवति जायमानः । तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः ।। १।।

ॐ अलंकरणमसि योऽलंकरणं भूयात् ।। २।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तदुपरान्त निम्न मन्त्र से नेत्रों में (प्रथम बाँये में और फिर दाँये में) सुरमा लगावे–

ॐ वृत्रस्यासि कनीनकश्चक्षुर्दा असि चक्षुर्मे देहि।

तदुपरान्त निम्न मन्त्रों से नेत्रों में (प्रथम बाँये में और फिर दाँये में) सुरमा लगावे –

ॐ रोचिष्णुरसि ।

अब निम्न मन्त्र पढ़ता हुआ छाता हाथ में ले–

ॐ बृहस्पतेश्छदिरसि पाप्मजो मामन्तर्धेहि ।

फिर निम्न मन्त्र से जूते पहिने—पहिले दाँये पाँव में और फिर बाँये पाँव में । मन्त्र को प्रत्येक बार पढ़े–

ॐ प्रतिष्टेस्थो विश्वतोमा पातम् ।

अब निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ ब्रह्मचारी बांस की छड़ी ग्रहण करे–

ॐ विश्वेभ्यो मानाष्ट्राभ्यस्परिपाहि सर्वतः ।

स्नातक के कर्त्तव्यों का उपदेश–

नियम यह है कि जब-जब भी वस्त्र, जूता, छाता, छड़ी आदि नवीन धारण करने हों तब-तब सम्बन्धित मन्त्रों से ही धारण करे । नित्य-प्रति पुराने वस्त्रादि धारण में मन्त्रोच्चार की विधि नहीं है । सामान्यतः स्नान, दन्तधावन, कुल्ला आदि कर्म नित्य-प्रति ही करने चाहिए । स्नातक के जो नियम शास्त्रों में बनाये हैं, आचार्य उनका उपदेश करे । सामान्य नियम यह हैं –

१–गायन, वादन,नृत्यादि में सम्मिलित न हों ।

२–अश्लील वाक्य न बोले, न सुने । अर्थात् जहाँ अश्लील वाक्यों का आदान-प्रदान होता हो वहाँ न बैठे ।

३–रात्रि के समय ग्रामान्तर (अन्य ग्राम) में न जाय।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

४–बिना मार्ग के या ऊबड़-खाबड़ मार्ग में न चले ।

५–वृक्ष पर न चढ़े, कुएँ में न झाँके ।

६–प्रातः सायं सन्धिकाल में मार्ग में न चले और न सोवे ।

७–निर्लज्जता की बातें कभी न कहे ।

८–बोये हुए खेत में मल मूत्र न करे ।

९–जल में अपनी छाया न देखे।

१०–वर्षा के समय यथा सम्भव घर से बाहर न जाँय ।

११–उदय या अस्त होते हुए सूर्य को न देखे ।

१२– पागल, लोम-रहित, पुरुषाकार या षष्ढ स्त्री से सहगमन न करे –

इसी प्रकार के बहुत से नियम शास्त्रकारों ने बताये हैं, जिनको विभिन्न शास्त्रों में देखना चाहिए । स्थानाभाव से यहाँ उनका वर्णन अभीष्ट नहीं ।

पूर्णाहुति-

इसके पश्चात् आचार्य को दक्षिणा दे और तब आचार्य खड़ा होकर स्नातक के दाँये हाथ से फल, पुष्प, घृत युक्त स्रवा का स्पर्श कराता हुआ निम्न मन्त्र से पूर्णाहुति दे–

ॐ मूर्द्धान दिवो अरति पृथिव्यां वैश्वानरमृतआजात-मग्निम् । कवि छ सम्राजमतिथिं जनानामासन्नापत्रं जनयन्तदेवाः स्वाहा ।।

अब आचार्य बैठकर स्रुवा मूल से भस्म लेकर दायें हाथ की अनामिका के अग्र भाग से भस्म ग्रहण करके निम्न मन्त्रों के साथ सम्बन्धित अंङ्गों का स्पर्श करे –

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः । इति ललाटे ।

ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम् । इति ग्रीवायाम् ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम् । इति दक्षिणबाहुमूले ।
ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् । इति हृदि।

इस प्रकार क्रमशः ललाट, ग्रीवा, दक्षिणा बाहुमूल और हृदय में भस्म लगावे । इसी प्रकार स्नातक के भी उन-उन अंगों में भस्म लगानी चाहिए । किन्तु स्नातक के भस्म लगाते समय 'तन्नो' के स्थान पर 'तत्ते' कहे ।

अब स्नातक आचार्यादि गुरुजनों और मान्य व्यक्तियों का पूजन कर आशीर्वाद ग्रहण करे । तदुपरान्त गणपति और मातृकागण आदि का विसर्जन करके संकल्प पूर्वक शक्ति के अनुसार ब्राह्मणों को भोजन, दक्षिणादि से तृप्त करे । फिर अन्य उपस्थित व्यक्तियों को भी यथा योग्य सम्मानित और प्रसन्न करके विदा करे ।

* * *

१३. विवाह संस्कार

दाम्पत्य जीवन का आरम्भिक संस्कार–

विवाह एक सामाजिक आवश्यकता है । पुरुष के लिए स्त्री की आवश्यकता वासना-पूर्ति के लिए नहीं, वरन् गृहस्थ धर्म के निर्वाह के लिए है । जहाँ पति-पत्नी मानवता युक्त गृहस्थ का पालन करते है, वही घर गृहस्थाश्रम कहलाता है । इसमें दोनों (पति-पत्नी) एक चित्त से परस्पर एक-दूसरे की सुख-सुविधा का ध्यान रखें, यही कर्त्तव्य है । शास्त्रों का मत है–

अन्योन्यं सवितुं प्रेम्णा द्वयोर्धर्मः क्रमागतः ।
समानो ह्यधिकारस्तु दम्पत्योर्निश्चितः सदा ।।
समुत्कर्ष निकासार्थमन्योन्यस्य च द्वावपि ।
कल्याणानन्दयोः स्यातां स्पर्धाशीलो प्रसारणे ।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अर्थात् पति-पत्नी दोनों परस्पर में एक-दूसरे की सेवा करें यह धर्म परम्परा से चला आ रहा है । दम्पति (पति-पत्नी) के समान अधिकार भी सदा से ही निश्चित हैं । इसलिए पति-पत्नी दोनों ही परस्पर में एक दूसरे की सेवा समुत्कर्ष, विकास हित साधन, कल्याण और आनन्द के उद्देश्य में स्पर्द्धा करते रहें ।

इस प्रकार दम्पति में पारस्परिक प्रेम स्थायित्व रहना ही विवाह की सफलता का लक्षण है । इस विषय में विद्वानों का स्पष्ट मत है–

दाम्पत्य जीवनोद्देश्यो महान्सेवामयस्तथा ।
समाज देश विश्वेभ्यो दिव्यात्मानं समर्पयेत् ।

अर्थात् दाम्पत्य जीवन का उद्देश्य ही समाज, देश और विश्व की महान सेवा करना है । इसके लिए पति-पत्नी दोनों मिलकर अपनी दिव्यात्मकता (तेजस्वी व्यक्तित्व) का समर्पण करें (यही कर्त्तव्य है) ।

ब्रह्मचर्याश्रम में वेद विद्या (शिक्षा) प्राप्त कर लेने पर समावर्तन और उसके बाद विवाह संस्कार होता है । विवाह किस आयु में किया जाय ? इस विषय में विभिन्न आचार्यों के विभिन्न ही मत मिलते हैं । सामान्यतः १८ वर्ष से २५ वर्ष तक की आयु विवाह के लिए प्रशस्त मानी जाती है । वर्तमान काल में तो कन्या की आयु कम से कम १८ वर्ष और वर की आयु कम से कम २१ वर्ष होना ठीक समझते हैं । हमें इस विषय पर अधिक विवेचन अपेक्षित नहीं है । इतना कहना पर्याप्त होगा कि जब तक सभी धातुएँ पुष्ट न हो जाँय तब तक शुक्र नष्ट करना आयु को अल्प बनाना है । इसलिए युवावस्था प्राप्त होने पर ही विवाह करना चाहिए ।

विवाह के लिए ज्योतिष शास्त्रानुसार प्रभ, मास दिवस, नक्षत्र

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आदि का निश्चय करना चाहिए । वर-कन्या की जन्मपत्री मिलाने आदि का कार्य करना भी अपेक्षित है । अथवा जिस कुल में जैसी प्रथा हो उसके अनुसार विवाह का निश्चय करना चाहिए । क्योंकि विवाह में कुलाचार का भी सर्वाधिक महत्त्व स्वीकार किया जाता है ।

वाग्दान–

वर का पूजन करके मुख में मिठाई देने का नियम है । अनेक परिवारों में छुहारा देने का नियम है । कहीं फल अथवा ताम्बूल भी देते हैं । और कुछ नहीं तो बताशा ही मुख में रख दिया जाय। उसमें वाग्दान करने वाले को प्रतिज्ञा वाक्य बोलने की प्रथा है । सर्व प्रथम संकल्प करके गणपति आदि देवताओं का विधि पूर्वक पूजन करके पुरोहित या कन्या का भाई अथवा कन्या पक्ष का कोई अन्य पुरुष उत्तर अथवा पश्चिम की ओर मुख करके बैठे तथा पूर्वाभिमुख बैठे हुए वर के मस्तक पर केशर् चन्दन या रोली का तिलक करे । (सामान्यः विवाह प्रभृति शुभ कार्यों में रोली को प्रशस्त मानते हैं ।) तिलक करने के बाद उसके मुख में मिठाई, बताशा अथवा ताम्बूल देना चाहिए । स्वयं हाथ में सुपाड़ी, यज्ञोपवीत, वस्त्र, आभूषण, पात्र तथा द्रव्य (जैसी श्रद्धा हो) हाथ में लेकर निम्न प्रतिज्ञा वाक्य पढ़े–

तस्मिन् काले अग्नि सान्निध्ये स्नातः स्नाते-ह्यरोगिणि ।
अव्यंगेऽपतितेऽक्लीवे पिता तुभ्यं प्रदाश्यति ।।

अर्थात् विवाह के निश्चत समय पर मैं स्नानादि से शुद्ध हुआ पिता, स्नान किये हुए तथा अक्लीव और निरोग तुमको अग्नि के सान्निध्य में कन्या का दान करेंगे ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यदि कन्या के भाई के स्थान पर पुरोहित आदि को अन्य व्यक्ति वाग्दान की प्रतिज्ञा करे तो उसे 'पिता तुभ्यं प्रदास्यति' के स्थान पर 'दाता तुभ्यं प्रदास्यसि' कहना चाहिए ।

पूर्व दिन के कर्म –

विवाह के लिए निश्चय शुभ दिन से सात, पाँच, तीन या दो दिन पहिले (जिस कुल में जैसी प्रथा हो उसके अनुसार) गणपति आदि का पूजन करके कलश स्थापन करे और इष्टदेव, कुलदेव आदि को भी विराजमान करे । फिर कन्या और वर दोनों के ही यहाँ हल्दी-तैल आदि लगावें तथा हल्द-हाथ तेल चढ़ाना आदि कर्म कुल-परम्परा के अनुसार करे ।

फिर विवाह के पूर्व दिवस दोनों ही पक्षों के पिता अपने-अपने घर में स्त्री और पुत्र अथवा पुत्री के सहित मंगल द्रव्य युक्त जल में स्नान करके पूर्ण चीरे वाले दो वस्त्र धारण करें तथा गन्ध-द्रव्यों का तिलक लगाकर श्रेष्ठ शुभ आसन पर बैठे अपने दक्षिण में पत्नी को और पत्नी से दक्षिण में पुत्र (अथवा कन्या) को बैठाकर आचमन से शुद्ध होकर प्राणायाम करे और देश-काल का कथन करता हुआ निम्न प्रकार संकल्प करे–

अस्या अमुक शर्मणो (वर्मा, गुप्ता) मम पुत्रस्य देवपितृऋणापाकरण धर्म प्रजोत्पादन सिद्धि द्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थ श्वः करिष्यमाणा विवाहाख्यकर्माहं करिष्ये ।

यदि वर या कन्या के पूर्व संस्कार न हुए हों तो उन-उन छूटे हुए संस्कारों का प्रायश्चित्त, अनादिष्ट होम आदि जो विधिविहित हों वे करके शान्तिपाठ, गणपति पूजन तथा स्वस्तिपुण्याहवाचनादि सभी कर्म विधिपूर्वक करने चाहिए । यह गणपति पूजन, शान्तिपाठ,

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्वस्ति आदि सभी कर्म वर और कन्या के घरों में समान रूप से ही किये जाते हैं । पुण्याहवाचन की समाप्ति पर 'प्रजापति प्रीयताम्' इत्यादि का उच्चारण करना चाहिए ।

वेदी में अग्नि-स्थापना–

उक्त क्रिया समाप्त होने के पश्चात् अग्नि-स्थापन का कार्य करना चाहिए । वेदी की भूमि में कूड़ा, कंकड़, केश, भुसी आदि कुछ न हो, इसके लिए उसे स्वच्छ करे वेदी के मध्य हाथ भर प्रमाण चौकोर भूमि को कुशों के द्वारा स्वच्छ एवं समान करके उन कुशों को ईशान कोण में फेंक दे और फिर उस भूमि को गोबर में जल मिलाकर उससे लीप दे तथा स्रुव मूल से उत्तरोत्तर क्रम से तीन रेखाएँ करके प्रत्येक रेखा की हटी हुई मिट्टी को अनामिका -अंगुष्ठ से निकाल कर बाहर फेंक दे और उसका जल से सेचन करे ।

अब योजक संज्ञक अग्नि को कांस्य पात्र में रखकर आग्नेय दिशा की ओर से लावे और पूर्व की ओर मुख करके अग्नि को वेदी में पश्चिमाभिमुख स्वाहित करे । वह अग्नि बुझने न पावे, इसलिए उसकी रक्षा की व्यवस्था करे ।

वर का स्वागत-सत्कार–

आगत व्याक्तियों का सत्कार करना भारतवर्ष की मान्य परिपाटी है । वर एक विशिष्ट व्यक्ति होता है, इसलिए उसका सम्मान बहुत आवश्यक कार्य है । उसके साथ आने वाले वर पक्ष के अन्य व्यक्ति भी स्वागत-सत्कार के योग्य होते हैं इसलिए उनका भी यथायोग्य सत्कार किया जाना आवश्यक है ।

जब वर पक्ष के मान्य पुरुष तथा बराती आदि वर को मण्डप में लावें अर्थात् जब वर मण्डप में प्रवेश करे तब निम्न मंगल वचनों का उच्चारण किया जाय–

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरै रंगैस्तुष्टुवान्सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ।।

इसके बाद वर-कन्या के पिता आदि तथा वर भी पवित्रीकरण, आचमन, शिखा बन्धन, प्राणायाम, न्यास, पृथिवी पूजन आदि निम्न प्रकार करें–

पवित्रीकरण–

इस मन्त्र से पवित्रीकरण कर्म करना चाहिए । बाँये हाथ में जल लेकर दाँये हाथ से निम्न मन्त्र बोलते हुए जल छिड़के–

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यस्मरेत्पुण्डरीकाक्षं सवाह्याभ्यन्तरः शुचिः ।

आचमन–

आचमन सभी प्रकार के पूजनों में आवश्यक है । इसे निम्न तीन मन्त्रों से तीन बार करना चाहिए ।

ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ।। १ ।।
ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा ।। २।।
ॐ सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा ।। ३।।

शिखाबन्धन–

निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए चोटी में गाँठ लगानी चाहिए–

ॐ चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजः समन्विते ।
तिष्ठ देवि शिखा मध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे ।।

प्राणायाम–

पूरक, कुम्भक, रेचक प्राणयाम विधि पूर्वक करे, उस समय

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

'ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात्' (गायत्री मन्त्र) का मानसिक जप करे अथवा केवल ओंकार का ही जप करे ।

न्यास–

बाँये हाथ में जल लेकर दाँये हाथ से क्रमशः मुख, नासा, चक्षु, श्रोत्र, बाहुद्वय, जङ्घाद्वय तथा अन्त में सभी अंगों का स्पर्श करे–

ॐ वाङ् मे आस्येऽस्तु । (मुख)

ॐ नसोर्मे प्राणोऽस्तु । (नासा छिद्र)

ॐ अक्ष्णोर्मे प्राणोऽस्तु । (नेत्र)

ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु । (कान)

ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु । (बाहु)

ॐ ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु । (जंघा)

ॐ अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सहसन्तु।

शिर से पाँवों पर्यन्त सभी अङ्गों का स्पर्श करते हुए जल छिड़कना चाहिए ।

विवाह-विधान –

विवाह के लिए जो मण्डप बनाया जाय वह कन्या के हाथ के माप से सोलह हाथ लम्बा-चौड़ा बनावे । उस मण्डप से मिला हुआ कौतुकागार हो तो मण्डप से नैऋत्य कोण में हो और जिसका द्वार उत्तर की ओर हो । मण्डप से बाहर ईशान कोण में माप से चार हाथ लम्बी चौड़ी हो । यदि मण्डप के लिए उतना स्थान उपलब्ध न हो तो कम स्थान में ही मण्डप बनाया जा सकता है ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वेदी साफ हो, उसमें भुसी, बाल, कंकड़ आदि न हों उसमें पवित्र बालू बिछाकर सबसे ऊपर हल्दी का चूर्ण बिछा दे । विवाह का विधान आरम्भ होने से पहिले कन्या का पिता स्नान करके शुद्ध श्वेत वस्त्र धारण करे और अपने नित्यकर्म (सन्ध्योपासनादि) करे।

देव पूजन–

भारतीय परम्परा के अनुसार सभी कर्मों में पारिवारिक कल्याण के लिए देवपूजन बहुत आवश्यक कार्य है । सर्व प्रथम विघ्नविनाशक गणेशजी का पूजन करना चाहिए । फिर अन्यदेवी-देवताओं का करें –

विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्माविष्णु महेश्वरान् ।
सरस्वती प्रणम्यादौ शान्तिकार्यार्थ सिद्धये ।। १।।
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देव महेश्वरः ।
गुरु साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः ।। २।।
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्ण चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्व विघ्नोपशान्तये ।। ३।।
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममंगलम् ।
येषां हृदिस्थौ भगवान्मंगलायतनो हरिः ।। ४।।
मंगलं भगवान् विष्णुमंगलं गरुड़ध्वजः ।
मंगलं पुण्डरीकाक्षो मंगलायतनो हरिः ।। ५।।
शान्ताकारं भुजंगशयनं पद्‌मनाभं सुरेशं ।
विश्वाधारं गगन सदृशं मेघवर्ण शुभाँगम् ।
लक्ष्मीकान्त कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं ।
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्व लोकैकनाथम् ।। ६।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वन्दे देवमुमापति सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनांपतिम् ।।
वन्दे सूर्यशशांक वह्निनयन वन्देमुकुन्दप्रियं ।
वन्दे भक्त जनाश्रयं च वरदं वन्दे शंकरम् ।। ७।।
शुक्लां ब्रह्मविचारसार परमामाद्यां जगद् व्यापिनीम् ।
वीणा पुस्तक धारिणीम भयदां जाड्यान्धकारापहाम् । ८।
हस्ते स्फटिक मालिकां विद्धतीः पद्मासने संस्थितां।
वन्देतां-परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदां ।
आयातु वरदे देवि अक्षरे ब्रह्मवादिनी ।
गायत्रीच्छन्दसां माता ब्रह्मयौनिर्नभो ऽस्तुत ।। ९।।
सर्व मंगलमाँगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमो ऽस्तुते।।१०।।

वर पूजन–

विवाह में वर पूजन की परिपाटी अनादि काल से चली आती है कन्या पक्ष के लिए वर का स्थान एक महत्वपूर्ण विशिष्ट व्यक्ति के समान है । इसलिए जब वर कन्या के घर पर आता है तब उसका गन्ध, पुष्प, अक्षत आदि के द्वारा पूजन एवं तिलक किया जाता है ।

उस समय वर के साथ में जो बराती आदि आते हैं, उनका भी पेय एवं खाद्यादि से स्वागत करने की प्रथा है । वर के पिता आदि मान्य पुरुषों का उस समय हार्दिक स्वागत होना चाहिए ।

द्वार पर आये हुए वर का पहिले द्वार पर ही स्वागत होता है । इसे द्वाराचार या तोरण-भंग प्रथा भी कहते हैं । वह अपनी छड़ी से द्वार के ऊपर लगाई हुई क्रीडिकाओं का स्पर्श करता है, इसी में

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रथा की पूर्ति मान ली जाती है ।

जब वर-पूजन का समय आवे तब वर ऊपर की ओर घुटने करके पूर्व की ओर मुख करके बैठे । तथा कन्या का पिता वर के सामने पश्चिम की ओर मुख करके बैठे । फिर स्वस्तिवाचन के बाद कलश और गणपति का पूजन करे तथा वर को सम्बोधित करके विनियोग सहित विधि पूर्वक निम्न मन्त्र का उच्चारण करता हुआ आसन प्रदान करे –

ॐ साधुभवानास्तार्चयिष्यामोभवन्तम् ।

इसके पश्चात् वर 'अर्चय' कहे फिर कन्या का पिता या उसका कोई प्रतिनिधि विष्टर, पाँव धोने के लिए जल (पाद्य) आचमन के लिए जल और मधुपर्क आदि अर्पण करे तथा वर उन सबको स्वीकार करे । यह सब वस्तुएँ वर के पूजनार्थ प्रयुक्त होती हैं ।

बिष्टर का अभिप्राय कुशों से है । वर को बिष्टर देने के समय यजमान का साथी अन्य पुरुष इस प्रकार कहे–

ॐ विष्टरो विष्टरो विष्टरः ।

इसके पश्चात् यजमान और वर निम्न प्रकार कथनोत्तर करें–

कन्या का पिता–ॐ विष्टर प्रति गृह्यताम् ।
वर–ॐ विष्टरं प्रतिगृह्णामि ।

ऐसा कहकर वर विष्टर को ग्रहण करके उसे अपने आसन पर उत्तर की ओर अग्रभाग करके रखता हुआ निम्न मन्त्र पढ़े और उस पर बैठ जाय–

ॐ वर्ष्मोंस्मिसमानानामुद्यतामिवसूर्य । इमं तमभितिष्ठाभियोमां कच्चाभिदासति ।

जब वर बैठ जाय जब कन्या का पिता अपनी अंजली में पांव

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

धोने के लिए जल ले और अन्य पुरुष कहे–

ॐ पाद्यं पाद्यं पाद्यम् ।

इसके बाद ही कन्या का पिता 'ॐ पाद्यं प्रतिगृह्यताम्' कहे तथा वर 'ॐ पाद्यं प्रतिगृह्णमि' कहे ।

पांव धोने के लिए उक्त प्रकार से जल ग्रहण करके वर अपने पाँवों को धोता हुआ निम्न मन्त्र पढ़े–

ॐ विराजो दोहोऽसि विराजो दोहमशीय। मयि पाद्यायै विराजो दोहः।

इसमें शास्त्रोक्त नियम यह है कि यदि वर ब्राह्मण हो तो पहिले दांया पाव और फिर उसी मन्त्र से बाँया पाँव धोवे यदि क्षत्रिय हो तो पहिले बांया और फिर दाँया पाँव धोवे । वैश्य के लिए भी क्षत्रिय के समान ही विधान है ।

अब वर पूर्व के समान दूसरा विष्टर ग्रहण करके अपने पांवों के नीचे रखे । फिर दूव, अक्षत, गन्ध, पुष्प और फल युक्त अर्घ्य हाथ में ले उस समय अन्य पुरुष, कन्या का पिता और वर क्रमशः निम्न प्रकार कहें–

अन्य–ॐ अर्घ्यो ऽर्घ्यों ऽर्घ्यः ।

पिता–ॐ अर्घ्य प्रतिगृह्यताम् ।

वर–ॐ अर्घ्य प्रतिगृह्णामि ।।

यह कहकर वह अर्घ्यपात्र ग्रहण करके विनियोग सहित निम्न मन्त्र पढ़े–

ॐ आपः स्थयु माभिः सर्वान् कामान वाप्नवानि।

उसके बाद किजित गन्ध, अक्षत मस्तक में लगा कर विनियोग सहित निम्न मन्त्र का उच्चारण करें–

ॐ समुद्रं वः प्रहिणौमि स्वां योनिमभिगच्छत मरिष्टा

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अस्माकं वीरामापरोसे चिमत्पयः ।।

उक्त मन्त्र का उच्चारण करता हुआ वर अर्घ्यपात्र के जल को ईशान दिशा में गिरा दे । फिर आचमन के लिए आचमनीय देने का कार्य सम्पन्न किया जाय । उस समय क्रियानुसार अन्य पुरुष, कन्या का पिता और वर क्रमशः निम्न प्रकार से कहें–

अन्य–ॐ आचमनीयमाचमनीयमाचमनीयम् ।
पिता–ॐ आचमनीयं प्रतिगृह्यताम् ।
ॐ आचमनीयं प्रतिगृह्णामि ।

अब वर आचमनीय लेकर विनियोग सहित निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ एक आचमन करे–

ॐआमागन्यशा स ꣳ सृजवर्चसा तं मा कुरु प्रियं प्रजानामधिपतिं पशूनामरिष्टं तनूनाम् ।

इसके बाद दो आचमन बिना मन्त्र पढ़े ही करे । फिर कन्या का पिता काँस्य पात्र में दही, शहद और घृत को डालकर दूसरे कांस्यपात्र से ढँक कर निम्न मन्त्रों से मधुपर्क दे–

अन्य–ॐ मधुपर्को मधुपर्को मधुपर्कः।
पिता–ॐ मधुपर्कः प्रतिगृह्यताम् ।
वर–ॐ मधुपर्कः प्रतिगृह्णामि ।

अब वर निम्न प्रथम मंत्र से मधुपर्क को देखे और दूसरे मंत्र से मधुपर्क को लेकर बाँए हाथ में रखे–

ॐ मित्रस्य त्वा चक्षुषा प्रतीक्षे ।। १।।
ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पुष्णो हस्ताभ्यां प्रतिगृह्णामि ।

फिर निम्न मन्त्र का उच्चारण करता हुआ वर दाँये हाथ की

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अनामिका और अँगूठे से मधुपर्क को तीन बार मिलावे और कुछ धरती पर गिरावें–

ॐ नमः श्यावास्यायान्नशेयत्त आविद्धं तत्ते निष्कृन्तामि ।

अब तीन बार थोड़ा-थोड़ा मधुपर्क भक्षण करे । उसके साथ तीनों ही बार निम्न मन्त्र का उच्चारण करें –

ॐ यन्मधुनो मधव्यं परम ७७ रूपमन्नाद्यं तेनाहं मधुनो मध्यव्येन परमेण रूपेणान्तान्नाद्येन परमो मध्यब्यो ऽन्नादो ऽसानि ।

अब शेष बचे हुए मधुपर्क को ऐसे स्थान पर रख दे, जहाँ मार्ग न हो और उसका कोई उल्लंघन न कर सके तदुपरान्त दो बार आचमन करके निम्न मन्त्रों से तत्सम्बन्धित अंगों का स्पर्श करें–

ॐ वाङ्मे आस्ये ऽस्तु ।। १।।
ॐ नसोर्मे प्राणो ऽस्तु ।। २।।
ॐ अक्षोर्मे चक्षुरस्तु ।। ३।।
ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु ।। ४।।
ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु ।। ५।।
ॐ ऊर्वोमे ओजो ऽस्तु ।। ६।।
ॐ अरिष्टानि मे ऽङ्गानि तनूस्तन्वा में सह सन्तु। ७।

क्रमशः प्रथम मन्त्र से मुख, द्वितीय से नाक, तृतीय से नेत्र, चतुर्थ से कान, पंचम से बाहु और षष्ठ मंत्र से जंघाओं का स्पर्श अन्त में करना चाहिए ।

तदुपरान्त कन्या का पिता वर के पास ही धरती पर उत्तर की

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ओर अग्रभाग रखते हुए कुश बिछावे तथा गोदान करे । इस में गाय अथवा यथाशक्ति द्रव्य (कुल परम्परा के अनुसार) वर के हाथ में दे या उसके आगे रख दे । उस समय कन्या पक्ष निम्न मन्त्र का उच्चारण करें–

ॐ गोर्गो गौः प्रतिगृह्यताम् ।

उस गाय या द्रव्य को 'ॐ प्रति गृह्णामि' कहकर ग्रहण करता हुआ वर निम्न मन्त्र का उच्चारण करें–

ॐ माता रुद्राणां दुहिता वसूनाᳪस्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः प्रनुवोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागामदितिं वधिष्ठ । मम चायुष्य यजमानस्य च पाप्मा हतः ।

इसके बाद 'ॐ उत्सृजत तृणायन्तु' कहता हुआ वर तृणों का छेदन करके फेंक दें ।

वर का वरण–

वरण करने का अभिप्राय यज्ञानुष्ठान का अधिकारी बनाना है । इसलिए वर वरण करना महत्त्वपूर्ण और आवश्यक कार्य है । इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए कन्या दाता का आचार्य वर के हाथ में कलावा बाँधे और स्वस्ति मन्त्र पढ़े–

स्वस्ति नः इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदा स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ।।

कन्या का वरण, वस्त्र प्रदान एवं वस्त्र धारण–

तदुपरान्त वर कौतुकागार से कन्या को मण्डप में लावे और निम्न प्रथम मन्त्र पढ़ता हुआ साड़ी प्रभृति वस्त्र दे तथा द्वितीय मन्त्र पढ़ता हुआ ओढने का उत्तरीय दे–

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ जरांगच्छ परिधत्स्वबासो भावकृष्टीनामभिश-स्तिपावा। शतं च जींव शरदः सुवर्चा रवि च पुत्रान् -नुसंव्वयस्वायुष्मतीदं परिधत्स्ववासः।। १।।

ॐ या आकृन्तन्नवयं य अतन्वतयाश्चदेवी-स्तन्तूनभितो ततंण। तास्वादेवीर्जरसेसंव्ययस्वायुष्म-मतीदं परिधत्स्ववासः।। २।।

अब वर निम्न मन्त्र का उच्चारण करता हुआ स्वयं भी नवीन धोती आदि अधोवस्त्र धारण करें—

ॐ परिधास्यैय यशोधार्स्यदीर्घायुष्ट्वाय जरदष्टिरस्मि। शतं च जीवामि शरदः पुरूची रायस्पोषम भिसंव्ययिष्ये।।

फिर निम्न मन्त्र का उच्चारण करता हुआ वर स्वयं उत्तरीय (दुपट्टा) धारण करें—

ॐ वशसा मा द्यावा पृथिवी यशसेन्द्रा बृहस्पती यशोभगमश्चमा विदद्यशोभा प्रतिपद्यताम् ।।

मंगल पाठ—

अब वर और कन्या पक्ष के पण्डितजन मंगल पाठ करें—

ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्य-जत्राः। स्थिरै रंगैस्तुष्टुबांसतनूभिर्व्यशेमहि देवहितं दायुः।। १।।

स्वस्ति नः इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदा। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमि स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ शान्ति शान्तिः शान्तिः ।। २।।

ॐ ब्रह्मा वेदपतिः शिवः पशुपतिः सूर्यो ग्रसाणां पतिः शुक्रो देवपतिर्नलो नरपतिः स्कन्दश्च सेनापतिः।

विष्णुर्यज्ञपतिर्यम पितृपतिस्तारापतिश्चन्द्रमा इत्येते पतयस्सुपर्णसहिताः कुर्वन्तु वो मंगलम् ।। ३।।

श्रीमत्पंकज विष्टरो हरिहरो वायुर्महेन्द्रोऽनलश्चन्द्रो भास्कर वित्तपाल वरुण प्रेताधियादि ग्रहाः ।

प्रद्युम्नो नलकूवरौ सुरगजश्चिन्तामणि कौस्तुभ स्वामी शक्ति धरश्च लांगुलधरः कुर्वन्तु वो मंगलम् ।। ४।

नेत्राणां त्रितय महत्पशुपतेरग्नेस्तु पादत्रयं तत्तद् - विष्णुपदत्रयं त्रिभुवने ख्यातं च रामत्रयम् ।

गंगावाहुपथत्रयं सुविमलंवेदत्रयं ब्राह्मणम् सन्ध्या नां त्रितयं द्विजरभिमत कुर्वन्तवो मंगलम् ।। ५।।

लक्ष्मीः कौस्तुभपारिजातकसुरा धन्वन्तरिश्चन्द्रमा गाव कामदुधा सुरेश्वरगजो रम्भादि देवांगनाः ।

अश्वः सप्तसुखः सुधा हरिंधनुः शंखं विषं चाम्बुजे रत्नानीति चतुर्दशं प्रतिदिन कुर्वन्तु वो मंगलम् ।। ६।।

गौरी श्रीकुल देवता च सुभगा कण्डूसुपर्णा शिवाः सावित्री च सरस्वती च सुरभिः सत्यव्रतारुन्धती ।

स्वाहा जाम्बबती च रुक्मभगिनी दुःस्वप्न विध्वंसिनी बेला चाम्बुनिधे समीननमकरा कुर्वन्तु वो मंगलम् ।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

परस्पर दर्शन–

अब कन्या और वर दोनों ही पृथक्-पृथक् आचमन करें । तदुपरान्त कन्या पिता दोनों से ही कहे–

परस्परं समंजेधाम् (दोनों एक दूसरे को देखो)

यह सुनकर कन्या और वर दोनों परस्पर एक-दूसरे का मुख देखें और उस समय निम्न मन्त्र पढ़े–

ॐ समंजन्तु विश्वेदेवाः समापोहृदयाग्निनौ । स मातरिश्वा सन्धाता समुद्रेष्ट्री दधातु नौ ।।

ग्रन्थि-बन्धन–

अब कन्यादाता (पिता, चाचा आदि कन्या के उत्तरीय के छोर में हरिद्रा की गाँठ, पूगीफली, अक्षत, पुष्प तथा द्रव्य रख कर ग्रन्थि बन्धन करे और उसे वर के उत्तरीय के साथ बाँध दे । इसके बाद कन्या के हाथ पीले करने का कार्य करें । साथ ही वर के हाथ भी पीले किये जाते हैं ।

कन्या और वर के हाथ पीले करने का अभिप्राय उन दोनों को मंगल कार्यों के करते रहने की प्रेरणा करना है क्योंकि हल्दी शुभ और मंगल करने वाली होती है । यथा इसका प्रयोग सभी शुभ कार्यों में किया जाता है ।

ग्रन्थि-बन्धन एवं कन्यादान आदि के कार्यों में कहीं कन्या का पिता ही सभी कार्य करता है ओर कहीं कन्या का पिता और माता दोनों ही सब कार्यों का निर्वाह करते हैं । माता-पिता के अभाव में यह चाचा-चाची या अन्य वृद्ध स्त्री-पुरुष द्वारा कराया जाता है । इस विषय में कुल परम्परा के अनुसार ही करना चाहिए ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हरिद्रा लेपन एवं कन्यादान-

हरिद्रा का लेपन वर-कन्या दोनों के ही हाथों पर करने के पश्चात् निम्न प्रकार से कन्या दान का विधान करना चाहिए ।

यदि कन्या का पिता या अभिभावक पत्नी के सहित कन्या दान का कार्य करे तो वह पत्नी को दाँयी ओर बैठावे उस स्थिति में दोनों का मुख वर से उत्तर की ओर रहे। फिर आचमन आदि करके वर और कन्या के पीले हाथ करें । फिर कन्यादान का निम्न प्रकार संकल्प करें–

कन्यादान का संकल्प–

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु श्रीमद् भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य श्रीब्रह्मणोनि द्वितीय परार्द्धे श्री श्वेत वाराह कल्पे वैवस्वतः मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भूर्लोके भारत वर्षे भरत खंडे मासानां मासोत्तमे (अमुक) मासे (अमुक)पक्षे (अमुक) तिथौ (अमुक) वासरे सुस्नाताया गन्धाद्यर्चिताया वस्त्रयुगच्छन्नाया यथा शक्त्यलंकृतायाः प्रजा पति दैवत्याया (अमुक) नाम्न्या अस्या कन्यायाः शतगुणी कृत ज्योतिष्टोतातिरात्रशतफल प्राप्ति कामः विष्णुरूपिणे वराय······भरणपोषणच्छावन् पालनादीनां स्वकीयोत्तर दायित्वाभारमखिलम तब पत्नीत्वेन तुभ्यमहं प्रददे ।

पाणि ग्रहण–

इसके पश्चात् वर के द्वारा कन्या का पाणि (हाथ) ग्रहण करने का कार्यक्रम होता है । इसमें पिता या अभिभावक कन्या अभिभावकों के द्वारा कन्या वर को समर्पण करना-सौपना है। यह क्रिया वर-

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वधू के भावात्मक रूप से मिलन की प्रतीक होने के कारण अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है ।

उस समय कन्या का अभिभावक एक पात्र में दूध, अक्षत, पुष्प, फल, चंदन, जल आदि लेकर वर के दाँये हाथ में छोड़ता हुआ मन्त्र पढ़ता है–

ॐ यदैषि मनसा दूरं दिशोऽनुपवम्नो वा। हिरण्य-वर्णो वैकर्णः स त्वा मन्मनसां करोतु असौ ।।

तदुपरान्त कन्या का पिता या अभिभावक वर के दांये हाथ में कन्या का हाथ देता हुआ स्वयं या आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करे–

ॐ दाताहं वरुणोराजाद्रव्यमादित्य दैवतम् ।
वरोऽसो विष्णुरूपेण प्रतिगृह्णात्वयं विधि ।।

इस प्रकार पाणि ग्रहण हो जाने के पश्चात् पत्नी के प्रति अपने कर्त्तव्य पालन के सम्बन्ध में वर को विश्वास व्यक्त करना होता है। इस उद्देश्य से वर जिन प्रतिज्ञाओं को करता है, वह कन्या के मन में विश्वास उत्पन्न करने और शंकाएँ दूर करने के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होती हैं । पिता के घर लाड़-प्यार से पली हुई कन्या को यह चिन्ता रहती है कि पतिगृह में उसे न जाने किस प्रकार का व्यवहार मिलेगा और उसकी क्या स्थिति रहेगी ? इस चिन्ता का निराकरण वर द्वारा व्यक्त किये गये वचनों से होता है । इसीलिए आचार्यों ने ऐसी प्रतिज्ञाओं को महत्त्वपूर्ण माना है ।

वर द्वारा प्रतिज्ञाएँ–

वर के द्वारा प्रतिज्ञाएँ करने से पूर्व कन्या का अभिभावक प्रार्थना करता है–

कन्या लक्षण सम्पन्नां कनकाभरणेर्युताम् ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तुभ्यं ददामि हे सौम्य ! ब्रह्मलोकजिगीषया ।।
यस्त्वया धर्मश्चरितः कर्त्तव्याश्चानया सह ।
धर्मे चार्थे च कामे च नातिचर्यात्वया क्वचित् ।।

अर्थात्– हे सौम्य ! तुमको यह स्वर्णलङ्कारादि से विभूषित कन्या धर्माचरण और ब्रह्मलोक की इच्छा करती हुई प्रदान की है। तुम इसके साथ धर्म, अर्थ, काम आदि में कभी अति न करना ।

इसके उत्तर में वर उन्हें विश्वास दिलाता है–

अहं नाति चरिष्यामि तदुक्तं भवता मम ।
धर्मार्थकामकैः कार्ये देहव्छायावच्सदा ।।

अर्थात्– आपके कहे अनुसार में कभी अति का आचरण नहीं करूँगा तथा धर्म, अर्थ, कामादि में सदा छाया के समान रखूँगा ।

उसके पश्चात् कन्या को भी विश्वास दिलाने के लिए वर निम्न प्रतिज्ञाएँ करता है–

धर्मपत्नि ! मिलित्वैवं ह्येकं जीवनभावयो ।
अद्यारम्भ यतो मे त्वं अर्द्धाङ्गिनीति घोषिताः ।।
स्वीकरोमि सुखेन त्वां गृहलक्ष्मीमहन्ततः ।
मन्त्रयित्वा विधास्यामि सुकार्याणि त्वया सह ।।
देवाऽग्नि सन्मनुष्याणाँ सन्निधये कृत निश्चय ।
त्वां प्रत्यहं भविष्यामि सहिष्णु मृदुलस्तथा ।
भवत्यामसमर्थायां विमुखायाञ्चं कर्मणि ।
विश्वासं सहयोगञ्च मम प्राप्स्यसि त्वं सदा ।।
मधुरां प्रेम संयुक्तां वार्ता सत्यव्यवहृतिम् ।
दृढ़ पत्नीव्रतमेकं वत्तं में तव सन्निधो ।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गृहस्यार्थ व्यवस्थायां मन्त्रायित्वा त्वया सह।
संचालनं करिष्यामि गृहस्थोचित जीवनम् ।
यत्नशीलो भविष्यामि सन्मार्ग सेवितुं सदा।
आवयो मतभेदांश्च दोषान् संशोध्य शान्तितः।।

अर्थात्– हे धर्मपत्नी! अब से हम दोनों मिलकर एक हो गए हैं। क्योंकि तुम मेरी अर्द्धांगिनी के रूप में घोषित हो चुकी हो। मैं तुम्हें गृहलक्ष्मी के महत्त्वपूर्ण रूप से स्वीकार करता हुआ निश्चय करता हूँ कि तुम्हारे परामर्श से ही सदैव सब कार्य किया करूँगा। देवता अग्नि और सब उपस्थित सत्पुरुषों के आगे दृढ़ निश्चय पूर्वक कहता हूँ कि मैं तुम्हारे प्रति सदैव सहनशील और कोमल रहूँगा। यदि तुम असमर्थ होगी या कर्त्तव्य विमुख होगी तब भी तुम मेरा विश्वास और सहयोग सदैव प्राप्त करती रहोगी। इसलिए तुम मेरी प्रेम युक्त मीठी बातें सत्य व्यवहार तथा स्थिर पत्नीव्रत को सदा प्राप्त करोगी, तुम्हारे निकट में यह वचन देता हूँ। मैं घर की अर्थ-व्यवस्था के सम्बन्ध में सदा तुम्हारे साथ मन्त्रणा करता हुआ गृहस्थोचित जीवन चलाता रहूँगा। यदि मेरे तुम्हारे मध्य में कोई मत भेद भी होंगे तथा कोई दोष भी दिखाई देंगे तो उनका निराकरण शान्ति पूर्वक करता हुआ सदैव सन्मार्ग पर चलने का प्रयत्न करूँगा।

शाखोच्चार–

इसके पश्चात् वर पक्ष और कन्या पक्ष के पण्डित जन मंगल पाठ करने के पश्चात् शाखोच्चार करें। मंगल पाठ का श्लोक–

ॐ श्रीमत्पंकविष्टरौ हरिहरौ वायुर्महेन्द्रोऽनल-
श्चन्द्रोभास्करवित्तपाल वरुणा प्रेताधिपाद्याग्रहाः।
प्रद्युम्नोनलकूबरौसुरगश्चिंतामणिः कौस्तुभः

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्वामीशक्तिधरश्चलांगलधरः कुरुवन्तुवो मङ्गलम् ।।१।।

ब्रह्मा देवपति शिव पशुपतिः सूर्योग्रहाणांपति शक्रौदेवपतिविर्हतपति स्कन्दश्च सेनापतिः ।

विंष्णुर्यज्ञपतिर्यमः पितृपतिः शक्तिः पतीनांपतिः सर्वेतेपयतः सुमेरु सहिताः कुर्वन्तु वो मङ्गलम् ।।२।।

अब क्रमशः वर पक्ष और कन्या पक्ष के पण्डितजन अपने-अपने पक्ष के गोत्रों का उच्चारण करे । उसकी विधि निम्न प्रकार है–

वर पक्ष–अमुक गोत्रस्यामुकप्रवरस्यामुकवेदिनोऽमुकशाखिनोऽमुकसूत्रिणोऽमुकशर्मणः प्रपौत्राय। अमुक गोत्रस्य। अमुक प्रवरस्या अमुक वेदिनोअमुक शाचिनोऽमुकसूत्रिणोऽमुक शर्मणः पौत्राय। अमुक गोत्रस्य। अमुक प्रवरस्य अमुक वेदिनो अमुक शाखिनो अमुक सूत्रिणो अमुक शर्मणः पुत्राय।

कन्यापक्ष–अमुक गोत्रस्य अमुक प्रवरस्य अमुक वेदिनो अमुक शाखिनो अमुक सूत्रिणो अमुक शर्मणः प्रपौत्रीम् । अमुक गोत्रस्य अमुक प्रवरस्य अमुक वेदिनो अमुक शाखिनो अमुक सूत्रिणो अमुक शर्मणः पौत्रीम् । अमुक गोत्रस्य अमुक प्रवरस्य अमुक वेदिनो अमुक शाखिनो अमुक सूत्रिणो अमुक शर्मणः पुत्रीम् ।

यदि वर ब्राह्मण हो तो उक्त प्रकार से शाखा और गोत्रादि भी उच्चारण करना चाहिए । किन्तु ब्राह्मणेत्तर (क्षत्रिय या वैश्य) हो तो उनमें अनुरूप शाखोच्चार होना चाहिए । वर्तमान समय में अनेक पण्डित सामान्य वाक्यों द्वारा ही प्रथा पूर्ण करते हैं । वह

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस प्रकार–

वरपक्ष–अमुक गोत्रस्य अमुक वर्मणः या अमुक गुप्तस्य प्रपौत्राय, पौत्राय या पुत्राय।

कन्यापक्ष–अमुक गोत्रस्या अमुक वर्मणः या अमुक गुप्तस्य प्रपौत्रीम् : पौत्रीम् या पुत्रीम् ।

शाखोच्चार के अन्त में देश-काल कहकर निम्न संकल्प करना चाहिए–

अमुकगोत्रोत्पन्नां अमुक नाम्नी श्री रूपिणीं यथाशक्त्यलंकृतामुपकल्पितोपस्कार सहितामिमां कन्यां प्रजापति दैवत्यां सवर्गकामः पत्नीं त्वेन तुभ्यमहं संप्रददे।

संकल्प के पश्चात् वर ॐ 'स्वस्ति' कहे और फिर निम्न मन्त्र का उच्चारण करे –

ॐ द्योस्त्वाददातु पृथिवी त्वा प्रतिगृह्णातु।

इसके पश्चात् कन्या का पिता यथा शक्ति स्वर्ण, रौप्य, भूमि, गाय बैल आदि कन्यादान को दक्षिणा में देते हुये निम्न प्रकार संकल्प करे–

ॐ अद्यकृततत्कन्यादान प्रतिष्ठार्थमिदं यथाशक्ति सवर्ण रौप्य, भूमि देवतामुक गोत्राय अमुक......... वराय दक्षिणाँ तुभ्यमहं सम्प्रददे।

उक्त संकल्प में उसी वस्तु का उच्चारण करे जो वर को दी जाय। तब वर 'ॐ स्वस्ति' कहकर दक्षिणा स्वीकार करता हुआ निम्न वाक्य कहे–

ॐ कोदात्कस्मा अदात्कमीदात्कामायादात् । कामोदाता कामः प्रतिग्रहीता कामैतत्ते ।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दश महादान-

शास्त्रों में कन्यादान के अनन्तर दश प्रकार के महादानों का उल्लेख किया है, यथा-

कन्यार्थे कनकं धेनुर्दासीरथ महागृहाः।
महिष्यश्वगजा शय्या महानादि वै दश।

अर्थात्-कन्या के लिए दिये जाने वाले दश दान स्वर्ण, गाय, दासी, रथ, भूमि, भवन, भैंस, अश्व, हाथी और शय्या हैं।

परन्तु यह सभी दान कन्यादाता को अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार करने चाहिए। यह आवश्यक नहीं कि यह सब दान किये ही जाँय। क्योंकि ज़ो लोग अधिक धन-सम्पत्ति से सम्पन्न हों वे ही अधिक मूल्य के दान देने के लिए शक्य हो सकते हैं।

विवाह संस्कारार्थ होम-

दान ग्रहण के पश्चात् वर कन्या का दांया हाथ पकड़कर उसे मण्डप के निकट लाता हुआ निम्न मन्त्र पढ़े-

ॐ यदैषि मनसादूर दिशोनुपवमानोवा। हिरण्यपर्णो वै कर्णः सत्वामन्मनसां करोतु।

उक्त मन्त्र के अन्त में कन्या का नाम (अमुक देवी) उच्चारण करे। इस समय वेदी से दक्षिण की ओर कोई मनुष्य जल का भरा हुआ कलश लिये हुए खड़ा हो जाय। वर्तमान समय में कहीं-कहीं यह कलश किसी काष्ठ की पवित्र तिपाई आदि पर स्थापित कर देते हैं। अभिषेक के कार्य में इसी कलश का जल प्रयोग में लाया जाता है।

अब कन्या का अभिभावक कहे-'परस्पर समीक्षेयाम् इस पर वर निम्न चार मन्त्रों को पढ़े-

ॐ भेघोरचक्षुरपतिध्न्येधि शिवाः पशुभ्यः सुमनाः

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुवर्चाः । वीरसूर्देवकामास्योनाशन्नोभवद्विपदेशं चतुष्पदेः ।। १।।

ॐ सोमः प्रथमोविविदे गन्धर्वोविविद उत्तरः। तृतीयो अग्निष्ठे पतिस्तुरीयस्तेमनुस्यजाः ।। २।।

ॐ सोमो दददगन्धर्वाय गन्धर्वो दददग्नये। रयिं च पुत्रांश्चादादग्निर्मह्यमथो इमाम् ।। ३।।

ॐ सा नः पूषा शिवतमामेरय सा नउरू उशतीविहर । यस्यामुशन्तः प्रहरामशेफंयस्यामुकामावहवो निविष्टयै ।।४।।

उक्त मन्त्रों को जब वर पढ़ चुके तब वर और कन्या परस्पर एक-दूसरे को देखे । फिर यजमान अग्नि की प्रदक्षिणा करके तृणों की पूली पर पाँव रखकर अग्नि से पश्चिम की ओर बैठे तथा वर को अपने से दक्षिण में बैठावे । तृणों की पूली किसी चीरेदार अँगोछे द्वारा लपेटी हुई रखी जाय ।

अब वर वैवाहिक होम का संकल्प करने के लिए निम्न प्रकार से संकल्प मन्त्र का उच्चारण देश-काल कीर्तन के पश्चात् करें—

प्रतिग्रहीताया अस्या भार्यायाः पत्नीत्व सिद्ध ये वैवाहिक होमं करिष्ये ।

ब्रह्मा का वरण—

इस प्रकार संकल्प करके वर हाथ में पुष्प, चन्दन, ताम्बूल और वस्त्र लेकर ब्रह्मा का वरण करने के लिए निम्न प्रकारेण संकल्प करे—

ॐ अद्य कर्त्तव्य विवाह होमकर्मणि कृताकृतावेक्षण रूप ब्रह्मकर्म कर्तुममुकगोत्रमुक शर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्प

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चन्दन ताम्बूल वासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे ।

इसके उत्तर में 'ॐ व्रतोऽस्मि' कहे । तब वर उसे कर्म करने की कहे–'यथा विहितं कर्म कुरु' इस पर ब्रह्मा कहे–'करवाणि' अर्थात् करता हूँ।

फिर अग्नि से दक्षिण की ओर श्रेष्ठ आसन बिछा कर पूर्व की ओर अग्र भाग देखते हुए कुश बिछावे और ब्रह्मा को अग्नि की प्रदक्षिणा कराके अग्नि से पूर्व की ओर लाकर कहे–त्वं मे ब्रह्मा भवेत्' इसके उत्तर में ब्रह्मा 'भवानि' कहे । तब उसे उत्तर की ओर मुख करके आसन पर बैठावें ।

अब पुष्प, चन्दन, ताम्बूल और वस्त्र हाथ में लेकर आचार्य का वरण करता हुआ निम्न संकल्प करें–

ॐ अद्य कर्त्तव्य विवाह होम कर्मणि कृताकृतावेक्षणः रूपाचार्य कर्मकृतमुक गोत्रममुक शर्माणं ब्राह्मण-मेभिः पुष्पचन्दनताम्बूल वासोभिः आचार्य त्वेन त्वामहं वृणे ।

इसके उत्तर में आचार्य 'ॐ वृतोऽस्मि' कहे । तब प्रणीता पात्र को आगे रखकर जल भरे ओर उसे कुशों से ढक दें । तथा ब्रह्मा की ओर देख कर अग्नि से उत्तर की ओर कुशों पर स्थापन करे ।

फिर परिस्तरण नामक अग्नि के सब ओर कुश बिछाकर अग्नि से उत्तर में पश्चिम से पूर्व की ओर पात्रासादन करे । पवित्र खेदनार्थ तीन कुश, पवित्र करणार्थ दो कुश, प्रोक्षणी पात्र आज्यस्थाली, सम्मार्जन तीन कुश, उपयमन तीन कुश, तीन समिधा, स्रुवां, आज्य, २५६ मुट्ठी चावल का पूर्ण पात्र, यह सब पवित्रछेदनार्थ कुशों से पूर्व-पूर्व ओर रखे । उनसे पूर्व में शमीपत्रयुक्त लाजा, शिला, कन्या का भाई, सूर्य, जल का पूर्ण कलश तथा आचार्य दक्षिणा आदि रहें ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अब छेदनार्थ तीन कुशों से पवित्र कुशों का छेदन करके पवित्र युक्त दाँये हाथ प्रणीतास्थ जल की प्रोक्षणी में तीन बार करे। फिर अनामिक-अंगुष्ठ के योग से उत्तर की ओर अग्र भाग वाले पवित्रों को पकड़ कर प्रोक्षणीस्थ जल का तीन बार उत्पवन करे।

तदुपरान्त प्रोक्षणी को बाँए हाथ में उठाकर दाँए हाथ से तीन बार उदंगिन करे तथा प्रोक्षणी में पहिले डाले हुए प्रणीता के जल से सभी रखे हुए पदार्थों का क्रमशः सेचन करना चाहिए । उसके बाद प्रोक्षणी को प्रणीता और अग्नि के मध्य में रखे तथा घृत पात्र से आज्य स्थाली में घृत निकाल कर तपने के लिए अग्नि कुण्ड में रख दे तथा सूखे कृश घृत के सब ओर घुमाकर जलते हुए ही अग्नि में डाल दे ।

फिर स्रुवा को तपाकर सम्मार्जन कुशों से भीतर से स्वच्छ कर तथा कुश मूल से बाहर की ओर स्वच्छ करके प्रणीतास्थ कर तथा कुश मूल से बाहर की ओर स्वच्छ करके प्रणीतास्थ सेचन कर और पुनः तपाकर अग्नि से दक्षिण की ओर रख दे । तब अग्नि से घृत को उतार कर देखे कि उसमें कुछ पड़ा तो नहीं है । पड़ा हो तो निकाल दे । फिर प्रोक्षणी का उत्पवन करके बाँए हाथ में उपयमन कुश लेकर प्रजापति के ध्यान पूर्वक तीन घृताक्त समिधाएँ एक-एक कर होम दे ।

तदुपरान्त बैठकर पवित्र सहित ईशान से उत्तर दिशा पर्यन्त प्रोक्षणीस्थ जल से अग्नि से सब ओर पर्युक्षण करे तथा प्रणीतापात्र में पवित्रे रखे और बाएँ घुटने को धरती पर टिकाकर कुश के द्वारा ब्रह्मा से अन्वारब्धित वर घृत की आहुति स्रुवा के द्वारा दे । आहुति से शेष बचीं घृत की बूँदें प्रोक्षणी पात्र में डालता रहे । आधार से लेकर चौदह आहुतियाँ दी जाती हैं । उस समय आचार्य मन्त्रों का उच्चारण करे–

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम। इति मनसा।

ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय न मम।। इत्याधारौ।

ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये न मम।

ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय न मम।।

ॐ भूः स्वाहा। इदमग्नये न मम।।

ॐ भुवः स्वाहा। इदं वायवे न मम।

ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय न मम।।

प्रथम आहुति प्रजापति का मन से ध्यान करते हुए छोड़नी चाहिए। 'स्वाहा' पद का उच्चारण स्पष्ट रूप से किया जाय। आधार की दो, आज्य भाग की दो और तीन व्याहृतियों की आहुतियाँ उक्त मन्त्रोच्चार के साथ दी जाँय। तदनन्तर पाँच आहुतियाँ सर्व प्रायश्चित्त की तथा उनके बाद में प्राजापत्य और स्विष्टकृत की दो आहुतियाँ देनी चाहिए –

ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषांꣳसिप्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा।। इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम।। १।।

ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमोभवोतीनेदिष्टो अस्य उषमोव्युष्टौ। अवयक्ष्वनोवरुण ꣳरराणोर्व्वीहिमृडीक ꣳसुहवोन एधि स्वाहा। इदमग्नी वरुणाभ्यां न मम।। २।।

ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमया

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

असि। अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजꣳस्वाहा । इदमग्नये न मम ।। ३।।

ॐ ये ते शतं वरुणये सहस्रं यज्ञियाः पाशावितता महान्तः ते भिर्नो अद्यसवितोत विष्णुर्विंश्वेमञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा ।। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ।। ४।।

ॐ उदुत्तमं वरुणापाशमस्मद्वाधमं विमध्यमꣳश्रथाय अथाव्वयमादित्य व्रतेतवानाग सो अदितये स्याम स्वाहा। इदं वरुणाय न मम ।। ५ ।।

उक्त पाँच आहुतियाँ प्रायश्चित्त की हुई, अब नीचे प्राजापत्य और स्विष्टकृत की दो आहुतियाँ लिखी जाती है–

स्विष्टकृत होम-मंत्र–

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम ।।

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते न मम् ।

राष्ट्र भृतहोम की आहुतियाँ–

ॐ ऋताषाड् ऋतमाग्मिगन्धर्वः सनऽइदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहावाट् । इदमृताषाहे ऋतधाम्नेऽग्नयेगन्धर्वाय न मम ।। १।।

ॐ ऋताषाड् ऋतधामाग्निर्नन्धर्वस्तस्यौर्षधयोप्सरसोमुदोनामताभ्यः स्वाहा। इदमौषधिभ्योऽप्सहोभ्योमुदभ्यो न मम ।। २।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ सꣳहितौविश्व सामासूर्यो गन्धर्वः सन इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् । इदं स हिताय विश्वसाम्ने सूर्याय गन्धर्वाय न मम ।। ३।।

ॐ ꣳसहितौविश्वसामासूर्यो गन्धर्वस्तस्यमरीचयो ऽप्सरस आयुवोनामताभ्यः स्वाहा। इदमरीचिभ्यो-ऽप्सरोभ्य आयुभ्यो न मम ।। ४।।

ॐ सुषुम्णः सूर्यरश्मिश्चन्द्रमागन्धर्वः स न इदं क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् । इदं सुषुम्णाय सूर्यरश्मये चन्द्रमसे गन्धर्वाय न मम ।। ५।।

ॐ सुषुम्णः सूर्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्वस्तस्य नक्षत्राण्यप्सरसो भेकुरयोनामताभ्यः स्वाहा । इदं नक्षत्रेभ्यो ऽप्सरोभ्यो भेकुरिभ्यो न मम ।। ६।।

ॐ इषिरोविश्वव्यचावातोगन्धर्वः सनइदं ब्रह्मक्षत्रं पातुतस्मै स्वाहा वाट् । इदमिषिराये विश्वव्यचसेवा-ताय गन्धर्वाय न मम ।। ७।।

ॐ इषिरोविश्वव्यचा वातो गन्धर्वस्तस्यापो ऽप्सरस ऊर्जोनामताभ्यः स्वाहा। इदमद्भ्यो ऽप्सरसोभ्य ऊर्ग्भ्यः न मम ।। ८।।

ॐ भुज्यः सुपर्णो यज्ञोगन्धर्वः सन इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् । इदं भुज्यवे सुपर्णाय यज्ञाय गन्धर्वाय न मम् ।।९।।

ॐ भुज्यः सुपर्णो यज्ञोगन्धर्वस्मस्य दक्षिणा अप्सर-

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सस्त वानाय ताभ्यः स्वाहा । इदं दक्षिणाक्ष्यो ऽप्स-रोभ्यस्तावाभ्यो न मम ।। १० ।।

ॐ प्रजापति विश्वकर्मामनो गन्धर्वः सन इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् । इदं प्रजापतये विश्वकर्मणे मनसे गन्धर्वाय न मम ।। ११।।

ॐ प्रजापतिर्विश्वकर्मा मनोगन्धर्वस्तस्य ऋक्-सामान्यप्सरस एष्टयो नामताभ्यः स्वाहा । इद-मृक्सामभ्यो ऽप्सरोभ्य एष्टिभ्यो न मम ।। १२।।

इस प्रकार राष्ट्रभृत नामक बारह आहुतियाँ देने के पश्चात् जया होम को निम्न तेरह आहुतियाँ देनी चाहिए–

जया होम की आहुतियाँ-

ॐ चित्तं च स्वाहा । इदं चित्ताय न मम ।। १।।

ॐ चित्तिश्च स्वाहा । इदं चित्यै न मम ।। २।।

ॐ आकूतं च स्वाहा । इदमाकृत्यै न मम ।। ३।।

ॐ आकूतिश्च स्वाहा । इदमाकूत्यै न मम ।।४।।

ॐ विज्ञातं स्वाहा । इदं विज्ञाताय न मम ।।५।।

ॐ विज्ञातिश्च स्वाहा । इदं विज्ञात्यै न मम।।६।।

ॐ मनश्च-स्वाहा । इदं मनसे न मम ।। ७।।

ॐ शक्करीश्च स्वाहा । इदं शर्करीभ्यो न मम ।।८।।

ॐ दर्शश्च स्वाहा । इदं दर्शाय न मम ।। ९।।

ॐ पौर्णमासाय च स्वाहा । इदं पौर्णमासाय न मम ।। १०।।

ॐ वृहच्च स्वाहा । इदं वृहते न मम ।। ११।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ रथन्तं च स्वाहा। इदं रथन्तराय न मम।। १२।।
ॐ प्रजापतिर्जयानिन्द्राय वृष्णे प्रायच्छदुग्रः पृतना जयेषु।
तस्मैविशः समनमन्तु सर्माः स उग्रः स इह व्योवभूव स्वाहा।
इदं प्रजापतये जयानिन्द्राय न मम।। १३।।

उक्त तेरह आहुतियों के पश्चात् आभ्यातान होम की अठारह आहुतियाँ निम्न मंत्रों से देनी चाहिए–

आभ्यातान होम-मन्त्र–

ॐ अग्निभूतानामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या स्वाहा। इदमग्नये भूतानामधिपतये न मम।। १।।

ॐ इन्द्रोग्ज्येष्ठानामधिपतिः समाऽवत्वस्थिन्ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्या स्वाहा। इदमिन्द्राय ज्येष्ठानामधिपतये न मम।। २।।

ॐ यमः पृथिव्या अधिपतिः स माऽवत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्या स्वाहा। इदं यमाय पृथिव्या अधिपतये न मम।। ३।। (अत्र प्रणीतोदक स्पर्शः)

ॐ वायुरन्तरिक्षस्याधिपतिः समास्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्या स्वाहा। इदं वायवेऽन्तरिक्षस्याधिपतये न मम।। ४।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ सूर्यो दिवोधिपतिः समावस्वस्मिन्ब्रह्मष्यस्मिन्क्षत्रे ऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्या स्वाहा। इदं सूर्याय दिवोऽधिपतये न मम ।। ५।।

ॐ चन्द्रमा नक्षत्राणामधिपतिः समावस्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षेत्रऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोवायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या स्वाहा। इदं चन्द्रमसे नक्षत्राणामधिपतये न मम ।। ६।।

ॐ बृहस्पति ब्रह्मणोधिपर्तिः समावस्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रोस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ᳪ स्वाहा । इदं बृहस्पतये ब्रह्मणाधिपतये न मम ।। ७।।

ॐ मित्रः सत्यानामर्धिपतिः समावस्वस्मिन्ब्रह्मण्य स्मिन्क्षत्रे ऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायास्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्याᳪस्वाहा। इदं मित्रायत्यानामधिपतये न मम ।। ८।।

ॐ वरुणोऽपामधिपतिः समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्या स्वाहा। इदं वरुणायापामधिपतये न मम ।। ९।।

ॐ समुद्रः स्रोत्यानामधिपतिः समदत्वास्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्या स्वाहा । इदं समुद्रायस्रोत्यानामाधिपतये न मम ।। १०।।

ॐ अन्न साम्राज्यानामधिपतिः समावत्वस्मि-

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

न्ब्रह्मण्य स्मिन्क्षत्रे ऽस्यामाशिष्यां पुरो धायामस्मिन्कर्मण्य-स्यां देवहूत्या ७ स्वाहा। इदमन्नाय साम्राज्यानाम-धिपतये न मम ।।११।।

ॐ सोम ओषधीनामधिपतिः समावत्वस्मिन्ब्रह्म-ण्यस्मिन्क्षत्रे ऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्या ७ स्वाहा। इदं सोमायौषधीनामधिपतये न मम ।। १२।।

ॐ सविता प्रसवा प्रसवानामाधिपतिः समावत्व-स्मिन्ब्रह्मष्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मि-न्कर्मण्यस्यां देवहूत्या स्वाहा। इदं सवित्रे प्रसवाना-मधिपतये न मम ।। १३।।

ॐ रुद्रः पशूनामधिपतिः समावत्वस्मिन्ब्रह्म-ण्यस्मिन्क्षत्रे ऽस्यामा शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्या स्वाहा। इदं सवित्रे प्रसवानामधिपतये न मम ।। १४।।

ॐ रुद्रः पशूनामधिपतिः समावत्व-स्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रे ऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधा-यामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्या स्वाहा। इदं रुद्राय पशुनामाधिपतये नमम ।। १५।।

(अत्र प्रणीतोदक स्पर्श,)

ॐ त्वष्टारूपाणामांधिपतिः समावत्वस्मिन्ब्रह्म यस्मिन्क्षत्रे ऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देवहूत्यां स्वाहा। इदं त्वष्ट्रे रूपाणामधिपतये न मम।। १६।।

ॐ विष्णुः पर्वतानामाधिपतिः समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्य-स्मि न्क्षित्रे ऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या स्वाहा। इदं विष्णवे पर्वतानामाधिपतये न मम।। १७।।

ॐ मरुतोगणानामधिपतयस्यमावन्त्वस्मिन्ब्रह्मण्य-स्मिन्क्षत्रे ऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्या स्वाहा। इदं मरुद्भ्यो गणानामाधिपतिभ्यो न मम।। १८।।

ॐ पितरः पितामहाः परेववे ततास्ततामहाइहमावन्त्व - स्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रे ऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायाम-स्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्या स्वाहा। इदं पितृभ्यः पितामहे-भ्यः परेभ्यो वरेभ्यस्ततेभ्यस्ततामहेभ्यो न मम।। १६।।

अब प्रणीतास्थ जल का स्पर्श करने के पश्चात् निम्न मन्त्रों से आहुतियाँ देनी चाहिए—

ॐ अग्निरैते प्रथमो देवतानां ॐ सौऽस्यै प्रजांमु-ञ्चतुमृत्युपाशात्। तदय ॐ राजावरुणोऽनुमन्यतां यथेय ॐ स्त्रीपौत्रामघं न रोदात् स्वाहा। इदमग्नये इदं न मम।। १।।

ॐ इमामग्निस्त्रायतां गार्हपत्यः प्रजामस्यै नयतु दीर्घमायुः अशून्योपस्था जीवतामस्तु माता पौत्रमानन्दम-भिविवुध्यतामिवॐस्वाहा।। इदमग्नये इदं न मम।। २।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ स्वस्तिनोऽग्ने दिवा पृथिव्या विश्वानि धेह्ययथा यजत्र। यदस्यांमहिदिवि जातं प्रशस्तं तद्स्मासु द्रविणं धेहि चित्र ७ स्वाहा। इदमग्नये इदं न मम ।। ३।।

ॐ सुगन्नु पन्थां प्रदिशन्न एहि ज्योतिष्मध्ये ह्यजरन्न आयुः। अपैतु मृत्युरमृतं नआगाद् वैवस्वतो नो अभयं कणोतु स्वाहा। इदं वैवस्वताय न मम ।। ४।।

यहाँ प्रणीतोदक का स्पर्श करे। तदुपरान्त निम्न मन्त्र से आहुति दें–

ॐ परमृत्यो अन्तुपरेहि पन्थ यस्ते अन्य इतरो देवयानात्। चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजा ७रीरिषोमोत वीरान्स्वाहा ।। इदं मृत्यवे न मम ।।

उक्त 'परंमृत्यो' इत्यादि आहुति के समय वधू को पर्दा में कर देने का निर्देश है। इस आहुति को कहीं-कहीं संस्त्रय प्राशन कर्म के अन्त में देते हैं।

इस प्रकार स्विष्टकृत पर्यन्त १४, राष्ट्रभृत १२ जया की १३ अभ्यातान की १८ तथा ५ अन्य, कुल मिला कर ६२ आहुतियाँ दी जाती हैं उक्त ६२ आहुतियाँ विवाह विषय होम में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मानी जाती हैं। यह भी विवाह संस्कार का एक आवश्यक अंग समझा जाता हैं।

लाजाहोम के मन्त्र वधू के द्वारा बोले जाते हैं। उनमें वधू यह प्रतिज्ञा लेती है कि वह परमेश्वर के विधि-विधान को स्वीकार करती हुई पिता का घर छोड़कर पतिगृह में जाने के लिए प्रस्तुत है। वह अपने पति के दीर्घ आयुष्य होने तथा पितृगृह और पतिगृह दोनों के धन-धान्य से परिपूर्ण रहने की कामना करती हैं तथा पति से निवेदन करती है कि मैं यह लाजाहोम आपको समृद्धि, पारस्परिक

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रेमवृद्धि और सदा साथ रहने की भावना के साथ करती हूँ ।

इस क्रिया में वधू का भाई होम के लिए लाजा सोंपता है । इसका अभिप्राय यह है कि भाई इस बात का आश्वासन देता है, कि वह बहिन का सदा आदर सत्कार करता रहेगा और आवश्यक होने पर उसकी सहायता में तत्पर रहेगा ।

लाजाहोम-

लाजाहोम में वधू के द्वारा तीन आहुतियाँ दी जाती हैं । इसके लिए वर और वधू पूर्व की ओर मुख करके खड़े हों तथा वधू कुछ आगे रहे और वधू का भाई वर की अञ्जली पर लगी हुई बधू की अञ्जली में घृत मिश्रित सभी पत्रों से युक्त लाजा एक-एक करके तीन बार भरे । नीचे लिखे तीन मन्त्रों को वधू स्वयं पढ़े तथा प्रत्येक मन्त्र के अन्त में वधू के हाथ से तृतीयाँश लाजा की आहुति वर स्वयं छुड़ावे अर्थात् वर वधू को लाजाहोम में सहारा दे । त्याग वाक्य भी वधू स्वयं बोले–

ॐ अर्यमणंदेवं कन्या अग्निमयक्षत । सो नोऽअर्यमा देवः प्रेतो मुञ्चतुपापतेः स्वाहा। इदमर्यम्णे देवाय न मम ।। १।।

ॐ इयं नार्युपब्रूतेलाजानापवन्तिका। आयुष्मानस्तु से पतिरेधन्तां ज्ञातयो मम स्वाहा। इदमग्नये न मम ।। २।।

ॐ इमांल्लाजानावपाभ्यग्नौसमृद्धिकरणं तव। मम तुभ्यं च मंवचनन्तदग्निरनुमन्यतामय स्वाहा। इदमग्नये न मम ।। ३।।

तदुपरान्त वर वधू के दाँये हाथ को अंगुष्ठ सहित पकड़ कर

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

निम्न मन्त्रों का उच्चारण करे—

ॐ गृभ्णामि ते सोभगत्वाय हस्त मया पत्या जरदष्टिर्यथासः भगो अर्यम सविता पुरन्धिर्मह्यं त्वा दुर्गार्हपत्याय देवाः ।। १।।

ॐ अमोऽहमस्मि सा त्वाथ्ठसा त्वमस्यमोऽहम् । सामहमस्मिं ऋक्त्वं द्यौरह पृथवीत्वम् ।। तावेव विबहावहै सहरेतो दधावहै । प्रजां प्रजनायावहै पुत्रान्विदावहै बहून । ते जरिदष्टयः संप्रियो रोचिष्णू सुमनस्मानौ । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं ठ्ठश्णुयाम शरदः शतात् ।।

प्रदक्षिणा—

लाजा होम के समय वर पीछे और वधू आगे रहकर प्रदक्षिणा करे । प्रथम प्रथम प्रदक्षिणा के बाद तीन बार 'ॐ अर्यमण' इत्यादि मन्त्रों से लाजा होम करना चाहिए । प्रत्येक होम के लिए लाजा वधू का भाई ही देता है । यदि वधू का भाई न हो तो भाई का स्थान पर (चाचा, ताऊ, मामा, बुआ, का लड़का या कोई अन्य रिश्तेदार लड़का जो वधू का भाई तुल्य हो) इस कार्य को करे ।

लाजा की तीन आहुतियों के वधू आगे हो और उस समय निम्न मन्त्र बोला जाय—

ॐ तुभ्यमग्ने पर्यवहन्त्सूर्यां वहतु ना सह । पुनः पतिभ्यो जायदाग्ने प्रजा सह ।।

इस मन्त्र से दूसरी प्रदक्षिणा पूरी होने पर पुनः 'ॐ अर्यमणं' इत्यादि मन्त्रों से तीन बार लाजाहोम के बाद तीसरी प्रदक्षिणा पुनः उक्त 'ॐ तुभ्यमग्ने' इत्यादि मन्त्र बोलते हुए करे तथा प्रदक्षिणा के

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अन्त में पुनः 'ॐ अर्यमण' आदि मन्त्रों से लाजा की तीन आहुतियाँ देनी चाहिए ।

इस प्रकार उक्त तीन प्रदक्षिणाओं में नौ बार लाजा होम और तीन बार शिला रोहण भी हो जाती है । शिला (पत्थर) तीनों प्रदक्षिणाओं में यथा स्थान (वेदी के उत्तर में) पर रखा रहता है । उस शिला पर पाँव रखते हुए वधू प्रत्येक प्रदक्षिणा में वर के आगे रहती है । उस समय वर अपने बाँये हाथ से वधू का दाँया पांव रखता है ।

शिलारोहण–

यह प्रथा सहिष्णुता की प्रतीक है । इससे यह आभास होता है कि वधू हर प्रकार की कठिनाइयों में भी नहीं घबरायेगी । इसमें वधू का पाँव वर के द्वारा रखाने का अभिप्राय यह है कि सभी प्रकार के धर्म-पालन में वर उसकी सहायता करता रहेगा । इस समय वधू का पाँव पत्थर पर रखाता हुआ वर निम्न मन्त्र का उच्चारण करे–

ॐ आरोहेममश्मानमश्मेव । त्व ७ स्थिरा भव ।
अभितिष्ठ पृतन्यतोऽवबाधस्व पृतनायतः ।।

फिर ज्यों ही वधू शिला पर पाँव रखे त्यों ही वर निम्न मन्त्र पढ़े–

ॐ सरस्वतिप्रेदमव सुभगे वाजिनीव्रता ।
यां त्वा विश्वस्य भूतस्य प्रजायामस्याग्रतः ।।
यस्यांभूत समभवद्यस्यां विश्वमिदं जगत् ।
मामद्यगाथा गास्यामिया स्त्रीणामुत्तमंयशः ।।

इसके पश्चात् जो प्रदक्षिणा की जाय, उस समय उक्त 'ॐ तुभ्यमग्ने' इत्यादि मन्त्र का उच्चारण करना चाहिए । वधू आगे और पीछे चलता हुआ वर 'ॐ तुभ्यमग्ने' आदि मन्त्र बोलता चले ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

फिर अग्नि से पश्चिम में वर और वधू पूर्व की ओर मुख करके खड़े हों । तीसरी परिक्रमा के पश्चात् वधू का भाई शेष लाजाओं को अपनी बहिन की अञ्जली में डाल दें ।

तब वधू चलती हुई निम्न मन्त्र से सब लाजाओं को एक बार में ही अग्नि में छोड़ दें—

ॐ भगाय स्वाहा । इदं भगाय न मम ।

अब आगे वधू और पीछे वर चलते हुए चौथी परिक्रमा बिना मन्त्र के ही करें । शास्त्र-विधानानुसार चार प्रदक्षिणा करना विहित है, किन्तु लोकाचार के साथ परिक्रमाएँ की जाती हैं । उस चार परिक्रमाओं के पश्चात् अगली तीन परिक्रमाएँ वधू पीछे और वर आगे कर करें । सातवीं परिक्रमा सप्तपदी के समय होकर पैरों का कार्य सम्पन्न हो जाता है ।

सप्तपदी—

सप्तपदी में वर-वधू सात कदम एक साथ चलते हैं । इसका अभिप्राय जीवन में साथ-साथ चलने की प्रतिज्ञा करना है । प्रथम दांया पाँव बढ़ायें और फिर बांया । इसमें भी वर पीछे और कन्या आगे रहती है । प्रत्येक कदम पर निम्न एक-एक मन्त्र बोलना चाहिए ।

ॐ इषे एकपदी भव सा ममानुव्रता भव विष्णुनयतु पुत्रान् विन्दावहै वहूँस्ते सन्तु जरदष्टयः ।। १।।

ॐ ऊर्जे द्विपदी भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै बहूँस्ते सन्तु जरदष्टयः ।। २।।

ॐ रायस्पोषाय त्रिपदी भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै बहूँस्ते सन्तु जरदष्टयः ।। ३।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ मयोभवाय चतुष्पदी भव सा मामनुव्रता भव स्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै बहूँस्ते सन्तु जरदष्टयः ।।४।।

ॐ प्रजाभ्यः पंचपदो भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै बहूँस्ते सन्तु जरदष्टयः।। ५।।

ॐ ऋतुभ्यः षट्पदी भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै बहूँस्ते सन्तु जरदष्टयः।। ६।।

ॐ सखे सप्तपदी भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै बहूँस्ते सन्तु जरदष्टयः ।।७।।

उक्त मन्त्र समृद्धि की आकांक्षा से भी युक्त हैं । प्रथम मन्त्र अन्न वृद्धि के लिए, दूसरा बल–वृद्धि, तीसरा धन वृद्धि, चौथा सुख वृद्धि, पाँचवाँ पशु–वृद्धि, छठा ऋतु के अनुसार पदार्थ वृद्धि तथा सातवाँ प्रीति वृद्धि के लिए माना जाता है ।

सप्तपदी की क्रिया में कहीं-कहीं मिट्टी के सात सकोरे रखे जाते हैं । प्रत्येक पदी में एक सकोरे पर पाँव रखा जाता है । कहीं-कहीं चावल की सात ढेरियाँ रखने की प्रथा है ।

अभिषेक–

अब वर अग्नि से पश्चिम की ओर पूर्वाभिमुख बैठे, वधू भी उसके दाँयी ओर बैठे । जल का कलश उनके सामने रखा जाय, तब आम के पत्ते से जल लेता हुआ वर वधू के शिर पर निम्न मन्त्र से अभिषेक करे अर्थात् छींटें दें ।

ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कण्वन्तु भेषजम् ।

सूर्यदर्शन–

यदि दिन में विवाह हुआ हो तो वर वधू सूर्य के दर्शन करे और

Sanskṛit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उस समय निम्न मन्त्र का उच्चारण हो–

ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ७ श्रणुयाम शरद शतम् प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ।।

ध्रुव दर्शन–

यदि रात्रि के समय विवाह हो तो वर-वधू उत्तर दिशा में ध्रुव तारे का दर्शन करें । उस समय निम्न मन्त्र बोला जाय–

ॐ ध्रुवमसि ध्रुवंत्वां पश्यामि । ॐ ध्रुवैधि पोष्या मयि । मह्यं त्वादाद्बृहस्पतिर्मयापत्याप्रजावतीसंजीव शरदः शतम् ।।

हृदय-स्पर्श–

अब वर वधू के दाँये कन्धे से हाथ ले जाकर निम्न मन्त्रपाठ के साथ उसका हृदय स्पर्श करें–

ॐ मम व्रते ते हृदयं दधामि ममचित्तमनु चित्तं ते अस्तु । मम वाचमेक मनाजुषस्व प्रजापतिष्ट्वानियुनुक्त मह्यम् ।।

सुमङ्गली मन्त्र–

इसके पश्चात् वर अपनी अंगूठी में रोली लगाकर वधू के मस्तक पर लगाता हुआ निम्न मन्त्र बोले –

ॐ सुमंगलीरियवधूरिया ७ समेत पश्यत । सौभाग्यमस्यैदत्वाथास्तं विपरेतन ।।

वधू का वामाङ्ग उपवेश–

अब वधू को वर के वामांग में बैठावे । यह कार्य देशकुल के

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आचारानुसार किया जाय । क्योंकि देशादि भेद से यह कार्य कहीं-कहीं फेरे पड़ने (परिक्रमा) से पहिले ही होता है । इसलिए इसे कुलाचारानुसार करना प्रशस्त है ।

वाम अंग में आने से पूर्व कन्या वर से कुछ आश्वासन चाहती है । जिनका अभिप्राय यह है कि यदि आप तीर्थ, व्रत, यज्ञ, दान, कव्य-प्रदान, आय-व्यय, मकान, देवालय आदि क्रय-विक्रय आय-व्यय सभी मेरे सहयोग और परामर्श से करें तो मैं आपके वामांग में जाऊँ । उसके उत्तर में वर स्वीकारोक्ति करता है । वर-कन्या की यह 'उक्तियाँ प्रायः दोनों ओर के पण्डितगण अपने-अपने ढंग पर बोलते हैं, इसलिए यहाँ उनका लिखना अभिप्रेत नहीं है । दूसरे इस प्रकार के वचन शास्त्र के अंग नहीं वरन् लोकाचार मात्र ही हैं ।

माँग में सिन्दूर भरना-

वर के वामांग वधू आजाय तब उसके सीमान्त (माँग) में सिन्दूर भरने का कार्य किया जाय । वर निम्न मन्त्र का उच्चारण करता हुआ यह कार्य करें-

ॐ वाममुद्यसवितर्व्वामश्वो दिवेदिवेव्वाममस्मभ्य थ्थसावीः। वामस्यहि क्षयस्यदेवभूरेरयाधियाव्वाम भाजः स्याम।।

आशीर्वाद-

अब पति पुत्रों वाली चार सौभाग्यवती महिलाएँ वधू को निम्न वाक्यों में आशीर्वाद दें-

ॐ गोर्याः सावित्र्यास्तव सौभाग्यं भवतु।

अब वर-वधू को मान्य अथवा ब्राह्मण उठाकर भीतर घर में ले जाय और वहाँ उनके बैठते हुए निम्न मन्त्र पढ़ा जाय-

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ इह गावो निषीदंत्विहाश्वा इहपूरुषाः इहो सहस्रं दक्षिणो यज्ञ इह पूषा निषीदतु।।

अब ब्रह्मा के अन्वारम्भ करने पर निम्न मन्त्र से स्विष्टकृत आहुति देकर शेष घृत-बिन्दु प्रोक्षणी में डाले——

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते न मम।

फिर संस्रव प्राशन करके हाथ धोवे और आचमन करके ब्रह्मा को पूर्ण पात्र दक्षिणा देता हुआ निम्न संकल्प करे–

ॐ अद्य कृतैतद्विवाहहोमकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्ण पात्रं प्रजापतिदैवतममुकं गोत्रापयाममुक शर्मणे ब्रह्माणाय दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे ।।

आचार्य भी 'ॐ स्वस्ति' कहकर दक्षिणा ग्रहण करें तथा आचार्यादि सभी वर-वधू को आशीर्वाद दें ।

फिर कुश-निर्मित ब्रह्मा का मोचन करने के बाद 'ॐ सुमित्रियान आप ओषधयः सन्तु' कहते हुए प्रणीतस्थ जल को शिर पर छिड़के और 'ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तुयोस्मान्द्वेष्टियं न वयं द्विष्मः' कहते हुए प्रणीता का जल एशान दिशा में डाल दें । तदुपरान्त जैसे कुश बिछाये थे उसी क्रम से उठाकर तथा आज्य स्थाली से घृत लगाकर निम्न मन्त्र द्वारा हाथ से ही अग्नि में डाल दें–

ॐ देवागातु विदोगातुं वित्वागातुमित । मनसस्पतइम देवयज्ञ छस्वाहा वातेधाः स्वाहा। इदं वाताय न मम ।।

पूर्णाहुति-

अब खड़े होकर नारियल, पुष्पादि के सहित घृत युक्त स्रुवा

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

का वधू के दाँये हाथ से स्पर्श करावे और निम्न मन्त्र के त्याग सहित पढ़ता हुआ पूर्णाहुति दे–

ॐ मूर्द्धानं दिवो अरति पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्नम् ।कविंश्वसम्राजमतिथिं जनानामासन्ना-पात्रं जन यन्तदेवाः स्वाहा ।। इदमग्नये न मम ।।

अब स्रुवा मूल से वेदी में भस्म लेकर दाँयी अनामिका द्वारा ललाट, ग्रीवा, दक्षिण कन्धा ओर हृदय में भस्म लगते हुये सम्बन्धित मन्त्र पढ़े–

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः, इति ललाटे ।
ॐ कश्यस्य त्र्यायुषम, इति ग्रीवायाम ।।
ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम् , इति दक्षिणांसे ।
ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् , इति हृदि ।।

इसी प्रकार वधू के अंगों में भी भस्म लगानी चाहिए ।किन्तु वधू के भस्म लगाते समय 'तन्नो' के स्थान पर 'तत्ते' कहना चाहिए।

***

१४. आवस्थ्याधान संस्कार

गृह्याग्नि का आधार–

आवस्थ्य संज्ञक अग्नि गृहकार्यों से सम्बन्धित है ।इस अग्नि का स्थापन आवस्थ्याधान कहलाता है ।नित्य नैमित्तिक कर्मों में किये जाने वाले (दैनिक) होम और वैश्वदेव आदि कर्म इसी अग्नि में किये जाते हैं ।गृह्य, स्मार्त, ओपवस्थ्य वैवाहिक तथा औपासन भी इसी अग्नि के नाम हैं ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पिता का एक ही पुत्र (अथवा ज्येष्ठ पुत्र) विवाहादि के पश्चात् इस अग्नि का स्थापन करे । यदि अनेक भाई हों तो पृथक्–पृथक् रहने पर अपने-अपने घर में इसका आधार करें । इसका आधान अग्न्याधान के लिए शुभ माने जाने वाले मास, तिथि, वार, नक्षत्र में करें ।

अग्न्याधान की विधि–

प्रातः काल स्नान करके शुद्ध भूमि में पति-पत्नी दोनों पृथक्-पृथक् आसनों पर पूर्वाभिमुख बैठें और आचमन, प्राणायाम करके देश-काल कथन के बाद 'ॐ आवस्थाग्निमहमाधास्ये' कह कर संकल्प करें । यदि अग्नि स्थापना उचित समय पर न किया गया हो तो कृच्छ्रप्रजापति व्रत आदि के रूप में यथा विधि प्रायश्चित्त करके इस संस्कार को करना चाहिए । व्रतादि न कर सकें तो उसके एवज में गोदानादि करने से पूर्ति हो सकती है । अथवा प्रत्येक वर्ष के विलम्ब में दश-दश हजार गायत्री का जप और गायत्री मन्त्र से तिल-घृत का होम किया जाय ।

अब यजमान सपत्नीक नवीन दो-दो वस्त्र धारण करके दो पवित्र कुश, आज्य स्थाली, उदुम्बर की चरुस्थाली, ढाक की समिधाएँ, दक्षिणा या पूर्णपात्र, पूर्व में आधार, कोणों में आज्य भाग का स्थापना करके मन्थन पक्ष में पत्नी अधर अरणि को और यजमान उत्तर अरणि को ले ।

गृह्याग्नि वेदी का निर्माण करने में ध्यान रखे कि वह यजमान के अंगुल से १४ अंगुल माप का हों । पृथिवी से १२ अंगुल ऊँचा तथा ६-६ अंगुल की दो मेखला वाला गोलाकार रहे । यह आवस्थ्य कुण्ड के समान ही बने ।

उसके बाद परिसमूहन, उपलेखन, उल्लेखन, उद्धरण, और अभ्यक्षण के रूप में पाँच भू संस्कार करने के पश्चात् उस कुण्ड

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

का वस्त्र से आच्छोदन करे और अरणि पक्ष में अरणि मन्थन करे । इस समय यजमान पूर्वाभिमुख होकर दोनों हाथों से ओखली को दाबे तथा पत्नी पश्चिमाभिमुख होकर मन्थन करे । यदि पत्नी मन्थन कार्य में समर्थ न हो तो किसी विद्वान ब्राह्मण से मन्थन करावें ।

काष्ठ की लकड़ियों से अग्नि जला कर कुण्ड में स्थापना करे । दूसरे पक्ष में हाथों में उपयमनी मृत्तिका सहित कोरा खर्पर (ठीकरा) ग्रहण करके उसमें अग्नि को लावे और कुण्ड में स्थापित करे । उस समय पुरोहितादि अनेक विद्वान् वेद घोष कर रहे हों तथा स्त्री आदि के द्वारा मंगल गीत वाद्य हो रहा हो ।अग्नि लेने के लिए किसी भाग्यवान गृहस्थ के घर, पशु पुत्रादि यां सम्पन्न वैश्य, याज्ञिक ब्राह्मण या शुद्ध अन्न का अधिक परिमाण में पाक हो ऐसे ब्राह्मण के घर में जाय अथवा भाड़ से अग्नि लावे ।अग्नि के लिए जाते और लौटते समय भी गायन-वादन, वेद-ध्वनि आदि चलती रहें ।

ब्रह्मा का वरण—

अपने घर आकर पूर्व की ओर मुख करके बैठे और उस अग्नि को स्थापित करे । फिर गन्ध द्रव्य, पुष्पमाला ताम्बूल, से सत्कार करता हुआ निम्न संकल्प से ब्रह्मा का वरण करें—.

अमुकगोत्र अमुक शर्मन्नावस्याग्निमहमाधास्यते तत्रकृता कृतावेक्षक ब्रह्मत्वेनैभिः पुष्पचन्दनताम्बूल-वासोभिस्त्वासहं वृणे ।

इसके प्रतिवचन रूप में ब्रह्मा 'वृतोऽस्मि' कहे ।फिर अग्नि से दक्षिण में ब्रह्मा को श्रेष्ठ आसन, चौकी पर बैठावे ।अग्नि से उत्तर में प्रणीतापात्र रखकर प्रदक्षिण रूप से अग्नि का परितरण तीन पवित्र छेदन कुश, प्ररणी वृक्ष का प्रादेश मात्र, प्रोक्षणी पात्र आज्य

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्थाली, चरुस्थाली, सम्मार्जन कुश, प्रावेश मात्र, ढाक की तीन समिधाएँ, खदिर का स्रुवा, आज्य पात्र, चावल का पूर्णपात्र, दक्षिणा आदि क्रमशः रखकर पूर्व संस्कारों में वर्णित विधि से घृत का तपाना और चरु निर्माण आदि कार्य पूरे करके पहिले उपयमन कुशों को दाँये हाथ से उठाकर खड़ा हो और अग्नि में तीन समिधाएँ डाले । फिर अग्नि का पर्युक्षण उदक-सस्थ करके प्रोक्षणी को जल से निःशेष करे और प्रणीता में पवित्र रखकर अग्नि से उत्तर में पूर्वाभिमुख हो दाँये घुटने को भूमि में टिका ले ।

फिर ब्रह्मा के अन्वारम्भ करने पर स्रुवा में घी भरकर प्रजापति के ध्यान पूर्वक पूर्वाधार आहुति त्याग के साथ दे–

प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये न मम ।।

फिर अग्नि के दक्षिण में त्याग सहित उत्तराधार का होम करे । अथवा आराधादि सभी आहुतियाँ जहाँ अग्नि अधिक प्रज्वलित हो वहाँ दे । फिर अन्वारम्भ बिना ही निम्न आहुतियाँ दे –

ॐ अग्नये पवमानय स्वाहा । इदमग्नये पवमानाय न मम ।।

ॐ अग्नये पावकाय स्वाहा । इदमग्नये पावकाय न मम ।।

ॐ अअग्नये शुचये स्वाहा । इदमग्नये शुचये न मम ।।

ॐ आदित्यै स्वाहा । इदमादित्यै न मम ।।

आज्याहुतियाँ-

तदुपरान्त आज्य से निम्न आठ ऋचाओं द्वारा होम करके उत्तरार्द्ध से स्रुवा द्वारा चरु लेकर अग्नि के उत्तरार्द्ध में स्विष्ट कृत आहुति दे ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडोऽअवयासि सीष्ठाः। यजिष्ठो वह्निनतमः शोशुचानो विश्वाद्वेषा सिप्रमुमुग्ध्यस्म स्वाहा।। १।। इदमग्नी वरुणाभ्यां न मम ।।

ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोतीनेदिष्ठोऽअस्या उषसो व्युष्टौ। अवयक्ष्व नो वरुण ꣳरराणोव्वीहिमृडीक ꣳ सुहवो नः एधि स्वाहा।। २।। इदमग्नी वरुणाभ्यां न मम ।।

ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्यां च मृडय। त्वाम वस्युराचके स्वाहा।। ३।। इदं वरुणाय न मम ।।

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेहवीध्युरुश ꣳ स मा न आयुः प्रमोषीः स्वाहा ।। ४।। इदं वरुणाय न मम ।।

ॐ येते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञिया पाशा वितता महान्त। तेमिर्नो अद्या सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः सवर्क्काः स्वाहा।। ५।। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुदभ्य स्वर्क्केभ्यो न मम ।।

ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमया असि। अया ना यज्ञं वहास्यया नो भेहि भेषज ꣳ स्वाहा।। ६।। इदमग्नयेऽयसे न मम ।।

ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मद वाधर्म विमध्यम ꣳ

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्रथाय । अथावयमादित्यवृते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा ।। ७ ।। इदं वरुणाय न मम ।।

ॐ भवतं नः समनसौ सचेत सावरेपसौ । मायज्ञ हिसिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य न स्वाहा ।। ८।। इदं जातवेदोभ्यां न मम ।।

इसके पश्चात् ब्रह्मा से अन्वारब्ध हुआ यजमान स्विष्टकृत की आहुति दें–

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा । इदमग्नये स्विष्टकृते न मम ।।

अब निम्न मन्त्र बिना अन्वारम्भ के ही एक आज्याहुति देनी चाहिए –

ॐ अयास्यग्नेर्वषट्कृत यत्कर्मणात्यरीरिचं देवागातुविदः । स्वाहा इदं देवेभ्यो गातुविद्भ्यो न ममः ।

अब निम्न मन्त्र बिना अन्वारम्भ के ही एक आज्याहुति देनी चाहिए--

ॐ भूः स्वाहा, इदमग्नये न मम ।
ॐ भुवः स्वाहा, इदं वायये न मम ।
ॐ स्वा स्वाहा, इदं सूर्याय न मम ।

समापन–

अब त्यागों सहित पंचाहुतियों का होम करे अर्थात् 'त्वन्नो अग्ने' इत्यादि, 'सत्वं नो अग्ने' इत्यादि 'अयाश्चग्ने' इत्यादि, 'यते शत' इत्यादि तथा 'उदुत्तम' इत्यादि की पंच आहुतियाँ पुनः देकर 'ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम' मन्त्र से प्रजापति की

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आहुति दे । फिर वहिर्होम, संस्रव प्राशन और आचमन करके ब्रह्मा को दक्षिणा दे तथा एक ब्राह्मण को भोजन कराये ।

※ ※ ※

१५. श्रोताधान संस्कार

अग्नित्रय का संग्रह–

आवस्थ्याधान संस्कार के बाद श्रोताधान संस्कार होता है । इस कर्म से गार्हपत्य, आवहनीय और दक्षिणाग्नि तीनों के संग्रह का उद्‌देश्य निहित है । इसे अग्न्याधेय भी कहते हैं ।

इसे ज्योतिष शास्त्रानुसार शुभ दिन देख कर करना चाहिए। मल मास, क्षय मास, रिक्त तिथि, भद्रा, मंगलवार या शनिवार न हो। असाढ़, भादों, और पौष के महीने भी वर्जित हैं । इसके लिए विशाखा, कृत्तिका, मृगशिरा, रेवती ज्येष्ठा, उत्तरात्रय नक्षत्र श्रेष्ठ हैं । चन्द्रमा भी अनुकूल हो । ऐसे शुभ मुहूर्त्त में इस कर्म को करना चाहिए । कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा और पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्रों में करे तो वार आदि का विचार व्यर्थ होगा । इस कर्म में मुख्य आधान शुक्लपक्ष का प्रतिपदा में करना श्रेयस्कर है । अमावस के दिन आरम्भ करे अथवा चतुर्दशी को समाप्त करे । प्रधान कर्म के समय नक्षत्र का शुभ होना विशेष रूप से अपेक्षित है । कर्म के आरम्भ में शरीर और इन्द्रियों की शुद्धि के लिए यथाशक्ति करना चाहिए ।

अग्निहोत्रशाला-

कर्मानुष्ठान के लिए यज्ञशाला बनाना बहुत आवश्यक है । उसमें तीनों अग्नियों के कुण्ड विधि पूर्वक बना लेने चाहिए । उस शाला में आवश्यक द्वार भी रखे जाँय ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आचमन, प्राणायाम, संकल्प, स्वस्ति पुण्याह वाचन, गणपति पूजन, मातृकादि पूजन तथा मातृश्राद्धादि कर्म करके ऋत्विजों तथा ब्रह्मा का वरण करे । अध्वर्यु और अग्नीध का वरण भी करना चाहिए।

यजमान को केश, दाढ़ी, मूँछ नख आदि कटा कर केवल चोटी रखनी चाहिए । उसके बाद स्नान कर चीरेदार शुद्ध वस्त्र धारण करे । यजमान की पत्नी भी क्षौर तो न करावे किन्तु नख छेदन आदि करके स्नान करे और शुद्ध वस्त्र पहिने । तब अध्वर्यु काष्ठ आदि का मन्थन करके अग्नि निकाले अथवा सावसथ्याधान में कथित स्थानों से अग्नि लाकर गार्हपत्य कुण्ड में स्थापन करे । यजमान आहवनीय कुण्ड से पूर्व दिशा में उत्तराभिमुख बैठे और पत्नी को अपनी दाँयी ओर बैठावे । फिर और मन्त्र से पितरों का आवाहन करें –

ॐ देवाः पितर पितरोदेवा यो ऽहमस्मि च सन्यजे । यस्याहमस्मिनतमन्तरयामि स्वम्भऽइष्ट ॐ सॐ श्रांत स्व ॐ हतमस्तु ।।

फिर यज्ञशाला में यजमान पूर्व द्वार से और पत्नी दक्षिण द्वार से प्रवेश करके गार्हपत्य अग्नि से पश्चिम और पूर्वाभिमुख बैठें । पत्नी यजमान से दक्षिण ओर रहे । अब किसी चीरेदार नये अंगों में दोनों अरणि लपेट अध्वर्यु यजमान को दे ओर पत्नी पति के हाथ से अधरारक्षि लेकर अपनी गोद में रख ले । यजमान उत्तरारणि का अपनी गोद में रखे । तब दोनों ही अपनी-अपनी अरणियों को गन्धाधि से पूजन करें । तदन्तर ऋत्विज आदि दोनों को आशीर्वाद दें और स्तवन करे ।

फिर पत्नी सहित यजमान आचमन कर देवता-ब्राह्मणों को नमस्कार कर अरणियों को पीढ़ा पट्टा आदि पर स्थापन कर दे ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस दिन उपवास का विधान नहीं है। निषिद्ध अन्न को छोड़ कर हविष्य अन्न का भोजन पत्नी और यजमान दिन में अवश्य करे, रात्रि में करें या न करे यह उनकी इच्छा पर निर्भर है। यह प्रथम दिन का कृत्य हुआ।

सायंकाल से रात्रि तक गार्हपत्य अग्नि के समीप बकरा बाँधने का भी कुछ आचार्य निर्देश करते हैं, किन्तु यह कुछ आवश्यक नहीं है। यदि बाँधे तो कर्म समाप्त होने पर उसे अग्नीध ऋत्विज को दे देना चाहिए।

सायंकाल संध्योपासन करके चार मनुष्यों के भोजन योग्य मिट्टी के चार पात्रों में भर कर कुश के आसन पर रखे। फिर इन्हें दो बार धोकर गार्हपत्य अग्नि पर चढ़ा कर चातुष्प्राश्य नामक ओदन बनावे और पकने पर उतार कर घी मिलावे तथा उसमें डुबोई हुई पीपल की तीन समिधाओं में से एक-एक लेकर गार्हपत्याग्नि में होम करता हुआ निम्न मन्त्र पढ़े—

ॐ समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्वोधयतातिथिम्। आस्मिन्हव्या जुहोतन स्वाहा।। १।।

फिर बैठकर निम्न का सस्वर पाठ करें —

ॐ सुसमिद्धाय शोचिषे धृतंतीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे।। २।।

अब उठ कर निम्न तृतीय मन्त्र से दूसरी और चतुर्थ मन्त्र से तीसरी आहुति देनी चाहिए—

ॐ तन्त्वा समिद्भिरंगिरो घृतेनवर्धयामसि। बृहच्छोचायविष्ठाय स्वाहा।। ३।।

ॐ उपत्वाग्ने ऽहविष्मतीर्घृताचार्यन्तुहर्यत। जुषस्व-समिधोमम स्वाहा।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अस्य चातुष्प्राश्यपचन कर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थ ब्रह्मादिभ्यः ऋत्विभ्य्य इमं वरं दक्षिणं भवद्भ्योऽहं सम्प्रददे ।

अब ब्रह्मादि चारों ऋत्विजों के क्रम से पाद प्रक्षालन करके आसनों पर बैठावे और उनका पूजन कर भोजन करावे । फिर निम्न प्रकार संकल्प करके यथाशक्ति दक्षिणा दे—

रात्रिजागरण—

दक्षिणा देने के बाद सपत्नीक यजमान को उस रात्रि में जागरण करना चाहिए । स्थापित अग्नि जलती रहे बुझने न पावे इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखें । रात्रि में ही पहिने हुए वस्त्र उतार कर धो डालें और दूसरे शुद्ध वस्त्र धारण कर लें । उषाकाल में स्नान करके दोनों ही रात्रि में धोकर सुखाये हुए वस्त्रों को पहिन लें ।

प्रातःकाल शौच स्नान से पूर्व ही अध्वर्यु पूर्व दिन की स्थापित अग्नि को गीली धरती में फैला दे जिससे कि वह स्वतः बुझ जाय। यदि यजमान उसे दक्षिणाग्नि बनाना चाहे तो बुझावे नहीं, वरन् सँभाल कर दक्षिण दिशा में सुरक्षित रख दे ।

गार्हपत्य कुण्ड—

अग्नि बुझा देने या हटा देने के पश्चात् अध्वर्यु के 'वाच यच्छ' कहने पर यजमान पूर्णाहुति होम पर्यन्त मन्त्रादि के अतिरिक्त या किसी आवश्यक बात के अतिरिक्त अन्य बात न करे । फिर अध्वर्यु गार्हपत्य कुण्ड में पंचभू संस्कार कर तीन बार उल्लेखन करे। फिर यजमान के अन्वारम्भ करने पर कुण्ड में स्वर्ण का टुकड़ा रख कर जिसके सब ओर क्षार मिट्टी बखेर दे तथा मूषकों द्वारा खोदी हुई मिट्टी से कुण्ड को गोलाकार करके उसके सब ओर ५० कङ्कड़ी मिट्टी से सान कर चिन दे ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आह्वनीय कुण्ड –

गार्हपत्य कुण्ड के बीच से आठ, ग्यारह, बारह कदम की दूरी पर बने इस कुण्ड में पंचभू संस्कार तीन रेखा, यजमान के अन्वारम्भ करने पर अभ्युक्षण, स्वर्ण खण्ड स्थापन तथा मूषकों द्वारा उत्खलित मिट्टी से कुण्ड का चौकोर स्थाण्डिलकरण करके उसके सब ओर ७२ कंकड़ियाँ मिट्टी के साथ चिननी चाहिए।

दक्षिणाग्नि कुण्ड–

फिर दक्षिणाग्नि कुण्ड में पंचभू संस्कार, तीन रेखा, यज्ञमान के अन्वारम्भ करने पर जल सेचन, स्वर्ण खण्ड स्थापन तथा मूषक द्वारा उत्खलित मृत्तिका से कुण्ड को अर्द्धचन्द्राकार करके उसके सब ओर २२ कङ्कडियाँ चिने ।

इसके बाद गार्हपत्याग्नि कुण्ड के समान सभ्याग्नि कुण्ड का भी संस्कार करे और उसके सब ओर ५० कङ्कड़ियाँ चिने ।

अब अग्नि-मन्थन का कार्य आरम्भ करे । अर्ध्वयु अग्नीध् से 'अश्वमानय' कहे तब वह घोड़े को पश्चिमाभिमुख खड़ा कर दे । घोड़ा न हो तो बैल लावे और उसका भी अभाव हो तो 'प्रेष' वाक्य का उच्चारण न करे ।

अग्नि मन्थनादि–

अधरारणि को गार्हपत्य कुण्ड से पश्चिम में कुश बिछायी हुई धरती पर उत्तराग्र रखे और आवस्थ्याधान में वर्णित विधि के अनुसार अग्नि मन्थन करे । जब अग्नि प्रकट हो जाय तब यजमान अर्ध्वयु को दक्षिणा दे । फिर सूखे गोबर के चूर्ण युक्त सकोरे में यजमान उस प्रकट हुए रखकर यजमान अग्नि की ओर श्वांस छोड़कर 'ॐ प्राणममृतेदधे' कहता हुआ उसे प्रज्वलित करे । जब वह प्रज्वलित हो जाय तब 'ॐ अमृतं प्राणऽआदधे' कहकर श्वांस खींचता हुआ अग्नि ज्वाल के अंश को मुख में ग्रहण करे ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

फिर ढाक आदि से प्रज्वलित अग्नि को अर्ध्वयु 'ॐ भूर्भुवः स्वः, आदित्यानां त्वा देवानां व्रतपते व्रतेनादधे' मन्त्र से गार्हपत्य कुण्ड में स्थापना करे । यदि अंगिरा प्रबर हो तो 'आदित्यानां के स्थान पर 'अंगिरसां' बोले । यदि भृगु प्रवर हो ' सृगूणाँ या अन्य प्रवर हो तो तदनुसार उच्चारण करे ।'

सामगान और आहवनीय स्थापना–

अब अध्वर्यु के 'रथन्तर' गाय कहने पर ब्रह्मा रथन्तर साम का गान करे । तभी कुश के यून से तीन स्थानों में बँधे इध्म के मूल भाग को गार्हपत्याग्नि में जलाकर खप्पर में रखे और उपयमनी के द्वारा खप्पर को नीचे से पकड़कर आहवनीय कुण्ड की ओर ले जाय। उस समय यजमान उसके धूम का अनुभव करे तथा अध्वर्यु के 'वामदेश्यं गाय' कहने पर ब्रह्मा वाम देव्य साम को गावे ।

इसी समय घोड़े को आहवनीय के पूर्व में लाकर उसके अगले दाँये पाँव से आहवनीय कुण्ड में स्थिति क्षारादि का स्पर्श कराके घोड़े को हटा देते हैं । तब घोड़ा प्रदक्षिणा फिराकर सामने खड़ा किया जाय । फिर अध्वर्यु के 'वृहद्गाय' कहने पर ब्रह्मा वृहत्साम का गान करे ।

इसी समय अध्वर्यु अश्व के द्वारा स्पर्शित चिन्ह के साथ हाथ में स्थिति अग्नि का दो बार स्पर्श कराके 'ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्यानां त्वा देवानां व्रत पने व्रतनादधे' मन्त्र से आहवनीय का स्थापन करे। फिर यजमान उसके कुण्डस्थ काष्ठों के पूर्वाग्र भाऊ का स्पर्श करता हुआ निम्न मन्त्र पढ़े–

ॐ द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव्वरिम्णा । तस्यास्ते पृथिवि देवयजनति पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यादधे ।

इसके बाद यजमान निम्न तीन ऋतुओं से आहवनीय अग्नि का खड़ा होकर उपस्थान करे –

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ आयंगौः पृश्निरक्रमी दसदन्मातरं पुरः। पितरश्च प्रयन्त्स्वः ।। १।।

ॐ अन्तश्चचरतिरोचनाऽस्यप्राणादपानती। व्यख्य-न्महिषीदिवम् ।। २।।

ॐ त्रिॐशद्धामविराजति वाक्पतंगायधीयते प्रति-वस्तोरहद्यु भिः ।। ३।।

तदुपरान्त अध्वर्यु गार्हपत्य कुण्ड के खप्पर से प्रज्वलित अग्नि लेकर उपर्युक्त 'ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्यानां' इत्यादि मन्त्र से दक्षिणाग्नि कुण्ड में स्थापित करे–

फिर गार्हपत्य के समान ही सभ्याग्नि का मन्थन करने के बाद यजमान के 'गाँदीव्यध्वम्' कहने ऋत्विग्गण अग्नियों से उत्तर में कुशासन बिछाकर उस पर एक कांस्यपात्र ओंधा रखकर हाथ में पाँच-पाँच कौड़ियाँ लेकर 'समेन जयामि विषमेष जीयसे' मन्त्र से कांस्यपात्र पर चार बार फेंके । इसे गोद्यूत में यजमान प्रेषणकर्ता और ऋत्विज् द्यूतकर्ता होते हैं । फिर यजमान द्यूत की वह गाय ऋत्विजों को इस मन्त्र के उच्चारण पूर्वक दान कर दे–

ॐ अस्मिन्द्यू ते ते पणीकृतां ब्रह्मणे होत्रे अध्वर्युवे अग्नीधे च समविभागेनाहं संप्रददे ।

इसमें गाय का मूल्य सब में बाँट दिया जाता है । ऋत्विग्गण निम्न मन्त्र से दान स्वीकार करें–

ॐ द्यौस्त्वाददातु पृथिवी त्वां प्रतिगृह्णा ।

अब यज्ञिक काष्ठों से प्रज्वलित सभ्याग्नि को कुण्ड में स्थापित करते समय निम्न मन्त्र बोले–

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्यानां त्वानांव्रतपते व्रतेना दधे ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उक्त मन्त्र में प्रवर के अनुसार ही 'आदित्यानां' के स्थान पर अंगिरसां, भृगूणां आदि कहना चाहिए ।

जब तीनों अग्नियों का स्थापन हो चुके तब अध्वर्यु द्वारा 'श्वैतवास्तन्वतीय यज्ञायज्ञियान गाय' कहने पर ब्रह्मा क्रमशः तीनों सामों को गावे । फिर अब अग्नियों की प्रदक्षिणा कराके अश्व को यज्ञशाला से उत्तर की ओर छोड़ दे ।

पूर्णाहुति–

इस संस्कार में अन्य आहुतियों के दिये बिना ही पूर्णाहुति को पूर्णाहुति मानते हैं । इसकी विधि यह है कि अन्य पात्र से आज्यस्थाली में घृत लेकर गार्हपत्य में तपने को रखे, खदिर स्रुवा को विधिपूर्वक भीतर बाहर सम्मार्जित करे, आज्य को अग्नि से उतारे, पवित्रों से आज्य को उत्पवन और आवेक्षण करे और अपद्रव्य हो तो निकाल दे । फिर स्रुवा से घृत लेकर जुहूस्रुच को भरे किन्तु स्रुव से घृत एक बूँद भी न गिरे । आहवनी कुण्ड का परिस्तरण करके खड़ा हो और हाथ से समिधा अग्नि में डालकर दाँया घुटना भूमि में टिकावे तथा स्रुव को हाथ में लेकर अग्निदेव का मन से ध्यान करते हुए यजमान के अन्वारम्भ करने पर अध्वर्यु 'स्वाहा' कह कर भरी हुई स्रुव से प्रज्वलित अग्नि में पूर्णाहुति दे ।

अब यजमान 'वरं ददामि' कहकर मौन को छोड़ दे । फिर यजमान निम्न संकल्प वचनों को बोलकर ब्रह्मा और अध्वर्यु को दक्षिणा दे–

ॐ अस्याः पूर्णाहुतेः साङ्गतासिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थ वरं दक्षिणां ब्रह्मणेऽध्वर्यवे चाहं संप्रददे ।

पूर्णाहुति सम्पन्न होने पर अध्वर्यु आधार्नाग रूप अग्निहोत्र बिना मंत्र पढ़े ही क्रमशः सायं और प्रातः दोनों समयों का एक साथ

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करे । प्रथम सायंकाल का ही करना चाहिए।

श्रौताधान कर्म में वसन्तानि ऋतु विचार, नक्षत्र विचार अभ्युक्षण क्षार, मृत्तिकादि सम्भार, रथन्तरादि सामगान, क्षौर, चातुष्प्राश्य पचन, रात्रि जागरण, इध्म पूर्वार्द्ध ग्रहण पूर्वक जप, ऋचाओं से अग्नि का उपस्थान आदि कर्म उपर्युक्त विधिविधान से करना उत्तम फलदायक है । किन्तु यदि कोई यजमान उतना श्रम न करना चाहे तो वह उक्त अंशों को छोड़कर शेष अभीष्ट अंगों के अनुष्ठान पूर्वक शीघ्र ही अग्नि स्थापना करने के पश्चात् पूर्णाहुति कर सकता है ।

※ ※ ※

अंत्येष्टि संस्कार

जीवन का अन्तिम संस्कार–

यह कर्म मनुष्य जीवन के अन्तिम संस्कार के रूप में होता है। विद्वान् पुरुष इस शरीर को मरणधर्मा जान कर इस कर्म को भी संस्कार द्वारा करना ही प्रशस्त समझते हैं ।

मनुष्य के मरने पर उसके सम्बन्धी और परिवारीजन रोते चिल्लाते हैं, किन्तु उससे कुछ हो तो सकता नहीं, उल्टे मानसिक कष्ट ही उठाना पड़ता है । शास्त्रों का वचन है –

रोदनपेक्ष्या कुर्यात् सुव्यवस्थां मृतात्मनः ।
समाश्रिता समार्थानां पुत्रादीनां समाचरेत् ।।
कल्याणमय कर्माभि मृतात्मन, सुशान्तये ।
तच्छेषोत्तरदायित्वं विदधेच्च शुभेच्छाया ।।

अर्थात्– रोने की अपेक्षा मृतात्मा के आश्रित तथा पुत्रादि के लिए सुव्यवस्था करे और मृतात्मा की शान्ति के लिए कल्याणकारी कार्यों को करे तथा उसके द्वारा छोड़े गये उत्तरदायित्व का निर्वाह

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भी शुभ कामनाओं के साथ पूर्ण किया जाय।

मरण काल–

मरणकाल में मरने वाले को तो अपने कर्त्तव्य का उतना ज्ञान नहीं रहता ।ऐसे बहुत कम व्यक्ति होते हैं जो मरणकाल में विषाद या मोह न रखते हों ।उस समय परिवारीजनों का मुख्य कर्त्तव्य है कि उसे क्षुब्ध न होने दें उसके सामने रोयें-धोयें नहीं उसे मोह-माया में न पड़ने दें वरन् अच्छी-अच्छी धार्मिक बातें सुनायें। रामायण, गीता, भागवत आदि के श्रेष्ठ प्रसंगों की चर्चा करें ।यदि वह अधीर हो तो उसे सान्त्वना दें ।

उसके हाथ से कुछ दान करा देना भी कल्याणकारी रहता है। दान अनेक प्रकार के हैं –अन्नदान, गोदान, भूमिदान, स्वार्णादिधातु दान, द्रव्यदान आदि ।जिसकी जैसी श्रद्धा हो वैसा ही दान करे ।विद्वानों के मत में मरणकाल में 'गोदान' अधिक प्रशस्तवान है ।अपनी आर्थिक अवस्था तथा मरणासन्न व्यक्ति की इच्छा के अनुसार ही दान किया जाय ।इस समय गायत्री जप, महामृत्युञ्जय जप या अन्य मोक्षदायक मन्त्र का जप भी विधि-विधान सहित किया जा सकता है ।

जब यह समझा जाय कि मृत्यु अब घड़ी आध घड़ी में ही होने वाली है, तब पृथिवी को साफ करके गोबर से लीपे और उस पर कुश और ऊनी कम्बल आदि बिछाकर मरने वाले व्यक्ति को लिटा दे ।उसका सिर दक्षिण दिशा की ओर रहे ।जब तक प्राण न निकलें तब तक गीता रामायण आदि का पाठ चलता रहे ।

जब वह प्राण छोड़ने लगे तब उसका सिर उत्तर की ओर तथा पाँव दक्षिण की ओर कर दे ।मृतक के आँख-कान में घृत की बूँद डाले और फिर समूचे शरीर को वस्त्र से ढक दे ।उस के पश्चात् कुलाचार के अनुसार उसे स्नान कराने, वस्त्र पहिनाने, अर्थी में रखने आदि की क्रियाएँ की जाँय ।यह क्रियाएँ देश-भेद के अनुसार की जाती हैं ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शवयात्रा–

दाह-कर्म करने के लिए पुत्रादि जो भी अधिकारी हो वह क्षौर, स्नान, शुद्ध वस्त्र धारण कर मृतक कर्म करे । शंव के दाँयी और अपसव्य रूप से बैठ कर पिण्ड दे । उस समय संकल्प पूर्वक शव के इधर-उधर या छाती पर पिण्ड रखे । यह पिण्ड जौ के आटे में तिल, घृत, शक्कर मिला कर बनाये जाते तथा देश-भेद से २४ या ६ हो सकते हैं । पिण्ड दान का सामान्य संकल्प निम्न प्रकार है–

अद्य (अमुक) गोत्रास्य (अमुक) प्रेतस्य प्रतता निवृत्यर्थ उत्तम लोके प्राप्त्यर्थ और्ध्वदैहक कर्म करिष्ये।

कहीं-कहीं अर्थी के द्वार पर निकलने पर भी पिण्ड देने की प्रथा है । उसके बाद सभी परिवारी जन, सम्बन्धी मित्र आदि अर्थी के साथ चलते हुए श्मशान की ओर जाते समय मार्ग में विश्राम किया जाता है, उस समय भी पिण्ड दिया जाता है ।

विश्राम स्थान तब मृतक का शिरा पीछे और पाँव आगे रहते हैं। कहीं-कहीं इसके विपरीत भी देखा जाता है, इसलिए जैसी परम्परागत प्रथा हो वैसा करना चाहिए–

चिता-चयन–

श्मशान पर पहुँच कर चिता के लिए भूमि साफ करके उस पर गोबर-गंगाजल छिड़के जिससे कि भूमि पवित्र हो जाय । उस समय निम्न मन्त्र का उच्चारण करे–

ॐ शुद्ध वालः सर्वशुद्ध वालो मणि वालस्त-ऽअश्विनाः श्येत श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायांऽअवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः ।।

इस प्रकार भूमि को मन्त्र पूत जलादि से सिंचित कर उस पर

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

'ॐ' लिख कर तिल आदि बखेरे । उस समय निम्न मन्त्र बोला जाय–

ॐ ओमासश्चर्षणीधृता विश्वदेवासऽआगत। दाश्वा ध्ध सो माशुषः सुतम् । उपयाम गृहीतोऽसि विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यऽएष ते योनिर्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः।

अब ठीक प्रकार से जलने योग्य पर्याप्त लकड़ियों से चिता चिननी चाहिए मृतक को उत्तर की ओर पाँव करके लिटाया जाये और उसके नाक, कान, नेत्र में घृत डाल दिया जाय।

श्मशान में चिता के चारों-ओर चार समिधाएँ वेदी के प्रतीक रूप में रखी जाती हैं । प्रत्येक दिशा में समिधा रखते हुए निम्न मन्त्र बोले जाँय–

पूर्व–ॐ प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षितादित्वा इषवः। तेभ्यो नमोऽधपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मत्तं वा जम्भे दध्मः।।

दक्षिण–ॐ दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः तेभ्योनमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मन्तं जम्भे दध्मः।।

पश्चिम–ॐ प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षिताऽन्नमिषवः । तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नमः एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मन्तं जम्भे दध्मः।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उत्तर–ॐ उदीचि दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिता शनिरिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वय द्विष्मन्तं वो जम्भे दम्मः।।

चिता पर चढ़ाने से पूर्व शव को जल से स्नान करा कर कुशाओं द्वारा जल से छीटें देते हुए निम्न मन्त्र पढ़े–

ॐ आपो हिष्ठामयो भुवः। ॐ तां न ऊर्जे दधातन। ॐ महेरणाय चक्षसे। ॐ यो वः शिवतमो रस, ॐ तस्म भाजयतेह नः। ॐ उशतीरिव मातरः। ॐ तस्मा अरंगमामवः। ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ। ॐ आपोजनयथा च नः।।

इस प्रकार शव की मंत्र पूत जल से शुद्धि होने के पश्चात् शव को चिता पर रखे और निम्न मन्त्र बोले–

ॐ अग्नये नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानिदेव वयुनानि विद्वान् । युयोध्यस्मज्जुराणमेजो भूयिष्ठां ते नम उक्ति विधेम् ।।

दाह-संस्कार–

शव को चिता पर उक्त मन्त्र के साथ रखने के बाद उस पर अन्य लकड़ियाँ चिन दी जांय। फिर शव के शिर की ओर शुद्ध भूमि पंचभू संस्कार करके 'क्रव्यादाय नमः' कहते हुए क्रव्याद संज्ञक अग्नि को प्रज्वलित करे और उसे निम्न मंत्रोच्चारण के साथ में चिता में रखे–

ॐ भूर्भुवः स्वः द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा तस्याते पृथिवि देवयजनिपृष्ठेऽग्निसन्नादमन्नाद्यादयाधे।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रु वे । देवांऽआ सादयादिह ।।

तदुपरान्त अग्निहोत्र के समान ही निम्न मन्त्रों से क्रमशः एक-एक कर सात आहुतियाँ देनी चाहिए–

ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम ।। १।।
ॐ इन्द्राय स्वाहा, इदमिन्द्राय न मम ।। २।।
ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये न मम ।। ३।।
ॐ सोमाय स्वाहा, इदं सोमाय न मम ।। ४।।
ॐ यमाय स्वाहा, इदं यमाय न मम ।। ५।।
ॐ मृत्यवे स्वाहा, इदं मृत्यवे न मम ।। ६।।
ॐ ब्रह्मणे स्वाहा, इदं ब्रह्मणे न मम ।। ७।।

इसके बाद तीन आहुतियाँ व्याहृतियों की भी निम्न प्रकार दी जाँय–

ॐ भूः स्वाहा, इदमग्नये न मम ।
ॐ भुवः स्वाहा, इदं वायवे न मम ।
ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय न मम ।

शरीर यज्ञ–

इस प्रकार की आहुतियाँ शरीर के प्रत्येक अंग को अग्नि देव के लिए समर्पण करने की भावना से की जाती हैं–

ॐ लोमभ्य स्वाहा, इदं लोमभ्यो न मम ।। १।।
ॐ त्वचे स्वाहा, इदं त्वचे न मम ।। २।।
ॐ लोहिताय स्वाहा, इदं लोहितायै न मम ।। ३।।
ॐ मेदोभ्य स्वाहा, इदं मेदोभ्य न मम ।। ४।।
ॐ मांसेभ्यः स्वाहा, इदं मांसेभ्य न मम ।। ५।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ स्नायुभ्यः स्वाहा, इदं स्नायुभ्यः न मम ।। ६।।
ॐ अस्थिभ्यः स्वाहा, इदं अस्थिभ्यः न मम ।। ७।।
ॐ मज्जाभ्यः स्वाहा, इदं मज्जाभ्यः न मम ।। ८।
ॐ रेतसे स्वाहा, इदं रेतसे न मम ।। ६।।
ॐ पायवे स्वाहा, इदं पायवे न मम ।। १०।।

तदुपरान्त निम्न मन्त्र से हवन सामग्री तथा आज्य युक्त पाँच आहुतियाँ दे–

ॐ आयुर्यज्ञेन कल्पतां प्राणोयज्ञेन कल्पताञ्चक्षुर्येज्ञेन कल्पतां श्रोत यज्ञेन कल्पतां वाग्यज्ञेन कल्पतां मनोयज्ञेन कल्पतामात्मयज्ञेन कल्पतां ब्रह्मायज्ञेन कल्पतां ज्योतिर्यज्ञेन कल्पतां स्वर्यज्ञेन कल्पतां पृष्ठयज्ञेन कल्पतां यज्ञोयज्ञेन कल्पतां स्वाहा ।।

इसके पूर्व चिता पर पाँचवें साधक पिण्ड का दान किया जाता है और फिर शव की प्रदक्षिणा करके उक्त प्रकार अग्नि दी जाती है।अन्त में गायत्री मन्त्र (ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्) से पाँच आज्याहुतियाँ दी जाँय–

कपाल क्रिया–

शवदाह की यह अन्तिम क्रिया मानी जाती है । इसे मस्तक छेदन कर्म भी कहते हैं । प्रायः यह क्रिया यज्ञ में दी जाने वाली पूर्णाहुति के समान है ।जैसे नारियल में छेदन करके घृत भरते हैं, वैसे शव के शिर को फोड़कर उसमें घृत तथा तिल भरकर अन्त्येष्टि क्रिया समाप्त की जाती हैं । उस समय निम्न मन्त्र पढ़ना चाहिए–

असौं स्वर्गाय लोकाय स्वाहा ज्वलतु पावके ।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कहीं-कहीं कपाल क्रिया के पश्चात् अन्तिम आहुति के रूप में चिता पर घृत की धारा छोड़ी जाती है । उस समय निम्न मन्त्र पढ़ा जाय–

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसो पवित्रमसिस हस्त्र धारम् । देवस्त्वा सविता पुनातु वसो पवित्रेण शतधारेण-सुप्त्वा कामधुक् स्वाहा ।।

अन्त्येष्टि होने पर चिता के स्थान को साफ करते तथा जल से सींचते हैं । कहीं-कहीं चिता से अस्थियाँ बीन कर गंगा प्रभृति पवित्र नदी में डालने के लिए रखी जाती हैं । इसके अनन्तर नदी, कूप, बावड़ी या नल पर जहाँ जैसी व्यवस्था या उपलब्धि हो स्नान करें । उस समय निम्न मन्त्र बोला जाय–

ॐअपानः शोशुचदघमन्ने शुशुग्त्र्यारयिम् । अपानः शोशुचदघम् ।

स्नान के बाद वस्त्र पहिन तथा आचमन कर जल में तिलांजलि (तिल-पानी) दे । कहीं-कहीं तिल और जौ मिला कर जल में छोड़ते हैं । इसके पश्चात् घर लौटना चाहिए ।

मरणोत्तर कर्म –

अन्त्येष्टि कर्म की समाप्ति यहीं हो जाती है । बाद में अस्थिसंचय, तृतीता, नवगात्र या दशगात्र, एकादशाह, सपिडी करण तक के कर्म मरणोत्तर संस्कार कहे जाते हैं । सुविधा के लिए किये जाने वाले कर्मों में प्रयुक्त होने वाले मंत्रों का उल्लेख यहाँ किया जाता है–

संकल्प–

कार्य आरम्भ करने से पहिले आचार्य को निम्न प्रकार से संकल्प कराना चाहिए । देश-काल कीर्तन के पश्चात् निम्न प्रकार

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बोला जाय—

अमुक गोत्रोत्पन्न अमुक शर्मा (वर्मा, गुप्त) अहं श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थे अमुकस्य मरणोत्तरं च देव ऋषि पितर तर्पण करिष्ये ।

आवाहन—

इस कर्म में पितर ही देवता होता है, इसलिए पितर का आवाहन निम्न मन्त्र से ध्यान करता हुआ करे—

ॐ विश्वेवास आगत श्णुता म इम हवम् इदं बर्हिर्निषीदतम् ।।

पंचबलि—

पितर से पहिले विभिन्न जीवों को भोजन का अंश प्रदान करने के लिए पंचबलि निकाली जाती है । गाय, श्वान, काक, देवता पिपीलिका को बलि देने के लिए पृथक्-पृथक् मन्त्र पढ़ने चाहिए—

गोबलि—ॐ सौरभेय्यः सर्वहिताः पवित्राः पुण्य-राशायः । प्रतिगृह्णन्तु मे ग्रासं गावस्त्रैलोक्यमातरः। इदं गोभ्यो न मम ।।

श्वानबलि—ॐ द्वौ श्वानौ श्यामबलौ वैवस्वत-कुलोद्भवौ । ताभ्यामन्नं प्रदास्यामि स्यातामेत वहिंसकौ।। इदं श्वभ्यां न मम ।।

काकबलि—ॐ ऐन्द्रवरुणवायव्या याभ्यां वै नैर्ऋता-स्तथा ।। वायसा प्रतिगृह्णन्तु भूमौ पिण्डं मयोज्जितम् इदं वायसेभ्यो मम ।।

देवादिबलि —ॐ देवा मनुष्याः पशवो वयांसि सिद्धाः

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सयक्षोरगदैत्य संघाः। प्रेताः पिशाचास्तरवः समस्ता ये चान्नभिच्छन्ति मया प्रदत्तम। इदमन्नं देवादिभ्यो न मम ।।

पिपीलिका बलि–ॐ पिपीलिका कीटपतंगकाद्या वुभुक्षिताः कर्मनिबन्धबद्धा। तेषां हि तृप्त्यर्थमिदं मयांन्नं तेभ्यो विसृष्टं सुखिनो भवन्तु ।। इदमन्नं पिपीलिकादिभ्यो न मम ।।

पितृबलि–

आहार सामग्री को एक पत्तल में रख कर पितरों के लिए बलि प्रदान करते हुए निम्न मन्त्र पढ़े–

ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमोः वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितर नमोः वो गृहान्नः पितरो दत्त नमो वः पितरो द्वेष्मैतद् वः पितरो वासः ।।

उक्त सामग्री पशु-पक्षियों के उद्‌देश्य से छत या खेत आदि में डाल दें अथवा किसी अभ्यागत को खिला दें ।

तर्पण

इस कर्म को करने के लिए दोनों हाथों की अनामिकाओं और अंगुष्ठों में कुशों में गाँठ लगा कर छल्ले के आकार में बनाये हुए पवित्री पहिनें, उस समय निम्न मन्त्र उच्चारण किया जाय–

ॐ पवित्रोस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्या-

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

च्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्त रश्मिभिः। देवीरापो ऽअग्रेगुवो-ऽअग्रेपुवो ऽग्रे इममद्य यज्ञं नयताग्रे यज्ञेपमिथ्ठसुधातुं यज्ञपति देवयुवम् ।।

तर्पण करते समय उक्त मन्त्र बोले और दोनों हाथों को अञ्जली के समान मिलाये। तर्पण के लिए जौ, तिल, चावल, दूध, पुष्पयुक्त जल ले।

देव तर्पण –

इसमें कुशाओं के पूर्वाग्र भाग से जल छोड़े तथा अञ्जली में कुश रख कर सामने की ओर तर्पण करे। पूर्वाभिमुख बैठे हुए जलदान करते समय निम्न मन्त्र बोले–

ॐ ब्रह्मातृप्यताम्। ॐ विष्णुस्तृप्यताम्। ॐ रुद्रस्तृप्यताम्। ॐ प्रजापतिस्तृप्यताम्। ॐ देवास्तृप्यन्ताम्। ॐ छन्दासितृप्यन्ताम्। ॐ वेदास्तृप्यन्ताम्। ॐ ऋषयस्तृप्यन्ताम्। ॐ आचार्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ गन्धर्वास्तृप्यन्ताम्। ॐ देव्यस्तृप्यन्ताम्। ॐ अप्सरसस्तृप्यन्ताम्। ॐ देवानुगास्तृप्यन्ताम्। ॐ नागांस्तृप्यन्ताम्। ॐ तक्षास्तृप्यन्ताम्। ॐ पर्वतास्तृप्यन्ताम्। ॐ सागरास्तृप्यन्ताम्। ॐ सरितस्तृप्यन्ताम्। ॐ मनुष्यांस्तृप्यन्ताम्। ॐ रक्षांसितृप्यन्ताम्। ॐ पिशाचास्तृप्यन्ताम्। ॐ सुपर्णास्तृप्यन्ताम्। ॐ भूतानि तृप्यन्ताम्। ॐ पशवस्तृप्यन्ताम्। ॐ संवत्सरा सावयावास्तृप्यन्ताम्। ॐ वनस्पतयस्तृप्यन्ताम्। ॐ औषधयस्तृप्यन्ताम्। ॐ भूतग्रामश्चमुर्विधस्तृप्यन्ताम्।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऋषि तर्पण–

उक्त मुद्रा में ही ऋषियों का तर्पण किया जाता है । उसमें निम्न मन्त्रों का उच्चारण करें–

ॐ मरीचिस्तृप्यताम् । ॐ अत्रिस्तृप्यताम् । ॐ अंगिरास्तृप्यताम् । ॐ पुलस्त्यस्तृप्यताम् । ॐ पुलहस्तृप्यताम् । ॐ क्रतुस्तृप्यताम् । ॐ वसिष्ठस्तृप्यताम् । ॐ प्रचेतास्तृप्यताम् । ॐ भृगुस्तृप्यताम् । ॐ नारदस्तृप्यताम् ।।

दिव्यमनुष्य तर्पण–

सनकादि ऋषियों को दिव्य मनुष्य कहा जाता है । इन्हें कुशाओं के मध्य भाग से जल प्रदान करता हुआ साधक उत्तर की ओर मुख करके दो-दो अञ्जलि दे । उपवीत को कंठ में माला के समान लपेट ले । प्राजापत्य मुद्रा अर्थात् दायी कनिष्ठिका के मूल कुशाग्र द्वारा जल छोड़ता हुआ निम्न मन्त्र पढे–

ॐ सनकन्तृप्यताम् । ॐ सनन्दनस्तृप्यताम् । ॐ सनातनस्तृप्यताम् । ॐ सनत्कुमारस्तृप्यताम् । ॐ कपिलस्तृप्यताम् । ॐ आशुरिस्तृप्यताम् । ॐ आशुरिस्तृप्यताम् । ॐ वोढुस्तृप्यताम् । ॐ पंचशिखस्तृप्यताम् ।

पितर तर्पण–

इसमें दक्षिणाभिमुख से कुश-मूल और अग्रभाग मिलाकर तीन-तीन अञ्जली जल प्रदान करे । अपसव्य होने के लिए उपवीत को दांये कन्धे पर रखे और बाँया घुटना धरती पर टेक ले । पितृतीर्थ मुद्रा अर्थात् तर्पनी और अंगूठे के मध्य दुहरा किये

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुश रख कर अंगूठे के मध्य दुहरा किये कुश रख कर अंगूठे के निकट से जल दे । दिव्य पितर, प्रधान पितर तथा यम आदि को इसी मुद्रा से तर्पण करना चाहिए । दिव्य पितरों के तर्पण में निम्न मन्त्र बोले–

ॐ कव्यवाडनलस्तृप्यताम् इदं सतिल जलम् । तस्मै स्वधा नमः।। १।। ॐ सोमस्तृप्यताम् , इदं सतिलं जलम् । तस्मै स्वधा नमः।। २।। ॐ यमस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलम् । तस्मै स्वधा नमः।। ३।। ॐ अर्यमा तृप्यताम् , इदं सतिलं जलम् । तस्मै स्वधानमः।। ४।। ॐ अग्निष्वात्ता पितरस्तृप्यन्ताम् इदं सतिलं जलम् । तेभ्य स्वधा नमः।। ५।। ॐ सोमपाः पितरस्तृप्यन्ताम् इदं सतिलं जलम् । तेभ्य स्वधा नमः।। ६।। ॐ वर्हिषदः पितरस्तृप्यताम् , इदं सतिलं जलम् । तेभ्यः स्वधा नमः।। ७।।

यम तर्पण–

यमराज की तर्पण करने के लिए निम्न मन्त्र वाक्यों को तीन-तीन वार कहे–

ॐ यमाय नमः। ॐ धर्मराजाय नमः। ॐ मृत्यवे नमः। ॐ अन्तकाय नमः। ॐ वैवस्वताय नमः। ॐ कालाय नमः। ॐ सर्वभूत क्षयाय नमः। ॐ ओदुम्बरा नमः । ॐ दध्नाय नमः । ॐ नीलाय नमः। ॐ परमेश्वष्ठिन नमः। ॐ बृकोदराय नमः। ॐ चित्राय नमः। ॐ चित्रगुप्ताय नमः।।

अपने पितरों का तर्पण करने के लिए नाम गोत्रादि के उच्चारण पूर्वक पितर तीर्थ मुद्रा से ही तर्पण करें–

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अस्मत् प्रपितामहः अमुक गोत्रस्य अमुक शर्मा (वर्मा, गुप्तः) आदित्यरूपस्तृप्यताम् , इदं सतिलं जलम् । तस्मै स्वधा नमः ।।

अस्मत् पितामहः अमुक सगोत्रस्य अमुक शर्मा (वर्मा, गुप्तः) रुद्ररूपस्तृप्यताम् , इदं सतिलं जलम् । तस्मै स्वधा नमः ।।

अस्मत् पिता अमुक सगोत्रस्य अमुक शर्मा (वर्मा, गुप्तः) वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जल । तस्मै स्वधा नमः ।।

अस्मत्प्रपितामही अमुक सगोत्रा अमुकी देवी आ-दित्यरूपा तृप्यताम् । इदं सतिलं जलम् तस्मै स्वधा नमः ।।

अस्मत्पितामही अमुक सगोत्रा अमुकी देवी रुद्र-रूपातृप्यताम् , इदं सतिलं जलम् तस्मै स्वधा नमः।।

असमन्माता अमुक सगोत्रा अमुकीदेवी वसुरूपा-तृप्यताम् , इदं सतिलं जलम् । तस्मै स्वधा नमः ।।

इसी प्रकार श्रेष्ठ भ्राता, बिमाता, मृत पत्नी आदि के लिए भी तर्पण किया जाता है । मन्त्र में नाम और सम्बन्ध का परिवर्तन कर देना चाहिए । प्रधान पितर के लिए तीन बार विशेष रूप से तर्पण करते हुए निम्न मन्त्रों का उच्चारण करें–

ॐ उदीतरामवर उत्पना स उन्मव्यमाः पितरः सोम्यासः। असु य ईयुर बृका क्षतज्ञास्ते नोऽवन्तु, पितरो हवेषु ।। १।।

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ अङ्गिरसो नः पितरो नूवग्धा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः तेषां वयछसुमतौ यज्ञियमानामपि भद्रे सौमनसे स्याम् ।।२।।

ॐ प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। ॐ पितामहेभ्य, स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्पितरोऽमामदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम् ।। ३ ।।

पिण्डदान–

जौ के आटे में तिल, शर्करा घृत तथा दूध डाल कर पिण्ड बनावें और तीन बार निम्न मन्त्र द्वारा विधिवत् पिण्ड समर्पण कर पितृ को तृप्त करें–

ॐ उशन्तस्त्वा निधीमह्युशन्तः समिधीमहि । उशन्नुशत आवह पितृन्हविषे अत्तवे ।।

पितृहोम एवं नमस्कार–

प्रधान पितर की प्रसन्नता और शान्ति के लिए निम्न मन्त्र से तेरह आहुतियाँ देनी चाहिए–

ॐ आ यन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्तः पथिभिर्देयः यानैः। अस्मिन्यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान् स्वहा ।।

उक्त आहुतियों के पश्चात् निम्न मन्त्रों के उच्चारण पूर्वक पितरों को नमस्कार करना चाहिए–

ॐ नमो व पितरो रसाय नमो, वः पितरः शोषाय नमो, व पितरोजीवाय नमो, वः पितरः स्वधायै नमो, वः पितरोघोराय नमो, वः पितरो मन्यवे नमो, वः

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पितरः पितरो नमोः वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो देष्मैतद्वः पितरो वासः ।।

शान्ति पाठ–

उक्त कर्मों के अन्त में शान्ति के लिए निम्न मंत्रों का पाठ करना चाहिए–

ॐ द्यौ शान्तिरन्तरिक्ष छशान्तिः पृथिवी शांतिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्ति ब्रह्म शान्ति सर्व छशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ।।

कर्म समाप्ति–

लोकाचारानुसार तथा कुलाचारानुसार जो कर्म किये जाते हों वे भी अवश्य करने चाहिए । सामान्यतः शुद्धि के पश्चात् ब्राह्मणों (कम से कम १२ या १३) को भोजन, दक्षिणादि प्रदान शय्यादान, कर्मकर्त्ता का तिलक, पगड़ी बाँधना आदि प्रथा के अनुसार ही किये जाँय । सभी कर्म सम्पन्न होने पर कर्मकर्त्ता को आत्म-कल्याण और सुख की प्राप्ति के निमित्त देव-दर्शन करने चाहिए । उस समय निम्न मन्त्र का पाठ श्रेयस्कर होगा –

शान्ताकारं भुजंगशयनं पद्मनाभं सुरेशम् ।
विश्वाधारं गगन सदृशं मेघवर्णं शुभांगम् ।।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानिगम्यम् ।
वन्देविष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ।।

अथवा मन्दिर में जिस देवता की मूर्ति हो उससे सम्बन्धित मन्त्र-पाठ या नाम-स्मरण पूर्वक नमस्कार किया जाय।

(समाप्त)

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विश्व ओंकार परिवार की स्थापना

ॐ परमात्मा का सर्वश्रेष्ठ व स्वभाविक नाम है । इसे मन्त्र शिरोमणि, मन्त्र सम्राट, मन्त्र-राज, बीज-मन्त्र और मन्त्रों का सेतु आदि उपाधियों से विभूषित किया जाता है। इसे श्रेष्ठतम, महानतम और पवित्रतम मन्त्र की संज्ञा भी दी जाती है । सारे विश्व में इसकी तुलना का कोई मन्त्र नहीं है । ॐ सभी मन्त्रों को अपनी शक्ति से प्रभावित करता है ।सभी मन्त्रों की शक्ति ओंकार की ही शक्ति है । यह शक्ति और सिद्धिदाता है । भौतिक व आर्थिक उत्थान के लिए कोई भी दूसरी श्रेष्ठ व सरल साधना नहीं है ।

सभी ऋषि मुनि ॐ की शक्ति और साधना से ही अपना आत्मिक उत्थान करते रहे हैं । परन्तु आज आश्चर्य है कि ॐ का अन्य मन्त्रों की तरह व्यापक प्रचार नहीं है । इस कमी को अनुभव करते हुए विश्व ओंकार परिवार की स्थापना की गई है । आप भी अपने यहाँ इसका एक प्रचार केन्द्र स्थापित करें । शाखा स्थापना की सारी सामग्री निःशुल्क रूप से प्रधान कार्यालय बरेली से मंगवा लें। आपको केवल इतना करना है कि स्वयं ओंकारोपासना आरम्भ करके चार अन्य मित्रों व सम्बन्धियों को प्रेरित करें और सभी संकल्प पत्र व शाखा स्थापना का प्रार्थना-पत्र प्रधान कार्यालय को भिजवा दें । इस वर्ष ३३००० साधकों द्वारा १५०० करोड़ मन्त्रों के जप का महापुश्चरण पूर्ण किया जाना है । आशा है कि ओंकार को जन-जन का मन्त्र बनाने के श्रेष्ठतम आध्यात्मिक महायज्ञ में आप सम्मिलित होकर महान पुण्य के भागी बनेंगे ।

ओंकार रहस्य, ओंकार दैनिक विधि, ओंकार चालीसा, ओंकार कीर्तन और ओंकार भजनावली नामक एक रुपया मूल्य वाली सस्ती पुस्तिकाओं को अधिक से अधिक संख्या में वितरित करें ।

विनीत :

चमन लाल गौतम

विश्व ओंकार परिवार
ख्वाजाकुतुब, वेदनगर,
बरेली-२४३००३ (उ०प्र०)

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्रेष्ठतम धार्मिक साहित्य

वेद

ऋग्वेद ४ खण्ड (भा.टी.)
अथर्ववेद २ खण्ड-सम्पूर्ण (भा.टी.)
यजुर्वेद-सम्पूर्ण (भा.टी)
सामवेद-सम्पूर्ण (भा.टी.)

उपनिषद्

१०८ उपनिषद् ३ खण्ड (भा.टी)
वृहदारण्यकोपनिषद् (भा.टी.)
छान्दोग्योपनिषद् (भा.टी.)

गीता

ज्ञानेश्वरी भगवद्गीता (भा.टी.)
अष्टावक्र गीता (भा.टी.)

दर्शन

वैशेषिक दर्शन (भा.टी.)
न्याय दर्शन (भा.टी.)
सांख्यदर्शन (भा.टी.)
योग दर्शन (भा.टी.)
वेदान्त दर्शन (भा.टी.)
मीमांसा दर्शन (भा.टी.)

रामायण व धर्मशास्त्र

आनन्द रामायण (भा.टी.)
पंचतंत्र (भा.टी.)
योग वसिष्ठ २ खण्ड (भा.टी.)
विचार सागर (भा.टी.)
२० स्मृतियाँ २ खण्ड (भा.टी.)

पुराण साहित्य

शिव-पुराण २ खण्ड (भा.टी.)
विष्णु पुराण २ खण्ड (भा.टी.)
मार्कण्डेय पुराण २ खण्ड (भा.टी.)
गरुड़ पुराण २ खण्ड (भा.टी.)
देवी भागवत पुराण २ खण्ड (भा.टी.)
हरिवंश पुराण २ खण्ड (भा.टी.)
भविष्य पुराण २ खण्ड (भा.टी.)
पद्म पुराण २ खण्ड (भा.टी.)
बाराह पुराण २ खण्ड (भा.टी.)
गणेश पुराण (भाषा)
सूर्य पुराण (भा.टी.)
आत्म पुराण (भाषा)
कल्कि पुराण (भा.टी.)
देवी भागवत् पुराण (भाषा)
गायत्री पुराण (भाषा)
विश्वकर्मा पुराण (भाषा)
श्रीमद्भागवत् सप्ताह कथा (भाषा)
महाभारत साइज १८'' × २२''/८ (भाषा)
महाभारत साइज २० ३०''/१६'' (भाषा)
रामचरित मानस मूल गुटका
अद्भुत रामायण (भा.टी.)

संस्कृति संस्थान
ख्वाजा कुतुब, (वेदनगर) बरेली -२४३ ००३
फोन : (०५८१) ४७४२४२

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रकाशक

सस्कृति संस्थान
ख्वाजा कुतुब, (वेदनगर) बरेली - 243003
मो. 97194 78700, 96909 24661

Sanskrit Digital Preservation Foundation, Chandigarh